वानीकि तामायन।

अट्याभाका छ।

वर्षभागाहिशकि जीश क्षीयुक्त गराहाकाधिहास भर्षावक्ष्य वांश्यूद्वत्र आंड्याद्रगादत

ব্যয়ে

শীনুক বিপ্রদাস, তর্কবাদীশ এবং শ্রীনুক নবীনচন্দ্র বন্দোপাধ্যায় কর্তৃক অমুরূপ অনুবাদিত ইইগা

---→824---

কলিকাতা

ভাষ্য ৰজে ইঞ্জিত হইল।

काकाः ३५००। ताः ३२७८ माणः। वर् ३४०५ माणः।

ভূমিক।।

क्रिकीय कांस

-

· छनिनेन मधीरण निरयमन विषय--

ত্রীল শ্রীযুক্ত বর্দ্ধনানাদি মহামহীশ্বর মহারাজাধিরাক্ত বাহানুরের অনুমক্তর্নারে গৌড়ীয়ভাষায় পছা ক্লেদ্ধ বাল্লীকি রামায়নের আদিকাপ্ত
জানুবাদিত হইলে প্রথমতঃ ৫০০ খণ্ড মুদ্রিত হইয়াছিল কিন্তু রাহ্ক
গানের আগ্রহাতিশয়ো অচিরে বিতরণ পর্যাবিদ্য হইলে অতথ্য প্ররাম ৫০০ খণ্ড মুদ্রাম্বিত হইয়াছে তাহাও দিন দিন বিতরণে পরিশেষ
হইতেছে পরে পূর্বে প্রতিজ্ঞানুসারে শ্রীল শ্রীযুক্ত মহারাজাধিনাজের
জপার কীন্তি ভত্তের বিতীম প্তাকাশ্বরণ নবোধাকাণ্ড অনুবাদ
মুদ্রান্তন সমাপন হইল এতংপাঠে পাঠক বর্গের স্থবোধ হইলে শ্রীল
শ্রীযুক্ত মহারাজাধিরাজ বাহাদুর পরমাহ্লাদিত হইবেন ইতি
সন্ধ্রেণ্ড স্বালাং

নী শ্রীরামে। জয়তি।

दां भारत।

वर्याधाकाछ।

থজাঞ্জি উপহার কবিয়া এছ৭: ্ষ্ট চিজ্ঞ দশর্থ কফ্লা বচন। ন্তে আমি অস্থা এমুগহীত সম্প্রতি। গরিবেন সকলে জীবামে রাজ্যপতি। । সমস্তকে সপ্তায় করিয়া ভূমীশ্বর। নস্তোগ জনক বাক। কহিলা তৎপার विभिष्ठे विभिष्ठे वायदम्य समुदन्तदम । তোমরা শ্রবণ কর বলিলা সম্ভাবে। বৰ্ত্ত্যান শ্ৰীমান পুৰাদ চৈত্ৰ মাস। পুষ্পিত কানন সব পল্লবে প্রকাশ। এই মালে রামচক্রে রাজ্য করি দান। অনুমতি কর সবে সুবুজি বিধান। **अक्टिकानीय जाता मर्खा कता १०**। कत्रिए इंदेर रम किं कि आसाजन। বে যে বস্তু আহরণ করিতে হইবে। রাম রাজ্ঞ প্রাপ্তি হেডু বিস্তারে কহিৰে 🛭 ভূপাল বচন শুনি পরে মুনিবর। শান্ত্রমতে কহিলেন রশিষ্ঠ সত্তর। সুবৰ্ণ প্ৰভৃতি রত্ন সম্বে । ভাৰ মালা লাভা মধু ঘত আহরণ॥

अयन्त वमन दथ गर्स्वाध्रुष युक्त । ষেত্রণ তুর**ল** মাজল শার্র উক্ত। সুলক্ষণে লক্ষিত সুদ্রভাগ জরাজ : के मग्रमात्र भीख जान महाताज । অন্তঃপুর ছার আর সমস্ত নগর। চিত্রমাল্য ভোরণেতে কর শোভাকর 🛭 স্থানে স্থানে প্রয়াক আরোপণ। রাজ্ঞপথ মনোরথ করাও সেচন ॥ नगतक् नत्र नात्री वातरश्यत । ন্পতির শাসনে শোভিক দর্বাত্ত । पृष्टे शक रहेशा शाकून श्रितकारत । দীর্ঘ পাঁজি শুকুবাসা পুরে প্রবৈশিবে। বাক্য অনুরূপ করি প্রতিজ্ঞাচরণ। मिहे महे खेरा मर्स इहेन नियन 🎼 হর্ষযুক্ত,নপবর কর্মিগণ প্রতি। কহিলেন সমত আহর শীঘ্রগতি 🖟 करे कथा कहिया हरेया खीठ मन। **भूभद्धदक् आदामिम्रा कह्मि।** वहन ॥ . কলা হবে ঐরামের অভিবেকাচার। শীত্র আন রামচত্তে আদেশে আমার। ক্রিলিকেন তথারে বলিয়া থাকরেখী। **উপনী**ত বথা অধিষ্ঠিত দাশরণি ॥ 'র**ং**থ উঠাইয়া রাখে পরে ব্যিতর ! শীত্রগতি আনিলেন ভূপতি গোচর 🛚 खदान जामान किछ मनात्रथ जुन। मर्ख्य में दिश्यों महत्व प्रज्ञन । উদীচী প্রাতী প্রাচী দক্ষিণাদি মত। খান বাসি নপগ্ন নেবাকার্যে এত ট কি দেছ যবন শহ শৈলান্ত পুলিত। श्वरर्ग देखा बणा मृत भयन्त स्मितिक । নিগুৱাৰ মাধ্যে মুখ শোভা অভিশয়: মকলাও মাধ্যে সাজে কপ্সপ দুন্ত : প্রাসাদে পঞ্জিত রূপে হিড নরপতি। নাশর বি বথর আগত জেতগতি **ু** উপনীত আছম্ম গঞ্চর সমাক্রতি: ত্রিলোক বিশ্রভ পুত জীমান পুরুতি । আন্ধান্ লম্বিত তুল নিজ সভাপর। প্রমন্ত মাড়**ন্ধ** প্রোয় গতি শোভাকর ৷ চন্দ্ৰকান্ত মুখ্য মাতি সুথ্যিয় নৰ্মন। রূপে গুণে লোকচিত করেন হরব। ঘর্ষে অতি ভগু প্রেডা দক্ষ কলেবর। अष्डाहरक जीवन यमम अल्दा <mark>জাগমনক্লত মুত নির্বি নয়নে</mark> । खखा न। इस खुखि मृद्ध मर्भात्म ॥ অত্তৰ নিজ্ঞ অতি সৃষ্ত্ৰী নুষ্ত্ৰ। भीखनंकिः मृदत्र बीत ताथि तथरछ ॥ অভি ऋष चानग्रन कतिमा निकटि। ক্লভাহ্মলি কহিলেন জীরামে একটে।

যাক্তা কর রহাবর পিত সন্ধিধানে। शंक्रतमरम विषया हिमा मार्ग्यात ॥ কৈলাস শৃষ্ণ প্রতিম প্রাসাদ সুন্দর। উঠিকেন সার্থি নহিত রথবর॥ ব্লডাঞ্জাব্লিকত ন্বিত জনক অস্থিক। कानारेना निक नाम की द्राप हेरहार ॥ বন্দিলেন পিড়পদ রাম রঘুবর। দৃষ্টি করি পার্দে রাজপুত্র পুটবর " ধবিয়া উভয় করে করি আলিঞ্চন। প্রিয়পুদ্র মুপুদ্র বৎসকা নাম্বন 🖟 <u> बितारम विराम सामा प्रांत हेलामन ।</u> শোভে মণি জেনী সায় ভবিত কাঞ্চন। कामरन गमिरछ नृत्र कतिका आस्मता वहामस्य दोहें व दिमराजन त्यंत्र ह শ্বভাবতঃ রামচত্র মেক্সদিত তবি। নির্মাল নির্মালাসনে মনোহর ফ্রি ৪ महाइ इंद्रेश महा माखिल मुभता গ্রাচ কক্ষ যথা রূপ শরদি সুক্র। দেখিয়া মুপ্তিয় পুজে সম্ভষ্ট নূপতি। অলমারে অলম্ভ তাপন আক্রতি 🖟 ঈষদ্ধাস্যে নৃপতি কহিল। পুত্ৰ প্ৰতি। কশুপ যেমন স্মাখাসিয়া সূরপতি। क्छिष्ठा शङ्की मूमर्गना रको गमा (बमन) উদ্ভৱ উদরে ভূমি সদৃশ নন্দন ॥ ওণ ভোষ্ট প্রিয়পুত্র সর্ব্ব প্রেকা অন। **७व धनशरन मस्य दक्षिण मूमम**। অত এব প্রক্ষাপ্রিয় প্রিয় পুদ্রবর। श्रमा (बारन (बोद) का शास्त्र अनाकत ॥

প্রভাবতঃ বিনীত অসীম কণবান্ গুণ হেতু পুত্ৰ তব কহি শুভাগ্যান ! नव्यतिभ विनयः पृथिष्ठ मनः इटव । অনরব পরিহরি জিতেক্সিয় হবে ! কামকোৰ সম্বিত যতেক ব্যায়াম : धगरका ध्वश्राक मिन मुची ११४ होच । লাম পর নাধারণ সর্বর প্রজাগন। দেশিয়া আজন পর করিবে পালন গ তথপত হইলে কৰা জাগী অহস্থার। मुर्था अप्र करेंग्र, तक्रिन পরিস্কাर b অভ্নৰ আৰুছ আইল সমজানে : খণ্ডণে সকল গুজা রাখিবে পালনে অবলা ত্মান্ত অস্ব হন্তী ধনাগার। निहीक्षण कतिहा कतित यह मात्र ह যিত্ৰ কি অমিত্ৰ ৰূপ কিলা উদাসীন : সকলের মানস রঞ্জিবে প্রতি দিন 🎚 मस्ट्रे मरून अयूत्रक एक रातः अक्रार्थ रच भारत वता धर्म तरह छात থাকেন তাহার প্রতি তুষ্ট মিত্র भव। অমৃতে অমর মথা পালিলা বাসব ! এই হেডু ধর্ম সেডু ভুমি পুজ বর। नर्सक आश्व नियम हिन्दि गुम्हत ॥ ৰুক্তি ৰুক্তা ৰূপ উজি করিয়া অবণ। তেক্ষৰী যশৰী রাম প্রবৃষ্ট বদন। ज्यास विश्वा नृर्भ क्र्वन वहन। গুরু আজা গৃহীত নৃপতি হঠ মনঃ॥ বশিষ্ট প্রভৃতি নৃপে করিলা আদেশ। त्राज निरुष्ठ श्रुटक वाळा नगरवण ॥

ভাবজ ভূপতি মুতে কহিলা ইকিছে

যাইতে জীবাৰ স্থানে জানিলা ভকিতে ।

রভূত্তম উপক্রম করিলা গমনে ।

হইলেন রথারত বন্দিয়া চরণে ॥

স্থাতে গমন কালে পশি মধ্যে হাম।

পরম পৃষ্ঠিত সর্বা জনে ঘনজীম ॥

দেই সর্বা প্রেজা জন নূপ বাকা জনে ।

হইল পরম লাভ ভাবে সবে মনে ॥

গৃহে গিয়া নরেজ্য মন্ত্রণ করি লার।

হইচিজে অক্রমা করিলা দেবতাব ॥

শৃথিপ্রোক্ত রামায়ণ অধ্যোগাথা কাঞ্জ।
ভারিমে রাজ্যাভিষেক প্রভাব প্রকাত ॥

আদি সর্ম উন্দীপন সর্বামৃত সার।

শ্রবণে অথিল জনে হবে ভব পার॥

প্রথমঃ সর্বাঃ।

जिलमी।

भूरतामि मर्का कर. रित्म गृष्ट् वेशम,

भित्रतामि मर्का कर. रित्म गृष्ट् वेशम,

भित्रताम मर्का कर. रित्म गृष्ट् वेशम,

भित्रताम मर्का मर्गा करि ए पहुन्छ,

भित्रता करिला जरू जर ।

भूरा यांग हरत कला, जिल्यक मृष्ट्रणा,

हरेरक एाइएक निक्त्य।

जातक तांगीराकात, मृष्ट्र भूममंगात,

तणुताक वांगीराकात, मृष्ट्र भूममंगात,

तणुताक वांगीराकात, मृष्ट्र भूममंग्रीत,

नांगिरक कतिया जालाम।

व्यक्त भूकारत, मंग क्वित भूकारत,

भावश्या कर्तात कर्तात श्रावमा।

নৃপাঞ্জায় নৃতবর, চলিলেন অনস্তর, দীঅগতি আনিতে মীয়ামে। উপস্থিত পুর ছাতে, ছাত্রী বিজ্ঞাপন করে. সহর গ্যনে ঘনভানে ! সূত আগমন ফাতি, ফাতমাত্র রুপ্তি. रहेराना मणक मानता। আজा निमा बांत्रभारम, आन मुरज अहे कारम, मृश बाल्ला किन्द्रानि दिरमस्य। প্রবেশ করিলে দৃত,শ্রীরাম কহিলা ক্রত, গ্মন কারণ সূত বল। আগমন পুনর্বার, কিবা হেতু নৃগাজার, বিশেৰ কি শুনিয়াছ কল ৷ কহিলেন দৃত বাণী, কি বিশেষ নাহি জানি, मर्मनाथीं ताजा जाननात । এই মাত্র জানি সার, বুরান্বিত সুকুমার, গৃহ নৃপাগারে সুনর্বার ॥ পৃষ্ক নিকা শুনি ব্যাল, ব্যাক্ষেত্র দবনে শীড়া, ্যান রাম দেখিতে ভূপালে। आंशनाह धार्गमन, पश्हारिक निर्वपन, পাচাইলা সম্বাদ তৎকালে ॥ ্ৰপুজ্ৰ শীরঘ্তম, বাক্য দক্ষ বিভত্তম, রাজার বিশেব তত্ত্ব জানি। ্বশিতার ভবনে শেষ, করিলেন স্প্রবেশ, দৃষ্টিমাত্র জনকে সূজানী। নিয়ম পূর্বক পরে, স্থিত ক্বতাঞ্জলি করে, প্রদৃতি করিন। পিড় পদে। मुख्डे शूल नरवच्या, ध्वमातिया पूरे कत, वानिषम क्षिणा श्राटमानुः

बारमारमा मुश्यत, जामन मुम्दत उत्र, मिग्रा शांत्र कहिला वहन। त्रृक मीर्घायु अठि, तम्य द्वाम मंशामिछ, বছ ভোগী নিম্পৃহ এখন। মন্তবান বিপ্রেগণ, শত যজে দিয়া ধন, यथा रेष्टे मिकना श्रमान। महे भन्त हें है करन, जुमि शूख महीजरन, জন্মপম পিতৃ ভক্তিমান। যাচকে অভীষ্ট ধন, কৈরিয়াছি বিভরণ, পড়িয়াছি विकास विखह। বহু রাজ্ঞ সুখ বোগা, দেব পিতৃগণে ভোগা, करियाष्ट्रि मान वष्ट्रणत । তব অভিষেক कर्षा, दिना भारत कान धर्मा, আমার ক**র্পা** কিছু নাই। নুপুত্র তুমি সম্প্রতি, মম বাকা মহামতি, করিবে শ্রবণ কহি তাই 🖟 সমন্ত নগরবাসী, তব রাজ অভিসাবী, ্লতএব শুন যুবরাজ। योनत्रिक अञ्चित्रक, कति अहे हेळ्। এक, व्यरगांशाय रूट्य व्यक्तिं छ । কিজানি কালের গতি,রাত্রি শেষে রযুপতি, পাইয়াছি দুংস্বপ্নেতে ভয়। 📑 कि कहित निमाक्नन, उन्काशांख श्रुतः श्रुतः, সনির্ঘাত মহাশক চর।। অশুভ নক্ষত্ৰপাত, গৃহে দেখি অকশাৎ, करिरंडर्ड् रेमराख्या जानि। मृर्ग तार मशैम्छ, অশুভ निमिखी ছूछ, **এই मन मक्रम विनामी॥**

নেই হেতু ভীত অতিশয়। মনেতে অভ্যন্ত মোহ, অমঙ্গলে প্রাণ ক্রোহ, অন্তঃপুরে বপা মাতা, রব্বর গিয়া তথা, তদবধি চিক্ত স্থির নয়। कि सानि छशन थान, ना हहेटन मित्रमान, তবে সে ভোমাকে রাজা করি। वर्ष भूनर्यम् हता, कला भूग हामहन्द्र, करिन रेमवङ भाज गाति। অভান্ত চঞ্চল মম মন কল্য আমি রঘবর, ক্রিব কোশলেশ্বর, (योदतारका दाका दामधन। দন্ত্রীক হইয়া ব্রতী, ব্রতাচারে মহামতি, कुणांत्रम लेशालाग्री हता। অংথমন্ত সুহজ্জন,ভোমাকে করে রক্ষণ, मच द्राम छेएकी ना करव !! এই রূপ কর্মা নিয়, জ্মায় অংশন বিঘ, উদিয় আমার সদা মন। যে পর্যান্ত মহারখ, প্রবাদে থাকে ভরত, জন্মধ্যে এ কর্ম্ম নিরূপণ 🛭 সতত তোমার অনুগত[া] ধৰ্মদীল ৰীত ক্লোধ,জিতেক্ৰিয় শুদ্ধবোধ, किस नज सपग्र शर्याण ॥ करे ताका वर्णि उथा,कमा अভियक यथा, অফুজা দিলেন নূপবর। र जाजा विनेत्राताम, श्रामित्रा श्रामम, ি আত্ম গৃহে সমনে সম্বর।

मृशिक्ति माण हम, किया मेर्ड हार्ड हम, । প্রবেশিয়া নিজপুরে, मृश्कि जाका निर्वेदह অভিষেক নিশ্চিত লক্ষণ করিলেন মঙ্গল জ্ঞাপন। ्रिविटलन दघ्वत, अनमी ध्येषप्र शत, পট্টবন্ত করি পরিধান : পুদ্র স্নেছে দেবাগারে,চলিলেন গুদ্ধানারে, मिशा मख्टे जगवान ॥ হও পুজ অভিষিক্ত কি কহিব অভিত্রিক ভীরাম কল্যাণার্থিনী, দর্ব্বাথে সুমিত্রা রাণী লক্ষ্মণ সহিত সুলকণ। উপস্থিতা দেবাগারে, অভিদেক সমাচারে, सानकी यथाय वर्डमांना। নয়ন মুদ্রিত করি, কৌশস্যা মানদেশ্বরী, দেব খানে মঞ্জ কামন।। मुमिता लक्ष्म शरद, रेनरमधी उपनछात, कतिरलन मरद याताथना ॥ রাম সাক্ষাভিষ্ণেটন সুমঙ্গল সুতারণ, क्रिया मक्रम हर्ष यत्न। প্রাধায়ামে ব্রেম্বার, ধানি পরা নুগদার, क भूक्षय ध्रियान खनार्करन ॥ यश्रामि नष्टि दिए, मह्याचा छव उत्तर, । महे दुल बच्चीत, श्रमन उद्शर धीत, 🕶 মাত্র পদে করিয়া প্রেণাম। मिडेयरा खननीरत, कहिरणन भीरत पीरत, হর্ষ ফুজা করিলেন রাম # रनि अश यागारक, शानान गर्स श्रमारक, कतिरलन समक निश्रक । অভিষেক কর্মাহবে, জনকের আজা রবেং **ওনিয়াছি কর্নে পিড'উস্ক**।

तक्रमी मः स्थात्म स्थापनारमः भग्ननार्थ कूमामन, डॉटर मना। मूरमाछन, অধাপক শ্রুত পিতৃ পালে॥ অভিবেচনীয় জন্য, হে যে কহিলেন ভবা, তুমি তাহা করিবা চিন্তন। मिहे मेर खरा आमि, मक्षण मक्षण काबि, দীতা সহ আমাকে এখন। শুনে বাক্য শুভাশ্রিড,চিরদিন আকাঞ্জিড, ्कोणना श्रीक्रमन लाउटम । दर्ग मुका हाता तानी, कहिलान मिष्टेकानी, वित्रकीती रू त्र मूगकरन তোমার অশেষ শক্ত, বিনাশ পাইবে প্রু, কর ভূদি সমস্ত পালন। শ্রীৰুজ হইয়া থাক, জ্লাভিগণে মূখে রাখ, কর সম মানস প্রাসন 🕻 সুষিত্রা আৰম্ভ কর ত্রি রঘুরর, कलानि मकरता खन्म धर्मा। শে হেছু ডোমার পিডা, দশরণ **পর্বভ**োডা, ত্তব আরাধিত শুভকর্ম 🛚 ক্ষললোচন হরি, তাঁর প্রতিভক্তি করি, रंगरे मव यरण क्याबान। नेकाकू प्राचाद नन्त्री, कमना मुक्यनाकी, जुनि ठाँत रहेरव जाधान॥ बहे कथा मांजू डेक, माननीय क्या मुक, लक्द्रत करहेन अनस्रदर्ग करे वमुक्ता एका, एकमा रहेरठ एका, भन गर् माथित गद्रत।

আমার নিকটেনীতা, রহিবেন শুভাছিতা, তোমার আমার ভাই, একায়া প্রভেল নাই, রন্ধনী সংযোগে বোগবাসে।

শ্রনার্থ কুশাসন, ভাহে শ্রা। সুশোভন,
ভাগাপক ক্রন্ত পিতৃ পাশে॥
অভিষেচনীয় জন্য, যে বে কহিলেন ভব্যা,
তুমি তাহা করিবা চিন্তন।
কেই সব জন্য আনি, মঙ্গলে মঙ্গল জানি,
দীতা সহ আমাকে এখন ॥
সাতা সহ আমাকে এখন ॥
সাতা করি হাজারাণী, কহিলেন মিষ্টরালী,
হিরজীবী হও সুলক্ষণে ॥
তোমার অশেষ শত্যু, বিনাশ পাইবে পক্ষ্যা
তোমার অশেষ শত্যু, বিনাশ পাইবে পক্ষ্যা
ত্যুমার অশেষ শত্যু বিনাশ পাইবে পক্ষ্যা
ত্যুমার অশেষ শত্যু বিনাশ পাইবে পক্ষ্যা
ত্যুমার অশেষ শত্যু বিনাশ পাইবে পক্ষ্যা
ত্যুমার অশেষ শত্যুমার বিনাশ বিনাশ পাইবে পক্ষ্যা
ত্যুমার অশেষ শত্যুমার বিনাশ পাইবে পক্ষ্যা
ত্যুমার অশেষ শত্যুমার বিনাশ বিনাশ পাইবে পক্ষ্যা
ত্যুমার অশেষ শত্যুমার বিনাশ পাইবে পক্ষ্যা
ত্যুমার অশ্বুমার বিনাশ বিশ্বুমার বিনাশ ব

প্রার ,

চিন্তান্থিত নৃপতি জীরামাভিবেচনে।
বশিঙে আহ্বান করি কহিলা তৎক্ষণে।
পুরোহিত কর হিত যাও তপোধন।
করাও জীরামচক্রে অভ উপোধন।
জী থশাঃ রাজত্ব লাভ হেতু যোগেশ্বর।
বধুসহ বতরত হন রম্বর।
তথান্ত বলিয়া বেদবেন্তা গল জ্রেই।
রামচক্র বানে মুনি চলিলা বশিষ্ঠ।
নার্লগাঠে পারগ মন্ত্রার্থ মন্ত্রভানী।
রাম উপরাস হেতু তথা মহামানী।
রাহ্বরথ স্ক্র জার রাশি কর্জিয়ান।
পাশ্বর স্কর জার রাশি কর্জিয়ান।

द्रथक् इहेब्रा मूनि ध्यतिभ कहिला। মুনি আগমনে রাম বিশ্চয় জানিলা সম্ভ্রমে উটিয়া রাম অতি ছরাবান! भूमिवदत निया छूर्न शुर्भ अर्घा शास ॥ মাননীয় সুন্দর বৃশিষ্ঠ মহামতি ! আসিলেন রথাগ্রে আপনি রম্পতি॥ নামাইয়া সান্দন হইতে হাই মনে: সুলোষণা করিলেন দেবভায়তনে। রাজার আদেশ রাম বৃদ্ধা দশুকে। আকাজ্ঞিত বাজ্যে স্থিত অপ্ললি পূৰ্ব্বকে। मूनिवह तम्बीत कांत्र विशेष्ट्र । জিজাসা উভাত হ'ব াজীবলোচন প্রকৃষ্ট খালাপ মরি প্রশংসা পর্যবি হৰ্ষভাবে পুরোহিত গৃন্তিত পুলক ! कहिलान छन जांभ नी ल हेन्सीवत । প্রদার ভোষাতে অতি অযোধাধীখন ৷ যৌবরাজ্য পাইবে আপনি ঘনস্থাম : দীতা নহ উপবাদে থাক গুণধাম। করিবেন অভিষিক্ত কল্য নরবব। প্রভাতে অযোধা; রাজ্যে হইবে ঈশ্ব পিতা তব দশরথ সূঞ্জীত বদান্ত। হবে তুমি বৰাতি নছৰ তুল্য মান্ড॥ এই কথা কছিয়া বশিষ্ঠ যুদিবর। সদীত জীরালে মতে উপবাদ পর ॥ अक्राकरण अबूज शा कतिराम मान। গ্রহণ করিলা ওর ভক্তি পূজ্যমান। अञ्चा कत्रिया हारम याम द्राच्यश्रदत ।, भूक्षक मह ताम अस्टिनन मृदत I

সভাৰ বিশিষ্ট বিজ্ঞ সুহৰদ্ধ জন। তীহাদের প্রতি ভার করি দমর্পণ। া মন্ত্র মধাকর করে পরিভাগে। थिक एक एक मूर्व मह व्यक्तांत ॥ নেই কুণ কৈলান প্রতিম বামপরী। চলিলেন মুনিবর পরিকাগ করি 🛭 मिथिए मिथिए युनि श्रथ मरनाहरः मर्का द्वारन नरशुक ल्लासन मर्की नह ॥ विभ वक्ष व्यवधाय हान भारत दिल করে অভি কলরব কৌতৃং**শাবি**ভ ॥ লোক বৃন্দ বাৰিত অপুৰ্বে <mark>শোভাকর</mark> गरक्षि विश्वव शुक्त (ग्रौन मांशत ॥ मुख्य करत दर्भ द्वाप हिस्त द्विनिहत्त । নাগরের উপমা নূপতি পথে হয়॥ পতিষিক্ত শুদ্ধ রাজ্ঞপথ দীপ্তিমান। नाही नरत लांडा करा रामिनी भगक। शास्त्र स्थापा काम महा देखा स्था জী যুৱা বালক বৃদ্ধ লগা প্ৰশ্ব গঞ্জ 🖟 🤖 শর্কা জন মনে করে রামাভিবেচন 🎼 🏋 कछ भारत ममूमिछ इष्टेर छशन॥ প্রজাগণ সাভরণ আনন্দ বর্জন। থাকাজ্যিত দর্বে জনে আদিতা কিরণ। मकरन उदमार युक्त करमाधा मर्नात । মহোৎসব দেখিবারে অতি বাগ্র মনে॥ এই **রূপ জ**নাক্ষ রাজপথ দেখি। পুরোহিত বশিষ্ট মানলে মহামুখী। नद्रकुल ठक्तवृष्ट् इहेगा उन्नातः! রাজপুরে প্রবেশ করিলা পুনর্বার

অতি উচ্চ প্রানাদ দিতাত্রশীর্ব প্রায আরোহণ করি মুনি চলিলা তথায়। उभनी**छ यूनी**ख नदः व मह्वान। শক্ত সহ যে প্রকার নীম্পতি প্রকাশ া বশিদ্ধ আগত দেখি সুখী নৃপ্ৰত্ন । शास्त्राचान कतिस्थिन ट्रेंग मध्य । ভিজ্ঞাসায় মুনিবর কহিলেন তথা। इहेम नर्लेडि मह ग्रामिक कथा। পুরোহিতে বলিলেন সভাস্থ দকলে। দর্ব্ব নরে পরিক্রি মুনীত্র কৌপলে। ख्द्र बार्खाक्य मृथ शक्ति महा सम। গিরিশ্রহা মধ্যে দিংহ প্রবেশে বেমন। দেই রূপ স্বগৃহে নৃপ্তি প্রবেশন। অতি উচ্চ অগ্ৰভাগ প্ৰেমদা শোভন। मह्द्य कर्न जूना मृशिक करन। নয়েক্স গমনে শোভা করিল ধারণ। ভারা মধ্যে শশী যথা অভি লোভাকর रमहे कुल नाडी भूग मस्या नदायह ॥ त्रामात्रल অयोधात्र जृष्टीवाथा मर्ग। রামাভিষেক উচ্চোগ শুন সাধুবর্ণ ॥ ७ मर्गह।

ভাষু ত্রিপদী।
বিশিষ্ট গমনে, নরেক্র ভবনে,
সংঘত সুমাত রাম।
পান্ত্রীসহকারে, যান নিজাগারে,
শ্রীসহ বেমন ভাষা।

ঘুতপাত্র শিরে, যান ধীরে ধীরে, वंश विभि उथा करि। দেহতা উদ্দেশে, রাম আজারদে, অনলে ডোবিলা হরি 🛚 শেষ সৃত হোমে, রক্ষা অমূক্রমে, সেই মৃত করি পান। নিজ হিড কর, ভাবি রখুবর, পরে নারারণ ধানি। मीर्च मर्जामत्म, ताम मीला मत्म, নিয়ত মান্স ভরে। कतिया भयूब. बद्रद्य बस्पन. हिल्लम विक् धरह । রাত্রি এক য়াম, অবস্থিত রাম, ্জাগিয়া জানকী সহ। অধান্ধার যুক্ত, বধা উপযুক্ত, कतिला नकल भृहा পরে শুভ বানী, শ্রবণ কাহিনী, দূত বন্দিগণ স্থানে। প্রভাত উচ্চোগে, রবি শুভবোগে, शृक्व मन्त्रा उभामत्य ॥ मञ्ज स्त्रल कति, जूडे कति हति, প্রণতি জীমধ্সদৰে। विणिष्ठ देशन, क्रिका थात्रन, প্রাইকা বিজগণে ॥ পুণ্যাছ ঘোষণ, গভীর নিম্বন, ভূৰ্য্য হোৰ বিদিশ্ৰিত। कारवाशा नगत, शतिः शूर्व अहः বেদধনি সম্বিত্য 🐃 🚶

भारक प्रमुक्तकः, , जेलाव न नतः ্ প্রের্মী সহিত তথা। चारताका श्रम, मर्क कर मृत् यक्रम निषम पथा । প্রবাসী যত, হয়ো পরি আড, वार्थाक्टमान्य नय । রমানী প্রভাতে, নরেজসভাতে, শোষ্ঠা কদিবেন সব এ জাপন আপন, সমত ভবন, থাব প্রতি মাহা ভার। नत्त्रक जन्दान, त्यक्षेत्रहत्न, সমতনে পরিস্কার 🖟 इकुन्मर्थ भूरथ, दिख करव तरथ, মৰ অট্টালিকোপরে। পানীশ ভবদে, जुसम्ब स्थान, পৰিক গাৰিকাগারে। कृष्ट्रेश क्रवटन, शूर्व ब्रहास्त्रत्न, अंडि जूरपोडन छया। नमक गळांच, नृत्य श्वांकांक, शक्तिशूर्व रूप पदा । मम्बाग प्रम्, त्यां प्रम कर्या. हिन अस्तिका क्षापास । वर देक बच्च, दलकाकक प्रका TIME TO STATE OF THE PARTY OF T यकि देशका, नश्चांश्वांश्वास्त्र, भरकारक उभका खाँच। मानाहिक भरते, ककामि धानरहे, পুরী অভি শোভা পার।

अवस्था मर्खक, गुन्छ शांत्रक. मुख्दत कतिदङ्गाम । क्वंदूर्व कडि, द्वि कन गरि, একলে বুলাৰ মান। करा वस ६०, उथाव छवन, द्यान सारन मुगमासा: चुनक्रका शांथा, क्लाबाख जबक्य. मन्ज भन्न विद्यास वांमाक्तिरवहत्न, करत्र श्रुष्ट संस्कृ अन्दर शृह हसात । गोंगा रस्डड, मरव कीफू। भन्न, अक्षांक भरनांक्रत ॥ कितारम चकीहे, मन सहे सहे. भेत्रण्यंत्र कट्ट कथा। भूष्ण डेलहांह, कहिया संस्थात. पूर्ण सम दोश कथा। श्रुशंव नियान, अंडि शैक्षित्राम, পুৰবালি ফুড্জামী । वक्तित्रवालंक्क, तथा मरसाइत श्रुमान्द्रम धकावाति । क्षुवाम काल, जी राक गण्यान, 🕆 🗤 गील वृष्णाङ्गाङ कंटल । अंकि तथा। बारत, शूत कामकारत, ाः पूत्रवामी समाइदक्षे व्यक्तिका योगहरू, दक्षायोगहरू जाही, 🚧 भेषा त्रात् प्रचितिक 🕍 नर्स नह राम, रहेता गोनरम प्राकितिका

े हें इरह बंबरह, अंडो याचा करेंहे. পঙ্গলর প্রকাশন। िमामरव धानश्हम, मञ्ज्ञ अध्वर्धन, দশার্থ মহাজন । নূপ মহাশহ, সংগালণ নর, त्रष् कूला कुकाधता। ু আৰু সম কৃতী, জানিয়া সুকৃতি, বংশুধার নৃপার । सकरत मिनिष्ठ, 'एका सम्बीख, ्रापता अ कृति स्टान। तादक् ब ताटक, श्रीवाम बेमार्ट्या. े भौजिरचमें भूगावीन्। ্রাম মহীপতি, ক্রুমা নত্রতি, तकः कतिरवन कुषा। विया हरक हरक नुह भूति भूति। कार नाका कि कारह मन ॥ अभा प्रकृतिक, दिशाम् भन्नल. द्राप्य सन्ध्र करकारह । चार्या वध्यम, मयान मक्य, লাজ্সম সেহ্কর। শ্বতি সুশীতল, বেষন সম্প, ं नाम मरशामा भग। काषा जवांकात्त्र, त्महे अधूमारतः त्वंहकाती महासन । क्षांत्रत सद्ध्यं, 中间有效 型料, ं अधिकें बारकक रणस्य वाहात ध्येमहिन, जोन व्यविवादन जासब नाइका ल्यार ।

आयता दम्सित् क्या अहे गर, পুরবানি ভন কর। कर्त्न भड़क्लाहरू समाना निगछत्र, मकरम विभिन्न रूग । শুনিয়া বৃত্তান্ত, দেখিতে একান্ত, আসে ভান পদ ভান। बानस मिरमानी, बार्याचा श्रदिन **मिटल तामोक्टिय**हन ॥ বহু জনতায়, কলবুৰ ভাগ, क्षणत्यास्य क्षणमिति : कारमंत्रा महत्र, शर्क मनवर, डेम्ट्र यथा डेम्बि জল সম কলু, ধনি সুফোৰল, लाय क्लाइत मध् माशक शिक्षित अपि मरनावम, ्रक्षिय मध्य उथा। কান্ড অবেশ্যায়, কান্ড অক্ট্রোব্যার, ्रभुद्र (गांच) चृतिशाम । थाम्छ धारन, कार्य धारन, ः तम मर्ग ममोधान ॥ े के लिए संबंध ।

শীরার।
অনন্তরে ইকাকেরীর খল বুদ্ধি দাসী।
পুর পরিচারিকা হিভার্থ অভিলাবী॥
সংহাঢ়া আক্রঢ়া অউালিকোপরি বেই
সেইকালে দেবিল রশ্বিম রশ্ব এই॥

अयान जीवासाराश जी मही त्राती। अविविक ममुगाब समूच्छ्य कति ॥ विवित प्रस्कीयमाना प्रशासिक हिन। রঞ্জিত ধবল **একে আক্রিকা** । ব্ৰুদ্ৰথ প্ৰধার সূত্ৰাত নক্ষা त्रजन भरवूक गाना स्थान कारण मुन्तत कुमूम हात मिष्टे छवा करता धिमगरन जनक्षा भूती मदमार्दत । क्टे भूडे नवाकीर्व जस्मधा नगत। হক্তি অস **এবগণে** অতি লোভাকর॥ विकि केन बस्तव ही खनाक् माण्डी। **इरात पृतिक नत मूप्तिका नाटी** : নিকট্বা বয়স্থা নিকটে আমি কয়। क्र श**ाँके कि एक्ट्र श**त्रमानस्मानग्र ॥ कि निमिष्क बहै हिस भूत नजन। কি পৰিতে উত্তত নূপতি মহাজন । পুরক্র প্রিয় এড কি কর্ম আচারে। अकुर कर कर कर अज सर्वा नरत ॥ विरमस्ड अविज्ञ कीतांग स्वनी। धानाध्मर्धात्रजा हकन काणन निमनी ॥ कुलात बहरम शाबी हर्यमूण हम। এ। करिएक प्रभूषा ध्यादम कमा द्या अभिनी। वीवतारक का के सुरु तथ् प्रश्न मनि॥ করিছেৰ গুণাকর হামে অভিবেক। **१३ व्योधकामत मानित्व श्रीकर ।** वहे जिल और जारह गर्स श्रद्धा सम। यम अकिताम जात्का जाका। चिटका 🏗

वाउवर वामकृष्ट। शूर छात्म भूता। र्गमुका बाम गांछ। कोमला। मुन्दबी धनिया वादीत मृत्य चित्र वहन । मत्माभरता मेर्ब जार अस्त्रिम उथना महे अक्रेलिका बहानियत स्टेन्ड 💒 व्यवछीर्ना हत्या कुला जीनन ब्रिटिं । আরক নয়ন কোলে উত্তালে তালিতা ছিল পুর্বেষ রাম বাকে। অভান্ত নিশিত।। त्महे गत अग्रदन चत्र शतिकान। कान अवतात वाम भेट्य अवन्। वीमशंक क्षालंश कतिना त्रध्यति। रेश्ति जोट्य , बाहर : कुछा भाइया अवनी १ त्वार्शिंगका भक्ता भागित्रा भागभक्ति। उदा मही गभा ताम विभाज तमिल : टेक्टक्की मनीएन करह मृत्काक रहन। उठे गुर्ह**्मिकार**ए कि का धर्मन । যোরভর তম ভব সহীপে ভাগত। हरेरव जनभागिका बाह्यिका है। विकन दर्भावाश उर्व मिथा किसान। चलल हुन्। बार्ल नय हत्त शान । रेगम ननी मुखि छूमा कि विछिष्टि खोए। अस्ति मोडाश उत् नद्द द्वित्रहात्र ॥ ছদ্য ভেদৰ বাদ্য পর্য সমান। मानी मूट्य खराज रेकरक्त्री मंदर मान ह क्रूबि श्रीमिनी कुछ। त्रतिमा उत्भन् । राज्य कहिएक पूर्विक कड़ान , श्राद्धमा । गक्रत करा देवन वरि क्यांशक्री कि मण्ड मर्गन छनित मीखनाई।

रिका बहुमा ट्डाटर (मधिका जुन्दि । অতি সুঃবি ীর প্রায় অনুমান করি। मक्रभी मानिली वांका उरलहा विवादन। रैकरक्षी अवस्त स्थवता करह बारण। विश्वी दिशाम सर्गात्र श्रीअन्तार । किर्देशी खिदारम एउम गोमना डास्डि । আমন্তব্য সকল কি দেখ দেবি আর। করিদেন সম্প্রতি নুগতি অবিচার। मभत्रथ यत्नारथ तामराका श्रामि। অপার দাগরে তর এ সুখ ময়াপ্তি : देखक्षा क्षेत्रा अहे जनरम मछाति। আনিদান ভোষার সমিধি শীন্তগতি। ভোমার দুঃখেতে দুঃখ আমার অগার। ভোমার বুদ্ধিতে পুরি নিশ্চর আগার। ্পতিমাত্র প্রবাদ কাছুন। হিত নর। भक्त छव मभद्रश्र श्रामित्व निक्तर्रे ताचिम्बर् कार्यान कार्या कार्यान मर्भ त्मर्के जी मिन्द्र स्तर्के जाता है भी । मंर्न किया गाउँ यहि करन नित्रीकत। অপকার তাহার সে কলিনে তৎকণ। পেই রূপ সপুত্রে হইলে তুমি তথা। ताका मनत्र कार्या काथ हीना रशा মিধ্যাবাদী শাপাচার স্পতি হইছে। वारकार मनक रेजा चन्न महिएउ॥ ছুমি ছতি মুখা সভী শিশু বুদ্ধি তব। संग भित्रकार हो छग दियों कि कर। ता वंश्वी पुरुष्णा भावि साम गणि। बर्द्धिक कि देक्ट्र विशि क्षेत्रणया यहि॥

धर्मवामी मिट्टेजनी माना भारति । পথরে কি ভাছে তার ভানদা প্রকৃতি। व्यक्तव विकास कार्य मार्थ । উপকার দ্রান্তি বিদ্যান স্বংগ্রের অনর্থে 🛭 কৌশল ক্রেড অর্থে করিলাইনাজন।। **यहेबा छोपनियुक्ता टंडायाटड तक्ष्मा** : বন্ধ কুলে ভরতে করিয়া প্রস্থাপন निषक्षेत्र शिहारम शिद्यम हास्त्रवन् । खासकान अहे कारन करें। क्द प्राचि मङ्गात जाश राहिनेत्र । পুজ্র মই আপনাকে রাখ জীগময়ে। व्यागांत यकता पाश करिल किनए। त्त्रहे कर्फ कर गुड़ा दिंग अल्ब्रुश्न রামে যাতে অভিবিক্ত না করেঁ। ভূগ। नशरी ट्यामाह स्म कोमला सुमर्शीमा। निर्व ना अन्न छोड़ोरक हरें एउ नके मा মন্থরার বচন গুনিফা রাণী সতী ৷ ্ছানন্দে হইলা পূর্ন পরিস্থপ্তী অতি॥ শরীর হইতে মুক্ত করি আভরণ। কুজাকে পারিতোধিক দিলেন তৎক্ষণ।। श्रीिक धन श्राम कतिया श्रहिष्ठा। কৈকেয়ী মন্থরা প্রতি কহিলা সুপ্রীতা। भइता त्य दर्कु जूनि मत्क्विति योगोत । বাঞ্জিত আখান আসি করিলে প্রচার ু ইহার নিমিক্ত প্রীতি জনক ভূষণ ৷ कतिमान श्रीजियुका रहेगा अर्शन ॥ ब्राध्य कि छहटा थामि ना आमि विरम्प । क्षारे रहे के खित्र शाम सानित्द जाराम ।

লেই রামে রাছে রাজা অভিবিজ পর। কি আছে অধিক আর নম প্রিয় কর। ্ছাঃ মৃত গুণাবিত জীৱাম উদার। বিক্রমে কেশরী রাক্ষ হইবে তাহার। হামায়ণে অযোধায় অযোধ্য আখ্যান ! बच्छा तम्दन शक मर्श नबाधान ॥

> ल मर्गहा किश्री।

जन्याय कहिएक् वहन। রামরাজ্য খণ্ডন মনন ॥ उपदृष्ट ए अराज, श्रुमक (कर महाल') লপণ্ডিত। ভূমি অতিশয়। कि कहित मा तुस विरम् দংশন করুত মর্পে, হতা হও ভূমি দর্পে, विठि गृहा शिल्ड भामिनी । ৰিপরীত অর্থামূভাবিনী। अ वर्ष लो कर भरन कछू। भारतक विवय कर्षा, कड़े हिना अब्ब शर्मा. कड़े भारत विभागन शकु। अञ्भव खन मिंह, हर्देश दक्त पूर्विह, এ মন্তির প্রেডি করি,শোক। নে দুৰ্ঘতি কি আতি কি লোক।

बहे हम अञ्चत, ब वृति जानही स्व পূৰ্বে ছিল নঙ্গোপনে অতি। मुखा इतन अरमाशाय, खारवण कतिल होत्रे, তৰ মৃত্যু হেতু ভূতা গভী ! श्रीतारमण्ड जूनिक्छ, उत्तर्छत्र महा सह रेहा हिन्ता कति मना व्यापि। অঞ্চন্ত ভাষ্টা, বিশ্বঃ নালিন্ত গ্ৰা, আনিয়াছি এ কন্ত আগামি खनिया रेकरकती छेक, जूबन कतिया पूक, गुल्मा कोमना। हानी, जाव जांध कति मानि, যার পুত্র হবে অভিবিক্ত। वस्ता क् भीन हा मानी, दातस्रात अञ्चितानी, दर्शवताटका अधितास, भूगारवाटन बूददास, কুত সুমন্ত্র অভিরিক্ত। यात्र छत मूच रहात्र, तूल ना कि स्नानि द्वात्र, निक প्रक्षन। व्हेश होना। শোক পারাবারে ডুব,গেল না অজ্ঞান তব, কৌশল্যার মহাক্ষির, সন্তান,বৃদ্ধিতে 📆 यात वरण तपूर्वरण स्रा ভূমি হবে তার দাসী,রহিবে শুনিতে ইপিক সেই অন্ত ভাবি তব ছানে। पूर्णमा वृक्ति विशीना, ना २३ मानरम भूगा, जूबि जाकि वृक्ति शीना, रहेरद जाकार हीना, जार्थवीनां नर्स हत्व गांत । रहेत्व बांजना माछ, जधाठ महर्व छात, श्रीमजी हहेत्व अठि, त्रामभूषी मीछा मडी, मरा किमली माञ्चा शहर। उद दश नाहीयनि, श्रीश मार्क पूर्णियी, व्ययान्य अवन्य त्रात पात कृषि कार बहे महन, आमि कलिय बहरन, उत होटन शांकि लाए श्राहान व मिक छामात क्षिकि, इर्ब वृक्ति करत थिकि, चाम वानि केव भाग, कता है अस्थात सम आमात्र कि सारह साह ताए। i

कृषि मासैबाष् महन, श्रीति वृक्त प्रायश्रद्धन, किसारअकृषिक गानी, गत्रितार व्यवकारानी, धनःमा नर्समा का जाता वांचवांनी करिएइन मात्र । भूव्यनंश्मा कतिरहन तानी। में चरान एठि शर्मस्थानी ॥ জীরাম কুলের জেই, সকল সুভের জেই, যৌবরাজ্যে তারি অধিকার। त्नह (बाक बाज्यात, वित्रकारी निक्रमान, পিত সম রক্ষক সবার ৷ त्नेरे मध्ये प्रारुगत्न, मधान लालान अल कतिरवरू मृश्चित्र वर्षन विश्नुत्व कोणणा छात्रि,होन मम अस्ताती, पद्य करते जागाँक भूकन ॥ राजीवालांहन, मकरण नम मर्भन, गरियत अल्ड यात गारे। वृश्चित्र तारमत कर, मोहि करत त्यांन ताम जारह दश्य कमालि मा हाई। না কর না কর তাপ, কর দাসী ভভালাপ, बीतामाजित्सक करे मछ। ৰৰ শভাভৱে পৱে,বাৰ দাৰাভোগান্তরে व्यक्तिकारी कर्रेटन करणा नंत्र देशीय तांचा, शासिट हरव लोकार्या, रत्रण जाराचा कत छात्र। खत्राजत असूनिया सामा श्रव कारा, मगामरम् जामम् द्रामात्र ।

ररेष निविच छात्र दक्ता। नक्तात अरे वानी, निठास करिना सानि, सनित्रा देकरकत्री वानी, पश्तानित सानिनी, न्धिनी तमें एक जीवा। मानी वाका शांतरत, वारवह क्षन शांकत, करल मीर्च उक्त वाम, देवर क्वीत क्षेत्रि जांव, भूनकीत जारन कविनाज। वैमाचा जारात ताथ, जानर मर छन्ताय, पूषि जनर्व र्शनिनी, जाजाना अछियानिनी, थाय उप त्वारा महि भड़ वशाध पृथ्य भीखारम, वन्त्र बन्ध छरम छरम, त्मय रूटन ट्यांगांत बस्कन। नि त्रील महेडिडमा, अरबाधारि क्य हा छ। नाहि देशी भार ऐकारण ! निवास बाका विकास, हरवे छवं यथ नान, তার পুত্র শৌল ক্রে রাজা। चत्र**ः त्रांमात्रः भूषः, व्**रतः त्रा**करः महाछ**, इक्टिन ना रहेगा नगसा। रोकांत वह गराम, वरण कि ब्रोक्स भाव, श्रिक्षेत्र नर् कि छात्रिति। चतिक मस्ति इरण, तांचकूरम ताहे च्राण, अरक तांका सानित मानिनि। नकरण बांचा चांशन, कविरम मृशक्तिन, অভান্ত অনিষ্ট ঘটে ভার। ৰত এৰ জ্যাইসুডে, নাজ্য নিতে চিত্তপুতে, हाका उद्ध कशाकरक लाग । (क) इ का कि का देखें है, जाना नुबन्ह (का है, विकासित क्षेत्र अक सदन । तिरेखा है बाका जाती, वृक्ताका शतिकाती, त्रीचा रुप भागम मन्यरम ।

कामवरण मह्दानरत,किया विभारतप्रवरत, अविनीक्मात मके क्वीआं अणि छैतः नाहि करतं रम बोका श्रमान। भूका ना भारत कितान। ताष्ट्रवरण क्ट्रेट सूमृत विवासी सर्वामा स्वतागृह । পোলাত হইতে বহিষ্কৃত। ণর শর হিংসা ধর্মাত্রিত। मोजाज कुछाथि नारे,विवानी चटनक हाई. ভোষার এ ক্ষেমন বিজার। সপদ্মীর বৃদ্ধির বিকার ধ (एन हेक्। (कर कर धनी। व्यक्षें इस्त मधुम्रवि ॥ क्राइटिय स्नाजित्व निक्ता। ্তপা হতে জনত নিলয়। नियं गयक बात, अनुताश वृक्ति छात, मर्श रुक् अछिनिन, ताम माछ। मृत्य हीन, कृषि स्विवि कत्र विस्कृतना । शतकात उक्त पृष्टे करा ॥

मर्जाकांक विकल्ड विरूप । अहेरहजू कि पूर्णाश, जरु मा हरत रगाश, जिल्लान त्रमुतीत, जन्मन विषद्य हिन कर्माह ना कतिरवन रहर ह मर्खमा खनाथ आह, भूथ हीन द्रव डांब, बिहाम छहाछ मछि, हिएमा द्वर हरत बहि हेहाटण मध्यम किছ नाई वह विवजारह क्रज, विज निक वर्ष पूछ, जत्राङ कति चताम, आनाहेरड आरम्भाग সুমুক্তি ভোগাবে বলি ভাই। कतिया अर्थ जिल्ला, सारे जारे त्याराता, अथवा जन सकत, आवान करूक वस भीखगिष दृष्ट्रित मन्छ। এক গর্মে জাত হত, এক জবে। ইঞ্ছাপিত। জ্ঞাতি পক্ষ প্রিরাধের, দেখিবৃদ্ধি বিষয়ের अनुवामी ब्रहिस्य मक्त ॥ यि धनी उप मूछ, हम भिक् तांक्यूट পিতৃ ধর্ম করিয়া আশ্রয়। उक्क छ ठालिडायामि,यामारकनामानकृषि, न्रदह उठिउ न्ड, मना ककू अन शृंड, श्रीतारमञ्जलिक निक्या ना कतिया अनिधान, कतिरव अरहा भान, अधि हीन वृक्ति भीन, वर्ष हीन अछि भीन, किटम हरव कीवन शांतन। कोममानिम्म वह, इहेरक द हारकाश्वत, होन अछ ध्वांश्विष्ठ, मर्वरणाक अनुमछ विट्नबंधः स्वित्त कात्रव । जतराजत तमाखत्र, किया थावि एक्। छत्र, जताज माठक मम, मृशस्य श्रीतपृत्य, রাম অভিশর বলবান। वानक कान हरें दि, माकून करवाजिए, जेशासित कर कान, बावक सञ्चान सान, ছরা করি কর পরিব্রাণ । তোমার দৌভাঞ্চ তিরন্ধ তা गन्त्रन ताथवालिक, त्राम कात व्यक्तक, मर्सेश मनकी बाव, भूटक हटन बाकाकाक, कि रुकु ना कतिरव देवनिया।

প্রার ৷

৯ সূর্বাহ**ী** :

यस्त्रांत रहत्न रेक्ट्क्क्की तां अतांनी : निश्राम अस्मिश পরে কহিছেন বানী मक्ष क्षा कहिएक कुछा छनवडी। সদা জানি তৰ ভক্তি আগ্ৰাপ্ৰতি অতি : ৰা দেখি উপায় সৰি কি আছে এখন। পিত রাজা গ্রাপ্ত হয় আমার নন্দন চ कि बारह क्षरण तम रह महरत तम। অনুরক্ত পিতৃ ভক্ত এরাম প্রবল য়ানে অভগত নাজা হাম ওণবাম। প্রাণাধিক প্রিয়ত্য জোঃ সুসন্তান । ৰে মুত ব্যৰ্থ পুত কৰি পরিভাগ। ভরতের অভিবেকে হবে অনুরাগ। रिशास्त्र कि बार्क्ण ममृग कारन। वकातल बारम बामा शाहारेटा वन । रेक्टक्पीय मेरे सांधी कृतिया अरन्। मकता मधुतकारम क्षेत्रक उपन ॥

. कुरुनिङ कर्ण विरुद्ध कूमद्री जांडाय ॥ বদি দতি অনুষ্ঠি আমাপ্রতি কর। এখনি অনৰ্থ স্বাৰ্থ বাক্য যদি ধর। ভরতে রাজ্যাভিষিক করেন ভূপতি। শ্রীরামে পাঠান বনে ছতি শীগুগতি॥ क्षेत्रप्त पछि शमि तास्तानी उपा । नयन रहरेज ताब्दी देखाः दंशन । भष्डातालीं ने निहेंगा वर्डन । কহ কর্ মন্থ্যে অপ্রান্ত মতিমতি। কি উপা**রে** ভরত হ**ই**তে রাজাপতি। श्रीताम विद्याम द्वारका कानत्व त्यस्त्म । कर भी प्र मर्भग स्ट्रिक उलाम्भ । किरकेशी वरस्य वानी श्रानिशा भाषिनी। होन पुत्र एक कुछा करह मन वानी ॥ পরি হর পরিভাপ নরেজ্ঞ নন্দিনী। তব প্রিন্ন প্রিচন স্থাবহ বাণী ॥ শ্রবণ কর সুন্দরি উপান্নের সার। যে উপারে রাজ্য পাবে ভরত কুমার॥ পূৰ্বে এই প্ৰিয় কথা আছি পরিকত। দেবাসূর সংখাম হইলে মহান্ত 🛭 व्यवस् ममदा भदीशिष्ठ भुद्धामतः। गुक रहेजू उर मार्थ आर्थना कदशत ॥ সময়েতে নিমন্ত্রিত নৃশ দশরণ। व्यापा रहेरक त्रव वाम वर्ष वर्ष मेक्टिन मधकां छोड़ि कविना शमन। বৈষ্ণয়ন্ত নামে পুর পরম শোভন॥

দিতিমৃত সর্থর মায়িক মহাবীর। শক্র সহ সংগ্রাম সে করিল গভীর ॥ দেব সন্ধ সহ শক্ত তাহে পরাজিত। **म्हिर्मात नगरत इहेला ग्रहा छी** ॥ মহারাজ রাঘব লাঘব করি ভারে। জিতশক্র নামে খ্যাত হইলা সংসারে ৷ অযোধ্যার উপনীত কোশলাধিপতি। সমরে তাঁহার অঙ্গ ক্ষত হয় অতি 🖟 অঙ্গুলির পীড়ায় পীড়িত অতিশয়। সেইব্ৰণ নিবারণ তব কার্ব্যে হয়॥ স্বাস্থ্যলাভে পরিতৃষ্ট পরে নরেশ্বর। **७९काटन खामारक मित्र एम पृष्टे तत्र ॥** তোমার কি ইচ্ছা যায় কহ কহ সতি। मिरे वह मिर এই कशिना नुशिष्ठ ॥ লইব বলিয়া বর না লইলে তুমি। অভাপিও মনে তাহা রাখিয়াছি আমি। করাইয়। ভূপতিকে শ্বরণ কথন। বর চাহ মহীনাথে কৈকেয়ি এখন ॥ ভরতের অভিবেক ঞীরামের বন। যাবৎ আচতুৰ্দ্দশ বৰ্ষ সমাপন ! কোপ করি নৃপবরে ক্রোধার্গারে যাও। পরিহরি শধা ধদি সুমন্ত্রণা চাও । मिना रूरेया जानी धतनी मंयूरन। कतिरवं ना नितीक्षण ताकारक नगरन ॥ না কহিবে কোন কণা নাথে রাজরাণি। অনাধার প্রায় দুঃখ হদয়েতে মানি। मिरे इत्य भग्नत नग्नत कि पृथ । र्रेदन पृथ्विष्ठ ना ভावित्रा विक्रश ॥

শীজগতি সাধিবেন রাজা সমূচিত। করিবেন জিজাসা মানস গত প্রীত। ইহাতে সংশয় নাই শুন গুণবৃতি। ভোমার নিমিত্ত অতি ব্যাকুল ভূপতি॥ যদিও এ রাজলক্ষী হর পরিতার। তথাপি তোমার প্রতি অতি অনুরাম। মণি মুক্তা স্বৰ্ণ রক্ত যত রাশি রাশি। ভূপতি বিবিধ ধন দানে অভিলাধী। তাহে তুমি কদাচ না করিবে মানস। কদাপিও কোন ধনে ন। হইবে বশ। যভাপি করেন সেই বর অঙ্গীকার। করিবেন সভা ধর্মা দেখিয়া স্বীকার॥ প্রার্থনা করিবে নাথে রাম বনবাস। চতুদ্দিশ বর্ষ সীমা প্রথম প্রকাশ 🛚 দিতীয় এ যৌবরা**ভে** ভর**ত স্থাপন।** যে বর আপনি পূর্বের দিয়াছ রাজন। **म्हिन्स मध्याम मात्रन कताहरत ।** त्म हे वत पाउ विन नति खा बाहिता। অগ্রে অঙ্গীকার নৃপ করিলে তখন। যাচিবে ভরতে রাজ্ঞ রামচক্রেবন ! এ কর্ম হইলে সিদ্ধ ভরত একন। रहेरव कन्मान मुक श्रीतारमत वन ॥ অকন্টকে রাজ্ঞ প্রাপ্ত হবে তব সূত। কোপাগারে প্রবেশ করহ দেবি জ্বত। যে কালে কাকুৎছ পুনঃ বনবাস পরে। আসিবেন পুনর্কার অবোধ্যা নগরে 🛭 বহুকাল গতে তাহে ভরত কুমার। वक्तमृण रूटव ताम कि कतिदव आहि।

অনেক মনুষ্য হবে ভরত্তের বশ। वस् धन जक्षत्र स्ट्रेंटव नामी वंभाव ॥ সরল স্বভাব তব কর অমুভব। আপনার সৌভাষ্ট চিন্তিয়া দেখ সব 🛚 না হইয়া তব প্রতি নূপতিকুপিত। খাকিবেন তব ক্রোধে হইরা বিনীত॥ অজিবেন তব হেতু ভূপতি জীবন। অশক্ত ভোমার বাক্য করিতে লব্দন # প্রাপ্ত কার্ল সুন্দরি সাধ্য পরিহর। রাজা বলি রাজরাণি ত্রাস নাহি কর। রামে রাজ অভিবেক সঙ্কপা রাজার। নিবর্জ করিয়া সিদ্ধি সাধ আপনারণ जनर्थ ভাবিয়া अर्थ मञ्जा रहता। অভিশাপে পাপ কর্ম না বুরিলা মনে ॥ বালাকালে কেঁকয় নগরে গুণবতী। মৰ্থ এক ব্ৰাহ্মণ সমীপে গিয়া সতী ॥ व्यमुद्रा कतिमा छाई इहेम कातन। অভিশাপ দিলা পরে মহান্ধা ব্রাহ্মণ। রূপমদে মন্ত ভাবে নিন্দিলে আমারে। এই হেডু ডব নিন্দা হইবে সংসারে॥ পাইবে কুৎসিত কর্ম কল সমূচিত। हरेत विशर्श उंव पूर्वत्व विषिठ ॥ সেই শাপে ছন্নমতি পাপিনীর বাণী। শ্রবণে দাসীর বংশ রহিলেন রাণী॥ **অভন্ত সভষ্টা তাহে মহ**রার প্রতি। আ**লিছন দৃ**ঢ়তর করি গুণবতী ॥ र्घार विस्तृत हिन्त करिएन वानी। নিতান্ত মন্থরা তুমি হিতৈবিণী জানি॥

मकल कहिंदूल मचा नाहि यम महत। পূর্ব্বে বোধ না হইল তোমার বচনে ॥ সুপণ্ডিতা সুচভুৱা ভূমি সর্ব্ধ কাল। করিলে উপায় চিন্তা বটে এই কাল। তব বাক্যে পূৰ্ব্ব বাক্য হইল মারণ। বর দান করিলেন ভুপতি যথন॥ দেবাসুর সংগ্রামে সংশয় গত প্রাণ। শরাঘাতে নিপীছিত নাহি পরিত্রাণ 🛭 মম অঙ্কে নিঃশঙ্কে রহিলা নপবর। অতি স্বেহে র**ক্ষোডরে রক্ষিত সম্বর** ॥ নিশ্চর আমার বল না হয় এমন। কি সাধা অবলা করি রাক্স বারণ। আমার পরমা বিভা বল ছিল ধনি। বিভার মহিমা কথা এন হিতৈৰিণি ॥ তোমার সমান প্রিয়া কে আছে আমার। হিত চিন্তা সর্ব্ব কাল প্রকাশে ভোমার॥ দরিতে ত্রাক্ষণ মূর্য ছিন্ন জীর্ণ বাস। পকু শাল দেখি তারে করি উপহাস। ভন্মাকিত ক্লম ভাব দেহ বৃদ্ধ তম। পৰিত লোগিত অঙ্গ মেধা ব্যতিক্ৰম ৷৷ কথার আভাস তায় বোধ নাহি হয়। ज्ञामा इरेन जात अस्टात मः नत्र ॥ হাস্যস্কা আমি তথা তথাচ ব্ৰাহ্মণ। প্ৰসন্ন হইয়া কছে মধ্র বচন। নৃপকন্থে তব প্রতি সূত্রীতি সুন্দর। কি করিব তব কর্ম বলহ সম্বর । অক্রোধ বিষ্ণেক্ত দেখি করি কুডাঞ্জলি। मङ्ग्र निक्टि शिन्ना अहे कथा विन ॥

जब्जान निश्मत वानी जन्मे क्रिशिनी। কিঞ্চিৎ অপর ভিকা নাহি দ্বিল মণি॥ আপনি আমার প্রতি পরিহর ক্রোধ। **क्षित्रम हरेल विक हत्व नक ता**ध्र। এই कथा जामात वहत रय उक्त। विवादत कलावत अठि वर्ष युक्त ॥ मिरे विश्वा जामारक विस्त्रज्ञ विना मानः त्व विश्वाच वाचिनाच नद्रत्स्वत्र व्यान ॥ क्रबाहेटल खरून भरून निवारन। मिल तुष्कि हिरेजिनिन अछ विलक्तन ॥ ষভাপি ধর্মান্তা রাম অতি গুণবান। সর্বাদা ভ্রাড় বৎসল জগতের প্রাণ॥ उषाठ পाইলে পৃথীপতিত্ব मन्भम। ঘটাইবে ভরতের অবস্থ বিপদ । মনুষ্যের রাজলক্ষী জানিবে সৃক্রি। वसु त्यर शतिनी मर्खन। ভत्रकती। कार्या कि अकार्या हेहा ना स्नानि विटमर। ভরত রক্ষার্থে ভূমি দিলে উপদেশ ॥ অবস্থ কর্ত্তব্যমম তোমার বচন। रि कर्म्म हहेर्द शूख छत्रछ त्राष्ट्रन ॥ কৈকেশ্লীর বাক্যে প্রীতি পাইয়া মন্থরা। প্রভাৱর করিতেছে হইয়া সম্বরা॥ আমার আদেশে হিত হৃদয়ে ধরিলে। আদেশ কারণ শ্রম সফল করিলে ॥ মম বাক্যে ভূমি সভী পুত্র হিত কর্ম। - नाधिवादत अछ रु नच्छा यथर्म ॥ কহিলাম আমি এই বাক্য মনোনীত। তব অমুরাগ হেডু চাহি তব হিত॥

পুজের প্রতীকা হেতৃ অবোগ্য বিলয়। প্রণতা দাসীরে কর ক্রপা অবসন্থ ॥ মম শিরে ভূষণ প্রদান কর রাণি। অলক্তা কর এই সন্থরার বাণী। व्यविधा कर्रक्षत अक्ष मर्श मर्शन । কৰি প্ৰোক্ত রামায়ণ শুন সাধ গণ II १ मर्ग । मघ जिलमी। পরিতৃষ্টা সতী, অতি শীব্রগতি, रहेन श्रामा जान। मुन्दत उष्ट्वन, खादन कुश्रम, করিলা কুজারে দান॥ উত্তরী বসন, উত্তম দর্শন, পরে দিলা মস্রায়। त्रेयः गरामा, श्रकूक्ष मुजामा, প্রশংসা করিলা ভার ॥ পরম হর্ষিতা, কেকর দহিতা, কুজারে কহিলা বাণী। তব माधु कर्म, तुष्कि मौिष्ठ धर्म, চির দিন আমি জানি। এই ধরাতলে, মানব মগুলে, বুদ্দিমতী তব সম। न (हिथ नम्रात, क्मल वहात, কৰ্ম সব মহন্তম। মম প্রতি ভক্তি, অসংখ্যের শক্তি, মম হিত বিহারিণী।

नियुक्त नियुष्ठ, यम कर्ण्य द्रष्ठ,

ভাবি কৰ্ম্ম বিচারিণী ॥

वांति नाहि जानि, नृश महामानी, এ कृष्टिम कर्म जाँत । · জানিয়া চেষ্টিত, যথা প্রতিষ্ঠিত, তুমি করিলেক্ষামার ! रहेग्रा पृश्चिनी, आफ् हिटेजिनिनी, কুব্জা কুক্নপা কুৎসিতা। বিক্লত বদনা, তবু সুলোচনা, পদ্মাননা প্রতিষ্টিতা ॥ সুদৃষ্ঠা সুন্দরী, অতু ক্লোদরী, আকণ্ঠ উন্নত কায়। নিতান্ত নিভুম, নহে উরোলম, কণ্ঠাবধি আছে তায়। অধঃ অপেকায়, উদর তোমায়, , শুনী সম শোভা করে। অঘন তোমার, নহে কদাকার, উন্নত মানস হরে॥ বসনাচ্চাদিত, রসনা জড়িত, তড়িত্সম শোভাকরে। ক্ষকা পদ হয়, আর অঞ্চয়, मीर्च कीन त्मां करता खक डिक्न धरा, साहिनी चलता, नीलायता मूनवीमा ! সাক্ষাতে আমার, গমনে তোমার, জ্ঞান হয় সুপ্রবীণা॥ টিডিভ কাগিনী, সমান গামিনী. ভামিনী কে বা এমন্। ঘাড়ে ৰুঁটী তুক্ত, যেম গিরি শৃক্ত, তথাপি **সে সূলক**ণ॥

মতি সমুদয়, ক্ষজ্ৰ বিভাচয়, योग्नायग्र मिहे कृत्व। তুমি বৃদ্ধিমতী, অতি ক্লপবতী, ना दुविया कुछा वटन। **এই इलে** আমি, स्नानि অন্তর্যামী, জানেন যেমন মনঃ। লও মুক্তাহার, অতি শোভাধার. স্থানি প্রতিজ্ঞা যেমন ॥ ভরত ভূপতি, হ্বে যবে সতি, রঘুপতি যাবে বন। জ্বসূ নদোখিত, সুবৰ্ণ শোভিত, নিশ্চিত যত ভূষণ॥ সমস্ত ভূষণে, ভূষিত তৎক্ষণে, করিব ভোমার কায়। नगरि छामात, जिलक विश्वात, কৰিব সুচিত্ৰ তায় দ इत्वं तात्, तू स्थ चलात्न, ्थामि मयस जव। নুগলি চন্দ্রে, পরম শোভনে, শোভিত করাব সব॥ शक रख शति, श्रेटम मुस्ती, भग अधहती हता। नित्रिय तहन, कश्चल नम्बन, मुधां १७ मिन तरव । সূহজ্জন মানে, অনিন্দিত সাজে, সর্বর্ভ মণে ভূষিতা। ममस मुम्बती, इराग्न अन्हती, করিবে সদা পৃঞ্জিতা।

আমার যেমন, চরণ চাপন, করে সহচরী গণে। ভূষণে ভূষিতা, তব অনুগতা, রহিবে সবে সেবনে ॥ কৈকেয়ী হইতে, আশ্বাস পাইতে, কহিছে পরে মন্থরা। না কর বিলম্ব, শুভ অবলম্ব, ভাবিনি ভব সময় यांग्र यपि खन । सक्त १८६ मन, কি খাছে কল্যানি বল । छेरेर प्रवि. ७७ कर्म छोरि, মহীপ মোহিতে চল গ গছরা বচন, করিয়া শ্রেবণ, ेकरकरी कति सीकातः পুত্ৰ রাজ হেতৃ, অভিলাধ মেড. भटन यहिला विस्तार ॥ মহামন, ন সুজালত শ্রেণী, ত্ৰন গ্ৰহ সৰ NO ity The करिशेष्णं ननः গিয়া ক্রোধাগাবে, সেভাগ্র সভাবে ভাগ্যবলে বলান্বিডা তপ্ত হেম প্রায়, সমুজ্জ্বল কায়, ক্রোধে যেন বিমর্ষিতা॥ কুক্তা বাক্য বশে, বঞ্চিতা সুরসে, পতিতা ধরণী তলে। মস্রার প্রতি, কহিলা ভারতী, তুমি গিয়া কোন ছলে।

আমি মৃতা.প্রায়, জানাবে রাজায়, • কহিবে বিশেষ বাণী। গেলে রাম বনে, পাই সুধ মনে, নত্বা মুক্তা সে জানি॥ ভরতেরে রাজ্ঞ, প্রদান স্বীকার্যা, করেন যদি ভূপতি। ধন আভরণ, করিব গ্রহণ, বসন ধারণ সভি॥ ত অলস্কার, এ নহে আমার, বনে না যাবত্যায়। কোন কর্মদৃত্তে, অভিষক্ত পুত্তে, না করিলে গো বরায়॥ রাম গেলে বনে, রাজসিংহাসনে, বিসিবে ভরত যবে। ভাজি ক্রোধাগার, বিমুক্তি আমার, কহিবে তবে সে হবে। নাগ্ কন্তা প্রায়, খাস সমুদায়, দীর্ঘণ পরিহরি। ভাতি উঞ্জরে, দহে কলেবর, ্হিলা স্বকার্য্য মারি॥ एक पृथ्य हाणि, शहर **সুখ** वामि, मानीरत मुमृषुं ভारत। কহিলা কৌশলে, কোপাগারে ছলে, দুর্বোধা মন্থরা পাশে। নিদারুণ বাণী, কহিয়া কল্যাণী, **ऍक्क्र**ण यर्ग पृत्रन । করিলেন ভাগ, নিজ অন্ত রাগ, বসন অপনাসন 🏽

অতি দীনা প্রায়, রাজরাণী তায়,
পতিতা ধরণী তলে।
তিমার্ত শশী, গ্রাসিল তামদী,
রবি যথা নতঃহলে।
আর্বে রামায়ণে, রাম নির্বাসনে,
অবোধ্যাকাণ্ড বিধান।
তাহে অষ্ট সর্গ, শুন সাধু বর্গ,
স্বর্গাপবর্গ নিদান।
৮ সর্গ।

পরার

রাম অভিবেচন করিয়া অনুমতি।
চলিলেন অন্তঃপুরে অফোধ্যা ভূপতি ॥
কৈকেরী আনন্দ হেতু শুভ সমাচার।
কহিবেন গ্রীরামের কল্যাণ আচার ॥
দেখিলেন গিরা তথা ভূমিতলে দতী।
শয়নে কৈকেরী অতি দুংখে দক্ষ মতি॥
দয়ামর দশরথ কোশলা ঈশর।
অতিশয় শোকাকুল দুংখিত অন্তর ॥
তাহে নূপ বৃদ্ধতম যুবতী বনিতা।
প্রোণাধিক প্রিয়তমা আদর গর্বিতা ॥
দুংখিত হইলা তাঁরে দেখিয়া নূপতি।
অশুভ সঙ্কপ্রবতী বিপরীতে মৃতি ॥
অনর্থের হেতু ভূত গহিতি বাঞ্জিতা।
অবথার্থ আকাঞ্জায় সদা অবস্থিতা॥

অভ্যন্ত উত্তর্গ্ধা ভাবে দেখি ধরাতলে। শর তপ্তা করিণী যেমন দৃঃখানলে॥ মহামত গজেজ নিকটে গিয়া তার। স্বেহে করে যে রূপ মার্জন অঙ্গভার॥ সেই রূপ স্বকরে আপনি ভূপ বর। ব্যক্তভাবে মার্ক্সন করিলা কলেবর ॥ এই বাক্য কহিলেন রাজা ধর্ম সেতু। সর্পিণী সমান খাস সঞ্চার কি হেতু॥ না জানি ডোমার প্রিয়ে ক্রোধের কারণ। কি হেতু উত্তপ্তা অতি কি দৃঃধ্ ধারণ ॥ অতি অপমানিতা মানিনি কিবা মৃশ। মম হেতু দৃঃবিতা কি কহ প্রিয়ে স্থল। मर्था मरक मधी किन धत्री भग्न। ध्नाम ध्नत अत्र तत्र विवर्कन ॥ मम हिन्द मिलनो देवकना हिन्द जाय। ভুত উপহতা বেন দেখি মৃতা প্রায়॥ বৰ্দ্তমান অনেকে অযোধ্যা বাসি বৈছ। বৈক্তিভোগী অনুরাগী আনি বল সভঃ॥ বলং ভামিনি ব্যামোহ কিবা তব। कतिरवन आखाध अकर्ण रेवछ मव ॥ কিবা তব প্রিয়কর্দ্ম অপ্রিয় কে করে। कि कतिरम श्रियमञ्च रहेरत मद्दत ॥ কিবা তব কল্যাণি অত্যন্ত প্রিয় নহে। আজ্ঞা অনুসারে সে কি অযোধ্যায় রহে॥ কে ভোমার অপমান করিল সুন্দরি। কেবা দিল অভিশাপ কহ সহচরি॥ কে এমন অবধ্য বধিতে ইন্ছা তারে। किवा वाञ्चा वधा करन मूक कतिवादत ।

काम् राकि निर्धत कतिरव धनी धनि। ধন লাভে অকিঞ্ন হইবে কে ধনী ॥ যে ধন আমার ধন সে ধন তোমার। সমুদার ধরাতল করত্ব আমার। পথী মধ্যে প্রিয়ে আমি রাজ রাজেশ্বর। স্মৃতি সমস্ত মহীশাসনে তৎপর 🏽 ধরাতলে বর রত্ব সমৃহের স্বামী। ষে তোমার মনোনীত বল দিব আমি। না কর না কর কোপ কর সমাধান / না পারি এমন কিছু নাহি বর্জুমান। বে তোমার অভিপ্রায় সমুদায় পারি। আপনার প্রানে প্রিয় যেবা প্রানেশ্বরি ॥ এই কথা যথা ত্লপ কহিলে ভূপতি। শয়ন হইতে শীব্র উঠিয়া যুবতী॥ পীডা দিতে পাপিনী ভর্ত্তার বক্ষঃহলে। কহিতে অপ্রিয় কথা কোপানলে জ্লে॥ নহি আমি নরপতি অভিমান দ্বিতা। করে নাহি কোন ব্যক্তি মান বিবৰ্জ্জিতা। কিন্তু মম অভীষ্ট স্বতন্ত্র নরেশ্বর। সেই প্রিয় তোমার কর্ত্ব্য নূপবর ॥ সকলি আপনি জান মনোগত যাহা। যভাপি কর্ত্তব্য হয় কর তবে তাহা। প্রথমে প্রতিজ্ঞা কর পূরাইবে আশ। তবে কহি ভোমাকে আমার অভিসাৰ॥ তব স্থানে প্রার্থনা করিব পরে বর। এই কথা শ্রবণ করিয়া মহীশ্বর॥ নারী মুখে নৃপতি নিঞ্ছ করি বোধ। বিনাশে প্রবৃত্ত মৃগ বেন পাশে রোধ 🏽

নিরস্তর প্রিয়-হিতে রত প্রিয়তরা। নিছা অমুব্রতা সতী সেবনে সম্বরা। मस्त्री मन्भुनी स्निनि निस्न मीमस्त्रिनी। कहिलन किरक्सी त नृश हुड़ायनि ॥ প্রিরতমে বিশ্চয় জানিবৈ মম মনঃ। তোমাপেকা প্রিয়তর নহে কোন জন # কেবল ত্রিলোক মধ্যে প্রিয়তম রাম। তদন্ত কেবল ভূমি চিভের বিশ্রাম। মনোগত তোমার বে হয় প্রাণ প্রিয়ে। তুর্বিব ভোমার মনঃ সেই ধন দিয়ে॥ অঞ্চে আসি আমার কৈকেন্নি কহ তাই। যাহা তুমি ভাল বাস অদেয় তো নাই। আপনার পূর্ণ বল কর নিরীক্ষণ। আকাজ্ঞার অস্থা না হবে কদাচন। সুহদের শপথ শপথ আপনার। সাধিব ভোমার প্রীতি প্রিয়ে সারোদ্ধার । পতি বাক্যে প্রমদা পাইয়া পরিতোব। আপনার হিতৈবি জানিয়া ভাজে রোব। যোরতর কঠোর অভান্ত কটুভাব। কহিলেন কৈকেয়ী পুরাবে অভিলাব ধর্মতঃ ধরণীপাল করিলা শপথ। বর দেও দয়াময় মম মনোরথ ! কহি আমি শক্রাদি সমত্ত সুরগণ। माक्ति ऋरु मर्खरम् रव कक्रन खर्ग । চক্রাদিভা আকাশ অপর গ্রহ দল। রজনী দিবস দিক্ দিকপাল সকল। जगज् जगजी नर गकर्स ताकन। নিশাচর সমস্ত चৰিবে তব ৰশঃ॥

कुछ वर्ग मृद्द यछ गृहदम्य भग। অন্তঃ প্রাণি সবে করুন শ্রবণ 🖟 ধৰ্মজ্ঞ আপনি সভাসন্ধ মহারাজ। ্বর দিতে আমাকৈ সমীপে অধিরাজ। কি কহেন মহীশ্বর অমর মন্তলী। मकला खावन कत हरांग्र कुछूहणी ॥ এই সব উক্তি করি কেকয় নন্দিনী। পুনর্বার নৃপ প্রতি কহিলেন বাণী॥ शृद्ध क्रिवामूत यूटक किट्न पूरे वह । সেই বর চাহি সভঃ অভ রঘ্বর ॥ এই যে জীরামে রাজ্য করিছ প্রদান। ইহা দান ভরতেরে প্রথম বিধান ॥' যৌবরাছে মম পুল্রে করহ স্থাপন। চীর চর্দ্ম জ্বটাধারী শ্রীরামের বন। চতলিশ বৎসর পর্যান্ত বন বাস। এই বরে আমার জানিদে অভিলাষ। যদি সভাপ্রতিজ্ঞ আপনি বিজ্ঞ বর। বনে রামে বিসর্জন করহ সম্বর॥ মম পুজ্র ভরতে রাজত্ব দেও ত্র্ণ। কৈকেয়ীর বাক্য শুনি নৃপ হদি চুর্ণ 🏽 ভয়ে সব রোম হর্ষ হইল রাজার। বাজী দৃষ্টে শীজ মৃগ যথা শীর্ণাকার॥ অবশ অবনী নাপ অভ্যন্ত দৃঃখিত। আত্মকাম হত প্রায় ধরায় পুঠিত। বিষম বাক্শল্যে সভঃ হৃদিদীৰ্ণ হয়। মহা মোহে অভিতৃত পীড়িত হৃদয়॥ বহুকাল বি**লম্বেতে চৈতন্ত পাই**য়া। ক্ষু নমতি মহীপতি শোকাৰ্ত্ত হইয়া।

আপনাকে বিক্লার করিয়া নরপতি। কহিলা দঃখিত চিত্তে কৈকেয়ীর প্রতি॥ রে দৃষ্টচরিত্রে মম কুল বিনাশিনি। নিষ্ঠ রা স্বভাবে কিবা ঘটালে পাপিনি # कि लाव करत्र हा ताम जव मनिधान। আমি বা কি করিয়াছি কহ বিভামানে ॥ কৌশলাায় অতিক্রম করিয়া শ্রীরাম। তব অনুরাগে অনুবর্তী অবিশ্রাম॥ অনর্থের হেতৃ তুমি কি জন্ম এ কর্ম। এবিষয়ে সমুভাতা যোগ্য নহে ধর্ম। তীক্ষবিষা সর্পিণীরে রাজপুত্রী জানি। আনিয়াছিলাম কুল নাশিতে আপনি॥ অভগত সর্বে লোক যে রামের গুণে। কি দোৰে সে প্রিয় সুত্রত পাঠাইব বনে। কৌশল্যা সুমিত্রা লক্ষ্মী কিন্তা ভাজিপ্রাণ। তথাপি তাজিতে নারি রাম গুণাধান ॥ প্রিয় পুত্র রাম দৃষ্টে হন্ত হয় মনঃ। ক্ষণমাত্র না দেখিলে হই অচেতন॥ ক্ষিতি বিনা নাহি হয় লোক অবস্থান। বারি বিনা নাহি হয় শদ্যের বিধান॥ मिहे क्रश विना जाम निथिण कांत्र। নাহি হয় দেহে মম জীবন ধারণ। এই বর পরিহর নিধুর নিশ্চয়। পাপিনি কেকয়ি তব ধরি পদ্ময়॥ প্রসন্ধা আমারে হও প্রিয় বলি প্রিয়া। এ কদৰ্য্য চিন্তা কেন পাপে চিত্ত দিয়া। সৎকুলে জ্বিয়া কেন নিদারুণ পণ। ভরতে জিজাসা কর এ কর্ম কেমন #

জীরামের প্রতি ইহা না হর্বে অক্তথা। কহিয়াছি পূর্বে আমি জীরামে এ কথা। শুন রাম গুণ ধাম তুমি জ্বেষ্ঠ সূত। শ্ৰীমান ধীমান পুজ বহু গুণ যুত। অতএব সমর্পিব অবোধ্যা সামাজ্ঞ। रुरेग्राट् शृद्ध खित्र बक्रश निर्धार्य। পরে আর পুনর্বার দারুণ বচন। কিন্ধপে বলিব কর অর্ণ্যে গমন ॥ এই ভয়ানক বাক্য করিয়া গ্রহণ। অরিষ্ট চিন্তিয়া রাজা হইলা বিমনঃ॥ वाा ख्वित सम्पर्ध यथा वनवान् वृष । কেক্য়ী নিকটে নূপ ভয়াৰ্ক্ত তাদুশ 🏻 লোকনাথ হইয়াও বিপত্তির ভয়ে। দারণ বেদনাযুক্ত বিপত্তি নিশ্চয়ে। হৃদয় বিদীর্ণ অতি শীর্ণ কলেবর। কেকয়ীর পদতলে পতিত কাতর॥ প্রসন্ধা আমারে হও দেবি এই কথা। বারস্বার বলিলেন কুদ্র লোক যথা। রামায়ণে অধোধ্যায় বরাভি যাচন। পয়ার প্রবন্ধে নব সর্গ সমাপন।

क मर्ग।

লখু ত্রিপদী।

ধরিয়া চরণ, অবোগ্য পতন, জ্রীরমুনন্দন বর। দেব লোক চ্যুড, পুণ্যান্তে অদ্ভূত, ব্যাতি বিশ্রুত পর॥

তথাচ নিষ্ট্রাঃ অতি ঘোর তরা, • চিভ ভেদ করী বাণী। वनीय पृथ्यमा, यहा खन्न श्रामा, কহিলা প্রদেশ্চ রাণী॥ তুমি দ্র্তিরত, সভা অমুগত, मचा वाही महा काल। महद मिकरि, कह रह खेकरि, त्म वांनी कि मिथा खान। তুমি বর ষয়, আমারে নিশ্চয়, করিয়াছ সম্প্রদান। পরে পুনর্ব্বার, একি অবিচার, ইহাতে না রহে মান। কৈকেয়ীর উক্ত, যথা উপযক্ত, বচন শ্রবণে ভূপ। ক্রোধে করি ভর, করিলা উত্তর, ন্পতি বিহ্বল রূপ। थर्र कृष्टिल, हिट्ड पृथ्य निल, रुरेल भक्त ममान। জানি ওণ গ্রাম, তব মনস্কাম, হইল পূৰ্ণ বিধান॥ মনুজ কুঞ্জর, রখু বংশ ব্র, त्रोमहळ शिलं वत्न। वारत यय श्रीन, जाना नगांधान, আনন্দ উন্নতি মনে। कहर वांगी, खक्र महा कांनी, বুহু জ্ঞাত বত জন। रक्कारम आभोरत, जिल्लामित পरत, কি হেডু জীৱামে বৰ॥

कहित कि कथा, अब्रुल अग्रथा, ना रहेरव कमाठन। रेककग्री कातर्त, मुखिय माधरन, িবনগভ হামধন ∦ তব বশে রহি, যুদি বছা কহি, शंत्रिया कहिरव मरव। মূর্থ মহীপতি, কামাতুর অতি, तमनी किञ्चत इरव॥ নারী বশীভূত, তার বাকো ক্ষত, প্রিয় পুত্র কুলপতি। অকারণে বনে, দিল রামধনে, দশরথ দুষ্টমতি॥ এই क्रथ रह, निन्ध पूछ पूँछः, कतिरवन माधुष्कन। ্হইলৈ নিন্দিত, মঙ্গল নিন্চিত, না হইবে কদাচন इंश् श्रद्धलात्क, घूशित्वन लात्क, নৃপতি স্ত্রীজ্ঞিত হেন্তু। योव बाष्ड्य बाम, मर्ख छन थाम. বঞ্চিত স্বধর্ম সেতু॥ আরো বলি আমি, পিতৃ ভক্তি গামী, श्रुत्ल भाषाहरल वरन। দুরাআ নামেতে, ভাষিবে জগতে, পরিহরি প্রিয় ধনে ॥ করিয়াছি ব্রত, ব্রহ্মচর্যা কত, श्कर्वाल मूरमवन। প্ৰাপ্তে সুখকাল, পুত্তে মহীপাল, ना करता श्रीहोर यन ॥

অজিয়া মিয়োগ, রামে বনে বোগ, মম ভোগ হৈলে পুৰ্ণ দেই অনুগ্ৰহ, এরপ নিগ্ৰহ, निवातन इस छुन्। মম আকাজ্জিত, মরণ উচিত, विधि कि करत घडेन। প্রীতি সুখাধান, প্রিয় গুণবান, भूटल भाषाहेव वन ॥ আমি মহাপাপ, কি রূপে আলাপ, করিব কেমন সুখে। शष्ट्र पूंछा दन, औत्रष्ट्र नस्मन, এ বাণী বলিব **সুখে**॥ निन्छ निष्ठश्न, निन्नग्न क्रमग्न, रहेव क्रीव समान। নারী পরাজিত, বিক্রম রহিত, বজ্জিত উল্লম দান॥ অপ্প বলাম্বিড, লোকে ভুচ্ছীক্লড, विकर यम প্রতি। অকীর্ত্তি অতুল, না পাইব কৃল, পরাভব ইহা অতি। मर्ख जन निमा, ना रहेव वमा, যথা পাপকারী জন। রাজেন্দ্র বিলাপে, সীন্তাপ আলাপে, অস্ত গত বিরোচন ॥ উপস্থিতা নিশা, শমন সদৃশা, অত্যন্ত ভয়দা প্রায়। मिर पात जना, तकनी मूखना, বৰ শত গত তায় ৷

मृतीर्च निश्वाम, मना वीक्षा क्लाम, मणत्रथ नृপवत्। করুণা বিলাপে, পুজ্র পরিতাপে, অতি আর্ত্ত কলেবর॥ উল্ল চকু করি, রাম মুখ অরি, হারে কৈকেয়ি প্রাপিনি। অসীম নিন্দিতে, হৃদয় সন্ধিতে, এ রপ কডু না জানি। করিয়া বাধিত, আমারে নিশ্চিত, রাজ্ঞ লোভে এ কি ভোর। चाचित जीतन, निक्त तहन, হয়ে তব সতা পর॥ হা হা পুজ্ৰ রাম, ভক্ত ধর্ম ধাম, গুরু ভক্তি পরায়ণ। কেমনে ভোমারে. বনে পরিহারে. রাখিব পাপ জীবন ॥ व्यामि श्रुनाहीन, विषश्च मिनन. निष्ठत भाषान आया হা হা মহা নিশা, না হইও ক্লশা, তুমি গেলে প্রাণ যায়॥ मर्ख कुछ थान, इतन निमान, তোমারে অপ্ললি করি। হৈওনা প্রভাতা, প্রাণে দিয়া ব্যথা. रहेग्रा कीवन व्यति॥ অথবা যামিনী, চপল গামিনী. এখনি সৃদুরে যাও। नितृ कि निघृंगा, এমন ललना, না দেখি শীজ্ৰ পোহাও॥

এ মহা পাপিনী, স্বপতি ঘাতিনী, এ রূপ বলিয়া কত। করিয়া বিলাপ, নিষ্কুর আলাপ, পুনশ্চ ক্লাবনে রত ক্লডাঞ্জর্লি করে, পুনন্প বরে, ধরি কেকয়ি চরণ। ভাজ বিসম্বাদ, কর সূপ্রসাদ, প্রেয়সি রাখ বচন। সাধি আমি অতি, বুদ্ধ ক্ষীণ মতি, দীন প্রতি কর দৃষ্টি। অনুগত জনে, প্রসন্ন বদনে, मर्भात ताथ a मृष्टि॥ रहेग्राष्ट्र जीठ, ठाहारठ भीड़िंठ, দাস তব বশ প্রিয়া। আশ্রিত এ জনে, আপনার গুণে, ত্রাণ কর আশা দিয়া॥ स्नानित्व निष्ठय, आभात क्रमग्र, কম্পিত তব বচনে। না পারি খণ্ডিতে, না পারি দণ্ডিতে, না পারি পাঠাতে ববে॥ रहेश क्षेत्रका, नात्रणा मन्भवा, প্রেয়সি প্রকাশ দয়। ম্মরণার্থি জন, করিয়া রক্ষণ, হও নির্মালতা শ্রয়া। চক্ষে অশ্ৰু জাল, আৰ্ত্ত মহীপাল, তৃথাচ কাল কামিনী। यात महे वत, क्रांख नृश्वत, काष्टिमा कट्टि गमिनी॥

না করে পাপিনী, রক্ট্রন্পরানী,
পরে ভূপ মূর্চ্ছাগত।

দুষ্টা ভার্যা হাসে, প্রতিকৃল ভাষে,
হৌর কি ক্র্রুলর ॥
পুত্র বন স্ক্রে, এই ফুল সেডু,
করিলারের্যাতা মানী।
এই বাক্যাবলী, কিতীশ্বর বলি,
হইলা ভূতল শারী॥
শ্রীপ্রযোধ্যা কাণ্ডে, স্থারস ভাণ্ডে,
দশর্থ বিজ্ঞাপন।
রাম রাচ্ছ আশা, যে কাণ্ডে নিরাশা,
আশা সর্গ সমাপন॥
১০ সর্গ।

পয়ার

পুজ শোকে শোকাত্র অতি দীন প্রায়।

সংজ্ঞাহত মহীনাপ পতিত ধরায়॥

চেষ্টা হীন ভর্তার দেখিয়া দৈন্ত দশা।
তথাপি কেকরী তাঁরে কহে কটু কবা॥
দয়াময় বরছয় দিয়া নরপতি।
কুকর্ম করেছ যেন হয় হেন মতি॥
পরে পৃথী তলে ময় পার্থিব এখন।
সত্যে থাকিবার যোগ্য আপনি রাজ্ঞন॥
সভাই পরম ধর্ম সভাবাদী যাঁরা।
গিয়াছেন এই কথা প্রকাশিয়া তাঁরা॥
তুমি সভাবাদী ইহা জ্ঞানিয়া নিশ্চয়।
বরছয় চাহিয়াছি করিয়া প্রভায়॥

কপোতীর খীত দেহ দেখিয়া বিরূপ। আন্ত মাংস দিয়াছেন শিবি নামা ভূপ। महे श्रुला चर्म गठ मर्ख लाक कग्र। অবনীপে কহিব অপর পরিচয়॥ সভ্যের মর্য্যাদা সিস্কু করিতে স্থাপন! প্রবল তথাচ কুলু না করে লব্দন # আরো দেখ অলর্ক নামক রাজ্ঞপ্রয়ি। প্রার্থনা করিল তাঁরে ব্রাহ্মণ তপস্বী ॥ আপনার চারি চক্ষু করি উৎপাটন। সতা বলে স্বৰ্গ লোকে করিলা গমন॥ তুমি সতা প্রতিজ্ঞ নরেন্দ্র জ্ঞানবান। অঙ্গীকার করিয়াছ করিবে প্রদান। তবে কেন সেই বর নাহি কর দান। লুক জন প্রায় বুকি अतिহর মান। পরিত্যাগ কর্ব্বাগ শান্ত হও ভূপ। বনে হাজ নিজ পুত্র জীবন স্বরূপ ! ষভপি শ্রীরামে বনে না পাঠাও তুমি। অগ্রে তব এখনি জ্যব্জিব দেহ আমি॥ কেকয়ীর ছল পাশে বন্ধ নৃপবর। ছেদনে অশক্ত তাহে শীর্ণ কলেবর ॥ পূর্বের বিষ্ণুমায়াতে মোহিত ভাবে বলী। বিশ্ব ভূমি বামনে দিলেন সর্বাস্থলী ঃ राया जुल मिरे कल वक्त काया लाट्या। विजास नग्नन वर्ग किंगा कूछारय। গুরুভার বহনে যাদৃশ পরি শ্রম। সেই রূপ আক্রান্ত সূত্রান্ত নরোভ্য॥ দঃখিত অন্তর অতি সংজ্ঞা মতি ল্লান। कर्ष्ट्रे देश्या धतिला कहित्व मभाशान ॥

শোকে জীর্ণ সজল নয়ন নঃবির। আরক্ত নয়নে দৃষ্টি অতি ঘোর তর॥ क्किशीक क्रिया निक्र में मार्थापन। ধিক তোরে পাপাচারে কুদ্র তব মনঃ॥ স্বপতি ঘাতিনী মহা পাপিনী নিৰ্ণা। ভাজিব রে তোরে আমি অরে লজ্জা হীনা॥ মহা কুদ্রা রাজ্ঞ লোভবতী অভিশয়। কি কার্য্য এমন ভার্য্যা রাখিয়া আলয় 🛭 মন্ত্র পাঠে তব পাণি করিয়া গ্রহণ। সেই হেতু পরিভাগে অক্ষম এখন ॥ তব পাপে পাপিনি সুপুত্র পরতর। ভাজিব ভরতে আমি এখনি সহর॥ এই রূপ বিলাপ আলাপে সেই নিশা। অতি ক**ষ্টে** কা**লক্ষেপে প্রকাশিল** আশা॥ हरेन नर्सती পत्त उषात मगग्र। সুমক্ত সুমক্ৰী বাবে হইলা উদয়॥ ক্রতাঞ্জলি করিয়া কহিলা মহারাজ। নিশা নাই নরনাথ কেন কাল ব্যাজ্ঞ ॥ সূপ্রভাত। সর্বারী এ সুখের সময়। সুমন্ত্রলে নিজাচ্চলে কেন মহাশয় ॥ মৃত গণ খারে করে মঙ্গল পাঠন। সূপ্রভাতা নিশীধিনী হইল রাজন ॥ মহীনাথ মহত্তর মঙ্গল তোমার। বোধ কর নরেজ্ঞ শার্দ্দ মুক্ত ছার। শুভালক্ষী প্রাপ্তি কাল সম্প্রতি মহীন্দ্র। मन्भ्रेन मागत वृक्ति यथा प्रिच हक्त ॥ সমন্ত বিভবে পূৰ্ণ অভ বৰ্জমান। हैक ठळ वायु स्या वक्न ममान्॥

পশ্চাতে পৃথিয়ী পতি দুঃখিত অন্তর। স্থত মুৰে সুমঙ্গল শুনি রঘুবর॥ कहिरमन मातथिरक অতি দীর্ঘ সরে। कि गुवा पृथ्य क्या निर्देश कर जुरत ॥ . কি কারণ স্তার্ভ পাঠ কর বারস্বার। অতিশয় পীড়া জ্বন্মে শ্রবণে আমার॥ হৃদয় বিদীর্ণ হয় সময় কঠিন। সুমন্ত্র নরেন্দ্র বাকো হইলা সুদীন 🛭 मीन **(मिथ मग्नावान व्यवाधात नाट्य।** কিঞ্চিৎ পশ্চাতে গিয়া হস্ত দিয়া মাথে ! त्रहिलन लिक्कि इट्टेग्ना मः रागां शंदन। পাপশীলা কেকয়ী পুনশ্চ নৃপে ভবে ॥ বাক্য বাণে ব্যথিত করিয়া নূপবরে। श्रुनः श्रुनः कथरन विभीनं रम् कृतत । मीन প্রায় কিবা ভাব **দয়াँ**ময় হয়ে। প্রাক্ত জনের প্রায় কহ রয়ে ২ 🛚 ঞীরামে আনিয়া বনে কর বিসর্জন। যদি সভা প্রতিজ্ঞায় থাকে তব মনঃ। যদি মম বাক্য প্রিয় করিবে পালন। তবে এ বিষাদ বাকো নাহি প্রয়োজন। স্নেহ মোহ কর্মে নূপ দিয়া জলাঞ্জলি। ভরতে অযোধ্যা রাজ্যে কর কুতৃহলী॥ সপত্ন রহিত তুমি করিয়া আমারে। মুক্ত কর মহীশাথ নিদারণ জ্বে॥ অস্কুশের আঘাতে কাতর ৰথা করী। সেই রূপ বাক্য বাণে নরেন্দ্র কেশরী। শোকানলে সম্ভপ্ত হইয়া নরেশ্বর। সুমন্ত্রের প্রতি বাক্য ক**হিলা সম্বর**॥

সঞ্চ পাশে বন্ধ হয়ে আছি অভ আমি। বিভ্রান্ত আমার মনঃ দৃঃখ পথ গামী ॥ মনস্কাম রামমুখ করিতে দর্শন। শীত্র কর স্থত সুঁতিত্যুর আনয়ন ॥ वृक्तताख वाका धनि बाशिके क्षत्र। অনস্তরে অপ্পাক্ষরে পাপীয়সী কয়॥ যাও স্থত কর তুমি সম্বর গমন। গ্রীরামে আনিয়া কর নৃপে সমর্পণ। हलन इहेश कर मकन व कर्म। নাধ ভূমি নাধ রূপে সুমন্তি স্বধর্ম॥ অনন্তর স্থতবর অতি শীপ্রগতি। ষারে দেখি মহীনাথ ত্রাবান অতি দ অন্তঃপুর খারেতে হইয়া বিনির্গম। মক্তিবর্গ দেখিছেন সম্ভার সম্ভ্রম॥ পুরোহিত উপস্থিত নৃপতির দারে। দর্শনে ভাসিলা মন্ত্রী দুংখের পাধারে । অযোধাকাঞীয় একাদশ সূর্গ সাঙ্গ। রাজ্ঞ লোভে কেকয়ীর দর্ব্বাক্য প্রসঙ্গ ১১ मर्शः ।

ত্রিপদী!

র অনী প্রভাতকালে, মহীক্র সচিব জালে, পুরোহিত পুরবাসি জনু। ্ নহাগঠের যত গুরুগুণ।

অভিষেচনীর্ষ দ্রবা, সংযোগ করিয়া সম্ভ, নপাজ্ঞায় তথা শীঘ্রগতি। সেই দিন মহাযোগ, পুষ্যায় নৃগান্ধ ভোগ, কেবা জানে হইবে দুর্গতি। শত কুম্ব শৈলন্ধাত,সুবর্ণ সংসারে খ্যাত, তাহাতে নির্মিত ভদ্রাসন। मतार्त जलक्षु, मृशहर्म्य जाव्हामिछ, র্ভাসন প্রম শোভন ॥ গঙ্গা যমুনাদি যথা, সংযোগ পবিত্র তথা, ইহাতে আনিয়া শুভ জল। অন্ত পুণাতীর্থ য়ত, পূর্ব্ব আদি দিশি গত, শীত্র বক্রগামি মহাবল ॥ খাত ক্ষিতি মধ্যে যত, মহানদ সিন্ধ গত, कीरताम প্রভৃতি সিন্ধু নীর। ক্ষীরি বৃক্ষ পঘোৎপল,প্রবাল অতি নির্মাল, মিশ্রিত অপুর্বর কুস্তস্থির ॥ কাঞ্ন কশ্যিত ভাষ,ক্রচিরা রোচনা গায়, ঘত মধু দৃক্ষ দধি যোগ। পুণ্যতীর্থ সমুদায়, ভাহার মৃত্তিকা তায়, নম্মলীয় ক্রব্যাদি সম্বোগ॥ मुवारण निर्माल सक्तुआनि गनि प्रश्न छक्त, সালস্কৃত করি সমুদায়। প্রভা চামর দণ্ড, রামার্থে রূপক চণ্ড, স্থাপিল পরম শোভা তায়॥ পুৰ্ণচন্দ্ৰ মণ্ডলীর, শোভা সম শোভা হির, আনে পুষ্প মাল্য মনোহর। নৃপতি গমন পূর্বে, দর্শনার্থে স্থিত সর্বের, চামরের চতু স্পার্থে, স্থাপন করিতে হর্থে, নিযুক্ত যতেক অমুচর॥

নুপ অনুষ্ঠি মাত্র, রামনিধি বথা পাত্র, রাখে ছত্র তথা পরিকার। খেত অস্ব খেত বুৰ, মাতঙ্গ মন্ত তাদুল, এরাবত সদৃশ আকার। ममात्रमा जष्टे कस्था, मुमन्नमा ध्रा ध्रा, मर्ख दड़ाङ 🗗 ভृषिতा। গীত বাভ সর্ব্ব যন্ত্রে,সুবিজ্ঞ অশেষ তন্ত্রে অলম্বত বন্দিগণামিতা 🎚 ঈক্ষাকু নুপতি বংশে,যথা রূপ সুপ্রশংসে, मभूमां क्र कतिल मः योग। অভিষেক যোগ্য দ্রব্য,সংগ্রহ করিয়া সর্ব্ব, উপস্থিত অশেষ সম্ভোগ। অনন্তরে মন্ত্রিগণ, স্থাতে করি সন্দর্শন, সুমন্ত্রে সুধান সমাচার। যত প্রোহিতগণ, একত্রিত হৃষ্ট মনঃ, जामीकीम किनः विखात। আমাদের বাক্য ধর, সংবাদ গোচর করু, মক্তিবর নৃপ বিচামানে। उनम्र उनमाहल, हति कह महाइंटन, नतनारथ ना प्रिथि व स्रांत ॥ রামরাচ্ছকরের ধার্যা,অন্তঃপুরে কিবা কার্যা না জানি নরেন্দ্র অভিপ্রায়। বিজ্ঞ মন্ত্রিবর পরে, কহিলেন সকলেরে শুন মক্তিবর্গ সমুদায়॥ সুখ আয়ুবু দ্ধি হেতু, নরেন্দ্রের পুণ্য সেতু वसन कार्त मर्ख कन। আসি রাজ সন্দর্শনে, উপস্থিত সর্ব্বজনে आनाहेव मध्याम वहन ॥

এই কথা কহি,জখা, নৃপতি ভবন যথা, পুর ঘারে মন্ত্রী উপনীত। **ष्ट्रशिक भग्नावस्, खनिग्रा दृहेगा वास.** मस्याधन, अतिन। विश्ठि॥ उका हैक जीधमूच, वैद्यान करून मुक मक्रमार्थ रुग्न निका उक्र। কল্যাণ নিমিস্ত ডব, ভাবনা করুন ভব, জাগ্য নপতি মাত্র ॥ तस्त्री इट्टेन रमय, सातिन यरछक रमम, তব সুখ দিবা উপনীত। ভাবি আত্ম সুখজান, সমুদিত অংশুমান্, অবনীপ উঠ স্বরান্বিত ॥ ধর্ম ক্লন্থ সমাচার, অভিলাষ জানিবার, পুরোহিত মক্তি পুর্জন ៛ চিত্তে জানি এই রূপ, জাগ্রত হবেন ভূপ, বাসনা করেন সন্দর্শন॥ পুনর্বার মন্তি বরে, নুপতি দর্শন পরে, সুমক্তে কহিলা নূপবর। বাগ্র ভাবে ম্বরান্বিত, দুঃখে অতি উত্তাপিত, মহীনাথ মহেক্স প্রবর॥ সুমত্র কর ভাবণ, এনছে মম শয়ন, অনিদ্রায় আছি বর্ত্তমান। বচন শুন সম্প্রতি, শীঘ্র যাও মহামতি, রামচন্দ্রে আন বিভয়ান॥ নরেক্রের অনুমতি, অনুসারে ক্রতগতি, মফ্রিবর করিয়া নির্গম। আনিবারে রখুবরে, খরায় গমন পরে, রথে বেগবস্ত ভুরক্ষ ॥

বাত্রাকালে শুনি মক্তিবরণ। পুরবাসি প্থে২, প্রকাশিতৈ মনোরথে, मृत्थर कर्ट्डे नेन्द्रस्थात ॥ অভ রাম গুণধাম, নূপাজীয় ঘনস্থাম, বে বিরাজ্য করিবেন লভা। কি আন্তর্যা মহোৎসব, আমাদের পুরে সব **रहेर्द कहिएड मद मख**। ন্নিধানতি অতিশয়, দানে কম্পতর ময়, সদা পুরজন হিতকারী। সর্ব্ব প্রাণী হিতে রত,বহু গুণে প্রতিষ্ঠিত रुहेरवन ताम मख्धाती । অনুগ্রহ বিধাতার,অধিক কি আছে আর রাম ভক্ত বংসল সুক্তন डेत्रम शूर्खात थात्र, अस्राग्न ममूमात्र, করিবেন স্বগুণে পালন ॥ এই কথোপকধন, সুমন্ত্র করি শ্রবণ, যান রাম আনরন জন্ত। উপনীত রাম পুরে, দেখিলা মন্ত্রী অদুরে রাম বেশা অচলাগ্রগণ্য # মনোহর মাল্য থাম, সুবেষ্টিত অবিরাম, অলঙ্কৃত আছে অতিশয়। कइ भ क्ला है जारू, भड़ दानी भां ना या रह কাঞ্চন প্রতিমা অগ্রে রয়॥ অতি উচ্চ আরোহণ, মণি বিক্রম তোরণ, মাতক তুরক বহুতর।, মুক্তাহার সুমণ্ডিত, চন্দন চয় চচ্চিত, এরাবত তুলা শোভাকর।

ताम शृंश बात विक, अध्यत्थ ममनिक, वाक्रि ताक्रियूक त्राथ, मातथि हिनाउ शाथ, পৌরজন হর্ষ বৃদ্ধি করে। রামগৃহে নৃপাজ্ঞায়, মন্ত্রিবর মহাকার, মহেন্দ্র ভবন পরিকরে। প্রবেশিতে মহাপুরে,নিরানন্দ গেল দুরে, र्वयुक रुप्ता चित्रांच। मृष्टि कति तक्क हम, शृंदर वस मृना भग्न, हेळालग्र चक्रश वितास ॥ উপস্থিত বন্দিগণ, মাগধ স্থত নন্দন, বৈতালিক জন বছতর। ত্তব করে নিরস্তর, নৃপাত্মজ্ঞ রঘুবর, বেষ্টিত দেখিলা মক্তি বর। অনেক মনুষ্যগণ, मश्र পংক্তি সুবেষ্টন, ভবনাদি রক্ষব্রু রক্ষিত। মহান্তা রামের পুর, দিনকর দর্প চুর, দেখিলেন সুমন্ত্র নিশ্চিত। मिउ डेक रेनन मुझ, महुन तझ श्रमण, বিমান সমান শোভা করে। अरविणा मिलावत, वातन ना करत हत, নরেন্দ্র কিঙ্কর জ্ঞানি পরে। त्रामायर्थ मार्वर्ग, ममाश्र बाम्भ मर्ग, শ্রবণ করিবে সর্ব্বজ্ঞন। ভবার্ণৰ পার হেতু, রাম গুণাখ্যান সেতু, श्ववित्र कतिन। वस्त्रन॥ ১२ मर्ग।

প্রার ৷

स्रमाञ्च रहे थल रहेगा जडी হ**ইলা দপ্তম খণ্ডে** সূত উপস্থিত॥ বলিষ্ট ধর্মিষ্ঠ তথা বহু যুবাগণ। ধনুর্বাণ করে করি করিছে রক্ষণ 🛭 তাহাদের অকে শোভে বহু অলঙ্কার। ভক্তিমন্ত এবিশ্রান্ত রক্ষা করে ধার ॥ বিচিত্র রঞ্জিণ বস্ত্র করি পরিধান। বেত্র হস্ত বহু জ্বন রক্ষক প্রধান ! তার। দব দৃতগণ দেখি স্থতবরে। রাঘবের ভৃষ্টি হেতু চলিল সম্বরে 🛚 যথায় সভার্য্য আয়্য রঘু কুলোভম। নিবেদন তথায় জানায় মনোরম ॥ দুত মুখে স্থত বার্ত্তা পাইলেন রাম। পিতৃ আজ্ঞা অনুসারে প্রবেশিলা ধাম 🛚 मध्कांत कतिया ताम लहेवादा स्टाउ । আলয়ে আনিতে শীঘ্র পাঠাইলা দূতে। দূত সহ স্থত তথা গিয়া ক্রতগতি। দেখিলেন ধনদ সমান রঘ্পতি। উপবিষ্ট আসনে অপূর্ব্ব অলঙ্কৃত। সুবর্ণ পালকে পউ বসন বিস্তৃত II বরাহ রুধিরাক্কতি বুসনের বর্ণ। স্থাতর অঞ্চলে চঞ্ল মণি স্বর্ণ॥ মহাভুজ মলয়জ লেপন শরীরে। यूक करत मृनि मनः मूनिक मभीत ॥ বাম পাশ্বে হর্ষে সীতা করি অবস্থান। চক্রমুখী অতি চারু চামর ঢুলান।

পদ্মা দহ দেব্যুমান যথা পীতান্বর। সেই রপ্ন সৈবায় সেবিত রঘ্বর॥ তরুণ তপন তুলা শ্রীঅঙ্গের জ্যোতিঃ। শ্রীযুক্ত নালিভ নুকুঞ্ নি'**দী**তাপতি। मिविन स्व मूम्य केतिया समस्रोत । कानाहेला पुरहारक मध्यान हाकात ॥ আহার বিহারে সুখী স্থিত সুখাসনে। এই কালে সুমস্ত্র কহিল। রামধনে॥ किमना कुन मिस्छा कुनन माग्निनी। দেখিবারে ভোমাকে চেষ্টিত নৃপম্নি॥ শীঅগতি চল রাম শুন আত্ম শুচি। কেব্য়ীকে দেখিতে যছপি হয় কচি॥ উপযুক্ত হৃত উক্ত শুনিয়া সংবাদ। প্রণমিয়া পিতৃ আজ্ঞা পরম আহলাদ। সীতা প্রতি সীতাপতি করি সন্মোধন। শুন সীতে সমাচার চিক্ত সন্তোষণ # মহা দেবী মাতা মম কোশল নন্দিনী। পিতা সহ বর্ত্তমানা পরম কল্যাণী॥ যৌবরাক্সে অভিষিক্ত করিতে আমারে। স্থত মুখে সমাচার দিলা পুরস্কারে॥ ভাবিয়া আমার প্রিয় কেকয় কুমারী। অবশু দিবেন রাজ্য পিতা দশুধারী॥ নিজ্জানে নিশ্চয় এই হইল সুযুক্তি। যে প্রকার শুনিয়াছি পূর্বের এই উক্তি॥ অত এব আমার নিকটে এই স্থত। সংবাদ লইয়া স্থিত নরেক্রের দূত। যেরপে মন্ত্রির গুণ আছে সমুদায়। যোগ্য দৃত এই স্কৃত জানি অভিপ্রায়॥

নিশ্য আমাকে অভার মৃকুল বর। করিবেন যৌবরাজ্যে নিযুক্ত সন্ধর ॥ সেই হেতু শীভ্রগতি শুন দীতা সভি। দর্শন করিব গিলা ক্রেয়াধ্যাধিপতি। किक्री महिटा अकामाने अठ खुद । নি**র্জ্জনে নিশ্চি**স্ত ভাবে স্থিত নরেশ্বর ॥ পতি মুখে শুনি দীতা দৌভাগ্য বচন। গুণবতী অনুমতি করিলা তৎক্ষণ : গছ গুরু সন্দর্শনে অপেকা কি ভায়। ক্লতাঞ্জলি করি সীতা কঁরিলা বিদায় 🛭 ৰারদেশ দীমা দীতা সন্তোষিত মনং। ভর্ত্বশে অনুব্রজে করিলা গমন ! . নিবুক্তা করিয়া রাম যান স্বর'ম্বিত। পিতা মাতা দৰ্শনে হইয়া সচেষ্টিত 🛭 পরিভাগ স্বপুর করিয়া ভার পর। দেখিলেন প্রার্থক পার্থিব বহুতর 🖟 দর্শন লালসে ধারে কত দিজগ্ন। সকলেরে দৃষ্টি কবি শ্রীরঘ্নন্দন॥ বন্দাগণে বন্দিয়া যাচকে দিয়া ধন। রৌপ্য রথে সম্বরে করিলা আরোহণ মাতক শাবক ভূপ্য ভুরেক সুন্দর। পাৰে চকুঃ আচ্ছাদিত গমনে সত্তব। निश्र जुला शताक्य मर्स जुत्रभ्य। मেই রপে আরোহণ করি রঘ্ভম। পরম শোভন রূপ অতি শোভারিত। ঘন সম গর্জন পরম প্রতিষ্ঠিত 🛭 সেই রথে সীতাপতি করি অংরোহ্ণ আপন ভবন তাজি ছরিত গমন ॥

শুক্রমেঘ পরিহরি যথা শশধর। সেই রূপ বিনির্গত যেন রঘ্বর॥ সুলক্ষণ লক্ষ্মণ ধরিয়া শেত ছত্তা। সচল চামর কর উল্লাসিত গানে। পশ্চাতে পশ্চাতে যান যথা রামচক্র। দেবেক্স অনুজ যেন সানন্দ উপেক্স। উঠিল ভুমুল শব্দ एक मर्त्रा জন। দেখিবারে ধায় খারে পুরবাসিগণ॥ রথোপুরি মহার্থি দাশর্থি যান। দীন দৃঃখি সকলে করিয়া অনুমান॥ কেহ নহে বিমৰ্থ সহৰ্থ সৰ্ব্বেজন । দশ দিক পরিপূর্ণ মনুষ্য নিস্বন ॥ मह भारक माखाविक कोभना। नम्म : প্রিয় শক্ষবাদিগণে দিতে বহু ধন ॥ ইঙ্গিতে ভঙ্গিতে আজ্ঞা দিয়া রখুবর। বিরা**জে**ন বীর সিংহ সুস্থির অন্তর ॥ রামায়ণে অযোধ্যায় রামের আহ্বান। 'তাহে ত্রয়োদশ সর্গ এই সমাধান॥

<u>১৩ সর্গ।</u> তিপদী।

রথের উপরে রাম, রঘুবংশ গুণধাম,
রুতাঞ্জলি করে পুরজন।
জ্ঞীরামের অনুচর, পুণে স্থিত কত নর,
পুণে রণে করিয়া বেষ্টন॥
সকলের বাক্য যত,শুনিয়া সন্থোষ কত,
আয়া বন্ধুজন গণ উক্ত।
ক্রোবণে পরম সুপ, সুপ বৃদ্ধি সুকোতুক,
যে আলাপে পাপ তাপ মুক্ত॥

कहिलान नर्ति खान, श्रीतामे श्रेषालाहित, खेक धर्गाकत राम, नव मुर्वामणधाम, সমুখ রাজদত্ত এই ধার।। भानित्व এই পুণী उन। নিজগুণে উপাজ্জিতা,ধর্মিয়া তুলারহিতা যথা পিতামহ অজ, রঘবংশে বংশধজ, পাইবেন লক্ষ্মী প্রিয়তরা। मह क्रश्रह स्टिंग मकन ॥ দেবরাজ দম ধনী, হইবেন রঘ্মিনি, अधिक शालन यरब,स निन कथन हरत, ইনি তাঁর যোগ্য যুবরাজ। কতে মবে এই পরস্পর। স্বগুণে পাবেন মান, গত মাত্র পিতৃস্থান, ভোজনে কিপ্রয়োজন, কিবা প্রিয় প্রিয়গণ্ দিবাাসনে করিয়া বিরাজ। কি করে অপর পুরনর॥ অপর সুপ্রিয়তর, কিবা কার্য্য মনোহর, यमि অछ तथ्वत, आभारमत तका कत, রাজা হন রঘ্বংশ মণি। वाह् अन्य इंशाद म्यान। রাম অভিষেক বিনা, সমস্ত বাসনা ক্ষীণা, अस्मारम मकरन त्व, वर्गवामी मम इन, • এই কৰ্ম প্ৰাণাধিক প্ৰাণ॥ ধরা হবে সুরেক্স অবনী। করিয়া যদি সুক্রতি, হ্বাবাহে হ্ব্যাভতি, তুমি প্রক্র হৈতে রাম,কৌশল্যা আনন্দ ধাম, বিরাজ করুন রাজ্যাত।। দিয়া থাকি আমরা সকলে। রক্ষক হবেন রাম, রাজা এই গুণধাম, জানকী তব সহিতে,ঋদ্ধিমতী শ্রেয়াবিতে, এই রূপ করিবেন ধাতা॥ রঘবংশ রত্ন সেই ফলে॥ না হইব কষ্ট জীবী, সর্বাদা রাঘবে সেবি, দৌবরাজ্য হয়েপ্রাপ্ত,লয়ে বন্ধু অপযাাপ্ত, ना इस्त पृथ्यी कमाइन। পিত ধনে হইবেন ধনী। यिन तीय (योवता (क्या,ताका इन शहे ता (क्या). माज कूल क्या भूयी,माक मीजा मानि यूथी, চিত্ৰজীবী হও রঘমনি॥ অছ হয় মর্দ্ধাভিষেচন। এইরপ শুভ বানী, প্রবণেতে মহামানী, খাইতে যাইতে পথে,পিতৃ গৃহে দিব্য রথে, অট্টালিকা উপরে অঙ্গনা। জ্রত যান পিতার ভবন। হুষ্টুচিত্ত অভিশয়, পরে পুরনারী চয়, शाकिया गवाक घाटत, वध्नन वादत वादत, **मृष्टि करत श्रीताम वनन**॥ এই कथा करह क्रुप्रमाः অপর অপর কথা, বিবিধ প্রকার তথা, প্রেশংসা বিত্তর করে, রাম গুণ রত্নাকরে, मञ्जूष्टी इहेश नातीशत ষথা রূপ করিয়া শ্রবণ। জীমান জীধাম ধীর, যান রঘ্বংশ বীব, কহে পূর্ব্ব আচরণ, পিতা পিতামহুগণ, প্রিয়করি পিতার ভবন 🏽 সেইরূপ ঞীরঘু নন্দনে॥

হত মনঃ রামগুণে,রাঘধের রাজ্য শুনে, मत्लाय पर्भाग मर्खा खन f কেবা আছে নরনারী,রামগুণ পরিহারি, রূপ হেরি ফিরাম্নয়ন ॥ বিপ্রক্ষল্র বৈষ্ঠ গুদ্র,পর্ব্বপ্রিয় রামভদ্র, প্রোণের অধিক প্রিয়তর। সুরেন্দ্র সদন সম, রাজকুলে প্রিয়তম, হইবেন মহিমা সাগর॥ রথ হৈতে অবতীর্গুয় অঙ্গ শোভাকীর্ণ, তুৰ্ণ পৰ্ব্ব পূৰ্ণ শশী প্ৰায়। প্রবেশেন রাজকুল,বীর সিংহ সমতুল, সর্ববিশপ্ত শক্তিয়া যথায় ॥ ञल्कः भूतः প্রবেশন, নিবারিত সর্বেজন, রসুবর অন্তিকে পিতার। প্রবেশ করিলা রাম,পরিহরি জন গ্রাম, তারা করে বাসনা অপার! यत्व तांख्युत्त तांख्य,तय्वर्भ महातांख्य, দর্শন করিতে যান রাম। পুরদারে পুরজন, আকাঞ্জিত সর্বকণ, भूनगांजा इय अविताम ! कौरताम माधत श्रीय,तायहळ जग हांग, व्यापाय ठङ्कम मर्ग। আবণে মনুনাবর্গ, পাইবেন অপবর্গ, ममामदा खन मानवर्ग॥ **38 मर्ग।**

পয়ার।

উপবিষ্ট আসনে ভূপতি দশরথ। দর্শন করিলা রাম ভগ্ন মনোরথ। কেকয়ী সহিত স্থিত বিরস বদন। ক্রতাঞ্জলি করে পরে ধরিয়া চরণ॥ প্রণতি পূর্ব্বক নিজ জনকে নন্দন। অনন্তরে কেক্য়ীরে করিলা বন্দন 🛭 সুমিত্রা প্রভৃতি মাতৃ সপদ্মী সকলে। বন্দনা করিলা রাম পরম কৌশলে॥ প্রণত বিনত পুরঃস্থিত রঘ্বর। রামচন্দ্র মুখ ছেরি দৃঃখী নৃপবর ॥ নিস্পাপ শরীর ধীর বীর চ্ড়ামণি। প্রিয়পুক্র সুপবিত্র রশ্ব্যব অগ্রণী 🛭 অপ্রিয় বচন নূপ বলিতে না পারি। রাম শব্দ উচ্চারণে চক্ষে বহে বারি॥ অপর প্রমদাসুত করি নিরীক্ষণ। দৃষ্ট অদৃষ্টের মত জ্বড়িত বচন॥ এ রূপ না ছিলা ভূপ পূর্বের কভু আর। । অপরপে দৃষ্টে হয় আশস্কা বিকার मत्र्भ अम मिया यथा इय मर्भ शैन। সেই রূপ রামচক্র উদ্বেগে মলিন॥ অপ্রসন্ন সর্বেন্দ্রিয় নাহি কোন সুখ। मिश्र में अधि तोय खनरकत सूथ ॥ দেখিলেন দয়াময় পিতার বিরাগ। অতি দীর্ঘ নিশাস প্রেখাস যথা নাগ ॥ রাছর বদনে রবি ছবি যেই রূপ। ফোভিত সাগর প্রায় অঘোধ্যার ডুপ ॥

মিথ্যা বাক্য বলিয়া মলিন থথা মুনি। বিকারি আকার ধারী তথা নৃপমণি॥ অনিমিভ এই রূপ বিকার কুৎসিত। দেখিয়া জ্রীরামচন্দ্র পরম দৃঃখিত॥ চিন্তা যুক্ত পিতৃহিতে অনুরক্ত রাম। নিমিত্ত নিশ্চয় না বুকিয়া ঘনভাম॥ কি হেতু নয়নে নৃপ দেখিতে অশক্ত। রাম বাকা বলি কেন বাকা পরিতাক ॥ সম্বোধনে চৈতন্ত না হয় কি কারণে। করিয়াছি কিবা দোষ পিতার চরণে॥ অজ্ঞানে অথবা বাল্য বৃদ্ধি ব্যতিক্রমে। লাঘব হইল জ্ঞান অতি গুরুতমে॥ অশুথা আমাকে হেরি মানিতেন ধস্ত। কোপে মুক্ত স্নেহ্যুক্ত না ভাবেন অস্ত॥ অছ্য সন্দর্শন করি আমাকে নৃপতি। ঈদৃশ আয়াস যুক্ত পরিমুক্ত মতি ॥ পুর্ব্ব প্রায় বাৎসল্য করিয়া পরিত্যাগ। দয়াবান হয়। কেন দর্শনে বিরাগ॥ এই সব উদ্বেগে উদিগ্ন রঘুবর। শোকার্ত্র সমান রাম লান কলেবর॥ কেকয়ীর প্রতি পরে করি নিরীক্ষণ। বিনয় পুর্বেক রাম বলিলা বচন ॥ কহ দেবি ভাবিয়া না স্থির হয় মনঃ। করিয়াছি অজ্ঞানে কি পাপ আবাহন॥ विवर्ग वनन नीन कीन करणवत । না কহেন কথা কেন দেখি নূপবর॥ দিয়াছি কি দুঃখ আমি মনে নাহি বোধে সম্ভাপিত মরনাথ কিবা অনুরোধে ॥

नृश मृत्यं महा सुरी मानम आमात। অজ্ঞানে'কি অবিধানে অ**শুভ সঞ্গা**র॥ ভরত শত্রুত্ম আর কুমার লক্ষ্ণ। আমার কনিপ্তর্গ-পিউরি নন্দন॥ অপর আমার মান্ড যত মাতৃগগ। করিয়াছি কাহারো কি অনিষ্ট কখন। সেই পাপে পরিতাপে প্রকৃপিত পিতা। কি কুকর্ম করিয়াছি বল শুনি মাতা॥ প্রসন্ন যাহাতে হন কর মাতা তাই। পিতৃ পরিতৃষ্টে সুতে অমঙ্গল নাই। অসম্বষ্ট পিতা কিম্বা তাঁহার অপ্রিয়। উপার্ক্জনে জীবন ধারণ নহে প্রেয়॥ সভ্য বাক্য কহিলাম জানিবা নিশ্চয়। যে পিতা হইতে এই দেহোৎপত্তি হয়। যে হইতে এ জগতে জীবন ধারণ। করিয়া অপ্রিয় তাঁর বাঁচা অকারণ॥ পিতা প্রভু শরীর প্রভবকর্ত্বা পিতা। প্রিয়কারী বুজিদ বরদ উপনেতা ॥ প্রতাক্ষ দেবতা পিতা জানিবে নিশ্চয়। আয়ু বঁল যশোবিত্ত পিতা হৈতে হয়॥ অপর অপর প্রিয় কার্য্য যে সকল। পিতৃবল দৈববল হইতে প্রবল ॥ পিতার অপ্রিয় কার্য্য করে বেই জন। নিন্দনীয় ক্লতম্ব সে পাপাত্মা দুৰ্জ্জন। নিতান্ত নারকী মহাপাতকী দে হবে। এমন কঠিন কর্ম করিয়াছি কবে॥ যে কারণে অভিমান হইয়া সঞ্চার। ক্রোধ যুক্ত ব্যাকুলিত মানস পিতার॥

वन पार्वि निष्ठम कतिम्ने तम कार्य । य निमित्र एक एम दिकांत थांतन ॥ না ছিল এমন ভাব পিতার শরীরে। কটু কথা বলিয়াট্র কেই কি অস্থিরে বিশেষতঃ ব্যাকৃলিত কিন্তু উপতির। পূর্বেক কভু নাহি দেখি এমন শরীর ॥ আমি কিন্তু নৃপতির নিমিত্ত জননি। পাবকে প্রবেশ করি হেন চিত্তে গণি॥ ভূপতির বাক্যে বিষ ক্রিতে ভক্ষণ। সাগরে অবশু পারি করিতে মজ্জন॥ অথবা যন্তপি আজ্ঞা করেন আপনি। পুর্ব্বোক্ত সকল কর্ম করিব জননি ॥ তোমার বচনে মাতা অকার্য্য কি আছে। পিতা হেন পূজ্য তুমি আমাদের কাছে॥ . অতএব আপনি মা কর অনুমতি। নূপতির চেষ্টা কিবা কহিবা সম্প্রতি॥ মিথা। কথা না কহিব তোমার নিকটে। অবশু কর্ত্তব্য যদি দৃঃখ তাহে ঘটে ॥ গগণ পতিত হয় পৃথিবীর শিরে। সমুদ্র দরিত হয় বিনিমুক্ত নীরে॥ তথাচ না মিথ্যা কথা কব মাতা আমি। অতল যভাপি হয় তলাতল গামী॥ খল মতি কেকয়ী অখল রঘ্বীরে। পূর্ব্ব কথা বিস্তারিত কহে পীরে ধীরে। মন্থরার বাক্য দোষে দৃষ্ট তার মতি। পূর্ব্ব কথা কহিল চাহিয়া রঘুপতি॥ পূর্ব্বে দেবাসুর যুদ্ধে তোমার জনক। অভ্যন্ত পীড়িত অঙ্গ দহিল পাবক ॥

আমার শুখাৰা গুণে রোগ ভাল হয়। मञ्जूष्टे रुहेम्रा जाटर मिना वत प्रम ভরতের অভিষেক তব বনবাস। দিসপ্ত বৎসর মম এই অভিলাষ ॥ পূর্ব্ব দক্ত বরদ্বয় সফল আমার। পিতৃবাক্যে অছা বন গন্তব্য ভোমার॥ ठलुर्फ्ण वर्ष मीमा প্রবেশ কানন। পিতৃসভা কর পুজ্র কার্য্যেতে পালন॥ আপনারে পুনঃ সন্থ করিবারে চাও। সপ্ত সপ্ত বর্ষ পুজা বনবাসে যাও॥ রাজ্ঞ আশা ভূষা ক্রশা কর রঘুবর। পরে চীরাজিন জাটা ধর গুণাকর ॥ হবে না কেকয়ী বাক্য তব সুথকর। সেই কালে পিতৃসক্তে জানি রঘ্বর॥ পিতার বচন যোগে হইয়া যন্ত্রিত। কাননে গমন রাম ভাবিলা উচিত # রামায়ণে জীরামের ধনবাদাদেশ। ইহাতেই পঞ্চদ সূর্য পরিশেষ ॥

১৫ সর্গ।

লঘু ত্রিপদী।
কেকয়ী বচন, করিয়া শ্রবণ,
ঈষদ্ধাস্যে সুলোচন।
রাম গুণাধার, করিয়া স্বীকার,
পরে কহিলা বচন॥
হ্য়েয় জ্ঞটাধারী, হ্ব বনচারী,
পরিব চীর বসন।
চতুর্দিশ বর্ষ, পরিহরি হর্ষ,
করিব সন্তা রক্ষণ॥

स्ति गक्न, नुशंकित्क वन, আপনি এই সংবাদ। याव व्यामि वर्तन, वन छक्नस्मरन, ছচাও নূপ বিষাদ॥ আমি আজ্ঞাদাস, যাব বনবাস, পালিতে জনক আজ্ঞা। এ নহে নিগ্ৰহ, মানি অনুগ্ৰহ, পালনে পিত প্রতিজ্ঞা॥ আমি পিতৃ ভৃত্য, হব ক্লত ক্ল্ড্য, এ পুল্র থাকিতে ভূপ। কেন চিস্তান্বিত, করি অনুমিত, তাত দেবতা স্বরূপ !! পিতৃ রাজ্য এ ড়ু, পিতা নিজে প্রভু, মম গুরু সর্বর ভাবে। এ আজ্ঞা পালন, করিব এক্ষণ, कि इद्देश ताष्ठ लाखि। खनक वहन, मछ क शहन, না হবে বারণ ইহা। মন্যু নাহি কর, সুখে কাল হর, নাহি মম রাজ্য স্পৃহা॥ আমি তব বাণী, দৈব বাণী মানি, अननी मृच्दित १८व। চীর জটাধর, হয়ে নিরস্তর, वत्न ब्रघुवत ब्राव । গুরু ইষ্ট পিতা, বিচ্চা অপ্রমিতা, ধর্মজ্ঞ মহাত্মা অতি। মম সম জ্ঞান, সে বাকা হেলন, করিবে কি লয় মতি॥

কিন্তু এক দৃংখ, মানদে অসুখ, महिट्ड अन्य सम। मृत्थामग्र এक, ভরতাভিষেক, বচন এ মর্নেরিম ॥ স্বয়ং নূপবর, হলোঁ আজা কর, হইত অধিক সুখ। কিবা রাজ্য সুখে, কিবা বস্থ দৃঃখে, তাহাতে উজ্জল মুখ॥ আমি ধন প্রাণ, রাজ্য দারা দান. দিতে পারি অনায়াসে। ভরত যাচিলে, কি আছে অখিলে, অদেয় এ ভ্রাতৃ পাশে॥ ভ্ৰাতা গুণবান, শুদ্ধ মতিমান. মহাঝা মানব শেষ। তাকে রাজপদে, রাখি পদে পদে, অদেয় নাহি বিশেষ। नृश ताका मात्न, विस्मय विधातन, কি আছে কহ জননি। আমি প্রাণ সত্ত্বে, এই রাজ্য দত্তে, ভরতে দিব এখনি ॥ রাজার আখাস, জন্মাও বিশ্বাস, আশাসিত আত্মা কর। অভ যাব বন, অলঙ্কা এ পণ, मूथी इनं मखधत ॥ ক্রতগতি হয়ো, বহু নর লয়ো, मुमीख कत गमन। मांजून जानत्य, यादेश मनत्य, ভরতে কর জ্ঞাপন ॥

আনিবে ছরায়, ছারে অযোধ্যায়, রাজ্ঞ অভিষেক জর্ম। আমি যাই বন, দেখিয়া সুক্ষণ, কি আরু কহিব অস্ত। **कष्टे ठिखा रूर्त्व, मूर्य्य तार्क्य तर्द्व,** হইবে নূপতি মাতা। রব্পতি বাণী, শুনি রাজ্বরাণী, ভাবে অতি আনন্দিতা ৷ तारमद्र ध्यवर्त, व्यविश्वाम मर्ति, স্থাপনে শ্রদ্ধা বিহীনা। রাণী আপে রামে, দিতে বনধামে, ত্বরা করে সুকঠিনা॥ कहिट्ह इटेरव, प्रताय याहेरव, চপল ভুরঙ্গ রথে। মাতৃল ভবন, হৈতে আনয়ন, করিতে গমন পথে ॥ না কর বিলম্ব, বন অবলম্ব, অভ তুমি কর রাম। হইয়া উৎসুক, অরণ্য কৌতুক, দেখ গিয়া গুণধাম !! বিলম্বে কল্যাণ, নাহি মতিমান লজ্জা হেতু নরেশর। না কহেন কথা, এ কথা অন্তথা, নহে নহে রঘ্বর॥ ন সংশয় অস্থা, রঘ্কুল ধন্ত:. 🥞 মন্ত্য না করিবে স্ত্। व काम शर्यास, ना गांद वनास, ভূমি পুক্ত অতি ক্ৰত॥

নে কাল ডুপতি, চিন্তাকুল মতি, हिट्ड ना भारेट मूथ। কর সুখী ভূপে, পুজ্র কোন রূপে, হইয়া কাননোনা খা क्किशी कांत्रन, क्रम्य माउन, বচন শুনিয়া ভূপ। প্রকাশিত চকুঃ, হইয়া মুমুকু, নীর্স তরু **সর**প ॥ জানিয়া ভূপতি, বামে বন গতি, (कक्यों दहन लाइ)। ক্রি হাহাকার, সন্থাপ অপার, পতিত মঞ্চিত ভাবে: চক্ষে শোক বারি, বারিতে না পারি, বাবি পূর্বকলেবর। রাম বাক্য ছলে, বাক্য শরানলে, পীড়িত কাঘবের 🛭 हा ५००१मा हाती दाकावानः বাধিত ক্লয় অতি। দা, সুস্মতি, রঘকুলপতি, কানৰ গমনে মতি। अध्या मारून, वाका निमाकन, ব্যক্ষারণ করেণ। কবিশা এব ., কমল লোচন, कटिना देशका धारत्॥ নাহি বাস। তায়, পুন**র্বিমাতায়,** কভিলেন রঘ্বীর। নহি অর্থপর, রাচ্চ স্পৃহাকর, জানিবে দেবি সৃস্থির।

ı

)

অসতা বচন, না কহি কখন, সভাবাদী শুদ্ধ ভাব কি হেড় আমারে, শঙ্কা বারে বারে, অবহা অর্ণো যাব॥ তোমাকে স্বভাবে,রাথিলে সদ্ভাবে, হবে কর্ত্তব্য করণ। ভাজিতে জীবন, প্রিয় জন ধন, উচিত জ্ঞানে যেমন ৷ ধর্ম আচরণ, বিনা অন্যাবন কি অধিক ভূমিতকে। জনক আদেশে, নাব বনোদেশে থাকিব স্বধর্ম বলে । না কছেন গুরু, জ্ঞান কম্পুকর, করিয়া ক্রপা প্রকাশ : তথাচ কান্দ্রে তোমার বচনে ठकुर्लम वर्ष वास अशिनदिव निन्त्रम, क्यून अन्य, কল্যাণি কর কল্য: ভরতের জ্বন্থ্য, কিবা আছে এত দিব ধন জন প্রাণঃ ভরত কারণ, যাহা প্রয়োক্ষন জানাইলে তুমি মাত। थिय **देशे** ভোগ, জीवन विद्यांश, দারা আদি মস্ত ভাত তোমার বচনে, আনন্দিত মনে, ভরতে করিব দান। ভুমি নৃপবরে, এ দুঃখ সাগরে, ভাসাইয়া নিলে মান ॥

করি রাজ্ঞ লোভ, নূপে দিয়া কোভ, ज्ञनाँन कि পাবে ফল তনয় কারণ, श्रुमि विमात्रन, মৃত্যুসম শোক স্থল জানিবে এখনি, কৌশল্যা জননী, না জানিতে যাব বন। গুজিয়া দীতায়, অন্ত অভিপ্রায়, সুখিনী সন্তোষ মনঃ ॥ ভরত পালন, এ রাজ্য শাসন, করিবে যথার্থ রূপে। क्रिया এ कर्मा, ताथ मडी धर्मा, " শুক্রষা করিও ভূপে শ্রীরাম বচন, করিয়া শ্রবণ, বাষ্পবারি পরিপূর্ণ। পাইয়া চেতন, কিঞ্চিত রাজন, বিমোহিত পুনন্তূর্ণ॥ কেক্য়ী বচন, অপ্রিয় যেমন. শ্রবণ করিয়া পরে এতঃপুর চারী, কিবা নর নারী, সকলে সংশয় করে। टेश (६मा८६म, मूच अदरणम, বিষেষ ভয়ে কাতর।। পরে রঘুপতি,মাতৃ স্থানে গতি, নিবারি চলিলা ভরা ॥ না বলিয়া মায়, হত মনস্বায়, করিলা অরণ্য গতি मिर्यथ वहन, ना करह डाजन, সংজ্ঞাহীন যেন স্মৃতি॥

शाम निज्ञान शाम निज्ञान জনকে করি প্রণতি। मुश्मीला नृश्यमा, विरचिती नमा, কেক্য়ী চরণে নতি॥ করি ক্লডাঞ্জলি, কিছু নাহি বলি, मृहे कत्न श्रमिक्। कतिया श्रीताम, मर्ख छाराम, **অন্ত**রে হইয়া দীন ॥ রাজপুরী ভাগ, বনে অনুরাগ, দেখিয়া দারুণ কর্ম। নয়ন কমল, পরিপুর্ণ জল, लक्षन नुतिया यसी तांम श्रीहरण, वातन छेरणां, - ক্রিলা মৃদু গমন। বনে ক্লতোভোগী, নিবারণ লাগি, লক্ষাণ শুভ লক্ষণ ॥ নিশ্চয় গ্ৰন, জানিয়া লক্ষ্ণ, পশ্চাতে পশ্চাতে যান। পরে অতি ভব্য, অভিষেক দ্রব্য, দেখ্যে রাম মতিমান 🛚 প্রদক্ষিণ পর, গমন বছর, সন্তোষে তাহা না চান। পিতা দুঃখভাগী, স্বপুত্র বিয়োগী, তাহা লাগি বুরাবান 🛭 मिरे चलुः थूती, ताम शतिश्ति, क्कननी शृहर गमन। विषक्षामा मूथ, मका नट् पृथ्ये. দেখিছে এরপ জন !

গুরুজনতারে, পুজি নমন্ধারে, मद्दत मृतुष्कि धीत। मिथिए जननी, हिना जार्थान, নিজ গৃহে রঘ্বীর ॥ (मरथा त्रोम पूर्य, ज्ञास्तर**ा म**ध्य, नाहि इय अलूमान। লক্ষাণ অনুজে, বারি অনুব্রজে, একাকী আপনি যান॥ চিত্তে ধৈৰ্য্য ধারী, রাজ্ঞ অধিকারী, রামের সৌন্দর্যা হেরি। রাজ্ঞনাশ দেখি, তথাচ বিমুখী, नर्ह तां अञ्ज मृनती। রাম লোককান্ড, অতিকান্তি শান্ত, त्रस्रभीका स्थान। চত্ত্রে পরিহরি, ধামিনী সুন্দরী, কথনও যথা না যান॥ ধন পূর্ণা ধরা, পরিজ্ঞাগ করা, অনুভব নাহি হয়। দর্ম পরিভাক্ত, যোগী যোগাসক, (यमन भुद्र इनग्र মনে দুঃখ অতি, তবু ধরি ধৃতি, धात्र करतन ताम। कानाहेट पृथ्य, कननी मध्य, शृंदर् यान खन्याम ॥ সীয় জন যত, রামে অনুগত, त्म मक्ष मश्चिक छ। र्वं ভाবে অতি, তারা र्वं प्रि, भुगोका वम्रान त्राष्टे ॥

আপন বিপদে, চিন্তা পদে পদে,
জননী আম্পদে যান
অবোধ্যা সৎকাণ্ডে,বিরস প্রকাণ্ডে,
সর্গ বোল সমাধান ॥
১৬ সর্গঃ।

পয়ার।

অনন্তর সুদৃঃখে সন্তপ্ত রঘূত্রী। নিশ্বাস নির্গম হয় যথা ভুজক্ম ॥ जाकु नक् कोमना। निवास यान हाम। খারে ছিলা বৃদ্ধগণ করিয়া বিশ্রাম ॥ मिथिटनम बात्र ममल वृक्षान। ক্রডাঞ্জলি বন্দিলেন জ্রীরঘুনন্দন ॥ মাতৃ আজ্ঞামতে কেহ্না করে বারণ। মাতাকে দুৰ্শন হেতু উৎকণ্ঠিত মনঃ॥ প্রবেশি প্রথমগণ্ডে পেয়ের পুরস্কার। ছিতীয় **খণ্ডেতে** যান রঘুবংশ দার॥ দেখিলা তথাম বেদ বিজ্ঞতর নর। রাজপুরক্ত বৃদ্ধ বহু গুণধর॥ मिरे गत विकारत कति नमकात। দীনহীন প্রায় চিত্ত নরেক্স কুমার॥ মাতৃপ্তে প্রবেশ করিলা রঘ্বীর। দেখিলেন কৌশল্যাকে নিয়মে সুস্থির ॥ নিয়মে করেন পৃজা বহু সুরবরে।

পুজের রাজত্ব প্রাপ্তি সঙ্কণ্প অন্তরে॥

দেব প্রতি চিন্তাপর। ইক্রিয় সংযতা।

শুক্লবন্ত্র পরিধানা হরিনাম রতা।

শীজগতি রঘপতি প্রবেশি ভবন। (कराशास्त्र **अं**ननीदत कतिया मर्मन ॥ ক্রতাঞ্চলি করি দেবী দেব পরায়ণা। সর্বাদা মঙ্গল বাক্য পুরিত বদনা॥ অন্তর্না করেন তথা,যত পিতৃগণে। অন্তদেবে দেবীগণে পুচ্ছে এক মনে 🛚 দর্শন করিয়া এই রূপ জননীরে। প্রণাম করেন পদে অত্যন্ত সৃস্থিরে ॥ অবনত হয়ে পদে অখিলের পতি। কহিলেন রাম তব নন্দনাবনতি॥ কৌশল্যা কুমারে দেখি আগতা সম্থে। এসো বংস বলি দেবী চুল্বিলা শ্রীমুখে॥ গাভী যথা বৎদ হেরি অভান্ত তরলা। সেই রূপ রাজপত্নী স্ববৎস বৎসলা। শ্রীরাম প্রস্থৃতি অঙ্কে করিয়া বিশ্রাম। পাইয়া পরম প্রীতি নব ঘনশ্রীম 🛭 পৃষ্ঠিলেন প্রস্থৃতিরে পুরুষ প্রধান। অদিতিরে যেমত পুজেন মঘবান॥ প্রিয় পুত্রে দেখিয়া কৌশল্যা গুণবতী। আশীর্বাদ করিলেন মঙ্গলার্থে সতী। সকল রাজ্যি বৃদ্ধ মহাস্মার প্রায়। চিরায় হইবা পুজ্র দেবতা পূজায়॥ কীর্ত্তি ধর্মা প্রাপ্ত হবে নিজ কুলোচিত। পিতৃ দত্ত রাজ্ঞ লাভে হবে শ্রিয়ান্বিত। হতশক্ত হও পুজ্র গ্রীযুক্ত শ্রীমান। পিতার আ্নন্দ বৃদ্ধি কর গুণবান ॥ পিতৃ সত্য প্রতিজ্ঞতা দেখ অচিরায়। যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করিব। স্বরায় ॥

এই কথা কহিলা কোশলা। মহারাণী। অবণ করিয়া রাম জননীর বাণী॥ কেক্মীর কুবাক্যে সন্তপ্ত হৃদন্তর। কহিলা ব্যাকুল ভাবে মায়ের গোচর॥ না জ্ঞান জননি তুমি বিশেষ সংবাদ। উপস্থিত হইয়াছে হরিষে বিষাদ 🛚 সীতার তোমার আর লক্ষণের তরে। জান না জননি আছু নিশ্চিন্ত অন্তরে 🛭 ভরতের জ্বন্স রাজ্য কাচিলা বিমাতা। পূৰ্বৰ সভা প্ৰতিজ্ঞা বন্ধনে বন্ধ পিড; ৷৷ অতএব পৃথীপতি প্রতিশ্রুত অঘ। ভরতে দিবেন রাজ্য অভিপ্রায় সহাঃ॥ বনবাসে আমারে প্রেরিয়া নরেশর। কেক্ষীর সভো মুক্ত হইবা সহর॥ ভূমি স্বামী যে আমি হইব ছিল আশ। চতুদ্দিশ বহুসর করিব বনবাস। ,वाषु खरा পরিহরি ফল মূলাহারী। রাম মুখে এ দৃঃখ অববে নৃপনারী ॥ পতিতা পৃথিবী তলে রাণী তপশ্বিনী। নিক্লভা কদলী প্রায় আত্রয় অবনী॥ দৃঃখানলে তপ্ত তনু নির্থিয়া রাম। ভূমি তলে প্রস্থৃতির দৃঃখ পরিণাম। ধরিয়া কমল করে করিয়া উল্বিত। চেতনা রহিতা মাতা দেহ কম্পান্বিত॥ করিলেন সর্বাঙ্গ মার্জন রঘ্পতি। রাণীর গাত্রের ধূলি পরিষ্কারে মতি॥ অনন্তরে কৌশল্যা কিঞ্চিৎ স্থির মনে আখাদ করিল। রামে মধ্র বচনে॥

বাষ্প পরিপূর্ণ মুখী জড়ীভূতা রাণী। দৃঃখ চিভে কহিলেন মঙ্গলার্থ বাণী॥ যভূপি শ্রীরাম তুমি না হইতে পুজে। অতি শোক বিবৰ্দ্ধন কণ্ট পূৰ্ব্ব স্থত্ত ॥ তবে আমি এ দুঃখ না পাইতাম দেহে। তোমার বিচ্ছেদ জভা বন্ধ মহামেহে॥ অপুজ্ৰা থাকিব এক মাত্ৰ দৃঃখ ছিল। সুপাত্র পুজ্র বিচ্ছেদে গুরু দৃঃখ দিল। বিবাহ অঁবধি আমি সুখ নাহি পাই। তোমা হৈতে হবে শুভ মনে ছিল তাই। সে সকল চিন্তা ফল নিক্ষল সংপ্রতি। তোমা হৈতে দৃঃখের ভাগিনী রঘুপতি॥ অসম সপত্নী বাকা চিত্ত ভেদ যায়। म जिल्ला मिंदुःथ नर्ह जाय ॥ ততোধিক দৃঃধ রাম হইবে উৎপন্ন। হইল আসিয়া রাম দৃঃখ কালাসয়। নিকটে থাকিতে তুমি এখনি এমন। প্রবাসী হইলে তবে রবে কি জীবন॥ যে ভান আমার প্রিয়কারী সর্বক্ষণ। করে যেবা সদা কাল আমার সেবন ॥ আমার বিধেষ হেতু সেই সর্বজন। क्रिष्टे इत किक्सीत शान अनुकर् । আমারে যে ভঞ্জে কিন্তা পরিচর্য্যা করে। অতিশীভ্র বিনাশ হইবে তারা পরে॥ জ্ঞন হীন পুত্র হীন হয়ে। আমি রাম। কেকয়ী অনিষ্ট বাক্য সব অবিশ্রাম॥ তুমি বনগামী হৈলে ততোধিক খেদ। কেক্য়ীর বাক্য বজ্ঞে হবে বক্ষে। ভেদ

অতএব অসহ এ দৃঃধ রঘুমণি। জীবনে কি কাষ বল মরণ এখনি I তব জন্মাবধি রাম পাইলাম কষ্ট। এই রূপে গত হৈল বৎসর দশাষ্ট্র॥ তোমা হৈতে হইবেক দৃঃখ পরিক্ষয়। মানসে হইয়াছিল আকাজকা সঞ্জয়॥ সুনিয়মে করিয়াছি কত উপবাস। কুৎসিত আশায় দেহ পাইয়াছে নাশ॥ দৃঃবিনীর দৃঃখে দৃঃখে তুমি বর্দ্ধমান। অনশনে ভাবিয়াছি তোমার কল্যাণ॥ তুমি বনবাস গেলে অভিলাষ শাখী। সকল বিফল হবে কেন প্রাণ রাখি॥ দৃঃখ চয় হৃদয় করিছে বিঘাতন। সোতে যথা নদীকুল করে নিপাত 🚛। **म्हे क्रम पूर्वन श्रवन वांब्र गै**जा। উচিত মরণ মম কি দেহে মমতা।। किया मम मुका नाहि এই বা निक्त । . অথবা যমের সাবকাশ নাহি হয়॥ কি হেতু অন্তক নাহি করে আকর্ষণ। শোকবজ্ঞে বক্ষঃস্থল করিছে ভেদন ॥ **এই** ভिग्न रम च रेम्हाग्र यक्ति गति। আন্ধ হত্যা পাপ হবে পরকালে অরি॥ বহু **দৃঃধ দায়ক কর্ত্ত**ব্য তাহা নয়। 'अछारे भवन भग रहेल निक्त ॥ তব দুঃখে দুঃখিতা করেছে একে বিধি। न। রবে জীবন যাবে বিনা রাম নিধি॥ আরো কহি দৃঢ় এই হৈতেছে নিশ্চয়। पैरे पुःरथ खता जीन रूरेरव कपग्र॥

তথাচ না হয় প্রাণ বিয়োগের কার্য।

মৃত্যুর অভাব মম হইল নির্ধার্য॥

এই অতি দুঃখের বিষয় ভারি মনে।
অনর্থক গেল কাল তপদ্যাচরণে॥

সৃত আশে বাসে পুক্র বিজ্ঞ দেব দেবা।
নিরর্থ হইবে ইহা গণিয়াছে কেবা॥
পাইয়া অনেক দুঃখ নরবর জায়া।
করিলেন বিলাপ ভাবিয়া পুক্র মারা॥
দুঃখিত দেখিয়া পুক্রে কর্মস্থক্রে সভী।
কান্দিলা কিন্তরী প্রায় না হয় বিরতি॥
আর্য রামায়ণ কথা শুন সাধু বর্গ।
কৌশল্যা বিলাপ বাক্য সপ্তদশ সর্গ॥
১৭ সর্গঃ।

পরার।

পুনর্বার কোশল্যা হইয়া সৃদুঃখিতা।
কহিছেন কোপ বাক্য নৃপতি বনিতা।
না শুনিবে তুমি রাম কামির বচন।
এই হানে স্থিতি কর কেন যাবে বন॥
যতকাল রবে জীব আমার শরীরে।
বাঁচাইতে বাঞ্ছা থাকে থাকহ সৃদ্ধিরে॥
এই রূপ রাণীর উত্তর শুনি পরে।
লক্ষণ কহেন বাক্য জ্ঞাননী গোচরে॥
কাল উপযুক্ত কথা কহিলা লক্ষ্মণ।
রাম বনহালে তৃপ্ত নহে মম মনঃ॥
প্রাপ্য রাজ্য পরিহরি হরি রঘুমনি।
নারী জিত পিতৃ বাক্যে বীর চূড়ামনি

বনগামী হ্ইবেন কেন রঘুপতি। বুদ্ধ রাজে উপস্থিত বিপরীত মতি॥ এ বাক্য কৃহিতে শক্য নহেন রাজন্। এহণ করিয়া মাত্র কেকয়ী বচন ॥ ना क्षित्र ना छनि काय किन द्वार रूत । কিব্দুপ্ত কাননে পুত্রে পাঠাবেন তবে। ইহলোকে না দেখি এমন কোন লোক। माय पिया त्राघटन ना कटत क्ट माक ! সকলে রামের মিত্র অমিত্র রহিত। কোমল স্বভাব রাম ধীমান পঞ্জিত। দেব তুল্য সন্ত্ব যার সর্ব্বদা শরীরে। মৃদ্ গুণ পরিপূর্ণ দাতা রঘ্বীরে॥ শক্ত সহ মিত্রভাব বাৎসল্য প্রকাশ। জানিয়া এমন পুজে নৃপতি নির্যাস # দেখিয়া এমন ধর্ম কি ধর্মে নৃপতি। বনবাসে পাঠাবেন রম্ব বংশ পতি ৷ যদিও এমত বুদ্ধি উপস্থিতা হয়। বালক বুদ্ধের কথা গ্রাহ্ম করা নয়॥ নারী পরাজিত যেবা সেবা হেতু বশ। তাহার বচনে হয় বিশ্বাসে অযশঃ ॥ द्राक्रधम्म यथार्थ (य क्लान्न वृक्तिमान। সে কখন নাহি দেয় হেন কুবিধান ॥ যাবত না হয় হেতু লোকে সুগোচর। তাবৎ রাজ্ব কর রঘু বংশ বর 🛚 না হয় এমন লোকে কুরীতি বিধান। ভত্ত তব নিকটে ধরিয়া ধনুর্ববাণ ॥ কার সাধ্য করে অভিষেক নিবারণ। নিৰ্মনুষ্য হবে তবে অয়োধ্যা ভুবন ॥

রাজ আজা উপলক্ষে যৌবরাক্স হানে। এখনি বিনাশ হবে সে কি রবে পাণে ॥ না জানিয়া নিগ্ঢ় অপর মৃঢ় জন। रुहेल ভরত পক रुहेत निधन॥ তবে তারে যম ঘরে পাঠাইব সভঃ। ক্ষমার সময় নহে সমূচিত অভ॥ নিজ দর্প দেখাও শিথাও শুদ্ধ রীত। শুদ্ধ ক্ষমা গুণে রাম কে হয় পুঞ্জিত। কেকয়ীর বশে ভিন্ন, রসে নর বর। হইবেন অবশু নিযুক্ত অতঃপর॥ ভিন্ন মতালম্বী নূপ জানিয়া নিশ্চয়। বচনে বিশ্বাস আর কদাচিত নয়』 কোন্ ধর্ম আশ্রয় করিয়া নরপতি। পুক্ত পরিভাগ ইচ্ছা এঞ্চার কুমতি॥ কে করায়•আমারে রামের সঙ্গে ভিন্ন। ভরতে দিবেন রাজ্ঞ কি বলের চিহ্ন 🏾 যদি রাম গুণধাম প্রবেশেন বন। দীপ্ত হুতাশনে অ**গ্রে ত্যজিব জী**বন॥ দর্বভাবে দদা আমি রামে অনুরক্ত। অথভা কুলের ধভা আমি তাঁর ভক্ত॥ এই সম্ভা পাইব তোমার পদ্ধয়। দেখুক্ আমার বীয়া শক্ত সমুদয়॥ রামের আজ্ঞায় দেবী করিব উদ্ধার। তব দৃঃথ শক্তিশেল না রাখিব আর ॥ লক্ষণের এই বাক্য করিয়া অবণ। পুনর্ব্বার রাম মাতা কহিলা বচন ॥ অবণ করিলে রাম লক্ষ্মণের বাণী। শোক দুঃখে আত্র তন্ত্র কহিছেন রাণী।

ভক্তিমন্ত অনন্ত গুণের গুণী ভাই। কহিল যে পরামর্শ কর রাম তাই॥ যদি হয় ক্রচি মনে লক্ষ্মণের কথা। বিমাজার বাকো বন গমন অন্থথা ॥ শোকানলে কলেবর দৃহিছে আমার। পরিতাগ করি কোথা বাইবে কুমার॥ যদি পুরাতন ধর্ম করিবে তনয়। তবে পুজু কর মহাধর্মের সঞ্চয়॥ মাতৃ দেবা মহৎ কর্ম এই ধর্মাচর। সুখে থাক কথা রাখ শুঙ্গমণ কর॥ নতুবা বিমাতৃ বাক্য করিয়া শ্রবণ। বনে যাইবার যোগ্য না হও নন্দন ॥ शृद्धि श्रुवन्तत्र शत्र निश्चरः निश्चन। মাতৃ বাক্য অবণে পাইলা কত গুণ॥ শাসিয়া সাপত্নানে শক্র নহাতেজাঃ। অধিকারে সুরপুরে হইলেন রাজ।॥ অতএব আমার সেবনে থাক গেছে। मभातित्व कछ श्रुना श्रुनावान् (मरह ॥ পরম তপস্যা ফলে স্বর্গ ফল পায়। পাইবে-পরম পুণ্য আমার সেবায়॥ **পিজাকে যেমন দেখ তব পৃত্য**ীন। ভাবিলে জননী তথা পূজনে সমান॥ আমার বচনে বনে গমনে নিবর্ত্ত। তোমা বিনা এ জীবন গমনে প্রবর্ত্ত ॥ এই বুদ্ধি আমার হৈতেছে উপস্থিত। দুঃখিনীরে পরিহরি যাবে না নিশ্চিত॥ যদি যাও যাদুমণি একা কেন যাবে। আমাকে লইয়া যাত্র। কর সুখ পাবে॥

তোমার নিকটে থাকি যদি তুণ খাই। লাগিবে অমৃতাধিক পুজ্র মম তাই॥ যভপি আমারে পরিতাগ করি রাম। কাননে প্রস্থান কর নবঘন স্থাম॥ তবে আমি কোলে করি এক্সমের মত। না রহিবে এ জীবন জানিবে নিশ্চিত॥ এই মাতৃ হত্তা মহা ঘোরতর পাপ। সমুদ্রে পড়িবে পুজ যেন ব্রহ্ম শাঁপ॥ বহুবিধ বিলাপে ব্যথিতা দেখি মায়। কহিলা ধর্মাত্মা রাম বুঝাইয়া তাঁয় ॥ পিতৃ বাক্য বিশব্দন মম সাধ্য নহে। না পারিব জননি যাবৎ প্রাণ রহে। আমার সাধনে হবে প্রসন্ধা জননী। পিতৃ বাক্যে বনে যাব তপস্যা ধরণী ॥ একা আমি পিছ শাস্তা নাঁ হব নিশ্চয়। সাধ্র প্রশান্ত ধর্মা অরণ্য আশ্রয়॥ এই কথা কহিলেন অনেক ব্ৰাহ্মণ। শুনিয়াছি পূর্বেব যাহা কর মা শ্রেবণ। পূর্ব্বে পিতৃ বাক্য কর্নে করিয়া শ্রবণ। জামদগ্নি করিলেন জননি শাসন। ধীমান শ্রীমান ভৃগুরাম মহাবীর। কুঠারেতে কাটিলেন রেণুকার শিরঃ। কণ্ডু নামে বনবাসী ঋষি এক জন। পিতৃ বাকো সিদ্ধারণ্য করিলা শরণ ॥ ভাদৃশ ভোমার বাক্য করিয়া হেলন। পিতৃ আ্বজ্ঞামতে আমি প্ৰবেশিব বন॥ আমাদের পূর্বজন্ম সগর সন্তান। খনিলা সকল ক্ষিতি শুনোছি পুরাণ॥

পিডা সগরের বাক্যে খুনি বসুমতী। কত প্রাণী বধিলেন সগর সন্ততি। সকলে সেবিলা ভাতে আছে পূৰ্ব্বকথা। আমি হব পিতৃ শাস্তা একা এ কি কথা। [ঁ] দেখ প্রায় সচ্চত্তিত্র যতু নরগণ। সেই পথে পশ্চাতে সবার অন্বেষণ ॥ এই হেডু সেই ব্স্ব করি বলবান্। বেদ প্রায় পিতৃ বাক্য করিব প্রমাণ ॥ ' অ**নুগ্রহ কর মাতা দেও** অনুমতি। পিতৃবাক্য তুল্য আর আছে কি গো সতি। এ কথা কহিয়া রাম কৌশল্যার প্রতি। পুনর্বার লক্ষণে কহিলা রঘুপতি ॥ জানিবা অনুজ তুমি প্রাণের সমান। চিরদিন এই রূপ ভাতৃ ভক্তিমান্। আমার নিমিপ্ত তব সুদৃঃখিত পাণ मम पृर्थ पृथ्वी देश्या कशिल भुमान এ দুঃবে দুঃবিত আমি নহি কলীচন। বে দৃঃখেতে হইলেন পিতা অচেতন। এই বড় দৃঃধ ভাই আমার নিমিত্ত। দঃখাৰ্ণৰৈ ভাসিলেন উৎকণ্ঠিত চিত্ত॥ महात्मादर निकारमर द्राचि भरगाशित । কি ধর্ম সম্ভটে তাত আহা মরি মরি॥ কেকরী কঠিন প্রাণা রমণী সভাব। অধর্মে পতিত করে জানিয়া সে ভাব॥ कि जाफर्रा कि व्यर्थिंग पृथ्येट्ड पृथ्य যে কর্ম করিতে চাহ তাহে কিবা সুখ। রাক্ত আশে শান্তা হব ধর্মজ্ঞ পিতার। ত্রিলোক নিশিত রাজে কিকার্য্য আমার

পিতাকে যাতনা দিয়া পাব রাজ্ঞ ভার। কখন না হয় যেন এ কাল আমার॥ এ ইন্ছা মুহর্ত্তকাল করিয়া লক্ষ্মণ। না হয় আমার বাঞ্চা ধরিতে জীবন॥ অভিপায় না বুকিয়া কহ এ বচন। সাধু হয়ে। মম হৈত নিমিত্ত লক্ষ্মণ॥ ধর্মে হিতি মহামতি সেই অতি লক্ত। যে ধরে ধর্মেরে তারে ধর্ম করে সভা॥ পিতৃদেবা বিনা ধর্ম কি আছে আমার। করিব পিতার শান্তি বচনে তোমার॥ না করি ষভাপি পিতৃ বচন পালন। তবে ধিক্ধিক্ ভাই আমার জীবন॥ আমি যে পিতার বাকে নিতা অনুগত। হইব কি রূপে তাঁর আুজ্ঞা বহিত্বত। যত্তপি কেকয়ী বাক্য কর নিরূপণ। পিতৃ অনুমত বাক্য জানিবে লক্ষ্মণ ॥ অস্থান্থ ক্ষত্রিয় বিছা কার্য্য এ কুমতি। পরিহর, ধর্মা বুদ্ধি আচর সুক্রতি॥ এই বাক্য বলি লক্ষীবৰ্দ্ধন লক্ষ্মণে। পুনর্বার কৌশল্যার প্রতি সঙ্গোপনে॥ युभकर समिता शत निया श्रम तकः। क्ठाक्षिण श्रेटणन तथु क्लथक। ना कत अमन मत्न छोन धनवडी। পিতার শাসন কর্ম করিব মা সক্তি॥ আগে বনে গিয়া খণ্ডি পিতার সন্তাপ। পরে দেবী প্রাণের সহিত দিও শাঁপ॥ প্রতিজ্ঞায় উত্তীর্ণ কুশলী হব যবে। তব পাদ পদ্ম ধ্য় দৃষ্ট হবে তবে॥

কর আজা অনুজ্ঞা লইয়া যাই বন। শুদ্ধ চিত্তে প্সন্নতা প্কাশ এখন॥ রাজ্ঞ জন্ত করা ভাগে সূপ্রশন্ত যশঃ। এ কর্দে আমার দেবী না হয় মানস। সুকৃতি হেতুক করি নিকটে সুকৃতি। আসিব নিকট কালে খণ্ডিয়া দুক্তি। অযোধাার মানব থাকিতে বর্ত্তমান। শাসিব স্বধর্মে রাজ্য তব বিভাষান॥ কৃতকৃত্য হয়ে। পুনঃ বন্দিব চরণ। এক্ষণে প্রণতি পদে বিদায় কারণ॥ পুসর বদনে দেবি আজ্ঞা কর তুমি। নিবিল্লেতে ফাত্রা যেন করি বন ভূমি॥ অমঙ্গল ইহাতে করিতে যোগ্য নহ। পুত্ৰ পুতি অনুমতি বাক্য মাতা কহ। পদানত সূতের না লবে অপরাধ। পিতৃ আজ্ঞা পালনে না করিবাবিবাদ नत्र खाँ अहे क्रश विभिष्टे वहरन। বুঝাইয়া সচেষ্টিত দণ্ডক গমনে॥ এই কথা পুনঃ পুনঃ উচ্চারিয়া রাম। করিলা নিয়াস ভাজি কিঞ্চিৎ বিশ্রাম। वात्रचात कूमादत कतिया (नवी बंदक। রঘুবর ঝর ঝর হেরি বারি চক্ষে॥ श्रुनः श्रुनः চूचन करतन ठाँ म गूर्य। অষ্ট্রাদশ সর্গ সাঞ্চ কৌশল্যার দৃঃখে ॥

১৮ সর্গঃ

ত্রিপদী

মায়ে বলি এই বানী, পুনর্বার মহামানী, লক্ষাণে কহেন রঘ্মণি। দেখিয়া বিমর্থ তায়, শ্বসন্ত সর্পের প্রায়, নিকটস্থ নির্থি জননী॥ শুনহে লক্ষ্মণ ভাই,মনে তো বুঝোছি তাই, এত দৃঃখ আমারি কারণ। মম অভিষেক জভ, তুমি যে মানদে কুগ্ন, ' সে তুমি হইয়া শুদ্ধ মনঃ॥ বন যাত্রা যাতে হয়, শীত্র কর সদাশয়, বিলম্ব উচিত নহে আরু। মম রাছ্য অনুভবে,বিমাতা আছেন ক্ষোভে বুঝাবে যতনে বারস্বার॥ না করেন শঙ্কা যাতে,তুমি রত রহ তাতে, 🕻 विधिमटा इहेग्री मटा है। त्मथ डाहे कि अशृक्त, कडू आमि तृष्कि शृक्त, মারণ না করি মাতৃ কণ্ট। দর্ক্ত মাতা দমতুল, দর্কেজনে অমুকুল, প্রতিকূল না হই অজ্ঞানে। এ কথা জানিবে স্থির, শুন রঘুবংশবীর, নিঃশস্থায় থাক তেকোমানে॥ मः भरत्र कतिष्ठ पृथ्य, ना कत प्रणिन पूर्य, উপেক্ষা ভোমারে নাহি করি। যাবত্ জীবন দেহে, বিমুক্ত তোমার স্নেহে, नहि नहि कंहि करत धति।

্রকহিবে কেকয়ী স্থানে,কেন শঙ্কা কর মনে, কেকয়ীর কিবা দোষ,মম প্রতি অসন্তোষ, নিশ্চয় কাননে যাবে রাম। यञावजः नरहन खननी। কহিলেন মহাজ্ঞানী,সর্ব্ব মাতা সম জ্ঞানি সম্পূর্ণ পুত্র বৎসলা, দৈবে করে এই ছলা, মম পীড়া হেতু গুণ মণি॥ তব বাণী রাণি সভা ধাম॥ এই रह्जू উপেকায়, कमां शिन वा हिन्छ यात्र |ति भूर्थ निश्चर वांनी, सम श्रह् विन मानि, এমন উচিত কভু হয়। ক্লতান্ত সমান তারে মার। কেন করিবেন রাম,এরাজ্ঞ অযোধ্যা ধান সকল মাতার প্রতি, অবিশেষে মম মতি, কি জ্বন্থ অখ্যাতি মিছা কর॥ ভরতের হবে সমুদয় 🏽 ি পিতা সভা পরায়ণ, মিধ্লা ভীত সর্বক্ষণ, হইবে ভাল আমার, সে বাসনা সবাকার, নিভঁয়ে থাকুন অযোধ্যায় একেতে অদৃষ্টে করে আর। 🎚 আমি বন বাসে যাই,তাহে কোন দুঃখ নাই ना रहेल शृद्ध दांगी, कथन अपन वांगी, বুঝাইয়া কবে বিমাতায়। না করেন জোধেও সঞ্চার॥ ृ वाहे कि ना वाहे वतन, अहे भक्का दकन मतन অতএব দৈব কৃত, জননীর হত প্রীত, নতী মহীপতি উভয়ের। निन्छि विनिक्ध बहे इस। অভিষেক অভিলাষ,অজিয়াছি সুনিৰ্বাস সভাবতঃ সুমঙ্গলা, রাজগ্রষি কুলবালা, যোগ্য নহে ভাই এ ভাগ্যের। সতী অতি সরল কদয়॥ রাজ্ঞ আশা পরিহরি,এফণে বাসনা করি, अनत्कत मन्निकरणे, कडू कि अभा तर्हे, বনে হয় নিয়মিত বাস। खघन्छ। तमनी ममजूल। **ठीत हुन्स ख**हाथाती, इहेग्रा खत्रगाहाती, এভাব বভাব সিদ্ধ,করিতে অন্তর বিদ্ধ, পূর্ণ করি কেকয়ীর আশ। रिषय **म**र्कात कत सुन। মনে হবে সুখোদয়,পরিভাগে পাপাশয় অচিন্তা দৈবের শক্তি,কার সাধ্য করে মুক্তি, ষে হৃদয় হইবে নিবু, ভি। এই युक्ति क्षांनित वित्नव। মুক্ত হব পিতৃ ঝণ, পাব কি এমন দিন, পাইব অশেষ নিধি, তাহে প্রতিকৃল বিধি, সুস্থা করি কেকয়ীর মতি। পাড়ে বজ্র শিরে দিতে ক্লেশ। এইরপ অভিমত, হইতেছে বুদ্ধি গত, কি করিবে হয়ে কুদ্ধ,দৈবের সহিত যুদ্ধ, নিগ্রহ উপায় যার নাই। मूर्छ विषय भरीभाग। आमात वन भ्रमन, रक कतिरव निवातन, সুখ দৃংখ আর ভয়, উদেগ প্রাপ্তি বিষয়, मम्भूनं कात्रन औंठ कांग। ক্ষতি পরাভব ভাব ভাই॥

উৎপত্তি বিনাশ স্থিতি,সকলি দৈবের নীতি. এ ভারতী উক্ত বিচক্ষণে। সর্ব্বজ্ঞ ভূমি সুধীর, রঘ্বংশ মহাবীর, সৃষ্টির হইয়া ভাব মনে। পরম পঞ্জিত যতি, তপস্যায় দিয়া মতি, পাইল উক্তম গতি যারা धान ज्वान शरायन, मथा मना नीरायन, তব দৈব বল भाग তারা॥ कथन या मतन नाहे, देवत वरण घरहे जाहे অকমাৎ হয় উপস্থিত। শুভ কি অশুভ কর্মা, সকলি দৈবের ধর্মা, এই মতি আমার নিশ্চিত। কভু নহে সম্ভাবিত,আমার যে উপস্থিত, এ কষ্ট অভীষ্ট ছিল কার। দেখ হে অনুজ্ঞ যোগ,কারে করি অনুযোগ, অভিষেকে বিয়োগ সঞ্চার॥ হবে রাজ্যে অভিযেক,যদি বিধি দিলে দেক, বিবেক কিঞ্চিৎ নাহি ভাবি। কি করিব দৈবগতি, না হবে উত্তপ্ত মতি, মম মতে থাক ভাব ভাবি॥ না করিবে শোকে মনঃ,কর আত্মা নিবারণ, লক্ষণ আমার রাজ্য নাশে। জনক জননী মম. দোষী নন প্রিয়তম, না করিবে মনে বনবাসে ॥ মাতা পিতা মহন্তম,কে করিবে দৈবক্রম, লজ্ঞান লক্ষ্মণ শক্তি কার। অযোধ্যায় উনবিংশে, এরামের রাজ্ঞ-হিংসে, লক্ষণ প্রবোধ পরিষ্কার॥

১৯ সর্গঃ

পয়ার

এই কথা কহিলেন কমল লোচন। অধোমুখে রহিলেন সুমিত্রা নন্দন॥ অতিশয় সন্তাপে সন্তপ্ত কলেবর। কোপে কম্প সম্জল নয়ন জলধর ॥ कतिया जुकूरि वस जुत मरधा कारश। মহা দর্প দদ্শ নিম্বাদ দৃষ্টি লোপে॥ গর্ত্ত গামি ভুজঙ্গ সদৃশ অঙ্গ ছটা। ज्कृषि कृषिन मूथ कानास्टक घछ।। বলবান সন্মান সম্ভ্রান্ত সিংহ রাজে। ভ কুটি কুটিলানন সেই রূপ সাজে। অত্যেকর কুঞ্জর ক্ষেপণ করে যথা। অতি রুষ্ট অসম্ভষ্ট রামান্তব্ধ তথা॥ বক্র অসি চক্র নিজ মন্তকে ঘূর্নিত। কোপে তাপে শক্ত মর্ম্ম দারণ কুপিত। সংরম্ভ সময়ে ক্রোধে রক্তিম লোচন। রঘুবীর বরে কোপে কছেন লক্ষ্মণ ॥ অপরুষ্ট স্থানে বনে গমনে উদ্যোগ। এ কেবল দৈব বল ছল কর্ম ভোগ॥ ধর্ম লোপ ভয়ে কোপ লোপ করে পরে অপবাদে বিষাদে নিষাদ পুরে চরে ॥ নিতান্ত হইয়া শান্ত সুসন্ত্রান্ত রাম। নির্বিরোধ জিতকোধ কেন গুণধাম। কি অভাগ্য বনযোগ্য তুমি রঘুপতি। কেমনে করিলে বনে গমনে সমতি॥

ক্লীব জন যেমন জীবন মৃত প্রায়। ্ব ক্ষত্রিয় তনয়ে প্রিয় তা কি শোভা পায় ্র **করে ভাগ অ**মুরা**গ** বিরাটের বল। অবিলম্বে অবলম্ব বুথা বাক্য ছল ॥ रेमन वन वरन कन क्रीन काश्रुक्य। य वीत श्रूक्ष चित्र धरत कालाकूण ॥ সাধারণ নিবারণ সম্ভ্রম যাহার। সে কি মানে দৈব বল আজ্ঞায় তাহার! জানি মূল প্রতিকূল স্বয়ং দৈব হয়।

তবু তারে শাদিবারে পার তেজোময়।

কেকয়ী নির্দ্ধা দ্যাহীন নূপ বর। কেক্য়ী নির্দ্যা^{*}দয়াহীন নূপ বর। না কর শাসন (কন রঘু গুণাকর। অতি মন্দ পাপ অনুরন্ধ অনুক্ষণ। প্রতিকার দুজনার কর্ত্ব্য একণ 🛭 थर्म रेट्र कुमन मकन उभार्द्धन। त्म कूमत्म कूमनी हहेत् वा छन ॥ म উপায়ে উপায়ী इद्देव अर्थ मिक्ति। थर्म्भ तरव निग्रंड शाहरव नाना शक्ति॥ ধর্মময় ভূমি তার যোগ্য পাত্র নহ। যগুপি না পার নিজ কিন্ধরেরে কহ। যুক্ত কর মুক্ত কণ্ঠ হয়ে। আজ্ঞা দাসে। শাসিব তোমার শক্র যে রাজ্ঞ বিনাশে লোক দ্বেৰ সমাবেশ কর লোক প্রিয়। যে নিমিত্ত নিহা বুদ্ধি বিভ্রম ঘদীয়॥ ধর্ম লোপ ভয়ে কোপ কর পরিহার। লোক অপবাদ মহা প্রমাদ তোমার। তোমার সমান রূপ স্বরূপ যাহার। এমন কথন কভু যোগ্য কি তাহার

ক্লীব বাক্য সঙ্গে এক্য অবীরত্ব বাণী। পরাক্রমী ক্ষত্রিয় সন্তান অগ্রমানী॥ বলবস্ত নিতান্ত সুশান্ত পথে গতি। ক্ষত্রিয় স্বধর্ম ত্যাগ বিরাগ সম্প্রতি॥ श्रुक्ष विहीन मूमीन कीन याता। দৈবে পড়ি দৈবের প্রশংদা করে তারা ना याति श्रुक्ष वल, वल टैमव वल। প্রতিকূল হইলে স্মূল করে তল ॥ यम कतिवात मूखवस देमत्व कतत। তবু তব শক্তি আছে শাদিবার তরে। এমন পুরুষকার তোমার প্রবল। প্রতিবন্ধে প্রবর্ত্ত না হও করি ছল। यि वारा वीत वर्ग वालिन ना कर। দেও দাসে আজ্ঞাভাকি বাধ্য এ কিন্ধর 🏾 অনন্তর বহুতর কর্ত্তব্য যে হয়। করিব ভোমার আজ্ঞা বলে মহাশয় !! লোক ছেৰ করি শেষ কর লোক পতি। যেহেতু বিভ্ৰম উপস্থিত কণ্ঠ অতি॥ আমার উদ্দেশু ধর্ম এই মহাশয়। যে প্রদক্ষে তোমার বিভ্রম নাহি হয়। দকলের অপ্রিয় এ বৃদ্ধি উপনীত কেকয়ীর কেবল জ্বনায় মাত্র প্রীত॥ এই কর্মা অধর্ম সঞ্চার নৃপতির। कामजः धर्माजः वाम त्रघूवः म वीतः॥ আজ্ঞা দিয়া অভিষেকে পুনর্নিবারণ। কে করে এমন প্রতিকূলতাচরণ। ইহাতে না হবে কিসে পাপের উন্নতি পাপিষ্ঠা ভার্যার বশে বিমুগ্ধ ভূপতি॥

বিশেষে বিষেষমূল কেক্য়ী বচন। ক্ষদ্র বাক্য পালনে অযোগ্য নারায়ণ॥ যৌববাজ্যে অভিষেক কার্য্যে আমস্তিয়া কি ধর্ম সাধিলা তাত ধর্মে মতি দিয়া। পাপরপা এই বৃদ্ধি দৈব দোষে হয়। তথাচ এমত কর্ম কারু করা নয়। বৃদ্ধিমান জনের এমত বৃদ্ধি হয়। উপস্থিত কাৰ্য্যে হানি কদাচিত নয়॥ ক্ষুদ্র হীনবীর্য্য যার। অশক্ত স্বকর্মে। তারা যায় দৈবের পশ্চাতে হীন ধর্মে॥ व्यक्त मन्भुनं वनी स्ट्रेटव एव छन। কদাচ না করে দৈব পশ্চাতে বর্ত্তন ॥ দৈব আর বীর্যা ভার উভয়ে যে বর্জে। পতিত না হয় কভু দৈবাধীন গর্ভে ॥ অর্থাৎ বছাপি দৈব করুয়ে বিপন্ন। यराल উडीर्न इय नहरू व्यरमञ्जा অভ লোক দৈব আর পুরুষের বল। করিবে দর্শন দৃই কে হয় প্রবল ॥ কার্য্য সিদ্ধি হেতু যদি কর উত্থাপন। त्मिर्य रेमरवत वन विख्या नक्षा ॥ মম পুরুষত্ব করে দৈব পরাভব। অনায়াসে দেখিবেক সকল মানব॥ তব রাজ্ঞ বিঘটনে হয়া প্রতিকৃল। অযোধ্যা আগত দৈব আশ্রমী অতুল ॥ অঙ্কুশ বিহীন মন্ত মাতঙ্গের প্রায়। মন পুরুষত্ব সিংহ নিবারিবে তায়॥ ষভপি ইত্রের সহ সর্বে দেবগণ। নিবারিতে আইসেন রাক্সাভিষেচন॥

না পারেন কদাচিত্ করিতে ব্যাঘাত দুরে পরাহত প্রভু একা মম তাত॥ কেক্য়ীর পাপ আশা করিব খণ্ডন। পিতার আখাস সব ইইবে মোচন॥ তব অভিষেক কর্ম করিতে ব্যাঘাত। পুজে রাজ্ঞ প্রদানে বচন সুনির্ঘাত ॥ যে সকল জন হৈতে তব বন বাস। পরস্পর উথাপনে হ**ইলে প্রকাশ**। मिहे मर्ख छत्न वत्न वमाहैव खामि। বসিয়া দেখিবা গৃহে ত্রিদশের স্বামী # না হইবে প্রতিকৃপ দৈব তব প্রতি। মন স্থানে পরাহত হইয়া সম্প্রতি॥ বহু বৰ্ষ জাত হৰ্ষ পাল প্ৰজাগণ। পরে বংশধরে রাজ্ঞ করিয়া ভার্সাণ ॥ পূর্ব্ব রাজগাৰি মত যাবে বনবাস। এ বয়সে বনবাসে যাবে শুন্যে ত্রাস # বয়স্বাহুদা হৈলে রাজ্ঞ করি ভাগ। বনে জায়া সনে যাবে হবে অনুরাগ ॥ ধর্ম লোপ শঙ্কা করি তুমি নর হরি। কি জ্বন্থে অরণ্যে যাবে জ্বটা বল্ক ধরি ধর্ম প্রাপ্ত বাজ্ঞ আপ্ত ইচ্ছা পরিস্তারে নহে যুক্তি এই উক্তি মহাবীর ভাগে॥ তোমার যেরপ সতা সতারপে গণি। তথ্য তুমি ত্রিলোকের বীর চূড়ামণি॥ যদি প্রতিকৃল দৈব হয়েয় উপস্থিত। তোমার ব্যাস্থাত করে মনের বাঞ্ছিত॥ তুমি তারে নিবর্ত্ত করিতে অসমর্থ। এ কেবল ছল মাত্র প্রকাশ যথার্থ॥

তব তে**জে** ত্রিলোক শাসনে শব্ধ আমি অস্ভ আমার এই তুমি বনগামী॥ একা আমি ত্রিলোক করিতে বিপর্যায় তোমার নিমিত্ত পারি সভা মহাশয় 🕨 নিবুত্ত হইয়া বনে চিত্ত কর স্থির। অযোধ্যায় অভিযিক্ত হও রঘ্বীর॥ পৃথিবী পালন জন্ম অরণ্য গমন। অবশু নিষেধ করি শুন নারায়ণ॥ তোমা বিনে ভুবনে পালনে কেবা ক্ষম কেক্য়ীর যে মনে কেমনে মনোরম ॥ শোভার নিমিত্ত আমি না ধরি এ কর। ভূষণ কারণ ধনুঃ নহে রত্বর॥ वस्तात दर्जू नाह यम जीक अमि। শক্তর শাসুন কর্ম করে মর্দ্মে পশি । কীর্ত্তির আকাজ্জা নহে শুন রঘুমণি। খন্দ্রাঘাতে শক্রপাতে সমস্ত অবনী॥ পদাতি সারথি রথী মাতঙ্গ তুরঙ্গ। * थश्च भूश्वमारण तक्षमुक रूरव तक ॥ করিয়া অঙ্গুলি বন্ধ ধরি শরাসন। অত করি অশ্ব করি নর বিঘাতন॥ পতিত ক্লধির যত করিতে ভোজন। মহামায়ী রক্তপায়ী করিবে গমন ॥ বিদ্যুদ্দাম পরিণাম খড়ের কিরণ। মহারণে দর্শনে অস্থির বীরগণ॥ জীবন ধারণে শক্ত নহে কদাচিত্। খজনধারে নষ্ট ঘারে পৃথিকী পূরিত প্রাবৃট্ সময়ে নব্ঘন সমাগ্রে। সৌদামিনী সমত সম্ভ্রমে যথা ভ্রমে

বজ্রপাতে নিপাত নিখিল জীব জন। অসির আঘাতে অন্ত অন্তয় জীবন॥ মানব মাতক অশ্ব মর্ম্ম ভেদ করি। প্রভাষুক্ত ভক্ত অসি দেখিবা ঞ্রীহরি॥ এই বাহু যুখা যথাযোগ্য কর্মা করে। নরেক্স প্রভুত্ব কর্ম্ম রক্ষণের তরে॥ তোমার প্রভুত্ব প্রভু করিবে বর্দ্ধন। কৌশল্যা মানস কর্ম করিয়া পূরণ ॥ क्किशीत कूछिन श्रजाव विस्माहन। व्यमतिका वमृत्रता वर्ष विजत्र।॥ मयस आसीयवर्ग शृक्षा धाठातिया। তব পাদপদ্মমূ**লে প্র**বেশ করিয়া॥ এই কথা যথার্থ জানিয়া রঘুবর। কোন্জন বিরক্ত 💗 ইবে কেবা পর॥ তোমার অপ্রিয় জন তার প্রাণ যশঃ। विघाजन मुक्तम् अपन तक ना इत्य व ।। বসুধা তোমার বশে আসিবে যখন। জানিবে যথার্থ রূপে লক্ষ্মণ শাসন॥ এই রূপ অনুরূপ বল প্রদর্শনে। লক্ষণ জীরামচন্দ্রে প্রস্কুল করণে। পুনর্কার বচন রচন পর বীর। জনক কর্ম নিগ্রহ করণে অস্থির॥ এই রূপ রামচক্র আমার নিশ্চয়। व्यर्थ गठ वह वाका छनि ममूनग्र॥ অভিপ্রায় বিজ্ঞ রাম মধুর বচনে। বিমুক্ত করেন পিতৃ কোপ বিমোচনে সমাপ্ত বিংশতিত্য সর্গ কথামৃত। রসাধানে আহ্লাদে সজ্জন সমাবৃত॥

२० मर्गं ।

লঘু ত্রিপদী।

রাম ভক্তি বশে, অতৃল সাহসে, রুষিত লক্ষণ বীর। পিতৃ প্রতি কোপ, জানি ধর্ম লোপ, যতনে বুঝান ধীর॥ করিয়া বিনয়, সাধু বাক্য চয়, শুন হে লক্ষ্মণ ভাই। ভেব্যেছ যে কার্য্য, এ নহে আন্চর্য্য, তোমারে সম্ভবে তাই। মম প্রতি ভক্তি, তোমার যে শক্তি, বলে পার করিবারে। এ দুঃখ দাগরে, তুমি লবে পারে, অসাধ্য নহে তোমারে। পুণাশীল অতি, ধর্মাস্থা নূপতি, সতা ব্রত পরায়ণ। ভাঁহার অহিত, ইহা অবিহিত, পিতা গুরু মহাজন ॥ সভা প্রতিজ্ঞাত, হইয়া বিজ্ঞাত, প্রতিজ্ঞা যাইব বন यधर्मा वध्मन, जावनी मधन. পতি অতি পুরাতন 🏽 তাঁহার অপ্রিয়, অতি নিন্দনীয়, করিতে ইচ্ছা না করি। কদাচিত্মনঃ, না হয় কথন, এমন পাপ আচরি॥

প্রিয়তম প্রিয়, যদি বাঞ্চনীয় গুণাকর এই কর আমি গেলে বনে, পিতৃ শুশ্বৰণে, যুক্ত রবে নিরন্তর॥ মানস মালিভা, করিয়া অমান্ত, মান্ত করিবে জনকে। প্রতাক দেবতা, রূপ জানি পিতা, পৃষ্ঠিবে যেমন লোকে। এই পর কাম, পর ধর্ম ধাম, শক্তি অনুসারে কর। আমি গেলে বনে, আমার কারণে, ' না দহে নৃপ অন্তর॥ ভোমার সেবনে, পুজ্র গড বনে, এ মনে যেন না রহে। শুন বিশেষতঃ, মাতৃগণে যত, जिन ভাব ভাল নহে। করিবে এরপ, আমার স্বরূপ, ভাবিবে ভরত ভূপে। মম হিতে রত, সতত ভরত, জানিবে জ্ঞেষ্ঠ স্বব্ধপে॥ পাল্য হবে তার, এই ধর্ম সার, ধর গুরু ভার ভূমি। ভরত সহিতে, সর্ব্ব জন হিতে, রীতে ধরাধর ভুমি 🏻 রাম মুখে উক্তি, সুজ্বন সুযুক্তি, অবৃণে অবণামৃত। कहिना नकान, सिव विनक्षन, বচন নহে অমৃত॥

रिहृद्य व्यवसामूथ, त्राम पृश्य पृश्य, ममख मूथ विशीन । দেখ্যে ধর্মে হিতি, জীরামে সম্প্রতি, প্ৰতিজ্ঞা অতি কঠিন॥ ওহে লোকনাথ, রাম মম নাথ, যে গতি সংপ্রতি তব। দে গতি আমার, এই ভাবি সার, मदः वनगाभी इव॥ সতত অন্তর, ্সেবা নিরস্তর, করিব যতনে রাম। ভূমি পুরস্থাগী, বনে অনুরাগী, কি কাম অধোধ্যা ধাম ॥ তব এ অধীন, रिहाय প্রভু হীন, हेळांनस्य नरह मनः যদি থীকে স্নেহ্, সঙ্গি কর দেহ, তাপিত তব লক্ষণ॥ যাইব পশ্চাতে, প্রভু তুমি তাতে, याथ नरु निवर्द्धन। বনে করি বাস, পুরাইব আশ, कन•भून बाह्तरा॥ উত্তম কুসুম, প্রঞ্জে রভূত্তম, পৃঞ্জিব পদ কমল। महा पूर्ण जाय, रहेव महाय, ्र व्यास्त्र स्त्री । তব আজা কর, হইব কিন্ধর, নির্ভর তোমার সঙ্গে। আমি অনুরক্ত, সর্মভাবে ভক্ত, রব তব সূপ্রসঙ্গে ॥

পরিতাগে ক্ষম, না ছইয়া ক্ষম, নাথ মম অপরাধ। অতি পৃছ্য তম, ভুমি পিতৃ সম, না সাধ এ সাধে বাধ॥ আনিব পানীয়, সদা তব প্রিয়, পুষ্প ফল মূল আদি। সাধিব আহার, বাঞ্ছিত তোমার, ना इहेव প্রতিবাদী॥ ह् धर्म वष्मण, व धर्मा वष्मण, অমুজ অপরি হার্য্য। তদনু গমনে, নিশ্চিত লক্ষ্মণে, প্রতিক্তা করণ আর্য্য॥ ना कत्र वात्रव, नट्ट निवात्रव, হে রঘু বারণ রাম। একান্তত ভক্ত, হৈয়ে পরিহাক্ত, একা পথি গুণধাম॥ তুমি গেলে বন, আমার জীবন, इहिर्द अभन नरह। নিবুর্ত্তনে যোগ্য, নহ জ্বেষ্ঠ যোগ্য, वित्रह एएट् कि मट्ह। অতএব ধীর, নিশ্চয় সৃস্থির, চির বিরহজ বাণ। না সবে অন্তরে, রব বনাস্তরে, রঘুবরে দিয়া প্রাণ ॥ এই রূপ রূপ, জানিয়া স্বরূপ, না হৈয়ে বিরূপ রাম করিলা স্বীকার, বাক্য অতি ভার, नव पूर्वामण माम।

ভ্রাভূ বৎসপতা, অতি প্রিয় পতা, রহে রাম কল্পক্রমে। নাহি ভক্ক মাত্র, যাব হে সৌমিত্র, তব সহ বন ভূমে ॥ তুমি পর বন্ধু, প্রিয় সুধাসিন্ধু, বচন বচন তব। ভক্ত তুমি স্থা, সঙ্গেই রাখা, ভাল্থ অনুভ্ৰা এই রূপ বাণী, রাম মুখে রাণী, শুনি অসুখী অন্তর। রাম সঙ্গে বন, যাইবে লক্ষ্ণ, সূকুমার প্রিয়তর॥ व्यवन निश्वाम, विरुद्ध निर्याम, প্রবলানল সমান। विनीर्व क्षत्र, कश्नि निक्त्र, দেও পুজ্ৰ ভিক্ষা দান॥ २১ मर्गः।

পয়ার ৷

লক্ষণের প্রবোধ বচন রাম মুখে।
শ্রবণে কৌশল্যা দেবী দক্ষা মনোদুঃখে।
শ্রতি দীর্ঘ দাবানল সম উক্ষ শ্বাস।
পরিস্থাগ করিয়া কহিলা ইষ্ট ভাষ॥
ধর্ম অঞা করি যদি রহিবে সন্তান।
তবে মম বাক্য শুন স্বধর্ম প্রমাণ॥
তুমি সূত ধর্মভীত সদাধর্ম পূর্ন।
বহু কপ্তে পাইলাম দেহ করি চূর্ন॥

করি কত তপঃ জ্বপ নিখিল নিয়ম। অতএব মম[']বাক্য রাখ রঘত্তম ॥ করিয়া পরমা আশা শুন সুকুমার। সদা পরিপালন করে।ছি ভাবি সার॥ তুমি অছা সমর্থ সকলা কর্ম্মে রাম। দীনা দৃঃখিনীরে রক্ষা কর গুণধাম॥ দেখ পুত্র জীবন তার্গিনী প্রায়া আমি। অকামা দৃঃখিনী নামা বাধ্য নহে স্বামী সপত্নীর অভিলাষ পূর্ণ হবে যায়। এরপ করণ রাম সাজে কি ভোমায়॥ নিশ্চিতা অশক্তা আমি কি কর সন্তান। সহিতে না পারি রাম কঠিন বিধান॥ বিশেষতঃ হইয়া সপত্নী অনুগতা। অভিমান পরিহ্রি পরাভব রতা॥ প্রতিকূল হইয়া সপত্নী অপরোক্ষ। প্রতিদিন সুমলিন বেশ উপলক্ষ ॥ সন্তাপে কেবল পুত্র ছায়াবলম্বনে। হয়েছি কিঞ্চিৎ সুস্থা অন্তরে এক্ষণে॥ সেই আমি পুল্র তুমি আশ্রয়ের স্থান। তোমা বিনা জীবন কি ধারণ বিধান॥ এই রাত্রি তব ধাত্রী ভাজিবে জীবন। সহিবে কেমনে পুজ্র বিধান এমন॥ বহু আশ্রা করি বৃক্ষ করি উপার্জ্জন। ফল কালে করিলা বঞ্চিত নারায়ণ : শুনহ হে সুপুঞ্জ আমার বচন। না রাখিও স্ত্রীজিত এ ভূপের কথন॥ স্ত্রীকামী আমার স্বামী প্রবৃত্ত দুক্ষর্মে। অশুচির প্রান্ন প্রত্র আসক্ত অধর্মে॥

ঈশ্বাকু কুলের ষেই প্রচলিত ধর্ম। অতিক্রম করি রাজা আচরে কুকর্ম॥ জ্ঞেষ্ঠ কুলভ্রেষ্ঠ রাম পুত্র কুলোচিত। পরিহরি রাজ্ঞ দানে ভরতে বাঞ্জিত॥ অপর পূর্ব্বের কথা বিশ্রতা সকলে। মনু বাক্য শুন পুল্র পরম কৌশলে॥ মানবেজ্ঞ মনূর বচন সেই রূপ। কর কর্মা রাখ ধর্মা জানিয়া স্বরূপ। অতি অবলিপ্ত কার্য্য অকার্য্য না জ্ঞানে গুরু হৈলে ভাহার বচন কেবা মানে। **দশ জন ব্রাহ্মণ অধিক উপাধ্যায়**॥ উপাধ্যায় দশগুণে মান্সতা পিতায় 🖟 পিতৃ দশগুণে মাতা গৌরবে অধিকা। সকল পৃথিবী হৈতে প্রভুত্ব জনিকা॥ ধর্ম বেক্তা সকলে প্রমাণ এই বলে। মাতার সমান গুরু নাহি ভূমগুলে॥ ቌ গুরুগণ পতিত হইলে পরিভাগী। পরিতাগে কড়ু নহে অধর্মের ভাগী। কদাচ জননী নহে তাজা সুকুমার। গর্ভের ধারণ আর পালন যাহার॥ এই হেতু গৌরবে অধিকা সেই আমি। মানিবে আমার বাক্য রঘুকুল স্বামী॥ তুমি গুরু বৎসল পিতার গুরু স্কন। রাখিলে যেমন রাম জানিয়া প্রমাণ॥ সেই রূপ আমার শাসনে কার্য্য কর। স্বধর্মে আপন রাজ্যে রাজদণ্ড,ধর॥ কুলোচিত হিত বাক্য ভাষিত আমার। সুবুদ্ধি পশ্ভিত গ্রাছ এই বাঁকা সার॥

মম এই বাণী নাহি করিলে পালন।
শীপ্রগতি যমালয় যাত্রা অবারণ ॥
রামায়ণে কৌশল্যার বাক্য অযোধ্যায়
দাবিংশতি সর্গ সাঙ্গ অমৃতের প্রোয়॥
২২ সর্গঃ।

ত্রিপদী।

तांगहत्व, अकुल कुमुनहत्व, মুখচত্র দেখিয়া মলিন। কৌশল্যা কাতরা অতি, পুত্র শোকে জীর্ণা সতী, ক্লম্পক্ষে চক্র যথা ক্ষীণ। तामहच्य मितिराः, मुमध्त दाकाहराः, क्षननीति वृक्षान भूषीत আমার তোমার প্রভু,শাসনের যোগ্য কভু, নহেন জনক জান স্থির। তাঁরে করি নিবারণ, আছে বল কি এমন, প্রভূত্ব আমার কি তোমার। আজ্ঞা কর মহাদেবি, ম্বরিতে কর্নিন দেবি, তুমিগো ধর্মিষ্ঠা ধর্মসার॥ চতুর্দ্দশ বর্ষসীমা, রাখিতে পিতৃ মহিমা, বনে রব আসিব তৎপরে। স্বামি বাক্য রক্ষা কর, আমার বচন পর, কেন বন্ধ রাখ রঘ্বরে। সতীর পতি দেবতা, ঈশ্বর সঙ্গে সমতা, সে পতির বাক্য সতী ভূমি। লঙ্কন করিবে কেন, কি বস্তু পাইবে হেন, না যাই যছপি বন ভূমি।

প্রতীক্ষা করিয়া থাক পুরে। হয়্যে ব্রত পরায়ণা, কর পতি আরাধনা সেই ফলে আসিব অচিরে॥ প্রতিজ্ঞা উন্তীর্ণ হয়ে, চির দিন ধর্মে রয়ে তোমার প্রসাদে হব পার। ना পाइत तत्न (क्रम, क्रमनी इहेशा (मम আদিব অযোধ্যা পুনর্ববার ॥ করিয়া চিত্ত সমতা, ভাজিয়া মম মমতা, মাতা তুমি শোক পরিহর। শ্রেষ্ঠকুলে জন নিলে, কলঙ্ক হবে ত্রিকুলে তব পিতৃ কুল ধর্ম ধর॥ বিবেচনা কর সতি,যাবৎ কোশলা পতি, মহা তেজা মহাত্মা সকল। যশস্বী তপস্বী অতি, গুণে খ্যাত বসুমতী, কুলশীল গুণজ্ঞ নিৰ্ম্মল॥ তুমি তথা জন্ম নিলে, গুণাচার কুলেশীলে ব্রতরতা স্বধর্ম চারিণী। পতি বাক্য পরিহরি,পুত্র স্নেহ অঙ্গে ধরি रूत किन अंधर्म धारिनी॥ পতি বাঞ্চা কম্পতক্র,ভোমার দেবতা গুরু মম প্রতি প্রসন্ধা হইয়া। করি পুত্র স্নেহ ভাগে, নিজ নাথে অনুরাগ, রাথ কহি বারণ লইয়া॥ গুরু আজ্ঞা অবিচারে,দেখ আমি সদাচারে, পালন করিব যত্ন ভাবে। তাহাতে তব মঙ্গল, আমার অতি কুশল, বিশেষতঃ রহিবে স্বভাবে ॥

অত এব পুনর্কার, গমন পুরে আমার ক্লক্স শ স্বভাবে কিম্বা,বালক স্বভাবে অস্বা, পিতৃ বাক্য না করি পালন। হইব অপ্রতিষ্ঠিত, জগতে অতি নিশিত, ক্ষান্ত থাক ধরি গো চরণ। কি কৰ স্বভাৰ গুণেঃ মনে বুদ্ধি সেইগুণে, वक्ष तरह प्रति छित्रमित। তব আজ্ঞা অনুসারে, বিনয়াদি ব্যবহারে, বৈরজ্যাচরণ সুকঠিন। কহিবে কর্ম বাণী,নৃপতির প্রতিরাণী, भोनी रुखा नरतन तरित। मम मूथ প্রতীক্ষণে, অভিলাষ ভগ্নমনে, ভাল মন্দ কিছু না কহিবে॥ অতএব শুন স্থল, না হইও প্রতিকূল, ना विलिख निषाक्षन वानी। প্রসন্ধা হয়ে। জননি,রাথ অযোধ্যা অবনী, নিজ নাথে সতো বন্ধ জানি॥ কৈক্যী ভোমার সভা,যদি প্রতিকূলরতা, কোন কথা না কবে ভাঁহারে। যশবি স্বধর্মে রড, আমার ভ্রাতা ভরত, সতত সুশান্ত ব্যবহারে॥ কঞ্চিত্অপ্রিয় ভাষে,নাকহিবে সেই দাসে, আমার সমান জান তারে। मिथित ভिश्तिनी श्रीय, मर्खना ভরত মায়, দয়া স্নেহ বিবিধ প্রকারে। वृक्षिमान (यहे छन, वनी मह कनाठन, व्यान পरन विद्याप ना करत । किन्ना रमवस्य स्नन, प्रतिया मुर्खन भन, বিরোধে কি অধর্ম আচরে ॥

সেইব্লপ হয়্যে আমি,পিতা জগতের স্বামী তাঁর সহ করিব বিবাদ। ভরত ক্রিষ্ঠ ভাই, অপকার জানে নাই মম ভক্ত কৈল বিসন্তাদ ॥ · ধর্মাস্থা বিনীত তর, প্রাণ হৈতে প্রিয়কর কি জন্ম বিরোধ তার সঙ্গে। মহাত্মা মহদাশয়, পিতৃদত্ত রাজ্ঞ লয়, কি লাভ হইবে তাহা ভঙ্গে॥ তাহে বা কি আছে দোষ, কি হেতু করি व्यात्काम, निर्द्धाय निर्णेख डेशकाती। পুর্ব্বে ভরতের মাতা, এই অযোধ্যারধাতা, বর প্রাপ্তা দেখিবে বিচারি ॥ চাহে প্রতিশ্রত বর,তাহে কিবা দোষাকর কুহু মাতা করিয়া বিচার। পূর্বে পিড়া প্রতিজ্ঞাত, বরষয় সুবিখাত, म्हे मण्ड इहेरान शाह ॥ দেই সভ্যে করি ভয়,তাহে কিবা দোৰ হয়' রাজা তাহে অতি সত্যবাদী। এইত পরম ধর্ম, বুঝিয়া নৃপতি কর্ম্ম, করিছেন কেন বাদ সাধি॥ ধর্ম হৈতে বিচলিত, হেনকাল উপস্থিত, নাহি হয় নৃপের শরীরে। माधवञ्च ममाञ्चरम, धर्माताष्ट्र धर्मा ভरम, যথার্থ বিচারে অতি স্থিরে॥ ্সগুজ্ঞানী সভাবাদী, না হন ধর্ম বিবাদী, তুমি সাধুবৃত্তে সুকুশল!। অগণ্ড ধর্ম্মের পথে, সাধ কর্মা মনোরথে, क्ति इंड व्यथक्ति प्रक्षमा ॥

ধর্মজ্ঞ নৃপতি পতি, তাঁরে দোষ দিয়া

সতি, গমন করিতে যোগ্য নহে।
প্রস্থৃতি প্রসন্ধা হয়েয়, মম অনুনয় লয়েয়,

স্থর্মিণী অধর্ম না সহে॥
না কর অনুশাসন, নিশ্চয় যাইব বন,
বন বাসে হয়েছি দীক্ষিত।
এই রূপ রঘুবর, বন বাসে সিদ্ধতর,
বুদ্ধি ভাব হইলে বাঞ্জিত॥
লক্ষ্মণ দেবের সহ, বুঝান তাবত্ অহঃ,
ধর্মশীল ধর্মজ্ঞ বরিষ্ঠ।
জননী চরণে ধরি, অনেক বিনয় করি,
কহিলেন বচন গরিষ্ঠ॥
২৩ সর্গঃ

পরার

এই রূপ করি রহু বাক্য বিরচন।
পুনর্বার জ্বননীরে কহিলা বচন॥
দেখিয়া দারুণ দীনা ধ্যান পরায়ণা।
পুত্র বনবাস দুংখ করেন ভাবনা॥
তুমি আমি উভয়ে রাজার বলীভূত।
নৃপতি শাসনে স্থিতি সেই মনঃ পৃত॥
নৃপতি তাহাতে পৃতি বিশেষতঃ গুরু।
সকলের ঈশ্বর ঈল্সিত কল্পতরু॥
এই চতুর্দ্দশ বর্ষ সভ্তে হৈয়্যে পার।
তোমার শাসনে আমি রব পুনর্বার॥
রাম মুখে এই বাক্য করিয়া শ্রবণ।
প্রিয় পুত্রে কহিলেন সঞ্জল নয়ন॥

সপতী সমাজে আমি বাস করিবারে। না পারিব সঙ্গে পুত্র লইবে আমারে॥ পিতার অপেক্ষা করি যদি যাও বন। এই বৃদ্ধি ভোমার নিশ্চিত রাম ধন॥ ব্যাকুলিত বচন শুনিয়া মাতৃ মুখে। পুনশ্চ কহেন রাম অতিশয় দৃঃখে॥ পতি বর্ত্তমানে সতি প্রজ্ঞ নহে গতি। স্বামী দেব সেবনে সর্ব্বদা দৈব মতি॥ তোমার আমার প্রভু নৃপতি প্রধান। কেমনে কাননে যাবে নৃপ বর্ত্তমান। নগর হইতে বনে গতি অনুচিত। জীবিত পতিকা সতি রাজ প্রতিষ্ঠিত॥ উৎক্লষ্ট কি অপক্লষ্ট পতি যদি হয়। সর্ববর্থা নারীর গতি পতি ভিন্ন নয়॥ কি আর অপর দেবী নূপতি মহান্। ভোমার দেবতা এই দেখ বর্ত্তমান॥ ভরত ধর্মিষ্ট অতি বিনীত বিদান্। সদা গুরু বৎসল বাৎসল্য এক স্থান ॥ যেমন তোমার পুত্র আমি সেই রূপ। ধর্মতো ভরত পুর্ত্ত্র না ভাব বিরূপ। আমার অধিকতর পূজা অনুপ্তান। পাইবে ভরত হৈতে করিবে কল্যাণ॥ তাহা হৈতে নাহি দেখি কিছু অমঙ্গল। এই পরামর্শ দেবি পরম কুশল ॥ আমি বনবাসে গেলে জনক আমার। পুজ্র শোকে জুরাতুর হইবেন সার। না হন তাপিত যাতে তাতে রবে রতা। সেবিবে স্বামির পদ লয়ে। সর্বর সতা॥

वृक्षभि इहेटम यिक्रभ मिता इग्र। সেই রূপ করণ কর্ত্তব্য সমুদয় ॥ ধর্ম পথ চারিণী যে পতি পরায়ণা। সতত স্বামির সেবা স্বামি আরাধনা॥ যত্র করি যে না যায় প্রতির পশ্চাতে। প্রশংসা না পায় কডু সতের সাক্ষাতে পতিব্রতা পতিরতা পতি পরস্থান। সেই নারী কীর্ত্তিমতী জগতে ব্যাখ্যান। পরলোকে পায় সে পরৰ ধামে স্থান। অত এব স্বামি সেবা তোমার বিধান॥ সর্বদা সদনে স্বামী সেবন উচিত। এই ধর্ম চির দিন শান্ত্রীয় বিহিত। গৃহস্থ ধর্মেতে স্থিতি দেব আরাধন। এই সব গুণ তব জানি অনুক্ণ ॥ ভর্তার মানস পথে তোমার গ্রমন। এই হেন্তু উপযুক্ত ভর্ত্তার সেবন। বেদজ ব্রাহ্মণ পূজা ব্রত অনুপ্রানে। বাস কর নাথের নিকটে সাবধানে॥ পুনরাগমনে মম হয়্যে আকাজ্জিণী। এই আশে ভর্তৃবাসে বঞ্চিবে জননি ॥ দেখিবে দম্পতী মন গতি অযোধাায়। यि শোকে নৃপতির প্রাণ নাহি যায়॥ এই সবিনয় বাক্য রাম মুখে উক্ত। শ্রবণ করিয়া বাণী ধর্ম অর্থ যুক্ত ॥ थयः পূर्व नेकर्ण किल्ला मृष्डारम्। कूण त कूणनी श्रुल शष्ट वनदारम ॥ মঙ্গলে মঙ্গলালয়ে হইয়া মঙ্গলী পুনর্বার অযোধ্যায় দেখিব কুশলী

चामि अभागत नम त्रहित नित्रका । করিব কর্ত্তব্য কর্ম স্থামি অনুগতা मूर्थ थाक मछान इहेश हित्रकीयी। **এই क्रथ जामीर्सा**म कतिरलम ভाবि॥ সেই রূপ বনবাঁসে রামের নিশ্চিত। দেখিয়া কৌশল্যা রাণী চেডনা রহিত সহসা দুঃখিতা অতি হইলেন সতী। প্রলাপে আলাপ যেন গন্ধাদ ভারতী: २८ मर्शः।

ত্রিপদী।

নিখাস ভাজিয়া রাণী, পুনশ্চ কহেন বাণী, তাপিনী কৌশল্যা রাম প্রতি। অসহ অক্ষর যায়, কখন না সহা যায়, শুন পুজ গ্রীরাম সম্প্রতি। জীবন না রহে রঘ্বর। পাবে দৃঃখ নব জলধর ॥ তুমি শ্রেপ্ত পুক্ত ছোপ্ত ধন্ত। त्य तांकात तथ्यग्रागन, माम मामी मर्खकन, ষাদু অন্ন ভুঞ্জে হয়ে। গণ্য ॥ তুমি তাঁর প্রিয় প্রজ্ঞ, হায় এ কি কর্মান্ত্র, বস্থ খাত করিবে ভোজন। श्रवि मूनि स्नाहात, कर्मकरण कलाहात, তোমার কি রূপে সুশোভন॥

, দেখি শ্রদা করে কেবা,কাননে কে করে দেবা, বিশেষতঃ নূপতির ভয়। थिय शूल छनवान, क्रिमिया यात हान, বনে পাঠাইল কি আশয়॥ এই লোক পরীবাদ, সতত সাধিবে বাদ, হ্ইবে প্রদীপ্ত হুডাশন महित्व जामात (मरु, वित्करम भी ज़ित्व স্নেহ, যন্ত্রণা হইবে অনুক্ষণ॥ তোমার বিয়োগবাতে,চিস্তাবাষ্পধৃম তাতে, उव छव नीत्रम हेस्रन। **प**हित्व आभात भारत, यिष भूछ यां वतन, विन तांनी कतिन। कनान ॥ নিশাস পাবক বলে, যভপি হৃদয়ে জ্লে, তথাপি ভোমারে দেখে। সুখী। ভোমাবিনা এই দীনা, দেখিয়া অভান্ত ক্ষীণা, महित्व ना इड़ेत्त कि मध्यी। তুমি অতি ধর্মশীল,পরিহরি অদ্ধ তিল, দেখো মম শুন্ত কোল,দহন সতিনী বোল, মতত করিবে তন্ত্র ধংস। লোক প্রিয় হিতে রত,এ কি হয় অনুগত, হিমগতে চিত্রভানু, প্রকাশে পীড়য়ে তনু, সেই রূপ শোকাগ্নি পাপাংশ न्পতि रहेरा कष्टे, आमारक रामन म्लेट्टे, श्रीया यथा माराम राम दृक्त कृत कृतन (महे क्रथ उव (भाकानन। প্রজ্ঞালিত নিরন্তর, দহিবে মম অন্তর, कारण कारण श्हेग्रा श्रेवण। অতএব যথা ধেনু, পর্ব্বতে ভাবিয়া রেণ্, বনবেণু করিয়া **লঙ্**বন। স্বপুত্র পশ্চাতে ধায়, কেবল বৎসলতায়, मिहे क्रिंश आिय यात्र वन ॥

कोमना करूना वानी, अनि ताम महाकानी, नुशिक कामात खान, खीवरनत अधिकान এ স্থান জজিয়া কোথা বাবে। भाकाकृषा खननीतः स्नानि। বাক্য অতি সুমধুর, বাহে দুঃখ যায় দূর, আমার অনুগমন, নহে দেবি সুশোভন, অযোগ্য গমনে मुख्डा পাবে॥ কহিছেন তত্ত্ব জ্ঞান বাণী॥ রাম মুখে এই উক্তি, স্বপতি দেবন যুক্তি, আমি গেলে বনবাস, জানিবে মাতা নির্যাস, পাইয়া সজ্ঞান মুক্তি বাণী। বঞ্চিত হবেন মম পিতা! यथमा मर्मिनी तानी, श्रीकात कतिया वानी, কেকয়ীর পূজা হীন,পুজ শোকে প্রতিদিন, मृःथिनौ **अञ्**छ मछाशिनौ॥ অপর রমনী খেদারিতা ॥ বন প্রেস্থানে উচ্চত, রামচন্দ্র অভিমত, করিবে আপনি সেবা,প্রধানা মহিষী কেবা, অবগত হইয়া নিশ্চয়। তোমারে করাবে পরিভাগে। দেবিবে আপনি যত্ত্বে, স্বীয়পতি মহারত্ত্বে, যাত্রিক মঙ্গল যত, স্বস্তায়ন অনুগত, ঁ সেই কর্ম উপক্রম রয়॥ অজি অভিযান অনুরাগ॥ মুক্ত করি বাষ্পবারি,শুচি বারিস্পর্শকরি, ভূমি মাতা অতি সতী,ভৰ্তৃতাগ গুণবতী, মহারাজী করি স্বস্তায়ন। কদাচিত্ন। হয় সম্ভব। এমন করণ মনে, কর্ত্তব্য নহে স্বপনে, রামের কল্যাণ হেতু, শুভ কর্ম ধর্মদেতু, কুজ্ঞান না করিবে উদ্ভব॥ দেব বিজ পূজা আরম্ভণ। থাবত জীবিত পতি, এই লোকে রাজ্যপতি, শুল পুষ্পা সুপঙ্কজ, শুদ্ধ মলয়জ রজ, সকলের প্রেভু সর্বেরর: রমা রমা নানা উপহার। ভাবত্করিবে সেবা, পদে পুষ্পাঞ্জি দিবা, অচ্চনা করিয়া সুরে, আয়োজন সুপ্রচুরে, একভক্তি যোগে নিরন্তর ॥ শুভব্রতা ক্লুত নমস্কার॥ ভর্তা হর্ত্তা কর্ত্তা তব,অধিক আমি কি কব, রামেব মঙ্গলোদেশ, গন্ধমাল্য খৃত শেষ, পতি নৃপ সর্বদেব ময়। প্রদান করিয়া শিরোপরে। খামার পণ্চাতে যাবে,প্রতিষ্ঠা কভু নাপাবে । লইয়া মন্তকন্ত্রাণ, নিম্ব কক্ষ করি দান, পতি সেবা তব যুক্ত হয়॥ সন্তাপে কাতর কলেবরে॥ ু থাক এই স্থানে সদা,উৎকণ্ঠা জনিবে যদা, রক্ষাকর মহৌষধি, রাণী নিজ জ্ঞানাবধি, মম শোকে দুঃখী নরপতি। যথা, বিধি করি আয়োজন। তুমি তাঁর আরাধনে, সন্তোষ করিবে মনে, রামের দক্ষিণ করে, সহত্তে বান্ধিয়া পরে, যাবত্জীবনে প্রাণ পতি॥ **श्रेनकारम जामा श्रायम ॥**

त्मनानी मह भद्भत, महारवाशी मरहश्वत, রামের মাজ্য জন্ত,জপিলেন মত্র অন্ত, मक्ष असि नांत्रम जाशत । অরণ্য গমনে সকাতরা। কল্যাণ ব্ৰক্তন তব, সদাকালী সীতাধব, সোম শুক্ত বৃহস্পতি,অশ্বিনী আদি রেবডী, গ্রহগণ সদা শুভ কর॥ বায়গণ সুমঙ্গল করা 🎚 নক্ষত্র দেবতাগণ, জ্যোতির্গণ সর্ব্ব জন, মহা ঝৰি আর ধাতা, বিধাতা মঞ্চলদাতা, করিবেন ভোমার রক্ষণ। পুষা ভগ অর্থামা প্রভৃতি। यत इत वनहाती, मुनित्वभ कहांधाती, বক্লণ সবসুগণ, রাজা যুক্ত হে নন্দন, করিবেন রক্ষা নাগগণ॥ কল্যাণ ককুন আশাপতি॥ পরিহরি উগ্র রূপে, অমৃত অধিক রূপে, মিত্রাদিতা ক্রডাগণ, দিগবিদিগ গুদ্ধ মনঃ, তব প্ৰতি হইবে শীতল। আর বত মাস সংবৎসর। নিশা দিবা মুম্বর্জাদি, ভোমার মঙ্গলসাধি, বাক্ষস পিশাচ যক্ষ,মাংসাশী যাবত্ রক্ষঃ, সহায় হউন নিরস্তর॥ मक्रम श्हेर्त मक्रम ॥ বুত্রাসুর নাশ কালে,তাবত্ অমর জালে, অরণ্য নিবাসী যত, মহাব্যাল অবিরত, আখণ্ডলে করিলা কল্যাণ। इक्टान भिवम्भनकटम । সেই সুমঙ্গল সব,তোমাতে হৈয়ে উদ্ভব, প্ৰভঙ্গ বৃশ্চিক কীট, মশকাদি মধুলিট, বিনাশিবে তব অরি প্রাণ॥ সরীসৃপ গণ বন স্থলে ॥ বিনতা গরুড় মাতা, গরুড় মঙ্গলে রতা, উগ্র বিষ ধারী যত.তোমার মঙ্গলে রত, করিল যে মঙ্গল বিধান। মহাগজ বরাহ গণ্ডার। অমৃত হরণ কালে, রক্ষা করিবারে বলে, সিংহ ঋক্ষ মহিষাদি,ভোমার মঙ্গল বাদী, সেই মন্ত্র তোমার কল্যাণ। হইবেক বনে পশু হার॥ मास्त्राभाक (तक मस्त्र, विधायन कति मक्त, (य मकल वनवामी, श्रेष्ठ भलन धामी, আথৰ্বন উক্ত মন্ত্ৰ ষত। উগ্র রূপ নানা রূপ ধারী। তি মাৃতি আর মেধা,কল্যাণদা নানাবিধা, মৃগ পক্ষিগণ যত, সুমঙ্গলে অবিরত, তোমার কুশলে হন রত॥ রহিবেক করুণা প্রচারি॥ ি সিদ্ধা দেব ঋষি গণ, ব্ৰহ্ম ঋষি তপোধন, স্থল চর জ্বল চর, অপর অম্বর চর, স্বর্গ অমর কদন্তে। निर्माण निम्छण निरस्ट । নাগ নাগান্তক আর,পিতৃগণ সারোদ্ধার, দুঃখিনীরে দিয়া ভিক্ষা, করিবা ডোমাকে तका, मन्शृर्व कक्षणा व्यवहास रहेर्यन मूमक्त क्र ॥

সর্বলোক প্রজাপতি, চতুমুর্থ পশুপতি, ত্রৈলোক্যের নাথ জনার্দ্দন। করিবেন বাঞ্জিত পুরণ॥ যাকু তব সুৰে কাল,না হৌক বিপদ কাল, সুকুশলে থাক রঘ্বীর भूनर्गिक व्याधाम, वादाश रहेमा जाम, निक रूत वाङ्गा मृश्यिनीत ॥ রাজ্ঞ পাইবে তুমি, কল্যানী অযোধ্যাভূমি জননী পদ বন্দি প্রফুল তন্তু। रुत कत्व अधिव नग्नतः। কহিয়া একথা ঘরে,মন্তক আত্রাণি পরে, তোষিলেন রাণী আলিঙ্গনে ॥ कतिया অভिनयन, महेया काल नयन শ্রীমুখ চুম্বন করি রাণী। গছ পুত্র পুনরায়, এদো এই অযোধ্যায় চাঁদমুখে শুনিব 'মা' বাণী॥ **ष्ट्रिय नग्नन ভरा।, जूनवीन अन्धरत**, সুলকণ লক্ষ্মণ সহিত। বনবাস সমুত্তীর্ণ, কৈক্য়ীর আশা জীর্ণ, পূর্ণচক্র তুর্ণ সমুদিত। আমার অচ্চিত যত, দেবতা অনবরত, তোঁমার কল্যাণে রভ রবে। সকরণ প্রভু শস্তু, জনার্দ্দন কি সমন্ত্র, मर्खकान महन महन मता। হয়ে মম প্রতিষ্ঠিত,ভাবিয়া তোমার হিত षामात राजिन्त्रतर्ग। কহিয়া কহিয়া পরে, অশ্রুপূর্ণ নেত্রবরে, অজিলেন স্বপুজ্ৰ সংসর্গ।

मधालिया श्रुपान, तांचा वांगा विमर्कन, করি রাজ্ঞী রামে প্রদক্ষিণ। आंश्रम निशम कूल, इहेरतन अलूकृल, श्रूनण मारन नः मनः, श्रूनः श्रूनः आणिक्रन, ठकानन रहेन यनिन॥ २६ मर्गः

বিলাপ ভোটক।

ক্লত স্বস্তায়নো রঘ্বীর জ্বন্থ ॥ সহ লক্ষণ রাম বিরাম করে। नृপ मेरुजि मब्बन **চিভ** হরে॥ বনবাস নিরাশ কথা কথনে। রঘুর্বার সুধীরমনা গমনে। জনকাঙ্গভবা ভবনে বসিয়ে। পতি রাজ্ঞ শুনি অতি হাষ্ট্র হয়েয় ॥ অভিষেচন প্রাপণ আশ করে। অতি ভা**গ্যবতী যজিছে অ**মরে 🏾 করি সংষত মানস পিতৃগণে। ভঞ্জিছে কুসুমে বসনে যতনে॥ नृश्रञ्जा नतकास्यक शांति शति। মারণে শরণে সতী চিত্তধরি॥ পতি আগমনে অতি আশ করে। চির দর্শন বাঞ্জিত প্রেম ভরে॥ নি**জ** প্রাঙ্গণ প্রান্তর চকু হয়ে।। প্রিয় লাল্ফ মানস বেগ চয়ে ॥ নিজ বেশা গতে রঘু বংশ ধরে। প্রমদা পৃথ্জা নব নীর ধরে॥

অতি সজ্জন সঙ্গ সমূহ দেখি। পতি দৰ্শন লক্ষিত প্ৰমুখী ॥ অতি ঈদদ্ মীলিত চকু বরে। क्ति मर्जन हर्वन त्थ्रिय छात ॥ অতি হঠ রহে উষিতা বিরহে। রম্বচক্র মুখাম্ত চাহি রহে॥ श्रमा श्रमाकृत मात्रमशी। পতি সঙ্গ পরা রতি রঙ্গময়ী ॥ বিনয়ে হতুনয়ে পরিচর্য্য রসে। त्रघ कीवन कीवन कीवन रत्र . পতি দীন মুখাক্ততি দুঃখ পরে। नित्रि मृमुथी वरण वीत्रवरत ॥

ত্রিপদী।

बात्ता, श्रुवारवात्ता অভियंक द्रव । সে যোগ বিয়োগ কিসে, কেন তব রাছে৷ দেশে, মহোৎসব না হয় বাস্কবে॥ না পড়ে বেদজ্ঞ গণ, বেদ মন্ত্র অনুক্ষণ, সেই হেতু এত কি উন্মনঃ কি হেতু শত শলাকা,যুক্ত ছত্ত যেন রাকা রাকামুখ না করে ছাদনা। পথচকু চামর ব্যক্তনে। পূর্ণচক্র মুখ তব, প্রতিক্ষণে নব নব, र् रहा पूर्व क पर्मात ॥

বৌবরাজ্যে অভিষিক্ত,সর্ব্বনূপ অতিরিক্ত, লক্ষীযুক্ত অতি মতিমান। नितीकरा विभागन, भूवाधी माग्रथ स्वन, না করে তবন মান দান॥ चित्रं मधि भूष्णमात्म, दानविक विश्वकात्म, না করে মূৰ্দ্ধি, মণ্ডলে দান। मुधार मिल धारी, किइत कूरणत (वर्गी, না রহে নিকটে রেখ্যে মান॥ (अर्थ अर्थ जूतक्य, युक्त तथ मत्नात्रम, চিত্ৰমণি কাঞ্চল ভূষণ। কেন অদ্য ক্লিপ্ত নহে, শত্ৰুকুল জয় বাহে, মানসে সংশয় প্রয়োজন। গভারাক বিলক্ষণ, সুপ্রেকিত সুলক্ষণ, श्रीकरण मर् नाहि यात्र। मृद्धां जिरबहन कारण, (वष्टिक मनी क्रमारण, সুশোভিত তুরঙ্গম তায়। कर नाथ कि पूर्वारा, मुरवारा तां छ न १- ना बाग्न रही मात खरबा, व्यक्तिपाती व्यक्तिरादा, গ্রীবিজ্ঞা করিয়া ধারণ। मरभव वाषिनी मीछा, वहन मध्दमिछा, ! মৈথিলীর প্রশ্ন সকারণ। कहिट्टन वहे कथा, मुधीत शंजीत वंशा, শুন রাজসূতা সুবাদিনী। রাজ ক্ষিকুলে জাতা, সতী সাধ্রুত রতা, खनवडी गरकक गामिनी॥ নাহি হয় বিরাজিত,নির্থি দুঃখিত নীত কি আর সুধাও সতি, নরেজ্রের অনুমতি, অতিশয় 🐲 কঠিন। সত্যবাদী সংপ্রতিজ্ঞ, পিতা দশরণ বিজ্ঞ, शृंदर्स हरा। देककारी अधीन॥

দিয়াছেন দুই বর, প্রতিশ্রুত নরেশ্বর, আমি গেলে বনবাসে, তুমি ব্রত উপবাসে, क्रेकाल महे वहमान নিয়মে রহিবে প্রাণপ্রিয়ে। রাজ্ঞে দেখি অভিষেক, কৈকয়ী দিয়াছে প্রভাতে উঠিয়া সতি, হইয়া বিশুদ্ধমতি, ভেক. মধ্যে এক ঠেক সমাধান ! দেব দিজ প্রভৃতি পূজিয়ে। নিকটে করে প্রার্থনা, মম রাক্ষর বর্জনা, করিবে অভিবন্দন, নৃপত্তির জ্রীচরণ, **ठल्लिंग वर्ष वनवाम**। (मतन करन हिरकाल। ভরতে অবোধ্যাপুরে, নৃপতি করি অদুরে, আমার প্রেয়দী দীতা, দশরথ মম পিতা, পুরাইবে নিজ অভিলাব। **मिवजा जनम महीशान ॥** প্রস্থিত বিজ্ঞানে বনে, প্রিয়ে তব সন্দর্শনে, কৌশল্যা প্রভৃত্তি যত, মাতৃগণে অবিরত, এই আমি আসি উপনীত। বিশেষতঃ করিবে অচ্চ না। कतिया देशका ना कत विलय, ভরতাদি ভ্রাত্বয়, প্রাণের অধিক হয়, অনুভা করণ সুবিহিত॥ প্রিয়তম করিবে ভাবনা॥ শৃষ্ম খণ্ডর নিকটে, বাস কর অকপটে, ভাতপুজ্ৰ সমজানে,পালিবে মানিনি মানে, আমার সঙ্কটে পরিত্রাণ। না কহিবে অপ্রিয় বচন। করিবে শুক্ষমা তুমি, যাবত্ অযোধ্যা তুমি, সদা মম প্রীতি যায়,প্রেম্নসি প্রাকিবে তায়. না হয় স্বামির অধিষ্ঠান। রাখিবে ভরতে শ্বিঞ্চ মনঃ॥ আমার ষেমন কাল, কপালে কুগ্রহজাল, ভরত দেশের মাস্ত, রাজা পুত্র অগ্রগণ্য, তাই ভাব ভামিনী ভবন। সতত গৌরবে অতিশয় ভরতের সন্ধিধানে, কদাচ আমার মানে, আরাধিত নৃপগণ, দেবতুল্য অমুক্ষণ, গুণে জ্ঞানে না কর স্থবন । অনুগ্রহকারী ধর্মময় ॥ এখর্য্য স্বরূপ মদে, মন্তজন সপ্রমোদে, ভজের পালনে রত, অভজে অতি বিরত, কদাচ না শুনে পর স্তুতি।। সমুচিত দশু দেন দান। পরগুণাত্তকথনে, প্রিয় নহে ধনীজনে, উরস পুজের প্রান্ধ, পরপুক্তে অবাধায়, এ হেতু নিষেধ গুণবতি। পালন করেন রাখি মান ॥ পিতার নিদেশ হেন্ডু,রাখিব প্রতিজ্ঞা দেন্ডু, মুপুত্র হইলে পাপী, কদাচ নহে আলাপী, কাননে করিব অল গতি। উপকারে রত রাজকুল। क्तिया क्षम चित्र, क्षणानि वशाय धीत, বে হয় অমুপকারী, তার দণ্ডে দণ্ড ভারি, মুনি জনগণের বসতি ॥ নৃপসুতে নিয়ম বিপুল ॥

ভরতের ভরণীয়া, হইয়া রহিবে প্রিয়া,
আদ্য আমি বনগামী হল্যে।
পূজিবে আমার তাতে, মম মাতা ভুষ্ট বাতে.
না বান যেমন বনে চল্যে।
কুলের বিহিত কর্মা, রক্ষা কর নিজ ধর্মা,
না হইবে কুকর্মো নিরতা
করিয়া আজ্ঞা পালন, থাক সুখে অনুক্ষণ,
গৃহধর্মো না হয়ে। বিরতা।
২৬ সর্গঃ ▲

পয়ার

এই রূপ অপ্রিয় বচন শুনি সীতা। সর্বদা প্রিয় বাদিনী মানিনী দৃঃখিতা॥ 'কহিছেন বচন করিয়া জ্ঞান লোপ। স্বপতির গুণে করি দোষের আরোপ॥ অহে প্রভু প্রভু পুত্র কি কহিব আর। পিতা মাতা ভ্রাতা বন্ধু সূত পরিবার ॥ প্রজেকে নিবাস করে অথিল ভুবনে। निष्ठर कर्म कन जित्रर छत्।। পিতৃ কর্ম কলে পুজ্র নাহি করে ভোগ। পুক্তকর্মে পিতার প্রাক্তনে নাহি যোগ॥ সুখ প্রাপ্ত হয় কিম্বা দুঃখ ভৌগ করে। সে কেবল নিজকর্ম মনুষ্যে সঞ্জে ॥ পর্বিভাগ্য ভোগ করে ভার্যা একাকিনী। সেই আমি পতি পরায়ণা অবাধিনী॥ যথা যথা যাবে তথা যাব আমি রাম। ্তোমার শপথ করি কহি গুণধাম॥

তব দয়া বিনা প্রভু আমার জীবন। স্বৰ্গেতে না হবে সুখী শুন কদাচন। তোমার বিহীন হয়ে। চিন্ত নহে সুখী। मूत श्रुटत वाम कति तव छत् मृश्यी॥ তুমি নাথ গুরুদেব গতি হে আমার। নিশ্চয় যাইব রাম সহিতে তোমার **॥** যদি তুমি গমনে উত্তত দুর্গ বনে। কণ্টক আছম্ম ভূমি ভয় প্রদর্শনে॥ কত কুশ কণ্টক করিয়া পর্যাটন। রহিব তোমার সহ নিশ্চয় ঘটন। নহে পিতা নহে পুজ্র আত্মা আপনার। সুহদ্ সমূহ মাতা কি কহিব আর॥ সতীদের পতি মাত্র জানি এক গতি। ঈর্ব্যা পরিহরি **সঙ্গেলও** রঘৃপতি॥ ভুক্ত শেষ পানীয় সমান সীমন্তিনী। নিজগুণে কর কুপা দেখ্যে নিষ্পাপিনী রমা হর্ম্মা প্রাসাদ ভবন রমা রথ। ততোধিক তব পদাশ্রয়ে মনোরথ॥ ষর্গাপেকা সুদুর্লভ শীতল চরণ। আজ্ঞা কর তোমার সহিতে যাই বন॥ निःश् यान भार्क्तृल शृकत सक्कार्त। সদা কাল সেবিত সকল শুনি বনে। তথাচ रुरेग्रा मुशी तत मर्खकान। আশ্রয় করিয়া পাদপদ্মের ম্ণাল॥ ভোমার সহিতে সদা করিব বিহার। শচীপ্রায় শতক্রত্ সমীপে সৎকার # পদৰয় শুক্ষৰণে রহিব রাঘব। হইয়া নিয়তব্ৰতা সে অতি গৌরৰ॥

রুষণ সহিতে রব সুরম্য কাননে। সন্তোষ করিব মনে সুগন্ধি পবনে॥ ইব্রত্বা তুমি রামচক্র স্থিরতায়। পরাক্রম প্রচুর পরম দেব প্রায় 🛚 তিন লোক সুপালনে প্রভুত্ব তোমার। তদাশ্রয়ে পদাশ্রয়ে শঙ্কা কি আমার অতএব হইলাম অত্যন্ত কাতরা। অনুরক্তা নিজভক্তা নহি আত্মপরা॥ कन मून बाहातिनी हत मह उत । নহিব দৃঃখ ভাগিনী সঙ্গে সুখে রব॥ ইচ্ছা করি দেখিতে সরিৎ সরোবর। গিরি শৈল দর্গম কানন রখুবর॥ পরিধান বসন বক্তল বিলক্ষণ। নাথের রক্ষিতা রব সেই সূলকণ। मर्खना निर्माणां मक महावह मव। विकारम कमन कन इश्म कांत्र खव ॥ করিব অবগাহন তোমার সহিত। দর্শন শর্মন সেবা সেই মহাপ্রীত॥ বনে বনে নানা স্থানে সুগন্ধি প্রস্থন। মধু গল্পে মধুব্রত মধুর গুণ্ গুণ ॥ धनि श्वनि त्रघूर्यनि मना कति माध। সঙ্গে লয়া নিজপ্রিয়া খণ্ডাও বিষাদ ॥ महमु महम वह वर्ष यमि योग्र। তোমার সহিতে জ্ঞান ক্ষণমাত্র প্রায়॥ তব সঙ্গ পরিহরি সুরপুরী বাস। কদাচিত্না হয় আমার অভিলাষ॥ নরক নিরম স্থান সেই সুরপুর। তোমার সহিতে সহবাসে হে ঠাকুর॥

পিতা মাতা বন্ধুগণ করি পরিভাগ। তব অমুগতা রতা সেই অমুরাগ॥ বিনা ভর্ত্তা ভবনে নিবাসে কিবা সুখ। নমস্কার বারস্বার না রাখিবে দুঃখ। তব সনে বনে যাত্রা আমার নিশ্চয়। এ কার্যো কদাচ নাথ না কর সংশয়॥ না কর নিষেধ নিজ অধিনীর প্রতি। বনে রব পিত্রালয়ে যথা কুলবতী॥ তোমার রক্ষিতা সীতা অনুরক্তা তব। অনন্ত ভাবিনী হয়ে আর কোথা রব 🛭 তোমার বিয়োগে প্রাণ বিয়োগ নিশ্চয়। প্রিয় কর্দ্ম কর প্রিয় প্রদানে আশ্রয়। লও লও সঙ্গে করি ওহে প্রাণনাথ। গুরুতর ভার নহে না কর অনাথ। এত যদি কহিলেন জনক নন্দিনী। धर्मिश्र भत्रम णिष्टा ताम मीमस्तिनी॥ कानत्न लहेट जाम करतन निजाण। করিলেন বনবাসে যে দোৰ প্রকাশ № প্রিয়ভার্য্যা জানকী কহিলা এই কথা ৷ বনে দোৰ অনেক দেখান রাম তথা মহাকুল সম্ভবা ধর্মজ্ঞা তুমি দীতা। মহা যশস্বিনী অনুগতা অনিন্দিতা 🛚 অভ এই আমার বচন শুন সতি। অর্পণ করিয়া মন আমি তব প্রতি॥ কেবল শরীর লয়ে প্রবেশিব বন। পিতার আদেশ মাত্র করিব পালন। অতএব আমার যেমন উপদেশ। সেই রূপে রহ সতি কেন ভাব ক্লেশ।

বনবাসে বছবিধ অনিষ্ট বিধান। সেই সব গণি কর সুমতি সন্ধান 🛚 বনবাস ক্লড বুদ্ধি কর পরিস্থাগ। তব অমুক্স্পায় কাননে অমুরাগ 🛚 নিদারণ বনদৃংখ তাহে হব পার। তোমারে লইতে বনে অসাধ্য আমার ॥ না হয় উৎসাহ সতি কুণ্ণ হই মনে। भार्क्त म अञ्चि वह काठि कल तत्। আশু অসু পরিভাগ দর্শনে যাহার। ভয় হয় করে মাংস শোণিত আহার ॥ এ হেতু অভান্ত দৃঃখ প্রদায়ক বন। প্রাণের প্রেয়সী বল্যে করি নিবারণ ॥ ভিন্ন ভিন্ন চিহ্র অস্ত অরণ্য নিবাসী। শর্ট কর্ট কঙ্ক ভুক্ত মাংসাশী। প্রাপ্ত মাত্র কণমাত্রে নাশ করে প্রাণ। সেই হেতু দৃঃখকর অরণা আখ্যান॥ অতি উষ্ণ শীত কণ্ট কুধায় তৃষ্ণায়। বহুবিধ দৃঃখদ অরণ্য ভূমি প্রায় ॥ घात मर्भ मर्भगं मतीमृश कूल। মহা বিষধর করে শরীর নির্দাল । নিরস্তর নিষ্টুর শরীরে চরে বনে। অরণ্য দুঃখদ অতি এসব কারণে॥ গুরু গিরি কন্দর সংজ্ঞাত জন্ত গণ। মহারণ্য বাসী অতি উদ্বেগ জনন ॥ সিংহ গণ গুহা বন করয়ে ভ্রমণ। निकरि यद्यानि रमर्थ कुछ खल श्रा ॥ শব্দে স্তব্ধ হয়ে। প্রাণ করে পরিভাগ। সে বনে যাইতে প্রিয়ে কার অনুরাগ ॥

ভল্ক উল্ক আর বরাহ বিত্তর। উরগ ভুরগ মৃগ ভ্রমে নিরম্ভর॥ প্রাণঘাতি মৃগজাতি অস্ত অস্ত আর। বাস করে বনে নহে গন্তব্য তোমার॥ বক্ত বেগবতী নদী পর্বত প্রেলয়। মহীগর্ভে মহান ভয়দ জব্দু রয়॥ প্রতিপথে প্রদায় প্রদায় বিষধর। মতক মক্ষিকা কীট মশক বিস্তর॥ मःश्यक माजन पृष्टे यस्न करत याम । তীক্ষ তুগু তাপদায়ী দেখ্যে হয় ত্রাস 🛭 অগাধ অস্থল জল পরিপূর্ণ সরঃ। পঙ্কত্ব অতিশয় দুখ্য ভয়হর॥ মহানক্র চক্র ভয়ঙ্কর নদী গণ। করিতে হইবে সীতে তাহা সম্ভরণ ॥ कुभ आत कलेक कष्टेम नडी कुन। দুর্গম কুপথ তাহে পথিক ব্যাকুল। গুরুতর গুল্ম লতা তৃণ যথাবুত। অভান্ত দুৰ্গম পথ অতি ভয়া<u>ভিতে</u>॥ এই হেতু অভান্ত দৃঃখদ সীতে বন। গমনে করিগমনে করি নিবারণ # निर्माञ्च त्रमा नट्ट विशृष्ट विखन्न । শুষ্ক তুণাবৃত শাখা বহুতর।। বহুবিধ বিস্তারিত বিপরীত বন। পুষ্প ফল জল হীন বিস্তর যোজন॥ যোর সত্ত্ব সমাকুল গিরি গুরুতর। অতি **দুর্গ পঙ্ক জ্ঞানে** প্লাবিত কন্দর 🛭 कलोका विखन्न कला कला मना हरता। পর্ণশ্যা শয়ন আঙ্গন তুণোপরে 🏽

স্বরং ক্লুত সৃদ্ধধের সাগরে সৃন্দরি। মগ্ন হবে কেন যাবে কাননে আ মরি। আহার বদরী কন্দু আমলক আদি। ভাষাক সামান্ত অৰু অনেকে বিবাদী। তৃণ ধাস্ত তিজ কটু কৰাৰ ভক্ষণ। তাহার অলাভে ফল মূলাদি এহণ। বহু দিবা বসতি করিতে হবে সতি। নিরাহারে নিরাশ্রয়ে করিবে বসতি॥ বিক্ষণ অঞ্চিন পত্র মাত্র পরিধান। দীর্ঘশাক জটা চীর ধারণ বিধান। দীর্ঘ লোমধারী মল পক্ষ বিভূষিত। বাতাতপে শুষ্ক দেহি গণেতে সেবিত॥ बहे एक् जन्न मृश्यम श्रिय वन। বারণ গমনে করি তাই নিবারণ॥ मिवनीय वीदामन मना छेलवाम। কর্ত্ব্য দৃষ্ণর কর্ম শ্রুত মাত্র ত্রাস। সর্বদা নিয়মে রত যত বনবাসী। গ্রীমে পঞ্চ তপাশ্রয় নিয়ত অনাশী। আহ্বাদন গগণ জলদ সমাগমে। জীবন জীবন রক্ষা হেতু সুমধ্যমে॥ শিশিরে শীতল নীরে বনবাসি গণ। কপ্টে সৃষ্টে করে মাত্র জীবন ধারণ I অন্থি মাত্ৰ অবশেষ তপে তপ্ত তন্ত্ৰ। আমায় তোমার প্রীতি কি হবে সৃতন্তু। আমার আশ্রয়ে তুমি বাইবে পশ্চাতে। সর্বাদা নিয়ম ব্রত কালক্ষেপ তাতে॥ নিগৃঢ় নিয়মে তপঃ পরিশ্রমে অতি। তব সহ তথা মম হইবে কি রঁতি 🏽

অনলে অনিলে শুর্যা করজালে মিলে। সুবর্ণা বিবর্ণা হবে নিয়মে থাকিলে। ভোমারে দৃঃখিনী ধনি করিয়া দর্শন। वत् मत पृथ्विष इहेव व्यस्क्र ॥ আমার নিমিত্ত চিক্ত উদ্বেগ তোহার। শোকে আকর্ষিতা সীতা অসিতা আকার। দেখিতে দুর্গম বনে তোমার বদন। ना পারিব कनाठिज् ना वाहरत वन ॥ वन हुए। ना कदित्व निवादन कदि। যতির আচার অতি কঠিন সুন্দরি॥ বহু দোষ বিচার করিয়া বনস্থলে। मिथिया मोक्न कष्टे निवाति कामाला ॥ मिटे इात्न शांकित जातित मना कान। তোমাকে হৃদয়ে সীতে যাবে দৃঃধঞ্চাল।। এই স্থানে রহিবে রহিবে হলে মম। জানিবে অদুরে পরে বুথা করি শ্রম॥ এই রূপ রূপসীরে লইতে কাননে। নিতান্ত অনভিমতে রত নিবারণে॥ বিরাম করেন রাম বলি এই কথা। রোদন করিয়া পুনঃ কহিলেন তথা।। অভান্ত সুদীনা ক্ষীণা জনক নন্দিনী। व्यविधाय वन मात्र वर्गन वर्गनी ॥ २१ मर्गः

ত্রিপদী।

অনন্তরে গুণবতী, দীতা স্বৃদ্ধিতা অতি, রাম বাক্য করিয়া শ্রবণ। করি বারি পূর্ণনেত্রা,পঙ্কজিনী আত্র গাত্রা, ভৰ্ত্তা প্ৰতি কহেন বচন। বনবাদে যত দোষ,শুমে মম পরিতোষ, জ্ঞান করি সেই^{*}গুণ্ময়। তোমার ভক্তি আশ্রয়ে,তব ভুম্প সমাশ্রয়ে, শতক্রত শক্ত পরিচয়॥ কি আর অপর গণ্য, ভয় করি কার জন্ম, कि करत विवामी वनवामी। আপনি সহায় যদি,সিংহ্ব্যাত্র বরাহাদি খভোতে গণনা করে দাসী॥ রক্ষিতা তোমার করে,সে সকল ভয়স্করে কিঞ্চিৎ না করি আমি ভয়। যছপি বিপত্তি বনে,মঙ্গল কিন্তা কাননে, क क्रांत क्रीवान (अप्या नय्र ॥ তোমার সহিত রঙ্গে,বন্যাত্রা কিন্তা সঙ্গে, অনুভা করণে আজা হয়। তোমা হেন ধনজাগে,জীবন ধারণ রাগে অনুরাগ কিবা দয়াময় ॥ वत्रश्र कीवन नांग, किन्ना ভर्जू मह्वाम, ইহার অস্তথা নহে ভাল স্বামি পরিজ্ঞা হয়ে, গৃংখ মৃতা হেন রয়ে, কিজ্প জালিব দৃংখানল ॥

পুর্বের আমি হেন বেশ, পাইয়াছি উপ-**(मभ, जु**विक देवक शन मूर्य। তোমার সহিতে বনে,বঞ্চিব অতিনির্জ্জনে, वस्मिन मूर्य आंत्र मृश्य ॥ मिरे मेर कानि कथा, खरन कतिया जथा, मछावामी इंदि ममूमग्र। হৃদয়ে রয়্যেছে গাঁথা,দেই সব পূর্ব্ব গাখা, বনবাদে নিভা ইচ্ছা হয় ॥ পাইয়াছি সিদ্ধাদেশ, হয়ে তপবিনী বেশ, প্রাপ্তা হবে অবশু অরণ্য। সেই সিদ্ধবাণী সভ্য, আমি সাধ করি নিভ্য, অশুধা না হবে দৈর জন্ম॥ তোমার সহিত যাত্রা, কাল এই পুর্নাত্রা, উপস্থিত হই न मण्ट्य। সতা হবে দিজবাণী,আমি ভালরপে জানি, বনবাসে না থাকিব সুখে॥ বনবাসে দৃঃখ যত, আমি তাহা অবিরত, শুনিয়াছি যতিজন স্থানে। ক্সাকালে বারস্বার, বনবাদি ব্যবহার, পরিশ্রত বিবিধ বিধানে ॥ কহি তাই রখুবীরে, জনক নৃপ মন্দিরে, আইল ভিকুকী এক জন। দাধুবৃত্তি দদাচারা, অহান্ত পবিত্র ধারা, শুনিলাম তাহার বচন॥ कश्चि ভविषा कथा, कानन निवास यथा, হবে মম রাঘব প্রসঙ্গে। পাদপদ্ম বন্দি তব, প্রেসন্ন ভব রাঘব, पृश्चिनीदत लग्ना हल मटन

বহুকাল আকাজিক্ষণী, বনবাসে সৃদুংখিনী, আমার এ কি দুর্ভাগ্য, তুমি লইবার যোগ্য এইক্ষণে কর্যোছি নিশ্চয় মুনি জন প্রিয় বন স্থলে তোমার গমনোচিত, সময়াতিসুখান্বিত, তবে যে বঞ্চনা কর, অহে নব জলধর, ভাষ্যা সহ চল দ্য়াময় ॥ পরিহর চরণ কমলে। বন চর্য্যা গুণমনি, অভান্ত পুণ্য দায়িনী, গমনে নিশ্চিতা আমি, তুমি গুণধর স্বামী অতএব তোমার সহিত। য্চাপি নিরাস কর আলে। কৌতুকে কাননে রব, পরম পবিত্রা হব, তথাপি আমার মত্য,রাখিবেন ব্রহ্মা নিত্য. চিরদিন যাহা আকাজ্ফিত। সতা সতা রব তব পাশে॥ একত্র হয়ে৷ রাঘব, হাদ য়ে অতি উৎসব, করি সীতা এই উক্তি, শুদ্ধ সাধুগণ যুক্তি, তব সঙ্গে বিপিন বিহার। যামিভজি মূরদে মধুরা। স্পৃহা চিরদিন হয়, বঞ্চিত উচিত নয়, ্রোদন করেন সতী, নিরীক্ষণ করি পতি, নিবেদন চরণে ভোমার॥ কামিনী যেমন কামধ্রা॥ हेर्है लाक পরলোকে, ঘূষিবে সর্বদ। धात শোকে শোকাকুলা, বিবর্ণ অতি লোকে, সাধ্সঙ্গে সাধ্ব্যবহার। ব্যাকুলা, দৃঃখবারি পরিপূর্ণ বক্ষে। পতি গতি রতি কর্ত্তা, রমণী দেবতা ভর্তা, পীনোন্নত পয়োধরে, সম্বরণ নাহি করে, সংযোগে কি দুর্যোগ আমার॥ প্রাবণের ধারাধর চক্ষে॥ যে নারী স্বামির সঙ্গে, ছায়াসম রহে রঙ্গে, মহাদুঃখে বিমর্ষিতা,কলম্বরে ভাষি সীতা, পতির পশ্চাতে যার গতি। নিপীড়িতা প্রিয় দষ্টি করি। रिष द्वारत करत श्रद्धान, अवद्यान , মুনুগতা অনুক্ষণ, সুলক্ষণা বিলক্ষণ, তার ভাবে ভাবের বসতি॥ অনুভব শোভিতা সুন্দরী॥ পতির সংযোগ তায়,পতিভিরেনাহি ষায়, তথাচ লইতে সঙ্গে,বঞ্চনা করেন রঙ্গে, অমুরক্তা সেই রূপ আমি। অধোমুখী জানকী তখন। প্রিয়া পতিব্রতা দতী,পতিপ্রাণা পতিগতি, রোদনে বদনাক্ততি, নির্থিয়া রঘুপতি, সব জান তুমি অন্তর্যামী॥ भूमिन मद्रोक्ष वहन॥ কি হেতু না হয় রুচি,শুচির অধিক শুচি, বন বাস ক্লত কণ্ঠ, বনে দোষ যত স্পষ্ঠ, श्रीय मीमलिनी मूश्यिनीतः । বহুবিধ করিয়া প্রকাশ। তুল্যশীল ব্রতাচার, অনুগতা যে ডোমার, নিবারণে রত পতি, বিষণ্ণ বিমনা অতি, ভাষাও কি জন্ম নেত্র নীরে ॥ অন্তরেতে গোপন আভাস॥ (>0)

চিন্তাযুক্ত চিন্তামনি, সীতাপতি গুণমনি,
হইলেন আপনি বিবর্ণ।
না জানি আপন দোষ, জানকী করিয়া
রোষ, নয়ন ষুগল তামুবর্ণ॥
নিবারিয়া বাষ্পাধারা,প্রকাশ করিয়া তারা,
কিঞ্চিৎ কুঞ্চিত চক্ষু তায়।
শ্রীরামের অনুনয়, রামায়ণ রসোদয়,
অক্ষত অদ্তুত অযোধ্যায়॥
২৮ সর্গঃ।

পয়ার।

জানিয়া পতির মতি সতী অতি তাপে। রাগে রড় রুপিনীর ওঠাধর কাঁপে ॥ পুনর্বার ব্যাকার করেন এই বাণী। উন্মন্তার প্রায় দৃষ্টি মরাল গামিনী ॥ বিশাল নয়নে পতি ঈফণে ঈফণ। রোষাবেশে আক্ষেপ করেন অনুক্ষণ॥ অত্যন্ত প্রণয়ে উপস্থিত অভিমান। জানক জানক মম অতাত অজ্ঞান। আপনারে ক্লভার্থ জানিল মৃত্যতি। জামাতা হইল রাম রঘ্বংশ পতি॥ ক্লীব প্রায় ব্যবহার পুরুষাভিমানী। এ রামে প্রশংসা করে যে অতি অজ্ঞানী। হায় হায় অজ্ঞানে হইয়া অভিভূত। অযোধ্যা আদির লোক জানে যথাক্রত ! কহে এই অদিতীয় তেজম্বী শ্রীরাম। স্থ্যাসম সুকান্তি অসীন গুণধাম॥

পরে করে। অভিমান মানিনী জানকী। স্বামিরে কহেন সীতা কি হেতু বিবেকী। অনন্থ গামিনী আমি কামিনী ভোমার। প্রিয়া পরিতাগ হেতু কি ভয় প্রচার॥ ष्ग्रमश्**रमन म**लान मामर्था পরিপূর্ণ। সভাবান আখ্যান শ্রেবণ কর তুর্ন॥ অতিধীর পৃথিবীর বীর চূড়ামণি। माविजी मुन्दरी छात्र मूमाधा कामिनी॥ ममा ভর্ত্ত পরায়ণা পরম কল্যাণী। তার তুল্য আমারে বিশেষ রূপে জানি । অন্ত জনে গমনে না করি মনে কভু। তোমারে করিয়া ভাগ কোথারব প্রভু॥ ভরত হইতে ভৃতি অতি অসম্ভব। আমার কপাল ক্রমেবিক কছ রাঘব॥ ভাষ্যার্থে কুমারী কালে করিলে গ্রহণ। শৈল্ধী সমান কর অপরে অর্পণ। न्छे यथा नृष्य काटन आश्रनात नाती। অপরে অর্পন করে হয়ে। অধিকারী। কর্ম দোষে অথবা মানদে একবার। ্অপরাধ করি নাহি কদাচ তোমার॥ कानकारण किं नाहि वामक्र वानी। অকারণে পরিতাগ কর হয়ে। জ্ঞানী।। यण्लि जी तुक्ति करम अन्तारी रहे। তথাপি আমি তোমার ভাজা বস্তু নই॥ পূর্বের যদি হয় ক্বত অজ্ঞানে কি জ্ঞানে। হর রোষ ক্ষম দোষ অভয় প্রদানে॥ ठाकुत ठाकुत शूल मर्खना ध्यमम। ना कत शयन कति नाती मनः कूष्त॥

তোমার সহিত বাস বাসি স্বর্গ সম। তোমার পশ্চাতে যাত্রা শুন রঘ্তুম। আহার বিহার আর শয়নে গমনে। পথে পথ পরিশ্রম না হইবে বনে॥ কুশ কাশ কঠিন কঠিন তৃণ চয়। কণ্টক কণ্টক বৃক্ষ পথে সমুদয়॥ পটাস্বর তুল্য হবে সুকোমল তারা শ্রীচরণ কমল পরশে সুখ ধারা॥ বনে তৃণ পল্লবেতে বল্লভ সহিত। শয়নে শাবর শাল সমান সম্প্রীত ॥ মহাবাত জাত যত ধরণীর রক্ষঃ। মন অঙ্গে তব সঙ্গে হবে মলয়জ। শাধলে নদীর কুলে সাজাইয়া কুশে তব সহ শয়ন স্বর্গীয় নিরস্কুশে॥ क्ल मृल अभन तमन दृक्ष छ्राल। তব দত্ত তাহে চিত্ত সন্তোষ বিশাল यापु किया अयापु मुयापु मिहे ताम। তব কর স্পর্শে সেই দ্রব্য সুধা ধাম॥ বন্ধুগণ পরিষ্কন মাতা কিম্বা পিতা। না করিব স্মরণ তোমার সুরক্ষিতা॥ আপনার সহিতে সুস্বাদ্ ফল মূল। ভক্ষণে আমার চিত্ত না হবে ব্যাকুল তথা আমি না হইন তব অতি ভার। তব সহবাসে স্বর্গ সর্ব্বদা আমার ॥ যে স্থানে আপনি না রহিবে রঘুমণি সেই স্থান নিভান্ত কষ্টদ মধ্যে গণি॥ আমার কামনা সিদ্ধ কর রঘুবর। গমন করিব তব সহিতে সত্বর॥

ভোমারে করিয়া ভাগে জীবন ধারণে। কদাচিত শক্তা নহি নিবেদি চরণে॥ তোমার বিচ্ছেদ ভয়ে হয়ে। উদেগিতা। ত্রাণ কর নাথ তব সতত আশ্রিতা॥ যভূপি আমারে নিতে না কর স্বীকার। ভক্ষণ করিব বিষ প্রাক্তকে ভোমার॥ এ দৃঃথ সহিতে আমি মুহুর্ত্ত না পারি। **ष्ट्रिक्स वर्ष ठाट्ट जुमि वनहाती॥** এই রূপ শোকাগ্নি সন্তপ্ত কলেবরা। বিলাপ করেন সীতা জলে মগা ধরা॥ পদদয়ে পতিতা পীড়িতা অতিশয়। খামির সহিতে বনে গমনে আশয়॥ ত্রাহি তাপহারি সুতরুণ ঘন। ''সঙ্গে লও'' এই উক্তি উচ্চারণ ঘন 🛚 রোদনে বদন স্থান পতন ধরায়। मृष्डारिय भूषांत्रस्य ভाষारिया ध्रतीय ॥ পরে সীতা স্বরে করে রাম বক্ষোভেদ। বাণাঘাতে ব্যথিত সমান মর্মাচ্ছেদ॥ মোচন করেন রাম লোচনের বারি। শোকে তপ্ত তত্ত্ব কপ্তে হয়্যে বৈর্যাধারী প্রিয়ার করুণা **জ**ন্ম নেত্রযুগ **জ**লে। শোভা মনোলোভা যথা জলে পদ্মদলে মন্দ মন্দ বিধারণে করাণ উত্থান। পদতলে পতিতা প্রেয়দী মুখ প্লান 🛚 শান্ত করি কহিলেন মধ্র বচন। শুন সীতে দৃঃখিতে কি করিব এখন॥ কামনা না করি স্বর্গ তোমা পূস্ত আমি। অন্প ভয় নাহি হয় জাতা জগৎ স্বামী

্বাধু আচরিত ধর্ম ছাজিতে না পারি সমুক্ত না যায় যথা তট পরিহারী॥ গুরু শ্বাক্য অতি গুরু ধর্ম গুরুতর। ় এই কথা বুধগণে জ্ঞাত পূৰ্ব্বপির॥ ্ধ ধৰ্মনীত সে উচিত পধ অতিক্ৰমে। অশক্ত সর্বাদা আমি শুন প্রিয়ত্নে ॥ মহাত্মা পিতা আমায় করিয়া আহ্বান আদেশ করেন সেই অতি প্রভ্রমান। দেই পথে প্রবর্ত্তন সন্বাতন ধর্ম আমি তাহে ইচ্ছাবান কহিলাম মর্ম। রাজ্ঞ প্রাপ্তি বিষয়ে বিধির বিজন্মনে। শুভকাল নিশ্চয়ে আদেশ বাস বনে : তাহাতে তোমার উক্তি বৃক্তি সিদ্ধ নহে। আপনি শ্বীকার কর স্বামির বিরহে॥ সভাৰ্য্য যাইতে বনে না কছেন পিতা। কেন কষ্ট অঙ্গীকার কর তুমি সীতা। যদি পারি সুন্দরি রাখিতে নিজবলে। তথাচ না করি ইচ্ছা নিতে বনস্থলে। वनवान मञ्जव विषय पृथ्य आला। তোমারে করিতে যোগ যোগ্য কোন্কালে। वनवारम मम कष्टे कतिया निन्छय । করিলেন সৃষ্টি সৃষ্টা খণ্ডাবার নয়॥ কর্ম কলে আমি করি সেই কর্ম ভোগ। সুকীর্ত্তি বিশিষ্ট নহে যথা কীর্ত্তি যোগ এসে। প্রিয়ে আমার সহিতে চল বন। যভূপি তোমার বাঞ্ছা দেখিতে কানন॥ করিতে তোমার প্রিয় মানস প্রেয়সি। তোমার যা ইচ্ছা তাই मना ভালবাসি

ব্রাহ্মণে অপর সাধ্তমে বিধ্যুখী। আভরণ বিতরণ করি হও সুখী॥ নানা ধনে প্রিয়গণে কর পরিতোষ। সঙ্কিনী গণের প্রতি ভিক্ষাকর দোষ। ভোমার আশ্রিত যত প্রিয় দাসীদাসে पिहि पिहि देव पिहि (य याहः অভিলামে। গুরুজনে আহ্বান করিয়া সমাদরে। তৃষ্ট কর ধনে মধ্ বচনে সন্বরে॥ পশ্চাতে মম পশ্চাতে চল পদ্মাননা। নিতান্ত নিৰ্জনে যদি একান্ত কামনা॥ ভর্ত্তার অনুজ্ঞা বাক্যে অতি প্রফুলিতা। প্রদান করেন বহু বস্ত্র ধন সীতা॥ নিজ অঙ্গ আভরণ নানারত্ব নিধি। যে জন যেমন যোগ্য সম্প্রদান বিধি ॥ পরিপূর্ণ মানসে অশেষ বাসনায়। ভর্তার আজায় সীতা দিয়া সমুদায় 🛭 রজ্ঞত সুবর্ণ যত বসন ভূষণে। ভূষিত করেন দিজ দিজকন্সাগণে 🛭

२৯ मर्गः

ত্রিপদী।

মনোদুঃখ করি মুক্তি,নীতা প্রতি এই উক্তি,
যথাযুক্তি অনুসারে রাম।
লক্ষণে নিকটে মানি,শ্রীমান ধীমান জ্ঞানী,
কহিছেন বাক্য অভিরাম॥

ত্নি প্রিয় প্রাণ সম, সহায় সম্পত্তি মম, কহিছেন সুমধুর, বাক্য যেন সুবিধুর, महोमति शिक मथा मना॥ এই হেডু সুপ্রণয়ে,তোমারে কহি নিশ্চয়ে, অগ্রে ক্রডাঞ্চলি করি,রাম মুখ সদ্র্য হেরি, অঙ্গীকার ক্রিয়াডিগুভদা অতএব ত্মি বনে, কদাচ আমার দনে, গমনে না কর অঞ্চীকার॥ এইস্থলে সুফোশলে, রহিবে অতিমঙ্গলে, সে মঙ্গলে মঙ্গল আমার॥ বৃদ্ধি হবে সিদ্ধভাব, অকপ্টেপরম লাভ, থাক সুখে সমাধে পিতার॥ এই বাক্য রামমুখে, শুনিয়া পরম দঃখে, लकान गृमीन श्रूनव्हांत ॥ বাষ্প পরিপূর্ণ আদ্যা,শ্রবণে চিত্ত উদাস্যা, কৈকয়ীর বশতায়,না বাদিবে পূর্ব্বপ্রায়, অতি শোক সহনে অক্ষম। আলিঙ্গন পর মহোক্তম॥ দীতার চরণে পর, প্রণমিয়া প্রাক্ত বর, কহিলেন আপনি বিজ্ঞাত। আমার মানস জান, তথাচ বঞ্চনা কেন, বিনা ঘন ঘন বজ্ঞাঘাত। গমনে নিষেধ কেন কর। ইচ্ছা থাকে রঘুবংশ বর॥ - তোমার শরণাগত, সঙ্গে হব বনগত, कर आगा रहेगा श्रमन। রামচক্র দেখিয়া প্রসন্ম॥

मुधामम त्रष्व १ भ ४त । কম্পান্থিত কৌশলা।কোঙ্র। আমার দহিত তুমি, যাইবে কানন ভূমি, অযোধ্যাকে তাজিয়া লক্ষ্য। কৌশল্যা সুমিত্রা মার,বিধাতা কে আছে আর, কে করিবে ভরণ পোষণ॥ কামনা মানদে হবে,অভাবে অন্তরে রবে, কে পুরাবে বিশেষ বাসন।। श्रुत्स्त. शिठा मनत्र्राथ, यथांक्रश मत्नात्र्राथ, পরিপূর্ণ হইত কামনা। ভাব দেখি হইয়াছে স্পষ্ট। মুবে না নিঃসরে বাণী,ভাতৃপদে নত জ্ঞানী কৈক্ষীর প্রিয়হেতু, নৃপতি অজ্ঞান হেতু, मुख्यन करत्रन मिर्छ कष्टे। সকামী সম্পন্নচিত্ত,ভার্যার যে ভাবনি তা, সে ভাব অভাবে বর্তমান। ভরতে রাজ্ঞ প্রদান,রাখিতে কৈক্ষীমান, সেই হেতু কানন প্রস্থান। न। इव निवर्छ वरम, निक्ठि छोमात मरन, किया भम मुवित्ररू, मृश वाक्षिठ एएर, যভাপি করেন পরিতাগ। यण्णि आमात श्रीन,तका एक् ज्ञातीन, तारेख्यकी मरम अस्ता,रेककग्नी माजनगस्ती, বাড়িবে অধিক অনুরাগ। সপন্নী সম্পর্কদোষে,অচৈতন্ত রূপে রোষে, मर्ख खेवा भारत मर्खकान । এই রূপে অগ্রবর্ত্তী, মহাবীর চক্রবর্ত্তী, দে সময়েকেবাকাছে,আশ্বাসকরিতেআছে, थिवादत अपृथ्य खड़ांग ।

ত্মি পাক সন্ধিকটে, সদা আছাদন পটে, পুষ্পামল ফল জ্বল, বন্ত দ্ৰব্য যে সকল, আবত করিয়া মাতৃ গণে। रा भरी स महामिक, व्यायाशाय श्वनर्गिक, না হয় আমার শুভক্ষণে । আমি যথা তমি তথা,স্কান অবিশেষ কথা, বন্ধু দৃঃখ পরিক্রাতা সম। এই রূপ রাম বাণী,লক্ষ্ণ গ্রীমান জ্ঞানী, প্রম সন্তোষ মনোরম॥ ক্রভাঞ্জলি করি সার, কহিলেন পুনর্কার, वहन विहित्त तम शुर्व। ্মম সম্রঘ্বর,আছে অসংখ্য কিঙ্কর, কৌশল্যার অভিলাবে তুর্ণ॥ य माठा को मन्त्रातानी, यात भूत्वा अधानी, मर्खमा तहित का छ, मरमग्र ठाटह कि आछ জীবন রক্ষার্থে যাঁর ক্লিপ্ত। উত্তম সহস্থাম, উপাৰ্জন ধন দাম, অবিরাম সুখ ভূমি লিপ্ত ॥ বিশেষে বিশেষ বিজ্ঞা, ভরত সম্পূর্ণ প্রজ্ঞা, পুজিবে যে তাহে কি সংশয়। কৌশল্যা সুমিত্রাদ্যে,অতি যত্নবান্ হয়্যে, জীবন পর্যান্ত দ্যাময় ৷ কি আছে অপেকা মম,বনবালে ক্লডোদ্যম, রঘূত্তম লও সঙ্গে করি। আমি তবপ্রিয় শিষ্য,জানিবে অবশুপ্রেষ্য, পোষা আর সহায় এইরি॥ कानत्न किन्नत कार्या,कतिव माक निवार्या, थफ़्त धरूर्वान धाती व्या খনিত্র পিটক আদি, অগ্রেনিবারিয়া বাদী, আমার অচ্চিত ধলুং,ক্ষয় হ্য় দৈছেদনু, পথ পরিশোধ কর্মে রয়ে। ॥

আহরণ করি অনায়াদে। শয়নীয় প্রকরণ, তুণ পত্র সুশোভন, यथन (य आख्रा इत माम। তোমার সহিতে আমি,প্রবেশিব বন ভূমি कांनकी यादिन मत्त्र मत्त्र। यामिनी मः रयारा रयारा, प्रयोगित अकमा যোগে, রহিবে রহিব শক্র ভঙ্গে 🛚 হইয়া রক্ষিতা তব, যামিনী জাগিয়া রব, নিবারিব নিশাচর গণে। আমি ভক্ত অনুরক্ত, তব দাস উপযুক্ত, তুমি জ্যেষ্ঠ শ্রেষ্ঠ সুপালনে। श्रमहरुको मन्नी कर। नकार्वत मुवहरत, श्रतम मरछोष मरत, প্রীতি যুক্ত রঘ্বংশ বর 🏾 কহেন মধ্র বাণী,লক্ষণের চিভ জানি, এদো এদো সুমিত্রা নন্দন। একতা করি গমন, যে তোমার সূত্রজ্ম জिक्रामिया निर्मय नहन ॥ পুর্বের পিতা দশরপে,পরিশুদ্ধ মনোরথে वक्त मिर्लन मुद्दे प्रसुध। অভেচ্চ কবচ ধয়, যাতে তকু রক্ষা হয়. এইণ করছে নপজনু। निमल कूमल काती, थत्रछत थएन धाती. অপর আচার্যা গুহে আছে। দমুজ দলনৈ আন কাছে।

রামমুখে ইয়ে৷ উক্ত, নৃপসূত উপযুক্ত, भूकष्करम कतिश किष्कामा। লক্ষণ লক্ষণান্বিত,রামবাক্যে সচেষ্টিত, আচাৰ্য্য ভবনে হয়্যে আসা॥ গ্রহণ করিলা ধনুঃ, মহা ধনুর্দ্ধার তুনু, অশেষ আয়ধ মনোরম। ধনুষ্য় ইষ্চয়, মহা খড়ল শক্তক্য়, দিলেন আচার্যা মহোত্তম। हर्मन कहार्या हास्म, श्राहिशून मनकारम, নিকটে করিলে অবস্থান। লক্ষণ প্রিয়দর্শন, জ্রীরাম করি দর্শন, অনুজ্ঞা করিলা ভগবান॥ কালে তুমি অনুগত,শীঘু মম আকাঞ্জিত, পরিপূর্ণ কর ক্লপাবান। পরিত্রাণে মহাদুর্গে,সভোষিয়া বিপ্রবর্গে, इंग्ला इग्न मिटा धन मान। অনুগত অকিঞ্নে, সন্তোষ রাখিয়া মনে, द्रञ ४८न कतिया महर्ष्ट्र । वर्षित विनारम अर्थ,मम्पूर्व कतिम सार्थ, দরিজের দরিক্রতা নপ্ত। यावडीय माम मामी, त्व याङ्गत অভिनाषी, পরিপূর্ণ কর অভিলাষ। আনিয়া বশিষ্ঠ সূতে,মহারত্নে চিত্ত পূতে, पूष्टे कत मिया धन वाम। বিশেষে আমার স্থা,বহু দিনে হবে দেখা। আনিয়া করিব আলিঙ্গন। धारमाधा वदन वि. উ दिलादा नकान ঞ্তি, অন্বজা ত্রিংশত্সমাপন॥

७० मर्श्व।

প্রাস ৷

শ্রীরামের অনুজ্ঞা স্বীক্লার করি পরে। সুযজ্ঞের গৃহে গিয়া প্রবেশি সম্বরে॥ বিনীত সুমিত্রাসুত বিনয় বচনে। অগ্নাগারে দিজবরে পরিতোষি মনে॥ কহিছেন লক্ষ্মণ বশিষ্ঠ মৃত প্রতি। দেখিতে তোমার সখা বাঞ্জিত সম্প্রতি॥ লক্ষণের বচনে সুযক্ত হরাবান্। ব্যস্ত ইয়ে। রাম পাশে করিল। প্রস্থান। জীরামের সন্মিকটে বেদ বিজ্ঞ ধীর। দেখিলেন ভাঁহাকে জানকী রঘুবীর॥ উভয়ে আচার্য্য **সৃতে করিতে সম্ভোষ।** গাত্রোথানে বহু দানে খণ্ডি দৈন্ত দোষ। মনে আকাজ্ফিড যত করিলা অর্পণ। কণের কুণ্ডল আর কেয়র শোভন্॥ মুক্তাহার দিলা আর বিবিধ ভূষণ। বহু মূল্য ধন ধান্ত বিবিধ বসন 🏽 মুনিবরে পরে রাম করিয়া বিনয়। किंग दिस्मिय कथा श्रेष्ट्र मग्रामस॥ জানিয়া পতির অতি মিত্র মান্সমান। ধিজ্ঞবরে দেন দেবী সীতা বহু দান। বেদ বিভা পারগ সুযজ্ঞ যোগ্যপাত্র। কেবল নহেন তিনি পতি মিত্র মাত্র॥ দিলা হার হেম স্থত্র শুভ আভরণ। বহু বাস বিপ্রসূতে সন্তোষ কারণ॥

রোমজ হেমজ কীট জনিত যাবত। পরম শোভন দিলা পর্যাক্ষ তাবত্॥ রত্বের পাদুকা দান পরম শোভন। ছিক্সবরে রামচক্র করিলা জ্ঞাপন। भक्छत्र नाम्य इसी जीवन मुर्क्तत्र। माञ्च जामारत राम रहेशा मनस्॥ সেই সুশোভন করি করি সমর্পণ। গোসহস্ সহ বিজ করহ গ্রহণ। সন্তোবে করেন ছিল শুভ আশীর্বাদ। না জ্ঞানেন বনে গতি কৈকয়ী সংবাদ॥ এই রূপে বিভাগ করিয়া সর্ব্ব ধন। রমণীয় বহু মৃল্য করিয়া অর্পণ 🖽 অন্ত বিজ্ঞবরে রাম করিলেন প্রীত। অভিমত দিন্ধি সিদ্ধ ধন পরিমিত ॥ ভূতাগণে প্রেষা জনে করিয়া বিভাগ। বিভবানুসারে বৃদ্ধি যাহে অনুরাগ ॥ ্শিপ্পকারী আর পরিচারক সকলে। দিলেন বিবিধ ধন কিন্তুর মগুলে॥ পরে রামচন্দ্র করি লক্ষণে আহ্বান। এই কথা কহিলেন দেব ভগবান্ 🛭 দেওই বিলাওই মনোনীত। ৰিজগণৈ নিজ মনে যাহাতে সম্প্ৰীত॥ আপনার সধা ভৃষ্ঠ বন্ধু ষত জন। যা করে কামনা তাই কর সমর্পণ ॥ বুৰ গাভী ধন ধান্ত ভোজনাচ্ছাদনে। তৃপ্ত কর দ্বরায় ঈপ্সিত ইষ্ট্রগণে ॥ বহু বেদ পারগে প্রদান কর রত্ন। সৌমিত্রে সম্ভোষ সর্ব্ব জনে করি যত্ত্ব॥

অগন্তা কৌশিক গার্গ্য শান্তিল্য প্রভৃতি: আহ্বান করিয়া আন মর্ক্র মহামতি॥ धन त्राप्त वह यात्र हेष्टे भिक्ति नातन। মম নিকটস্থ জনে বিবিধ সন্মানে॥ তৈভিরীয় গণের আচার্যা মডিমান। বতে রত অবিরত আন বিল্লমান॥ দিব দান তাঁরে যথা মান প্রঃসরে। সমত্রে বিবিধ রত্নে তুমিব তাঁহারে॥ সুন্দর সুমনোহর চীর সুবসনে। পরিতোষ করিবারে আকাজ্ঞা পুরণে ॥ স্থা মম চিত্ররথ নাম মহাজন। বিভব বিস্তৱ তাঁৱে করিব অর্পন ॥ বন্দিগণে সযতনে আনহ তৎপর। ষাবতীয় মম পরিচারক অপর॥ সকলেরে তৃপ্ত কর সম্প্রতি লক্ষ্মণ। আদরে অর্পণ কর আকাঞ্চিত ধন ॥ কেশ পরিষ্কার কারী রম্পক রঞ্জক। স্থাপক অনুলেপক হাসক সেবক॥ বাহক আলোক কারী অগ্রগামী গার।। তোৰহ সবার মন দিয়া ধন ধারা॥ উপকার উপযুক্ত পুরস্কার কর। ভোজন নিমিত্ত শালি ধান্ত বহুতর॥ তণ্ডল উৎসর্গ কর লক্ষ্মণ প্রচুর। বিভরণে দীনের দীনতা কর দূর॥ महमु महमु कत शोधन श्रेमान। দধি দৃশ্ধ খৃত যায় হয় সমুপান॥ মল্লগণে যোদ্ধান্তনে কর পরিতোয। ক্রীড়া কারি কদখের জনাও সন্তোষ।

দিয়া নিক সহসু দৃঃখের কর নাশ। কৌশল্যা মাতার কার্য্যে যত দাসী দাস সুমিত্রার নিকটস্থ যাবতীয় জনে। भिमहम् मुखा निया ठुष्टे कत महन ॥ বিশীৰ্ণ না হয় বাহে, উত্তমৰ্ণ প্ৰায়। मृत्य काल क्लिश करत अहे अत्याधाय ॥ যাবৎ কাননে থাকি আমি বনবাসী। তাবৎ ना करे भाग कान माम मामी। মম উপজীবি জন জীবন ধারনে। যোগ্য তুমি ভ্রাতা ভোগ্য ধন বিভর্বে॥ অদেয় আমার নাই সর্বে সাধ্জনে। মস্তবান বিশ্বান ব্ৰাহ্মণে প্ৰোণপণে॥ যে কিছু আমার আছে বিপ্লপ বিভব। শুদ্ধ মনে লক্ষ্মণ নিকটে আন সব॥ উপযুক্ত রাম উক্ত ভক্ত ভ্রাতৃ শ্রেষ্ঠ। আনিলেন যত্ন করি যা বলেন জ্জেপ্ন। যথা দৃষ্ট মনোভীষ্ট পূরণ কারণ। मकला मोशिति दिन जेश्यूक धन। পরে রাম রাজীব লোচন ভগবান্। সন্মিকটে সকলেরে করিয়া আহ্বান ॥ कहिल्लन कर कार्या मकल किइत। যাহাতে আমার গৃহ না হয় নশ্ব ॥ লক্ষণ সহিতে আমি অযোধ্যা ভুবনে। যাবৎ না আসি রক্ষা করিবে যতনে॥ শোকাকুল করিয়া স্বন্ধনে পুনরায়। ডাকিলেন ধনাধ্যক গণ সমুদায়॥ পুনর্বার কহিছেন কমল লোচন। শীঅগতি আন সর্ব্ব অবশিষ্ট ধন ॥

अमान कतित अहेकाल मञ्जूमग्रा পরে ধন সকল লইয়া দয়াময়॥ অনাথ অস্থল অতি দরিত্র যে জন। তা সবারে রামচন্দ্র করিলা অর্পণ॥ माध्गत मन्छ्रे क्ट्रन मिन्न वर्ष। এই কথা সর্ব্বপ্ররে প্রচারে অনর্থ॥ বুদ্ধ এক দরিটো অনেক ভ্রুতার। ত্রিজট নামক দিজ ভনি সমাচার। ভিক্ষার নিমিত্র রামচক্রের উদ্দেশে। অনাস্থত প্রায় আসি ভবন প্রবেশে॥ প্রাবেশে বারণ তারে করিলেক দারী। গ্রীর্টনের সমীপে জানায় চক্ষে বারি॥ कम्भाराम् करणवत्र धिक्रवतः वरण। দরিজ সামর্থাহীন শরীর বিকলে॥ বালক আমার পুত্র উপার্জন হীন। এই হেতৃ আসিয়াছি আমি অতি দীন। ধন দানে কর তাম ভরণ পোষণ। রহিবে তোমার কীর্দ্তি যাবৎ ভুবন। এই কথা শ্রবণ করিয়া রাম পরে। আঙ্গিরসে কহিছেন পরিহাস ভরে॥ সহসু গে! আছে ছিজ সম সরিধানে। তাবৎ তোমাকে দেই যথার্থ বিধানে ॥ যত গো পারিবে রক্ষা করিতে আপনি। সমুদায় গ্রহণ করহ ছিজ মণি॥ শ্রীরামের বাকে। দিজ মানি পরিতোষ। গো রক্ষণে ষষ্টি লয়্যে করিল আক্রোশ। দৃত ক্লপে কক্ষ বিজ্ঞ করিয়া বন্ধন। অসম্ভ্রান্ত হয়ে গোকে করিছে রক্ষণ 🛭

উদ্ভ করিয়া দশু রোবে দিক বর। ুবৃদ্ধাবস্থা স্বভাবে কম্পিত কলেবর॥ ুগো সকল আয়ন্ত করিতে অতি বাহা। ুপরে রাম স্থানে আশা লইতে সমগ্র॥ দ্বিজ্ঞবর অভিলাধ দেশি রঘ্তম। কহিলা ত্রিন্সট বিপ্রে রাখিয়া সম্ভ্রম। পরিহাস করিলাম শুন ছিজবর। নিবৃত্ত হইয়া স্থির কর কলেবর 🛚 এই গোসহসু গোপ রক্ষক সহিত। े প্রদান করিব ধন যাহে তব প্রীত॥ এই উক্তি উক্ত হয়ে। উপযুক্ত দিজ। । তি**ন্তট জা**নায় রামে প্রয়োজন নিষ্ঠা॥ যজন করিব যাগ যোগা দেও ধন। যজ্ঞ সিদ্ধ হেতৃ পরে রাম নারায়ণ॥ দিলেন অশেষ দ্রব্য যক্ত সমাধান। বিবিধ প্রকার রত্ন বস্ত্র ভর্মবান ॥ পাইয়া অশেষ ধন মনের ঈপ্সিত। অন্তর সহিতে বিজ্ঞ হইয়া সম্প্রীত ॥ প্রশংসা করিয়া রামে আনন্দ মানসে। প্রস্থান করিল পৃথী পরিপূর্ব যশে॥ স্বদেশ প্রদেশে করে রাম গুণ গান। অযোধাায় একত্রিংশ সর্গ সমাধান #

৩১ সর্গঃ

ভঙ্গ ত্রিপদী। ব্রাহ্মণ গণে ধন, করিয়া বিভরণ, জনক স্থানে ধান রাম।

আয়ুধ বছতর, লইয়া গুণাকর, স্বসঙ্গে বছ জন গ্রাম। লক্ষণ গুণাকর, নবীন জ্ঞালধর,

পশ্চাতে ধনুঃশর করে। স্থানকী পতিব্রতা, স্বপতি সহ রতা,

লতা সঙ্গতা তরুবরে॥ অগৃহ পরিহরি, শ্রীহরির শ্রীহরি,

নিরখি ধনুঃশর ধারী: যুগল ভৃত্রিদর, শোভন গুণ্ধর,

হইবে বিপিন বিহারী॥ কুলের নারীগণ, করিয়া নিরীক্ষণ.

আপন ভবন মন্তকে।

तमा हम्मा छेलात, आत्ताह श्रुतःमत्त,

বিশুর সকাতর শোকে ॥

শ্রীরাম পদরত্তে, প্রস্থান বন রজে,

জানকী দহ দলক্ষণ। বিবিধ দুঃখ ভরে, দেখিয়া জ্ঞলধরে, বিস্তর বলিছে বচন

হে রাম ধনুর্বার, আশেষ অনুচর, অঞাগ অতি বলবান্।

দৈনিক চতুরঙ্গ, সর্ব্বদা বার সঙ্গ, একাকী পদত্তকে যান। লক্ষ্য সীতা মাত্র, সহায় দেখ্যে গাত্র, অনলে দহে অনুক্ষণ। अश्वर्ग मुथ द्रामि, कमला यांद्र मामी, সুবীৰ্য্য সূভগ লক্ষণ I অভান্ত বলবন্ত, শক্তির নাহি অন্ত, मक्रम मर्ख विषयः। অসভা পিতা তব, কি সভা কথা কব, ধর্মান্তা তুমি কি আশয়ে॥ (य मीठा श्रुक्तकारम, हेट्यामि (मवस्रारम, নয়নে না দেখিত কড়। त्म भीठा मुबमना, मुमीना मुमलिना, কি না করিতে পারে প্রভু॥ সহজ্ঞ অঙ্গরাগে, ভূষিতা অনুরাগে, বজিজতা বিরাগে সদাই। विवर्ग वर्ग मठा, मीठा मीठामिगठा, মমতা নাহি ভাবি তাই॥ নিশ্চয় দশরথ, কুৎসিত কি কুপথ, প্রবিষ্ট আবিষ্ট জায়ায় (य दह्यु छन धाम, वन निवास्म ताम, পাঠায় রহিত মায়ায় ॥ সুপ্রিয় পুজ্র ধন, নৃপতি অকারণ, অরণ্যে বিসর্জন করে। আবিষ্ট নাহইড, বুনিয়া হিতাহিত, পাঠাত কেন পুত্র বরে ॥ নিগুণ ্যদি সূত, নাহয় ভক্তি যুত, তথাপি সচেতন জন। আপন পুজ্রগণে, দিতে কি পারে বনে, পাষাণ সে জন কেমন ॥

রাঘব গুণ সিক্স, সকল জন বন্ধ मंमान्त्रांश शतिश्र्व। অনিষ্ঠুরতা ক্ষমা, শীলতা অনুপম বিজ্ঞতা সভা বল পূর্ণ ৷ এ इत्र छन नव, जालादा (य त्राघर বিখ্যাত ত্রিভ্বন জনে। রামের বনবাদে, সন্তাপ নীরে ভাদে অভ দকল মহাজনে॥ যেমন অলবাদী, ত্রাদিত জল রাশি শুকালে শুকায় মীন। জ্ঞীরাম লোকনাথ, পীড়ায় হত নাধ পীড়িত সকল প্রবীণ ॥ অপর্বের অতি রোধে, রাহু চক্রমাক্রোচ যেমন গ্রাসে সুক্রিন। বিপদ প্রাপ্ত রাম, বিস্তর ধনদাম, अमारन उष्टे मव मीन॥ ভোগাদি দান দাতা, বিপদ পরিক্রাত मकल मूथम औ्राप्त । অভয় সম্প্রদানে, যে রাখে ধনে প্রাণে বনে যায় সে রঘ্বর 🏾 भूमोध् मूनकन, नक्का विनकन ना करत रय कर विशय। সর্বাধ্ব ভোগ তান্তে, জ্রীরাম পদ ভবে অমুগ বন অবলম্ব ॥ (यक्रें भ क्रिन, मिक्रं क्रिन है मकरण बीतायत मरम। कि करत धन धाता, म श्रुख शृहमार म পশু क्रवामि श्रम्रक

ক্রিব পরিজাগ, বিহার অনুরাগ, উন্তান শয়ন আসন। ীরণ শুদ্ধ বাস, সাধন সিদ্ধ আশ, প্ৰীরাম সহ যাব বন ॥ ্ৰীরাম দৃঃধে দৃঞ্জী, স্বৃপতি অভিমুখী, জানকী যাবেন অরণ্যে ংইৰ অনুগত, অযোধ্যাবাদী যত, আত্রিত ত্রিলোক শরণা।। ুইবে সমুদ্ধত, নিধান আছে যত, বিশীর্ণ বিশিষ্ট উচ্চতা। াক্ষীণ ধান্তকোষ, অলক্ষী গত দোৰ, আছ্র মার্জন রহিতা। मत धृलि लटन, आष्ट्य मना तटन, इहेर्द अर्थाधा मिना। দকল কুলাছয়, উল্ক সুসম্পন্ন, কুঞ্কুর মধিক দুর্জ্জন। । हीन धर्मा कर्मा, विक्किंड किशे धर्मा, পিশাচ প্রেত নরাস্তকে। ম্পূর্ণ রাজভূমি, বজ্জিত সদা শ্রমী, মিলিত নরা জরা শোকে ॥ রিদ্র ক্ষুদ্রমতি, দৈবিক কর্মো অতি, অশ্ৰন্ধা হবে মৰ্মকাল ॥ জ্ঞন পরিত্যাগে, কৈকয়ী অনুরাগে, मखोश मकन खड़ान। ার হবে বন, কৌশল্যা প্রাণধন, শ্রীরাম গমন কারণ। रिकक्षी मुथ मन्भाषन ॥

বে স্থানে অভিদূর, সুখেতে সম্প্রচর, চাকুর প্র হবে তথা। **এই** অर्याधाश्वती, नजान्छ निकारती, চাতুরী চপলতা যথা ॥ ঞীরাম বাদস্থানে, দর্মম অতিবনে, ভুজঙ্গ পক্ষী মৃগ বত। प्रश्मक विष वांमी, मकरण श्रृवाताणि, দেবিবে হবে সাধ্রত॥ পাউক পরিতোৰ, ক্ষমিয়া সেবালোৰ, मृष्ट्र कक्क श्रम। ঈদুশ অন্য কথা, কথনে যথা তথা, আবৃত পুরবাদিগণ ॥ উদ্যোগে অরণ্য উদ্রেশ। পীড়িত क्षत्रश्व, क्रिया मत्रभन. পরাত্মা পরম হরিখে। महामा जामा हत्या, किश्विष् क्रन तत्या, পিতারে দেখিবারে যান। স্বস্থে অভিভৃত, রাঘ্ব দেখে। জাত, জনক গেহে অধিপ্তান॥ সুশীল বুৰ অতি, সুমন্ত্ৰ মহামতি, নূপতি অগ্রে হিতি করে দেখিয়া রখুবরে, কাতর কলেবরে, नग्रत महा कल करता। অযোধ্যাকাণ্ডে অতি, সৎকথা রঘুপতি, কানন গমন প্রসংক। বাত্রিংশ সর্গ সাঙ্গ, অমৃত সূতরঙ্গ, প্রবণে ভব ভয় ভক্ষে॥

७२ मर्गः।

١

প্রার ৷

সুমন্ত্র সমীপে রাম বিশ্রামের কালে। অতি আৰ্দ্ৰ দশর্প ব্যথিত বাগ্জালে। আকল ইক্রিয় অতি ভূপতি প্রবর। কৈক্থীর প্রতি নরদেবের উত্তর । হা কষ্ট পাপিষ্ঠ মনঃ কৈকন্মী ভোমার। অমিত্রের আচরণ সতত প্রচার॥ করিবে কামনা সিদ্ধি গেলে মম প্রাণ। বনবা**স গত হৈলে মতুক্ত প্ৰেধান**॥ জানকী লক্ষ্মণ সহ রাম যাবে বনে। ভঞ্জিব ভোমাকে আমি তব পুজ্ঞ সনে। অভিব আপন প্রাণ সমাধান রাজ্য। मकरन विश्वा इरव इरव এই कार्या॥ নিত্না, লজ্জা রহিতা কুলীতা পাপিনী। আমার বিহীনে রাজ্ঞতোগ সম্পাদিনী ॥ রামধন যাবে বন তারে পরিহরি। व्यापन कीवरन वाझा हरत त्रारक्षपती ॥ পাপিষ্ঠা এ রূপ তব না হইব বল। পুনর্কার জগতে রাখিতে অপষশঃ॥ কার সনে গোপনে করিলি কুমন্ত্রণা। শা ভানিয়া গৃঢ় তত্ত্ব মঢ় বিবেচনা। শশুভ সঞ্চারাদ্ধর এই উপস্থিত। পামার জীবন নাশ কর্ম মনোনীত।

কে অসত, কার মত ইইল এমন। ভরতের অভিষেক রাম যাবে বন ॥ এমত পাপিষ্ঠ মত দরাম্বার ক্লড ! অমোঘ অশনি বাক্য যুক্তি বহিষ্কৃত ॥ ভরত বালক অতি রাক্স অতিভার। কেমনে শাসন কর্ত্তা হইবে তাহার॥ বিশেষে বলির শ্রের জের পুত্র রাম। রাজীবলোচন রাজ্ঞ যোগ্য গুণধাম॥ কালরাত্রি পাপিনী না জানি ভার্বা) রূপে। পতিত করিতে উপস্থিতা অম্বকুপে ॥ মন্দ বৃদ্ধি আমার অভ্যন্ত পুণ্য ক্ষীণ। বিবাহ স্বীকার করি হয়ে অপ্রবীণ ॥ ঘোর তরা নিষ্ঠুরা দর্পিণী ছঅবেশে। আমার কুবুজিক্রমে আইলি এ দেশে। ইষ্টসূত সহিত আমার হত প্রাণ। জানিলে এমন পুর্বেই হইত বিধান। পিক ধিক ধিক নারী কুল কুমন্ত্রণ। বিশেষে ক্লতমা অতি অজ্ঞান ভাজনে। যে নারী সত্পথাচারী কান্ত মনোরমে। নিজ বশীভূত সদা বৰ্ত্তিত সম্ৰমে 🛚 পরিভাগে করে যারা ধন আকাঞ্জায়। সেরপ বিরূপ অতি উঞ্চমতি প্রায় 🛭 न। हरेरव ভোর ভাল ইহ পরলোকে। নিন্দিতে নিন্দিবে লোকে রবি দৃঃৰ শোকে। যে হেডু সপুজে সামী সৃদৃঃখে যোজন। क्रिमि कर्छ्या এकि मञ्जन नक्ष्म ॥ नर्खमा भिविका तथ भरनातरथ थाय । পদ ব্ৰজে দুৰ্গব্ৰজে কি কপে সে যায় ॥

সুস্বাদু শোভন অন্ন পান বার ভক্ষ্য। সুকুমার কুমার কানন উপলক্ষ। কটু ড়িজ কষায় প্রভৃতি ফলমূল। ভোজনে কেমনে চিত্ত হবে অনুকৃল 🛚 নিকুপম মনোরফ আভরণ রাশি। তাহাতে সম্পূৰ্ণ চিম্ভ নহে অভিলাষী। সে কেমনে গিয়া বনে ভিক্কুক আচারী। वृत्कत वक्कन हम्म खंडी भेठीयाती॥ অপর স্বধর্ম পর আমার শাসন। কেমনে আমার বাকা করিবে লব্দন ॥ হাহা পুত্ৰ শুদ্ধভাব সম্পন্ন শরীর। ধর্মজ্ঞ বিনয়ী গুরু বৎসল সুধীর ॥ দ্রাত্মা স্ত্রীবশীভূত কুৎসিত কুশীল। অক্লতার্থ আস্মা অতি অন্তর আবিল। সুস্বভাব সুবৃত্ত সদগুণ গণে ভারি। ছে। সূত্ প্রাণের অধিক প্রিয়কারী। হাহা রাম গুণারাম রমণীয় রূপ। কেমনে আমার মতি এ মন বিরূপ 🎚 পরিতাগ করিতে কাননে সুকুমার। অত্যন্ত নিশ্বিত আমি কুণ্ঠ কদাচার॥ ধিক্ধিক্ আমারে আমার ক্লত কর্মে। প্রিয় পুজ্র পিতৃ দেবা সংস্থিত স্বধর্দো॥ সেই সূতে পরিভাগ করি নারী বশে। কি কহিবে ভুবন পূরিবে অপষশে॥ কহিবে নিশিত কর্মকারী পাপাচারী। পুজে পাঠাইয়া বনে দেবা করে নারী। উপকার ভিন্ন রাম না করে আমার। ত্রী জন্ড সূত্**ত্ব বোধ হইল সঞ্**রি॥

বশিষ্ঠ অপর বামদেব মুনিবর। ভাবালি কাশুপ আদি সর্বর গুণাকর॥ কি বলিবে ভাবৰ করিয়া এই কথা। অন্ত ব্ৰহ্ম বাদিগণ কীৰ্ত্তন অৰ্থণা 🛚 বিশ্বামিত্র প্রমুখ সকল সিদ্ধজন। কি বলিবে তপোবন নিবাসি সদগণ ॥ পৃথিবীর পৃথিবী পালক গণ যারা। অপর সকল সাধ্কি বলিবে তারা # रुरेणांग এ कारण ज्यरण পति भूनं। সর্বভাবে পাতক ঘেরিল আসি তুর্ণ 🛭 রাচ্ছ লুক কেকয়ীরে দিয়া বরষয়। विनष्टे कीवन कष्टे एए एइत मरभग्र॥ চঞ্চল ইব্রিয় দল শোকানল জ্লে। কৈকয়ীর বশত 🖛 নিত দাবানলে 🛚 পাপিনী নিমিত্ত পাপে হইয়া মোহিত: ঙক্ল ব্রহ্মচারী বগে হইব নিন্দিত। সুথকালে কপালে পুজেরে দিয়া দুঃখ: হইলাম অপষশঃ ভাগী অধোমুধ। যতক্ষণ নিয়োজন দৃঃখে রাম নহে॥ এই কালে মরণ জীবন কেন রহে ॥ এ পাপ এ তাপ যেন না পায় জীবন। এই বাক্যবল্যে রাজা শোকে অচেডন 🛭 পুজ্ৰ শোকে ব্যাকুলিত সকল ইক্ৰিয়। আপনারে আপনি হৈতেছে নিন্দনীয় 🎚 भूताशारन व्य**कारन विचान् गरन यथा**। বিলাপ আলাপ করে দৃংখী নূপ তথা 🏾 এই রূপ পৃথীপতি পীড়িত অন্তরে। সমীপে সুমন্ত্র কয় সংবাদ সম্বরে।

রাম গুণধাম নৃপ সমীপে আগত। শ্রুত মাত্র ক্ষত রাজা পুত্র অভ্যাগত। श्रुवः श्रुवः शीषात्र यावम मृष्टीरवन । প্রবেশ করাও পুরে মন্ত্রিকে আদেশ। অযোধ্যায় দশরথ বিলাপন নাম। ত্ৰয়ব্ৰিংশ সৰ্গ সাঙ্গ শুন সাধু গ্ৰাম **॥**

७७ मर्गः।

ত্রিপদী।

নৃপতির কর্মস্থত্তে,প্রবেশ করাও পুজে, **এই** वांका वर्णा नहनाथ। ধরতর শোকাবিষ্ট, বারম্বার দুরদৃষ্ট, ভাবনা ভাবনা জগরাথ ॥ मूक्ष कि हो विशीन, इहेश माह व्यक्षीन, ন্প সংজ্ঞা পাইয়া পশ্চাত্। সিংহাসনে উপগত, 'যথারপ জ্ঞানরত, মন্ত্রিবর দেখ্যে নিরুৎপাত্। নিকটস্থ নরবরে, কুডাঞ্ললি করে পরে, पृश्यं छात्र कात्र निर्देशन। **६८क** निया धन नान, ज्ञाशर्त मूनमान, রমণীয় শ্রেষ্ঠ রামধন ॥ কিরণে বেমন রবি, উদ্দীপ্ত অঙ্গের ছবি, গুণ জ্যোতিঃ পূর্ব গুণময়।] वनवारम कतिया निक्तम ।

লক্ষণ জানকী যুক্ত, তব বাক্য পূৰ্ব্ব উক্ত, मक्न क्रिएंड क्नवान। তব পাদপথে নত, দর্শনের অভিমত, দৃষ্টি কর যদি ভগবান॥ সুমন্ত্রের সুবচনে, শ্রবণে সচ্ডোষ মনে, অনন্তর কহেন নৃপতি। গুদ্ধাত্মা আকাশ প্রায়, দীর্ঘশ্বাদ উষ্ণকায়, ত্যাগ করি সৃদুঃখিত মতি। আন হে সুমন্ত্র শীজ্ঞ, কহিলেন নরব্যাজ্ঞ, আমার বাবন্ত দারাগণ। দকলে হয়ে আবৃত, দেখি রামরপামৃত, 'এই ইচ্ছা আমার একণ। नृপতি जारमण उथा, नरतक द्रमनी यथा, मञ्जी शिया मिला नमाठात । সৎস্বভাবা নৃপভার্যা,বিলম্ব না সহেআর্যা, ভূপতির আজ্ঞা অনিবার। এই বাক্যে রামমাতা, সকলে সুম্বরাম্বিতা, म সুমন্ত্র যান নৃপস্থানে। স্বামির শাসনে স্থিত, নারী সার্দ্ধ দপ্ত, রপবতী ভূষিতাভরণে॥ निकटि तमनी (अनी, यथाय देकक्यी तानी, তথা পতি দর্শন লালদে। ममाग्रेड मात्रांश्व, नरत्रक कति खावन, আন বলো সুমন্ত্রে আদেশে শীজ্র গচ্ছ মন্ত্রিবর, আনিবারে রম্বর, न्भारमण ठिन्ना मुमल । তব আজ্ঞা শিরোপরি, স্থাপন করিয়া হরি সঙ্গীতা লক্ষ্মণ সহ, আনিলেন গুণাবহ, দর্শনে ভূপতি পরতক্র॥

আগত সম্ভানে হেরি,মানসে আনস ভেরী, কুডাঞ্জলি পুটাম্বিড,নপতি নিকটে হিড, বাল করি অযোধার পতি। ममञ्जास नीमकास, ताब्यमृत्य विष्ठुास, गाकिमसू यशागठ, ममत्रथ जित्रस, কৃতাঞ্চলি পূৰ্বক সুমতি। স্ত্রীগ্রণে বেষ্টিভ ডুপ, নির্বিদ্ধা রামরূপ, जलि भीख उक्रिक्टन रहि। किन्त चार्ल करनवत, एक प्रषट् न्शवत, किकग्रीत इतन वन हेटि। আগত্ আগত্ রাম, মনঃপ্রাণ অভিরাম, **এই दाका উक्ति कति फुल।** আলিঙ্গনে ইচ্ছা অতি, দুর্বলে দুর্দ্ধর মতি, প্রিয়তর মমানুজ, জানিবা সুমিত্রাঙ্গজ, करन करन प्राचित्रीय कर्ण ॥ সম্ভ্রান্ত কম্পিত পাত্র, দেহে নাহি বল মাত্র, পতিত প্ৰজানলৈ যথা। শীর্ণ জীর্ণ কলেবর, পতিত ধরণীশ্বর, সিংহাদনে মূহ্ছাগত তথা। ধরাধরী অপা অপা,আক্রমে সম্প্রাপ্ত তপা, আজ্ঞা আকাজিকত রাম,ভূপতির সৃষ্ট ধাম, আমনে পতিত পুনর্কার। গ্রীমতী আনকী সহকার॥ সলক্ষ্ণ ঘৰস্থাম, অনন্ত সলগুণ ধাম, দেখি তাত বিরাম সময়। স্বকরে ব্যক্তন ধরি, বাতাস করেন হরি, मीनवसू पूर्व एग्रायग्र । नातीश्रम धन नाम, देककशी माधिन वाम, नित्रांस्ताम पृथि वर्गन। এরপ মু**ছর্ত্ত কাল, মূর্ছ্**গিত মহীপাল, পরকাল চৈতক্ত প্রাপণে।

मृत्वाकाहरत्र त्राम खाना। सीर्वेदरी यथा ख्या जागा। त्रायवाका महीचत्र, महामान्ध महीचत्र, মহারাজ তুমি মহাপ্রতু। আমি বনবাস হেতু, সমার্ক্ত সভা সেতু, বিষারণ না হবেন কছু ॥ চাহিয়া মঙ্গল চক্ষে, কিঞ্চিৎ কিঙ্কর পক্ষে, ক্রিবেন লক্ষণে কল্যাণ। এক ততু সহিতে প্রস্থান। वह विध निवाहरण, ना मारन वाहण मरन, প্রাণপণে ব্রুরে অঙ্গীকার। অত এব সুনিশ্চয়, বনবালে মহাশয়, সম্প্রার্থক অনুজ্ঞা তোমার॥ विठातिया विख्व विठक्षन । নিরখি নৃপের গতি, রাম অতি বহামতি, মহামোহে মহীপতি,ব্যাকুলিত আন্ধাঅতি, বারি পরিপূর্ণ সমীক্ষণ ॥ আমে রাম গুণনিধি, বঞ্চনা করিল বিধি, কৈক্ষীর বর প্রাপ্তি ছলে। না আনি মন্ত্ৰণা গৃঢ়, নিগ্ৰহী অভান্ত মূঢ়, অধর্ম আরু অকোশলে ॥ অতিকোমল বিগ্রহ, আমারে করি নিগ্রহ, ভার বহ হও রাজ্য ভারে। পিডার কথিত উক্তি, বনবাস দৃঃখ মুক্তি, मुक्त मृश्कि महकारत ॥

ধার্দ্মিক প্রবর পর, পরে রাম রঘ্বর, প্রণতি পূর্ব্ধকে নূপ প্রতি। ভমি পিতা গুক নরপতি॥ সকল সংসার ভর্তা, বিশেষ কিন্তুর কর্তা, প্রভু পুজনীয় দেব প্রায়। ভোমার শাসনে স্থিতি, তব বাকেট রীতি নীতি, মহদ্ধা এই অভিপ্রায় " নিবারিত নহি কদাচন। गुलिशिह (अहे दिएका) महम् ददमत 'बायश खत एएटक खानवाय, সুস্থির রহুন্কিছু কাল। ্য রূপে প্রতিজ্ঞা ভঙ্গন। হয় লৌকিক রঞ্চ, স্বদর্শের হইয়া হীন,আমি দুঃখী অতি দীন, সেই রূপ কর মহীপাল ॥ ভূমি হবে মিপ্যাবাদী,ভাষাতে ধর্ম ধিবাদী, পরে নৃপ দশর্থ, সুবদ্ধ নয়ন পথ, এরাছ সম্বোগে কার্যা কিবা; ত্রিলোক নিভাসী প্রতি, লা হয় এমন মতি, কীন্তি আয়ুঃ যশোবল,সুরত্ব স্বধর্ম ফল, আমি বাঞা করি হাত্রি দিবা हास्पित शिशुण धनि, खादर्श नरहत्त्वमिन, সতা পাশে বদ্ধ বিষাদিত। क : न करूना नानी, भड़ीनाथ भड़ाभानी, সগদ্গদ বচন জড়ত। যছাপি তব ক্রদয়, গমনে নিশ্চিত হয়, भारमाथा। इष्ट्रेंट वनवासा। নিষেধনা মান তবে, এ অযোগ্তে সক্ষেবে, বহু রত্ন বহু ধন, বিবিধ বিভবে মনঃ, কে রহিবে লোক পরিহাদে !

বিশেষে তব বিরহৈ, জীবন ধরিতে দেছে. এ উৎসাহ আমার কি হয়। কহিছেন ক্তাঞ্জলি,সাধ্বাদে কুতুহ্লী, তুমি আমি পুরজাণে, কেকয়ীর অনুরাগে, ভরত ভূপতি হয়ে। রয়॥ এই বাক্য শ্রুতমাত্র, কৌশল্যাসূত সুপাত্র, উক্ত নূপে সূক্তবাক্য উক্তি। তুমি ভুঞ্জ সাধ ভোগ্য, নহ বনবাস যোগ্য, অনুবৃত্তি করণে সুযুক্তি॥ প্রসল্প আমার প্রতি, হয়ে। কর অনুমতি, কর ধ্রপণে যোগ, নাহি চাহি রাজ্ঞভোগ, मनग्र कामा आभी स्वाम । সতো রাখমতি স্থির, সুধীর কেন অধীর, রাখসভা প্রতিজ্ঞতা, ভাজ এ রপ অজ্ঞতা, খণাও মানস বিলয়া। चन्नी कह महन, जादान मम वहन, উপদেশ দিতেছি ভোমারে। এ কুপথে মতি না সঞ্চারে ॥ রাম বাকো মনোরথ সিদ্ধি। প্রাপ্ত হও পুত্র মহা ক্ষি। অসন্ধা বৎসর সীমা, হবে প্রবল মহিমা, পুনঃপুরী প্রবেশ কারণ। निर्मिष्ट श्रञ्जन পणि, यम मण्ड महातथी, করিবে প্রতিজ্ঞা সুপালন। এই यে तकाभी इति, आभात निकरि तति, ভুগ্নিবে বিবিধ ভোগ অগ্ন। সভোষ করিয়া মম সভঃ।

তোমার সভোর সভা, করিতে মানস সভা. আখাসিয়া এদঃখিরে, বিশ্বাস ক্ষীরোদনীরে, নিময় করিয়া প্রস্থৃতিরে। প্রতিজ্ঞায় রাখিবা আমারে। জানিবা নিশ্চয় নৃপ,আপনি ধর্মি সৎক্লপ, গমন করিবে সুখে, হে পুল্র বনাভিমুখে, a वांका कहिला द्रघतीरत !! কুতোভোগী বন ব্যবহারে ! শ্রবণ করিয়া রাম, পিতৃ বাক্য গুণধাম, ভোমার মতা পালন, পরম ধর্মে বর্ত্তন, সেই অতি অনুগ্রহ পর। কহিলেন শ্রীমন্তের প্রতি। সরাফ্র উৎরুষ্ট ধরা, মম আগ ভূত ছরা, कत्र श्रुटि मामतिश, धर्मिष्ठ धर्म गातिश, ভরতে উৎসব্ধ নরবর ॥ ন্পশোক বারণে সুমতি॥ मुट्थ मिश्रा विमर्ज्जन,मृट्छोर कतिश्रायनः, আমি নিতাসতা তব, পালনে তপসী হব, বনে রব সেবিব সুতপঃ পুনঃ তায় বর্ত্তন অযুক্ত। না হয় উৎসাহ মাত্র, সুচির দুঃখের পাত্র, বাঞ্জিবেন মম হিত, রহে সাধ্রীতি নীত অভ সুথে হবে কি তা মুক্ত এই অল ইষ্ট মন্ত্ৰ জপ 🛚 , কি দিবে মঙ্গল দান, শ্রেয়ঃ অরণ্য প্রস্থান, এই जमानता धता, इत्त सुमझल लहा. मश्य मर्गिक मकानन। করণে বারণে নাহি ফল। मू अहत श्रुतशाम, मूमीमा चित्रम शाम, ধন রত্নান্বিতা ভূমি,ইহাতে হয়ে। আশ্রমী, मर्व खवा मध्य मवन ॥ बहेरदक छहा आमन ॥ তব উক্ত যথা সূক্ত, আমি যে বিভব মুক্ত, মাতল তুরল রথ, প্রাণাদি সুখের পথ, ভুক্ত ভোগী কেক্ষ্মী সন্তান। ভরতে করুন সম্প্রদান। সে বিষয়ে মম মনঃ, পরিত্যাগী অনুক্ষণ, বরণ অজিব দারা, ইপ্টডোগ ধন পরা, অপরংবা পরিহরি প্রাণ্ নাহি করে উৎসাহ বিধান॥ তথাচ ভোমার স্তা, করিতে কভু অস্তা, তোমার আদেশ বানী, বিশিপ্ট সমত জানি, এ ইচ্ছা আমার মনে নয়। তাহে দুঃখ কি আছে আমার। কোভ দুঃখ পরিহার, একণে নৃপ ভোমার, বিশেষ ডোমার জন্ত, সে দুঃখ অতি অগণ্য, আমার বিয়োগ বিষময় ॥ না রহুক শ্রীরে তোমার॥ তোমার সমান নরে,সাধু কেবা কোভ করে' এই যে অক্যু রাজ্ঞ, নিষ্পাপ গুণজ্ঞ গ্রাষ্ট্, সাগর সমান সুগভীর। নানা ভোগ বিভব সুখাদি। রাজ্ঞ প্রাপ্তি ইচ্ছা মম, সুখরাশি রভ্তম, তোমারে অসতা হ্রদে,রাখিয়া প্রমোদমদে, তাহে চিত্ত অভানহে স্থির॥ ना इव अताकार्य विवामी॥

ষভপি জীবন বায়, সূক্তি তোমার পায়,
তথাচ না করিব বরণ।
কল মূল ক্তাশন, সেবিব দুর্গম বন,
নদী সরোবর গিরিগণ॥
কাননে করিব বাস, বিগত বিয়োধ ত্রাস,
অঙ্গ জ্বর রোগ বিমোচন।
অঙ্গেজা সুখী হ্ব,আমার বিয়োগে তব,
দুঃখ যেন না হ্য় রাজ্ঞন॥
অযোধায় দশর্প, আখাসন মনোর্থ,
পরিপূর্ণ কৈক্য়ী রাণীর
বিবেচনা বিচক্ষণ, সর্বে সাধু সূলক্ষণ,
শ্রণ করিবে চিক্ত স্থির॥
৩৪ সর্গঃ।

প্রার :

প্রবল প্রতিজ্ঞা হেতু পীড়িত নৃপতি।
অতি উপ দীর্ঘ শাস জ্ঞাজি মহামতি।
সুমস্ত্রে আহ্বান করি আজ্ঞা দিলা তায়
চতুরক্ষ বহু বল শস্ত্র সমুদায়॥
আবরণে আবৃত করিয়া আন তুমি।
লীজগতি কম্পনা করিয়া এই সব।
সুরূপ যৌবনান্তি মুগ্ধ মনোভব॥
মহাধন স্বরূপ সুরূপে গুণে যুক্ত।
কুমারের করিতে দেহের দুঃখ মুক্ত॥
অনুরত্ন অনুক্ষণ সূত্রদ সকল।
নানা বিধ বিভবে করিয়া সুকৌশল॥

ধনাধ্যক্ষ কোষাগারে কিন্তর প্রধান। রাম জন্ম সর্ববিধন করিয়া আদান ঃ অমুরাগে রামের পশ্চাৎভাগে যাবে। মৃগয়াতে বিহার করিয়া মগ পাবে 🛚 ইব্সিত ভোগাদি যত ভোগ করে রাম রাজ্ঞ সুখ ভোগী প্রায় রবে গুণধাম 🛚 যে সকল রাজ্ঞ সুখজনক বিভব। উপজীবি জীবের জীবন তুল্য সব ॥ সেই সমুদায় অতি অশেষ বিশেষ। শ্রীরামের সঙ্গে যাবে নিবারিবে ক্রেশ্ 🛚 তীর্থে ভীর্থে উৎসর্গ করিয়া নানা ধন। তাব দরিতা বর্গে করি বিভরণ॥ বনবাদে রাজ্যধর্ম প্রাপ্ত হয়ে। রাম। সুখে কাল যাপন করিবে ঘনভাম 🛚 ভরত উৎপন্ন ধন করে। উপার্চ্জন। করিবে পালন এই অযোধ্যা ভুবন॥ পুনবর্বার সুকুমার আইলে স্বদেশে। শাসন করিবে রাজ্ঞ অশেষ বিশেষে 🛚 এই রূপ উক্তি শুনি নৃপতির মুখে। क्तिकश्री भारेश। **ভ**ष्न ভাসে মहादृः र ॥ एक रेश्न भाशिनी मनाक वनन। थरत करत इठाएकात श्रमग्र जिम्म । ना मत्त वहत्न वानी विवर्त वहनी। নূপতির প্রতি করে কোপধনি ধনী। मरत्रस्य ममरत्र इत्र क्लारभत्र उत्थान। তামুবৰ্ণ দিন্য়ন দেহ কম্পাবান ॥ রক্তবর্ণ লোচনা কহিছে এই বাণী। मात्रज्ञांश मकल इतिया ताज्यभानी ॥

শুন্ত করি ভর**তে**রে দিবে রাজ ভোগ। হইবে অসত্যবাদী ঘটিবে দুযোগ এইরপে নূপে বহুবিধ নিন্দা করে বাথিত করিল বক্ষঃ রধনী বাক্য শরে। পীড়িত প্রথিবী নাথ দংখিত অস্তর। কৈক্ষীর প্রতি পরে করিল। উত্তর অভ্যাপিও তোর ভার ধরে বসুন্ধব!! সাধর নিশিতা ভুই অতি পাপ পর। বাক্য বাবে ব্যথিত করিলি বার্লার ! হৃদয়ে সঞ্চার নাহি ক্বিকা দ্যার : নূপ উক্তি শ্রবণে কম্পিত হয়ে৷ কংয় কেক্ষ্মী কহিছে নূপে কুপিয়া তথা? পাপিনী বচন বলে প্রক্ষ সমানঃ প্রতিজ্ঞা পালনে কেন এন্তথা বিধান তোমার পূর্ব্ব পুরুষ সগর বাজন। **ছেঃ প্রক্রে** নুপতি দিলেন বিসক্রন অসমঞ্জ সুতে নৃপ তাজি অনুসাগ। সেইরপ কর তুমি রামে পরিস্থাগ 🛚 कार्या जमञ्च कथा এकर्ष अभीक। অবণে আপনে নৃপ দিতেছেন ধিক্ঃ অন্তরে অত্যন্ত লজ্জা করে গ্রাকর্ষণ। কিঞ্চিৎ মন্তক ভার করিছে কম্পান পরে তথা এক বুদ্ধ মহামান্ত আসি। সিদ্ধার্থ তাহার নাম জগতে প্রকাশি॥ নূপতির রীতি নীতি মতজ্ঞ সে জন। वातचात क्रिक्शीरत कहिए विष्कृत शृद्धि (कवि अममञ्जा मध्य कूमादा। ভাজিলেন মহারাজ কুকর্দেম তাহারে॥

যেকেত্ করিলা আগ সগব সন্তানে ! কহি আমি শুন হেতৃবাদ বিবরণে 🎚 খ্ৰমঞ্চা পৰ্কৈ পুৰবাদিগণ যত গলে বাণ শিলাবদা করে অবিরত জলে ভাসাইত সেই কদয়। কুটিল। পূর্বে থামি শুনিয়াছি সে অতি দঃশীল সেই হেতৃ প্রজাগণ সকোপ সকলে। রাজার নিকটে আমি উক্রাক্যবলে নপতি ধর্মির মতি ভূমি প্রণবোন। তোমার এমন কেন কদ্যা স্থান : পরি গ্রাগ কর নূপ এই পুস্কু তব। নত্রা সকলো অভা দেশা তুরী এর প্রজাব প্রকোপ বাকো বাগার নিমান কহ সবে কি কৱিল্ঞামার তন্ম (क) १४ छटा कटा गर्स भेरताम अतु । প্রজের দৌরায়্মানপা সরিবা এবং পুত্র তব দৃংশীল কুটিল কম্ম করে: গ্রামেরের গ্রহদেশ বদ্ধ করে শরে । ক্রম ক্রিন শিলা থাকে বা মুক্র। স্থিতে নিক্ষেপ করে কন্ম ভয়ন্তর ! আগান্ত পর্যন্ত প্রবাসির বচন। শ্রবণে সগর দিখা মুতে বিসজ্জন। অসমগ্রা নৃপতির সুঞ্রিয় সন্তান। তাজিলেন প্রজা হিতে রাজা পুণাবান্॥ অবিনয়ী কুসন্তানে গুজিলা সগর। গুণবান প্রিয় পুজুরাম রঘ্বর ॥ কিরপে করেন ভাগ এক শোভা পায়। সিদ্ধার্থ বচনে দশর্থ মোহ তার।

পোক সমাকুল বাক। কেক্ট্রার প্রতি। কহিছেন অতি জোগে অযোৱা ভুপতি রামের পশ্চাতে আমি করিব গমন। मर्ख ताका मुथामित्क मिया निमर्छन । ভরতে লইয়া অধর্মিনি এই রাজ্য। সুখ ভোগ কর চির পতি করে৷ ত্যাত্ম षायागाम मभद्रथ मिकार्थ वहन। প্রপত্তিংশ দর্গ তায় হয় দ্যাপ্র :

७ व मर्शह।

ত্রিপদী।

কছেন ধর্মাস্থা সংবর। ত্মজিয়া সর্বাস্থ ভোগ্রনভূমি বাসে যোগ, বন কল ভক্ষার ভ্রম্পর। কহ নূপ কিবা পাদ, আমার উত্তম সাধু, উত্তম আহার ভূষা বেশ। গ্ৰন্থ ককা বহে সহে কেশ इसि हीन इसि कका,मानदा कतियातका, কে করে তাহাতে আরোহণ। এইরপ রাজ্য ভাগ,বিরক্ত কাননে রাগ, অশ্ব রথে কিবা প্রয়োজন॥ সঙ্গে মাত্র চীরবাস, খনিত্র পিটক দাস, विष्णिषियां कतिवं वहन। **इज्लि**ण वर्ष वतन, विश्वव অতি निष्क्रीत, বিমাতার সাধি প্রয়োজন ॥

বাদের বচনান্তরে, কেক্য়ী অতি সাদরে. চীর বন্ধ আনিয়া আপনি कहिएक ल्यारकत मात्य, विमर्क्कन मित्र। लास्क, धड़ ठीत शत तथमि॥ গ্রাফ করি খণ্ডবাসংপ্রণে কৈক্য়ী আশ পর্বর বন্ত পরিহরি রাম সেই রূপ রঘ্বব, সুমিত্রা সূত সম্বর, চীরাবর পরি গুণ ধাম॥ পিতৃ অ্যেবস্তুমানে, দীতা দতী দাবধানে পট্টবস্ত্র পরিজ্ঞাগ করি। শ্বশ্ব শ্বভারের প্রীতে, তপ্রদানী রীত্নীতে চির জন্ম চীর বাস ধরি॥ বিমাতা পিতার কথা, শ্রব্য কৰিয়া তথা, <mark>অজুলয় রামের পাশে,বর্তমানা অতিকালে</mark> খণ্ডবাদে করিয়া গ্রহণ। मूलकना मुम्माना, विलक्षना विष्क्रना, নিরীক্ষণে স্বামির বদন ॥ গন্ধর্বে রাজ প্রতিম, ভর্তা খাঁর রম্ভম, অন্পম ভূবন সুন্দর। ত্যাগ করি করিবর,কে আছে হেন বর্কার, সনাধা অনাথা জ্ঞান, সামীরে সতী সুধান, অহে আর্য) সূত রঘ্বর॥ तां क्षकच्या तां क्षवयु, वहन कमन मधु, কি রূপে পরিব খণ্ডবাস। এই বাক্য বলো সতী,সীতা সশকি তা অতি, বিপদে জ্রীপদে উপহাস। বঙ্কি শুদ্ধ বস্ত্র যাঁর, পরিধান পরিষ্কার, কুশলা কোশলা লক্ষ্মী স্থির।। চীর বস্ত্র পরিধানা, চিত্রা চারু চন্দ্রাননা, নিরণি অন্থিরা অতিধীরা।

চীর বস্তা বিধ্মুখী,নিরখি অভান্ত দুঃখী, ় নূপ উক্তি এই কথা, উন্মন্ত প্রসাপ বথা, नाती कुल वाकुल अखंत। ধিক ধিক দশরথে, অধিক কি কব পথে, কণ্টক আরোপে নূপবর ॥ পুজ্রবধূ খণ্ডবাসাঁ, কি দশা কি দশা আশা, কেকয়ীর করিল পূরণ। সপত্নী গণের মূপে,ধিক্কার শ্রবণ দুঃখে, মৃতপ্রায় অজের নন্দন॥ জীবনের আশা ভাজি,শোকের সাগরে মঞ্জি, সুখ শ্রদ্ধা বিমুখ নপতি। তাগ করি উষ্ণ খাস,খণ্ডভাগ্য খণ্ডবাস, পরিধেয় বধ দীতা দতী। তাপে কোপে কাঁপে ভূপ,নেত্রষ্য় অগ্নি তুমি নাথে সনাথিনী,না করিয়া অনাথিনী, কৃপ, ঈম্বাকু কুলের কুলত্রে । হে পাপে কি তাপে বল,কেকয়ী করিয়া আমার অপেকা ক্লত, আদরে হয়ে। আদ্ব ছল, দৈব বল প্রাপ্ত পুত্র ভেটা। তারে দিতে বনবাস,এই বর অভিলাষ, পুর্বের তুমি কর নিরূপণ। তবে জানকী লক্ষাণে,কি দোষে পাঠাও বনে, পরাইয়া বস্ত্র পুরাতন " পাপাশয়া হে পাণিনি,পাণ কর্ম সঞ্চা রিণী,কুলপাং ও কেকয়ের কুলে। কুৎসিতা কুলটা দাসী, তার বাক্য অভি लाशी. तचुकूल नालिएः समृत्ल ॥ ্রামে পাঠাইতে বন, এই বর নিরূপণ, পুনঃ হকর অন্ত রূপ। मत्रक शांत्रिनी जूत्रि,निर्मण। जर्याधा जूति, করিলে অত্যন্ত পাপকৃপ 🛭

তথা রাম করিয়া দশ ন। অধোমুখ দশরথ, না দেখেন চক্ষে পথ, রামচত্র কহিলা বচন ॥ সধর্মিণী অনুগতা,তপ্রিনী স্বামি রতা, মম মাতা কৌশল্যা তাপিনী। অতি বুদ্ধা দৃঃখাবিলা, স্বামী সেবা শুদ্ধ শীলা, পুত্রশোক সাগর গামিনী ॥ আমারে করিয়া দয়া, ক্লপণারে করি মায়া, কর নৃপ রক্ষণাবেক্ষণ। যে রূপে দুঃখিনী নন বিষ্ম তা হইয়া বন, সেই রূপ করিবা রাজন मर्खन। पिथित मुनग्रतः। मुथप्ठ छननी खोदरन। রাখিবেন কুল ধর্মা, সাধিয়া স্বামির কর্মা, না হয় যাহাতে মর্ম্ম ভেদ। মহেন্দ্র সমান সূত,শোকে হয়্যে অভিভূত, না করিবে না করাবে খেদ वन इ इहेटन आमि, जूमि तपुकून श्वामी, পুজ বাকা করিবে পালন। শোকে হয়ে বিক্ষিতা,জননী জীবন মৃতা, যম ভূমি যাত্রা নিবারণ॥ অবোধ্যায়২, জ্ঞাতি পিতৃ অভিপ্রায়, জ্রীরামের চীর পরিগ্রহ। ষড়ধিক ত্রিংশ সর্গ, শ্রবণে অনস্ত স্বর্গ, শুভ সর্গ অশুভ নিগ্রহ। ৩৬ সর্গঃ।

প্রার।

কর্মা স্থাত্রে দেখ্যে পুজে মুনি বেশ ধর ভার্যা সহ ক্রন্দনে আকুল ন্পবর ॥ শোকার্ভ দৃংথার্ভ দর্মর রমণী সহিত। নয়নের নীরে নৃপ দর্শন রহিত ॥ ক্লপাবান সন্তান সন্মুখে বর্ত্তমান। দৃঃখে ভাসি মনে ভাষি ভাষিতে অজ্ঞান: মুম্বর্ত্ হ্ইয়া মৌনী মীলিত নয়ন। বিলাপে অজন্ত ভাপে উদ্ভপ্ন যেমন : কালক্রমে ক্লতান্ত কবলে টুটে বল। অবলা বাধিত বলা বল গেল তল ॥ নিশ্চয় তনয় তুমি জানিবে বচন। অপুল্রা পুল্রবৎসলা আমারি কারণ। আমি সীমন্তিনী বশে সন্তৰ সন্তানে। প্রেরিতেছি কাননে আগনি হত মানে অকালে দেহিরে কালে না করে গ্রাণ অতএব নাহি যার আমার জীবন ! লোক কান্ত সন্তান অনন্ত গুণ ধর বনবাসী প্রিয় পুত্র ধৃত্র চীরাম্বর॥ हा थिक् अलौक कमा लोकिक विक्रमा। আমার হৃদয় কি না হয় অপরুদ্ধ॥ ষে হলে একালে পুত্র পালনে আমার পাঠাইয়া বনে বক্ষঃ না হয় বিদার॥ এই দুঃখ মহান্স ন্তান গুণবান্। ধর্মশীল কর্মবোগ্র কাননে প্রস্থান। ধিক্কার শুক্কার ছার জীবনে আমার। একা কেকয়ীর হেতু দৃংখ সবাকার:

আপনার প্রয়োজন সাধিতে সম্বরে। যা ভনালে ভনিলাম পুর্বের দুঃখ পরে বচন স্বীকার তার তোমার অদত্তে। প্রিয় পুত্র বনবাসী দেখিলাম দঙ্গে॥ এই বাক্য বলিয়া নূপতি ধরাদনে। মুহ্ছাগত মহীনাথ বিষয়ত আপনে॥ কি চুকাল পরে সংজ্ঞা সংপ্রাপ্ত ভূপতি সাম্ম নেত্রে কহিলেন সুমস্ত্রের প্রতি॥ শীত্র কর সুমন্ত্র সার্রথ বিচক্ষণ গামরি প্রাসদ্ধার্থ সমজ্জানয়ন॥ বাজিবর্গ সজ্জার সহিত শীঅ আন। এক বাক। ভূমি এক লক্ষ করি মান॥ দিব্য যানে সন্মানে সন্ত্রীকে সংহাদরে । সহিতে বন মহীতে লবে রঘুবরে॥ ইতাদি অনেক বাকা হইয়া বিজ্ঞাত। মুমপ্র সত্তর অতি সার্থি বিখ্যাত॥ রথের নিকট পথে হয়ে। উপনীত। মুমন্ত্র করিলা রথে বাজি নিযোজিত। বহু রত্নে বিভূষিত বাজি দিব্য যান। সাজাইয়া নৃপে গিয়া সংবাদ ভানান। প্রস্তুত রথ যথাক্রত ভূপ। সুকান্তি কালাগ্নি প্রায় শ্লিঞ্চ শশিরূপ॥ পরে নৃপ কোষাধ্যক্ষে করিলা আদেশ। নিকটে আনিয়া রটে বচন বিশেষ। শোকে সমাকুল চিত্তে ভূতো আজ্ঞাদান। করিলেন ধর্মময় অজ্ঞের সন্তান। বিবিধ বি**চিত্র বাস** বহু মূল্য **হবে**। ভূপতি ভূষণ যোগ্য মৃভূষণ লবে।

वन बारम देवरमही बावर काल इत्त । তাৰৎ প্ৰমাণ বস্ত্ৰ ভূষণাদি হবে॥ ্ নৃপত্তি আ্দেশে কোবে প্রবেশে কিষর। শীব্রগতি আনিলেক রত্ন বহু তর॥ বছ বিধ বসন বৈদেহী প্রতি দিল ্রত্বাস প্রকাশে অযোধা প্রকাশিল। ব**সনে ভূষণে সীতা শোভাম্বিতা** অতি। বরাননা বিশেষতঃ প্রকাশিল জ্যোতিঃ वितारक तमनी मारत मुमारक मृन्ती। ঘন গতে গগণ যেমন সুমাধ্রী !! বিভূষিতা সীতায় করিয়া আলিঙ্গন। मुक्तिमाल कीमनात कूमन वहन । **ন্ধেহ করি শিরে ধ**রি লইয়া আদ্রাণ। মোহিতা জীরাম মাতা দুহিতা সমান। वन वारम श्रामि शार्म याहेरव यथन। तार्मत क्षप्रक्रम यथन रयम्। অভিপ্রায় বুঝো তায় দিবে সায় সতি কর্ত্তব্যা কর্ত্তব্য যথা তথা রীতি নীতি॥ সৎকৃতা লালিতা তুমি পালিতা আমার। রামের স্বরূপ রূপ ভোমাতে সঞ্চার ॥ ৰথা তথা নারী তুমি নয়জ্ঞ। নিপুনা। पति इरेटन यांगी ना कतिरव घुना॥ সভীক্তীর সভাব স্বামির গেলে সত্র না <mark>করে অ</mark>বজ্ঞা করে অধিকন্ত ত**ন্তু** ॥ ধন**চ্যত রাচ্চ**চ্যত মম সূত রাম। না কর অবজ্ঞা পুজি গিয়া বন ধান ॥ मधन निर्म्बन धनि यपि इय शिउ। তথাপি নারীর পক্ষে দেব তৃষ্য সতি॥

মুক্তা মুখে উপদেশ পাইয়া জানকী। পতি পরায়ণা দেবী পরম কৌতৃকী॥ ক্লডাঞ্জলি করিয়া কহিলা দেবী পরে করিব রামের কার্য্য ভক্তি প্রৱঃসরে॥ অধিক্ত তোমার শাসনে সাবধানা। ভুবন মোহনে কোন্জন করে ঘণা॥ ধনুৰ্বাণ ধারী নব দুৰ্বাদল ভাম। রাম মনঃ অভিরাম নয়নাভিরাম॥ ধর্ম পথে বিচলিত হইতে না পারি স্থ্য হৈতে প্ৰভা যথা তথা দীতা নাহী। অনন্তরে রঘুবরে সম্পিয়া মনঃ। মৌনীভূতা হয়ে। সীতা রহিলা যখন॥ জननीत पृथ्य विस्माहत्नत्र कात्रन। निकरि नवीन घन छेनुस उथन॥ জননি জননী সম হবে বন ভূমি। সুখে স্বামি সেবায় সম্ফ্রতা থাক তুমি। অপর্ঞ আমার কলাচ নাহি ত্রাস : বত ধনুঃশর হয়ে) যাব বনবাস॥ তিন লোক ঈশ্বর আপনি পুরন্দর। সমরে সাজেন যদি সহিতে অমর॥ তুমি মাতা দুঃখাবিতা কদাচ না হবে। আমার পিতার সেবা রতা সদা রবে॥ সুখে হবে জননী কানন বাস ক্ষয়। দে জন্ম কদাচ তুমি না করিবে ভয়॥ ठञ्जलम दर्ष नृभ ठतन ख्रेमारन। এক দিবা সম যাবে সুখে অপ্রমাদে। কোশলে কুশল যুক্ত দেখিবে আবার। বনে হৈতে আগত অরোগী গুভাকার॥

স্ক্রদে প্রমানন্দে দেখিবে কলানি। পরিহর শোক থাক সৃস্থিরা জননি ॥ এই রূপ সুনীতি সুন্দর সুবচন। কহিয়া জননী প্রতি শ্রীরঘ নন্দন ॥ পরে নার্ছ নপ্ত দশর্থ জায়া। সকলের সন্ধিকটে প্রকাশিয়া মায়। ক্লভাঞ্জলি করিয়া কহিলা এই কথা। অবনত অনুগত ভূতা গণ যথা। मना मह वाम किन्ना विश्वाम कात्र्। অজ্ঞানতঃ অপরাধ করিলে স্বজন ॥ সতের স্বভাব তাহা গ্রহণ না করে। **टमरे ट्रु प्रतीशन क्रमिता आमा**टत । অজ্ঞানে প্রমাদে কিন্তা কিছু দোষ করি ক্ষমিবে ক্ষমার সমা ক্ষমা গুল ধরি 🖟 রামের বচনে প্রাণে পাইয়া সন্তাপ ক্রোঞ্চী প্রায় রাজ্ঞীগণ করিলা বিলাপ মুরজ্ঞ পণৰ বেণ্ বীণা বাজোভামে मশর**ণ গৃহোৎসব হইত নি**য়মে অধুনা অবলাগণ করণ রোদনে নিনাদিত বেখে নৃপ বিষাদিত মনে ইভার্বে অযোধ্যাকাণ্ডে দীতা সমাদেশ সপ্তত্তিংশ সর্গ সাঙ্গ সুপবিত্র দেশ 🛚

ও৭ সর্গঃ

नय जिलमी।

হয়ে ক্তাঞ্জলি, রাম কুতুহলী, লক্ষণ জানকী সঙ্গে। বিমান নিকটে, গ্রিয়া সুপ্রকটে, প্রদক্ষিণ করি রক্ষে॥ সুত শোকে ক্ষীণা, জননী সুদীনা, প্রণাম করিয়া বীর। मिला द्वामत्न, जननी ठत्रत्न. প্রণত লক্ষণ ধীর ॥ পরে সুমিত্রারে, প্রণতি বিস্তারে, ধরিয়া পদ দ্খানি गथार्थ विश्विज. প্রণত বন্দিত, পুত্রকে কহিলা রাণী # লয়্যে শিরো জ্রাণ, স্নেহে অঙ্গ দান, পীড়াতে পীড়িত দেই। কহিলেন পরে, গচ্ছ রঘুবরে, আখারে না কর স্বেহ। থাকিনে কুশলে, ভ্রাতৃ সেবা বলে, তব জ্বেষ্ঠ শ্রেষ্ঠ রাম। লোক হিতে রত, তাহে অমুগত, ত্তব চিক্ত অবিরাম॥ পুজ তব গুণে, বহু যশঃ শুন্তে, অনন্ত সন্তোষ হয়। সহ বন্ধু গণ, মম উদ্ধার।, করিলে সাধ তনয় 🛚

ভূমি পরিহরি, উর্মিলা সুন্দরী, নিক্স প্রিয়া প্রিয় ক্সন। कि कथा अभारत, अनमी काठरत, कारका छाटा विमुख्स्य !! ভাবে সম ভাবে, কি বিষম ভাবে, ৱাম তব মতি গতি। প্রাণাধিক প্রিয়, জের প্রনীয়, ভাতা গুরু মহামতি ॥ অভএব মৃত, সঙ্গে যাও ক্ষত, (महतकाकत रुखा। বিজ্ঞান বিপিনে, বাসে প্রতি দিনে, সসীত সেবাতে রয়্যে 🛚 श्रुल अहे धर्मा, मञ्जूतनत्र कर्मा, ত্যি জান মৰ্ম ভাল। জ্ঞীরামে দেবিতে, বাঞ্চা সমন্বিতে, জীব সুত চির কাল। मिहे (इंडू श्रुल, प्रम कर्म सूत्र, অতি শুভ বলি মানি। রাম গুণাকর, তাঁর সেবা কর, হবে জ্ঞানাকর মানী ॥ ভ্রাতা কুলভ্রেষ্ঠ, রাম তব ভেষ্ঠ, রাজীব লোচন ধন্ত। তব পরিপাল্য, জান গল মাল্য, रहेल १७ वत्।॥ ভোমাদের কুলে, উচিত যে স্থাল, शांगिल जूमि स धर्मा। নিকটে দীনতা, রাজ্যে অকুণ্ণতা, সমরে সাধিবে কর্ম।

এই কথা কয়্যে, লক্ষ্মণেরে লয়্যে, কিঞ্চিত ব্যাজে নিপুণা। সুমিত্রা সন্থরে, কহিলেন পরে, কাতরে অতি সুদীনা। শুন পুরু রাম, তব গুণ হাম, জগতে বিখ্যাত আছে। विशक नगांख, तक वीत नांख, অমুক্তে রাখিবে কাছে। ভাতা তব ভক্ত, সদা অমুরক্ত, গুণজ্ঞ জ্ভা বিদিত। कृषि द्रकावद्र, हर्त छनाकत्र, অম্বেধিবে সদা হিত ॥ किश्ना खेदाम, इहेरव स्म काम, তব বাণী সুজা হবে। পরে প্রদক্ষিণে, প্রণত চরণে, রাণী ভুলিলা রাঘবে । इंड अन्सरह, मुम्ब मद्दर, কুতাঞ্জলি করি কয়। বিনীত আশ্রিত, রাম অনুগত, কিপিত্ কোভিত হয়। यथा इन পथि, भाउनि मात्रिश, রাখিয়া সে রূপ মান। (इ রাজকুমার, পদে নমকার, मर्का वाञ्चा कन्यान ॥ হ্ইয়া রথস্থ, কানন পথস্থ, काक्यस् हल विस्ता। धरे तथ कति, महेव खीहति, যাত্রা কর যথা মনঃ॥

इक्सण वर्ष, यथा उत इर्ष, বলিবে বিপিনে রাম। কেকরী প্রার্থনা, পূরণ কামনা, প্ৰবেশ কানন ধান ॥ मुगद्ध वहन, मान्दत खादन, शहर श्रीताम काकाव। বৈদেহী সহিত, রখে উপনীত, শীব্রতর আরোহণ 🏾 ষমু ভুণ বাণ, কবচ নিশান, রথে তুলি ভূত বর। রাম অনুমত, খনিত্রাদি যত, রপস্থ করে সত্তর ॥ পরে রথোপরে, আরোহণ করে, मुमद्ध मृह्दि मत्। ताम चानि खग्न. तथ नमूनग्न, म्टडे कडे विष्कर्ण ॥ করিছে চালন, রথ অখ গণ, সুমন্ত্র রাম আজ্ঞায়। मदत शयत. मात्रिथ कि मत्न, রাম সনে বনে ধায় ॥ श त्राम त्राचव, এই माज त्व, करत मव श्रुतवामी। नात्री नद्र भ्रव, क्रिड्ड कन्दन, সম্রমে সকলে আসি॥ অতি আর্দ্ধ বরে, শব্দিত নগরে, त्रघृतस्त मिर्थ त्रथ। সর্জ বালকে, পলকে পলকে, শোকে অভিত্য পথে।

व्याधा नगती, उद्योश महती, **ठटनं** नत् नाती श्रन । ক্ষত তরধায়, ঘর্ষ পূর্ণকায়, मिलिल मिक रायन॥ পশ্চাতে পশ্চাতে, পাশ্বন্দেশ বেজে, রথে পথে রোধ করে। উর্দ্ধবাহু করি, তিপ্ত তিপ্ত হরি, श कष्टे मुमक वरत। হরি হরি হরি, রাখ ধরি হরি, ন্ত রা**জসুত সঙ্গে।** यिन यादव यादव, ज्वल्ल खदव यादव, স্বরানা কর তুরকে। ताम मुथा छन, भातमीय हन्य, অযোধ্যার এক চন্দ্র। হইলে বিহীন, হবে জোতিহাঁন, मीन शैन शैन <u>ठक</u>। নর সুধাধর, চিক্ত ক্ষোভ কর, মনোহর মনোহর। मिथ पिथि पिथि, खन्न गठ पिथि, **मिथिव कि श्रेनर्का**त । দুর পথ গত, আর কি আগত, व्हेरव धर्मा वदमण। रूत करव रूत, त्रांत्यां म्य रूत, তাপিত হবে শীতল। न्পि निर्मग्न, कठिन क्षम्य, मन्त्र (कक्प्री शक्ता। धिक धिक धिक, तानी उडाधिक, यमुर्छ ना करत तरक .

পুজ চলে বন, ভবন দে বন, मिवित किन अ वतन। ধন্মা ধন্মা সীতা, হয়ে হরষিতা, নিৰ্গতা পতি সেবনে। স্থার্যা কথা ছায়া, অঙ্গে তথা ছায়া, মায়া ভাগ নাহি করে। महा महा थांब. जार्ग थांन यांब, তথা সীতা রঘ্বরে ॥ তুমি হে লক্ষ্ণ, সুপুণ্য লক্ণ, ধর বিচক্ষণ বেশ। হয়্যে রাম প্রিয়, সর্বজন প্রিয়, তাজে সর্ব্ব জন দেশ। গ্রীরাম পশ্চান্ডে, গমনে পশ্চাতে, পাইবে পরম সুখ। নৃপতি বৎসল, হে ধর্ম বৎসল, উজ্জ্বল সুমিত্রা মুখ ॥ এই অতি শুভ, বিনাশ অশুভ, আর শুভ কিবা আছে। ভেবেছ যে মত, স্বর্গাধিক পথ, রহিবে রামের কাছে # পুরবাসি বাণী, শ্রুত মাত্র রাণী, विवर्गा मिलना श्रुदत । वर्ष वाष्ट्रावाति, वहन निवाति. শ্রীহতা শ্রী গতা দুরে। না পারে সহিতে, নগর সহিতে, त्रारमत भाक माक्रव। पृश्य मृशीष्ठि, इक् मृंशीष्ठि, তৎসম করে করণ

मिश्र अंजि मीन, घछोत्या मिनन, দীনবন্ধ কোথা যাও। যথা যাবে রাম, মনো অভিরাম, पृश्चि গণে **मक्त्र ग**ও॥ পরে দশর্থ, হত মনেরিথ, নারী মধাগত দীন। द्राय प्रभंनात्म, मर्ख पृथ्यं नात्म, সূচেষ্টিত সুমলিন। नाती शन मीना, करन करन कीना, রূপণা করণা করে। করয়ে রোদন, করিয়া নিম্বন, নপতি সেবন পরে॥ বন্ধ করি পতি, কাননে দুর্গতি, थखरन कड्विनी गन। নেবা করে তারে, অঙ্গ পরিষ্কারে, করে করে স্মিল্ন॥ দেই রূপ ভূপ, সেবিত স্বরূপ, পূর্বে ক্লপ নাহি রাজে। শ্ৰীহত স্ত্ৰী মাঝে, যথা নভো মাঝে, ताल्थास विकास । न कक्रन तर, हाहाकात नर, দৃঃখিত দেখিয়া ভূপে। দশরথ দারা, সকাতরা তারা, পতিত দুঃখের কুপে ॥ জানকী সহিত, রাজ্ঞাশা রহিত, গৃহ বহিষ্কৃত রাম। হা রাম হা রাম, কছে অবিরাম, নাগরীয় নর প্রাম॥

(कह (कह करह, हाहा नुभ षाह, कि दिल दि मणतथ। क्टि वा चार्टकारण, नत्रवहत स्मार्थ, না দেখে নয়নে পথ # পশ্চাতে পিতার, দেখি হাহাকার, শোকে আক্ষিত মন। অশেষ পদাতি, সংহতি ভূপতি, সঙ্গারে মরে গ্রমন ॥ (मर्वी कोमना) म, अर्थि निक कांग्र, विवामिक शाम शाम। वक धर्म शाष्म, मृष्टि ताम शाष्म, বাধিত পড়ো বিপদে ॥ গতি পদস্থানে, মন আশা নাশে, দৃংৰে ভালে মাতা পিতা। কেক্ষীর প্রতি, বিরাগ সম্প্রতি, জননী অতি কুপিতা !! দেখি এই রূপ, স্বরূপে বিরূপ, विशाम विक्रश वाम। কহিলা স্থতেরে, অভান্ত অন্থ্রে, নপতিরে অবিশ্রাম শীজ চল চল, যাবত্অচল, लाक ठलाठल नरह। मिरिक ना शाहि, वनवारम शाहि, পিতার দুঃখ না সহে 🛭 অঙ্কুশ আঘাত, মন্তক ব্যাঘাত, মাতঙ্গ না সহে কতু। রাম তদাকার, পিতৃ হাহাকার, मह्त नहिन প्रष्टु ।

হা রাম হা মীতা, হা লক্ষণ পিতা, कंठित्न कन्न मुम्हि। नाइक रहान, जननी कनान, বিদারণ হয় সৃষ্টি ॥ উৰ্দ্ধবাছ করি, কৌশল্যা সুন্দরী, कुत्रती ममान काँ एक । प्रिचेत्रा जीताम, तारी पृथ्य आम, ষেন রাভ এও চাঁদে। থাক থাক থাক, কিছু কাল থাক, মা বলিয়া ডাক বলে यात्व दकाशा यात्व, वरन मव शास्त्र, মা পাবে না পাবে ফলে রাম অনুমতি, কানন সঙ্গতি, ভূপতি নিষেধ বাণী। উভয় প্রমাদ, সার্থি উন্মাদ, কি করিবে ভাবে জ্ঞানী ! ধরা কি আকাশে, আছি কোন্বাদে, বিশেষ বোঝা কঠিন। চিরদৃঃখভাগী, প্রভু বাক্য ভাগী, সুবোধ সুমন্ত্র দীন। नट्ह ित पृथ्य, श्रूनर्सात मूच, (मधाव (मधित नरत । व्याभा नरह विधि, त्राम खननिधि, জনকে কছেন পরে ॥ ঞীরাম সমত, হয়ে অধগত, त्रुमञ्ज त्रुष्टीन श्रीय । कतिया অञ्चल, क्रञ नाहि हनि, वरण व्यात्त्र। तांचात्र॥

অশ্ব্যাপে কহে, বিশ্ব্ব না সহে, চল হয় শীজগতি। করিছে বোজন, নিমেষে যোজন, গমনে সমর্থ অভি॥ ভুরগ ছরিংত, গ্যন করিতে, রক্তঃ যোগে রসা পূর্ণ। मर्क नाही नरह, मर्ड नरह शरह, भन्नीत दिन्नरङ् घृनी॥ দঃখে সুপীড়িত, রাজ পথে স্থিত, রেণু আচ্চাদিত দৃষ্টি। দর্শনে নিয়াশ, তথাপিও বাস, গমনে বিনাশ সৃষ্টি ॥ किष्ट मूरत (वर्ग, हरण मन (वर्ग, পরে মেঘে গ্রাসে শশী। দেখিতে না পায়, করে হায় হায়, দাঁড়ারে নব তপসী। বশিষ্ঠ প্রভৃতি, ব্রাহ্মণ সংহতি, कतिना नृत्भ वात्र । ना यादव मा यादव, यनि (इसा भारव, भीख श्रीद्राप प्रभंत। আছে হেন রীতি, প্রাচীন পদ্ধতি, ষভাপি পুনঃ দেখিবে। নাছি যাবে দুর, সঙ্গে নৃপ ভূর, সতত মনে রাখিবে 🏾 করিয়া শ্রবণ, निरम्ध वहन, नृপ छक्र भग मूर्य। সম্ভাপ আঁখিতে, দেখিতে দেখিতে, রহিলা অভান্ত দুঃখে॥

শোকে অভিত্ত, অতি ব্যথা যুত, বিষাদিত নর বর। অযোধ্যার কাঞ্চে, দুঃখিত ব্রহ্মাঞে, রাম নির্বাণ দুষ্কর॥ ৩৮ সর্গঃ।

প্রার ।

শ্ৰীরাম কানন ধাম গমন সময়ে। কুসংবাদ আর্তুনাদ নরেন্দ্র আলয়ে॥ অন্তঃপুরে নাতি দুরে শোকাব্ছ রবে কর্ত্তক সর্ব্ধ শুক্ত নাগর সম্ভবে। य अनाथ अन नाथ मर्खाला तन। যে শরণ হীন জন শরুর সকল। রঘ্বীর তপস্থির তপোময় ফল। কোথা যায় হায় হায় একি অনম্বল : मिल भाभ इंड डांभ व्हाध नाहिकरत। নিবর্ত্তনে কোধী জনে যে চরণে ধরে॥ সেই রাম পুর্ঞাম পরিহরি বান। এবস্থিধ বছবিধ রামগুণ গান। স্ব মাতার কৌশলাার অন্তরে বে ভাব। मिहे जारव मर्स जारव मपूनारम जाव॥ কেক্যীর নূপতির কোপপাত্র বারা। পরিত্রাতা **সুরক্ষিত। রামগুণে** তারা 🏾 এই খেদ ভিন্ন ভেদ ভাবে পুক্রগণে। বিপরীত একি রীত ভূপের একণে। সর্ব্বপ্রাণী জনে জানী যে করে পালন। (महे नाथ नजनाथ क्रिक्ट वर्कन

এই রূপ বহু রূপ ভূপতির দারা। যথা দীনা বৎস হীনা ধেনু ভূল্যা তারা॥ সুদঃখিনী সুমলিনা নাথ প্রতি স্থতি। কণ্ঠ রোধ কডু ক্রোধ রোদন ধীচ্যতি॥ পরে ভূপ এই রূপ শব্দ অস্তঃপুরে। পুত্রশোকে দক্ষ লোকে নিন্দা অভিদুরে। বিষাদিতা অভিভূতা রমণী সকলে। নাহি যাগ হোমে রাগ ব্রাহ্মণ মগুলে॥ দিবাকরে তমঃ করে করে আবরণ। সর্পাণ স্ববদন করে সম্বরণ॥ বংস গণে মাতৃত্তনে নাহি দেয় মুখ। উচ্চ রব করে সব ধেন্থ ভেব্যে দৃঃখ 🏾 सूर्गात्रात शक्र जात षश्च मव शह। অধিধানে যজাহ্বানে স্বার নিগ্রহ॥ সুমলিন প্রদক্ষিণ করে গ্রহ গণ। ভারা গণ ভাঁরা হন রহিত কিরণ॥ হতজ্যোতিঃ বৃহস্পতি শুক্র অভিক্রীণ 📳 দশ আশা অপ্রকাশা গগণ মলিন। দৃঃখ শোক যুক্ত লোক নগর নিবাসী। কি আহারে কি বিহারে নহে অভিলাষী। চ**কু জলে মুখহলে করে** আবরণ। রাজপথে দৃষ্টি রথে রহে অনুক্ষণ। वष्टे नरह मत्व करह अतिष्टे लक्षन শোক পর সর্ব্ব নর পুরবাসিগ্র। मूणीउन म्लर्भ वन मरह मभीतन। তাপ হীন মুর্য্য ক্ষীণ মলিন কিরণ শশধর কলেবর না করে প্রকাশ। অভাকুল সুরকুল হত অভিলাব ॥

নারীজনু পুত্রগণে স্বেহ নাহি করে। গৃহগামী নিজসামী সেবন অন্তরে। নাহি কান্তে মনোভ্রান্তে রমণীর মনঃ। " কামুক হত কৌতৃক কামিনী সেবন । হতাদর পরস্পর নারী নর সবে। সর্বভাগ রামে রাগ অন্তর রাঘবে। পুরে যারা বন্ধু তারা রামে অমুগত। শোক ভরে নাহি পারে হৈতে শ্যাগত II. নিন্দাকরে নৃপবরে কেহ কেক্সীরে। নিজ ভাগ্ত নহে খাঘ্য শোচনা অস্থিরে। নিজ জন্ম গত অন্ত সর্ব্ব অভাজন। অযোধ্যায় দেখি প্রায় নাহি যোগ্য জন ॥ ইক্র হীনা সুমলিনা অমরা বেমন। রাম হীনা শোভা হীনা অধোধ্যা তেমন॥ ভन्न ভात्त नाहि পात्त हहेवात हित। কি মাতঙ্গ কি তুরঙ্গ নরসংঘ বীর। ৩৯ সর্গঃ।

ত্রিপদী

গমন করেন রথে, রামচন্দ্র বন পথে,

যাবত্ সে রূপ দরশন।
তাবত্ ভূপতি বর, আনন্দিত কলেবর,

অসমর্থ বারণে নয়ন॥

যাবংশ্রিয় সন্তানে,চন্দের গোচর জ্ঞানে,

তাব্ং নৃপতি পদ চলে।
না ভাবি দুর অন্তরে, অপজ্ঞান নৃপবরে,

হীনতা না ছিল কিছু বলে॥

धार्षिक थिय क्यांत्र, यावज् मर्भात, ठाँत्र, शंक श्रव यय थांन, थ्रिजामि किया विधान, চকুৰ্য় ছিল সেই পথে না হয় দুৰ্শন বদা, ব্যাকুল নৃপতি ভদা, নিপতিত হতজান মতে। রাজার দক্ষিণ পাঁশে,মিজ অভিলাষ নাশে পতিতা কৌশল্যা পতিপ্ৰাণা ধরাতে ভরত মাতা, বিপদ ঘটন ধাতা, উঠাইয়া নরনাথে, কৌশল্যা সুন্দরী সাতে, বিনয়ে করেন ভূপ মানা। করি ডুপ অমুনয়, জানিয়া পাপ নি চয় শঠতা কপট পরিপূর্ণা কেক্সী আমার অঙ্গ, না কর কদাচ সঙ্গ न्नार्भ हरव निक गर्स्व हुनी। ट्र मूट्टे भागवातिन, खावत रहायात वानी, तथ शरथ मृतिभीनं, ताम रमारक रम् स्मीनं, हरेन आभात मर्फा स्टम। कनाठ छव मर्भात, हेक्श नाहि हस कर्त, ভাষ্যা সম্বোধনে উঠে খেদ 🛚 ভোমার বে অনুগত, ভৃত্ত আদি অবিরত, দৃংবে আর্ত্ত অভিশয়, বচন বিলাপ ময়, ক্লাচিত্ দে নহে আমার। ভাহাদের নহি আমি, নহি দহি তব স্বামী, হইয়া নগরী প্রাপ্ত,নিকটে আস্মীয় ব্যাপ্ত, স্বার্থ মাত্র চেষ্টিত ভোমার॥ তুমি ধর্ম ভাগে পরা,স্বামি হলি ভেদকরা, ভূপতির মহাতাপ, উন্মাদ সম আলাপ, স্থির কহি **তাজি**ব তোমারে। ভোনার পাণিগ্রহণ, ধর্মা অগ্নি পর্যাটন, করিলাম ধর্ম ব্যবহারে 🛭 हहेलां कि श्रेत लांकि, निक्षिष्ठ मकल लां- अमुक्ष मि महा कांग्र, नग्नरने ना दिशे छात्र. কে, হইলাম বিজ্ঞাত নিশ্চয়। ভরত প্রতীত হোক, এই মহা রাজ্ঞলোক, অভামম সূত রাম, বৃক্ষ মূলে গুণধাম, নিজ হৌক কাৰ্য্য সমুদয় 🏾

खणिश मानामि এ भव। দে নহে আমার পক্ষে, আমি নাহি চাহি চকে, সেসকল বিহীনে রাঘব II वात्रचात बहे कथा, नृপতि कहिया उथा, ধ্লায় লুঠিত কলেবর। শোকে অভিছৃত নিরন্তর। उक्ति कति इनन, शाम च्याम वृष्ण्य. অমৃতাপ করে ৰথা নর। সেই রূপ নরপতি, হইয়া উত্তপ্ত মতি, স্মরণ করিয়া রঘবর 🏾 बी विशेन श्रेकन उथा অম্বরে মলিন তর, তেজো হীন কলেবর. রাছ্থত দিবাকর ৰথা ॥ প্রিরপুক্তে করিয়া স্বরণ। নৃপ দশা বে ক্লপ মরণ ॥ मिथिया जुतक शमितिका এই সব তুরক্ষমে, লয়্যে গেল রঘ্ভমে কুর কুম কিতি ভিন্ন ভিন্ন। খেদেতে করিলা অমুমান। বিশ্রাম করিল হরে। লান ।

भग्नरम भग्नम होम, कांश्व डेलधारम मीम, मृপতि উद्धाली ভाति, দেখিয়া দয়ानू वाती, কিন্তা শিরে আরোপি প্রস্তর। রেণ পরিপূর্ণ কায়, উটিছে করীত্র প্রায় ান শোকে যেন অন্ধ, মন্তক সত্ত্বে কবন্ধ, নিশাস ভাজিয়া রখ্বর ॥ मीर्च ताल त्रचुतीत, कानत्न इहेश स्टित, कति भया आत्ताहन, रूत्या वर्गां कूलि ज मनः, प्रिथिष्ट ममल वनहत । প্লায় ধুসর অঙ্গ, তাহাতে শোক তরঞ্জ, মহা দৃঃখার্থবে মগ্প, উচ্চ রবে আশাভগ্ন, मर्कनाथ जनाथ ध्ववत ॥ কেকরী কামনা পূর্ণ, করিল আপনি তুর্ণ. হাহা রাম গুণধাম, শুলা করি এই ধাম, কৌশল্যার চূর্ব অহ্স্কার। বিধবা হইয়া রাজ্ঞ, কেকয়ী সুত সাহায্য রামশোকে প্রাণান্ত আমার ॥ এই রূপ নূপবর, বিলাপ করিয়া পর, হয়ে। নর সমূহে আবৃত। জলমাত জন প্রায়, রোদন করিয়া তায় গৃহে যান হয়ে। লোক ধত। পুরী মধ্যে নাহি কেহ,করিতে নরেন্দ্র স্নেহ खनग्र ममल मीत्र । पृथ्यार्ख मकल नत्र, बृच्च পথ महद्दर, जी विशेन विशेतन ताघव ॥ मर्ख कारन मृष्टि करत, भाकाकूम त्रघृतरत ना मिथिया मर्ख आञ्चातास्य। বিলাপ করিয়া অতি, প্রবেশেন গুহপ্রতি स्र्या यथा घन घन शास्त्र॥ শ্রীরাম জানকী বিনা, সুমিত্রানন্দন হীনা पृथ्य क्रम पृथ्यक छत्न। र्त्या अणि पूःविश्वाय,किर्ह्म ভूপ जाय. भीख छन क्लेमना जनन॥

তৃপতিরে লয়ে শীত্রগতি। (मथाइन कोमना वम्डि ! উৰ্দ্ধবাহু শোক সমাকুল। ক্রন্দন কুপণ সমত্ল। কোণা গেলে ভাজিয়া আমারে। হইবে তৃমি আগত, দৃঃথকাল হবে গত, े সুখিগণ দেখিবে তোমারে॥ **१** इं वह जीत मत, पृथ्यात्स (मत्या ताघत, কুতার্থ হইবে পরকালে। কৌশলো দেখি ভোমায়, নহে হেন অভি-প্রায়, স্পর্শ কর আমারে একালে ॥ কেমন স্নেহের সৃষ্টি, রামে অনুগত দৃষ্টি, নিবারণ না হয় আমার। এই রূপ নূপবর, অতিশয় চিন্তি পর, শয়নে শয়ন শবাকার॥ অতিকপ্তে মহারাণী,কৌশল্যা স্বামির বাণী, উত্তাপিনী করিয়া শ্রবণ हेळार्स करवाशाकार्ड, नुश्कि विनाश ভাঙে, চড়ারিংশ দর্গ দমাপন ॥ ८० मर्गः।

প্রার ।

পরে নরবরে লীন দেখিয়া শয়নে। শোকে সমাকুল অতি সৃদুঃথিত মনে। छनग्र वित्रद्ध सीना द्वीमना। मुस्तती। কহিলেন ভূপতিরে যোড় কর করি। रैककशीत ছिल द्वाय त्वारम मिया विय। मर्जिनी ममान तरह इर्स अह निम। कान हिला नाहि भूर्थ कतिरद विहात । কামনা করিয়া লাভ শোক সিন্ধু পার ! রামে দিয়া বনবাস অভিলাষ পূর্ণ। मर्शिनी ममान इत्या क्वांम फिर्ट पूर्व ! এক দেশে বাস করি ভিক্ষা মাঙ্গি খাই। স্তিনী পাপিনী মনে বাঞ্জা ছিল তাই কপ্রতক্র কামা দাতা ভোমার নিকটে। वत निया तामधान किना महारे । इक्षे ज्ञान इक्षे मान इक्षे धन निष्ण। উদর ভরণ যোগ্য কিছু নাহি দিল : পর্ব্ব গ্রান্ধে পর্ব্ব হোমে অগ্নিহোত্রিগণ বর্ঞ রাক্ষম ভাগ কর্মে রক্ষণ ! গঞ্জরাজ গতি পুজ্র অতি বল বীর। মহাবাহু মহাজ্ঞানী অতি সুগভীর महे भूत्क कर्म स्ट अत्रा अत्रा সভার্য্য লক্ষ্ণ সহ আগ করে দেশ 🛭 अमृष्टे मुश्र्यंत रुषु रककशी वहन। গ্রহণ করিয়া তুমি পাচাইলা বন। मन। ভাবি ছিল ভাবি কিবা ভাবি হবে। ककारम अपन पूक्ष कि कतिया मर्देव !!

ছাক্রণ আকাঞ্জা করি রোপি ভক্তরে স্নেহ বারি সিঞ্চনে পল্লব পুষ্পা ধরে॥ क्ल कारल मग्रल कतिया उद्याउन । দুর দেশে অনায়াদে করিলে ক্ষেপণ বনে বাদ করিবে রুপণ জন প্রায়। ক্লপণা জননী কষ্ট ক্ষয়ে অনুপায় । সুখের উচিত কালে দৃঃধ উপস্থিত। বহু আশে বৃক্ষ নরে করিলে রোপিত ॥ গভগণে ভগ্ন করে শাখা অবশেষ। তাহাতে ফলিবে ফল জন উপদেশ ! না করে। ফল নিষ্পত্তি তুমি সেই শাখা। माराधि माहरन किছू ना हहेल डाथा । এক্ষণে আমার যদি হয় সেই কাল। শুভোদয়ে মঙ্গল দুয়ক মহীপাল। ভাগাার সহিত রাম নিকটে লক্ষ্ণ। এই রূপ কোথা কবে করিব দর্শন ॥ সুযোগ্য আমার মৃত দীর্ঘ ভুষাধর। আসিবে অধোধ্যাপুরী রাম রঘুবর 🏽 व्यक्ष कृति मुन्दती छ। नकी वर्ष हर्य। হারা বংস প্রায় আমি নির্পিব পথে 🖟 উপস্থিত রামচক্র পুরবাসী কবে। এরব সংযুক্ত পুরী কত দিনে হবে॥ বরাবান্ হপ্তপুষ্ঠ জনে হাইতরা। ধঞ্চ মালা পতাকা উড্ডীয়মান পর। । অরণ্য হইতে রাম পুনশ্চ আগত। নির্থিয়া নগর হইবে আনন্দিত॥ পৌর্নাদী চক্রোচয়ে বেমন সাগর। অতি শোভা প্রকাশে ব্রকাণ্ড মনোহর

কত দিনে প্রাণিগণে অসংখ্য আমোদে শ্রীরাম লক্ষ্মণ দীতা হেরিয়া স্থপদে ॥ कतिरव প্রবেশ কালে সুমঙ্গল ধনি। মঙ্গলার্থে লাজচয়ে বিকীর্ণা অবনী ॥ কত দিনে হইবে বৃদ্ধির পরিণাম। পরিণত বৃদ্ধি হেত নব্ঘন ভাগি॥ ধর্মজ্ঞ সুর সমান প্রাক্ত রামধন। স্ববংস সমান ভাবে করিয়া লালন ! कान कारण विक मह विक कचाना। প্রবেশ সময়ে রাম করিবে দর্শন 🛚 भूष्ण कल मझल मामशी ममूनग्र। প্রদক্ষিণ করিয়া আনন্দ অতিশয় ৷ প্রবেশ করিবে পুরে যুগল কুমার। কর্ণের কুণ্ডল সম পুরী অযোধ্যার॥ কিঞ্জক কিরীট উদ্ধে মূর্দ্ধ শোভাকর। সংশয় বিহীন অতি তীক্ষ খড়র ধর ৷ कमर्ग। तकिंछा श्रुती कमर्ग। वक्ता। বীর পদার্পণে হবে সৃস্থিরা শোভনা 🎚 দেখিব বৎদের প্রায় দৃশ্বপানকামী। দুঃবিনীর স্বস্থপানে সহিক্টগামী॥ विवध्ना (यमन (४२ व्यट्स मृवध्मन)। (महे क्रभ करत इरव (कोमना) कुमना। কেক্ষীর কুমার বালক বৃদ্ধি হীন ৷ তা হইতে রামচক্র সুবুদ্ধি প্রবীণ॥ তথাচ অদ্বষ্ট দোবে নৃপত্তি আমার। ভরতের মাতা হেতু নাশে অহঙ্কার ॥ শাস্ত্রত সর্ববিজ্ঞ বিজ্ঞ গুণজ্ঞ সন্তান। আমি এক পুলা ভাহে হয়ে। হত নান ॥

পুজ বিনা জীবন ধারণ নাহি হয়।

চির দিন পুজ শোক শরীরে কি সয়॥

সামর্থ্য ছিল না মম জীবন ধারণে।

মহাবাহু লোককান্ত কুমার কারণে॥

এই যে তনুজ শোক জনিত অনল।

দহিল দারণ মত হৃদয় কমল॥

বেমন যমের প্রোয় যমুনা জনক।

তাপক তরণি তাপে তরু সন্তাপক॥

৪১ সর্গঃ।

ভঙ্গ ত্রিপদী।

যারা রাম ভক্তন, রামে অনুরক্তন, যানব নিৰ্মাল মতি যণা রঘূমে, সভা পরাক্রম, পশ্চাতে করিল গতি॥ थिं विन्तान, मुमित श्रीन, তারা করে নিবারণ। অতি গুণ তাতে, নিবারণ যাতে, কি ভাতে অন্স কারণ রাম অনুগত, রক্ষণে বিরত, রণ চলে বন পথে। অযোধা নিবাসী, জীরাম প্রয়াসী, হত প্রায় মনোরথে॥ তথাচ স্থত্ব, র্মা রাম র্ত্ন, मर्ख छन युक्त जोय। नर्व अन श्रिय, नवात वकीय, मन्भर्व मुधारखं व्याग्न ॥

প্রজাগণে যাচে, রাজ্ঞ রাম কাছে, না করিয়া অবধান ৷ পিতৃ সভা হেতু, রাখি ধর্ম সেতু, রাঘব কাননে ধান ॥ निष প্রতি স্নেহ, দেখি নিঃসন্দেহ, তাহে নহে দষ্টিপাত। कहिना बीहाम, वह धर्मा धाम, সাম্ভগণে নির্ঘাত ॥ অন্তরে অন্তর, না ভাবি অন্তর, আমার ভরত ভাত।। কর মম প্রতি, যে মান সম্প্রতি, করিতে অযোধ্যা ধাতা 🖟 🕆 সেই সব প্রীত, কর উপস্থিত, সকলে ভরত স্থানে। খাৰ মম প্ৰিয়, অব্যস্ত আশ্ৰীয়, ভরতে রাখিলে মানে ॥ ठितित यञ्चल, ভরত সবল, কেকয়ী প্ৰীতি বৰ্দ্ধন। कतित यथार्थ, मकला क्रुडार्थ, প্রিয় হিত আচরণ। কি জ্ঞান বিজ্ঞান, শীলত্বে প্রধান, বিভব বিষয়ে ধীর। মম অমুরূপ, সকলের ভূপ, मुथ खनक (म तीत ॥ রাজ গুণান্বিত, জানি যথোচিত, यूवतां ख (यां थ (मर्। না করি বিচার, কি হেন্তু আমার, প্রতি কর এত স্নেহ 🛭

ভর্তার শাসনে, থাকিবে অনুসনে,
জ্ঞান বৃদ্ধ সে ভরত।
বয়ঃক্রম অপ্স, সুপণ্ডিত কপ্স,
বীষ্য্য বল গুনী সত্॥
সভা ভব্য অতি, সূপ্রগল্ভ মতি,
একাধারে অসম্ভব।
প্রিয় বাদী অতি, বাদ্ধবে সুগতি,
রাঘব কুল গৌরব॥
বন বাসালাপ, প্রবণে সন্তাপ,
না করিবা রবে তথা।
হইয়া আত্মীয়, যদি চিন্ত প্রিয়,
না কর ইহা অন্তথা।

পদ্ধার।

যত যত ধর্ম কথা করেন কীর্ত্তন।

সন্তোয় না পায় তাহে জ্ঞানি প্রজাগণ ।

পশ্চাতে পশ্চাতে ধায় যায় নারী নর।

চক্ষের সলিলে ভাসে সর্ব্ব কলেবর॥

নির্থিয়া নয়নে নির্গত হয় জল।

স্টান মলিন পুর নিবাসি সকল॥

স্মিত্রা নন্দন সহ জ্ঞারঘুনন্দন।

শুণ গান করিতেছে চিক্ত আকর্ষণ॥

অনন্তর বলিলেন ব্রাহ্মণ মগুলী।

শীলতায় রূপে গুণে বলে মহাবলী॥

তপস্যায় তনু দীপ্ত স্নির্দ্দল মতি।

বয়ো যশো গুণে জ্ঞানে বর্দ্ধিত উন্নতি॥

অনকে স্থবিরাবন্ধ কম্পে শিরোদেশ।

দুরে হৈতে কহিছেন মুক্ত পক কেশ।

স্বার হৈতে কহিছেন মুক্ত পক কেশ।

রথের ভ্রঙ্গ তোরা অতি বলবান্। বেগে যাও রামে লয়ে রাখ রে **সমা**ন। না যাও না যাও হয়ে। ভর্তু হিত কর। কর্ণ আছে শুন কিছু কাতর উত্তর ॥ বিশেষে তুরগ জাতি বৃদ্ধি চমৎকার। ব্রাহ্মণের বচন না কর তিরস্কার॥ পুর হৈতে কানন প্রবেশে কর মতি। রাথ রাথ কিছু কাল রঘুবংশ পতি ! গমনে নিবৃত্ত হও রাম হিতে রত। বনবাসে গিয়া শীব্র লক্ত হবে কত 🛭 পীড়ায় প্রলাপ যুক্ত ব্রাহ্মণ আলাপ ! অবণে ব্যধয়ে চিক্ত দেহে জ্বন্মে তাপ। मिथिया विक मधनी शरत मानतशि। রণে হৈতে পথে অতি নম রখ্পতি 🏽 পদব্ৰজে বিপ্ৰবৰ্গ অতি বৃদ্ধ ভায়। পশ্চাতে আগত জত দশনাকাজনায় ॥ मिथिया नांसन पृथ्य मञ्जास मानमः লক্ষণ সহিতে রাম করিয়া সাহস্থ চরণে চাপিয়া মহী চলিলেন ধীরে। নিকটে নিকটে পদ বিস্থাসে সৃষ্টিরে স্বভাবতঃ সুচরিত্র স্থির চিক্ত রাম। বিশেষতঃ বিপ্রবর্গ পশ্চাতে বিরাম। প্রজাগণ পুনঃ পুনঃ পদ্রজে ধায়। না পারেন পথে রথে যাইতে বরায় ॥ খ্ণা পরিপূর্ণ চকু লোক দৃঃখে দৃঃখী পরসুথে সর্বাদা অন্তর যার সুখী॥ রভূত্তমে সম্ভ্রমে যাইতে বনবাদে। বিপ্রগণ কহিলেন অতি ত্রস্ত ভাষে॥

শুৰ রাম এই বিপ্রাসকল সমাকুল। ভোমার পশ্চাতে দেখ ব্যাকুল বিপুল। স্কল্পে কবি অগ্নাধার ভোমার পশ্চাতে 🖺 অগ্নিহোত্রিগণ যান হোম দ্রব্য সাতে॥-ছত্র করে উর্দ্ধভাগে না করি দর্শন। এ সকল বাজপেয়ী কল্যাণী ব্ৰাহ্মণ॥ পৃষ্টদেশে ছত্র করে করে কমগুলু। হংস পংক্তি প্রায় যান দেখহে দয়ালু॥ ছত্র হীন গাত্র তব খরকর করে। উ**ভাপিত অতিশয় স্থাম কলেবরে** 🏽 অত এব বাজপেয়ী ছত্তের সহিত। ছারা করিবারে অঙ্গে আসি উপস্থিত 🛭 বেদের যথার্থ সার সংগ্রহ কারণ। নিরস্তর আমাদের শুদ্ধ বুদ্ধি মনঃ॥ সেই বুদ্ধি তোমার নিমিত্ত রঘ্বর। বনবাস পাঠাইবে দেখিবে সত্ত্র ॥ ক্রদয়ে ধারণ করি যত বেদগণ। পশ্চাতে ভোমার সঙ্গে করিবে গ্রম ॥ তব বাহুবলে তারা হইবে রক্ষিত। কে রহিবে রামহীন হইয়া দুঃবিত ॥ নাবীগণ গৃহে না রহিবে কদাচন। সুচরিত্রা ভারা সব নিশ্চয় বচন॥ যদি তুনি ধর্ম জ্ঞাতা প্রজ্ঞাসুরক্ষণে। করিয়া স্বধর্ম ভাগ যাও প্রভু বনে 🛭 তুমি ধর্ম ভাগী হৈলে কে রাখিবে ধর্ম। ज्ञि धर्मा, तांचिटल मवात तमहे धर्मा। দামস্ত দকল হিতে বিপ্রজাতি গণ। নিবারণ প্রার্থনা করিছে সর্ব্ব জন "

হংস পক্ষ প্রায় যত শুক্লবর্ণ কেখা। বয়ো বৃদ্ধ দিল্লাতি ভিক্ষার এই শেষ। বহু যজ্ঞ বিস্তার করিয়া বিপ্রগণ! অবনত শিরঃ অতি বিনয় বচন 🛭 হইয়া সাচারভূত ধরণী পতিত। ধলিতে ধুসর দেহ সহিতে চলিত॥ मिहे जात येख्व कल यर्द्धत नमाश्चि। তব নিবর্ত্তনে রাম হয় সর্ব্ব প্রাপ্তি ॥ নগর কানন বাদী ষত্ প্রাণিগণ। তবহেতু কাতর অভ্যন্ত ক্লিষ্ট মনঃ॥ তাহাদের প্রতি দয়া কর দয়াময়। ভিক্ষা করে তব স্থানে ভক্তি অভূ)দয় আপর যাচক ভজে ভজি কর দান 🛭 ভক্ত পরিতাগ যুক্ত নহে ভগবান ॥ পশ্চাতে গমনে যার অভান্ত অশক্ত। গ্রাম বনবাসি বৃক্ষ যে যে তব ভক্ত ॥ ধরণী গ্রাসিত মল অচল শরীর। উদ্ধাথা সকরুণ পত্র চক্ষে নীর॥ অপরে আহার হীন পরিহরি গতি। বৃক্ষ কল্পে অধিষ্ঠিত পক্ষ হত মতি॥ উচ্চৈঃস্বরে রব করে এই জ্ঞান হয়। বনবাস নিবারণ ভিক্ষা যেন লয়॥ এই রূপে আহ্বান করেন দিজগণ। নিবুক্ত নহেন তাহে ঞীরঘুনন্দন ॥ বক্তা শিরোমণি রাম লক্ষ্মণ সহিত। नीत्रव इहेग्रा यान अथर्म्य अफ़िछ। यत यत शृक्षा कति वाका वंहन। পিতৃ আজ্ঞা সূপালনে করুণলোচন

হঠাৎকার গমন করেন রঘুবর।
ধর্মাঝা ধর্ম বৎসল দয়া কলেবর॥
পুরোভাগে পয়ঃপূর্ণ তমসার তট।
নিবারণ জন্ম যেন প্রার্থনা উৎকট॥
ইতি অযোধ্যাকাণ্ডে ব্রাক্ষণ বিলাপঃ
৪২ সর্গঃ।

পয়ার।

পরে প্রভু রামচন্দ্র তমসার তীরে। অবস্থান স্থান অন্বেষেন্ধীরে ধীরে ॥ मिथिया माजना नमी कहिला लक्सरन ! বিপদু সময়ে দেখি ভোমা নিরীক্ষণে ॥ অন্ত দৃঃধ আন্ত নিশা আদি বর্ত্তমানা। বনবাসে মহোৎকপ্প কারণ প্রধানা। শৃশু সর্বারণ্য দেখ অত্যন্ত বিজ্ঞন। আমাদের **জন্ম যেন** করিছে রোদন ॥ স্ত্র স্থান নিবাসী সমন্ত পক্ষি কুলো। আবৃত অ**শেষ বৃক্ষ রব সমাকুলে**॥ অযোধ্যা পিতার পুরী অতি সুশোভনা। রমণীয়া রাজধানী তাহে যত জনা ॥ সবালক বুদ্ধগণ সহিতে সকলে। কোশলায় শোকাকুল সবে অকুশলে॥ হাহা রাম লক্ষ্মণ কোথায় এই কালে। সন্ধ্যা কালে নগর বেষ্টিড ব্রুদ্ধ জালে॥ নৃপে অমুরক্ত যারা মমুক্ত প্রধান। গুণবান বৃদ্ধ নৃপ কি দেন বিধান। কোণা তুনি কোথা আমি রাচ্ছ আশাভুগ্ন। কোপায় ভরত ভাই কোবা বা শক্রম।

ভাবি ভ্রাতা দেখ তথা পিতা অতি জরা ! কৌশল্যা রূপণা পুত্র শোকে শোকাত্রা। নি-চয় নয়ন হীন নৃপতি আমার। অন্ধা মাতা রোদন করেন বারস্বার॥ নিশ্চয় ভরত ভাই ধর্মা কলেবর। পিতা মাতা উভয়ের পালন তৎপর॥ धर्म वर्ष काम मन्ननिष्ठ वाका हरत। আদাস করিবে কি জনকে নিরাশ্রয়ে॥ ভরতের সম্ভ চিস্তা করি বারস্থার। না করি শোচনা পিতা অথবা মাতার॥ সরল সভাব তব প্রথমে প্রকাশ। যেহেতু মম সহিতে কর বনবাস॥ দীতাকে রক্ষণে ধীর তব সহায়তা। हेष्टात विषम् वटि हहेन विनिष्ठा ॥ অল আমি এই নিশা করিব ক্ষেপণ। তনস: নদীর তটে নিশ্চয় লক্ষ্যণ॥ আছে বস্থ বিভব বিস্তর নদীতীরে। অভিলায পুরে আশ মম এই নীরে॥ উক্তি করি এই বাক্য লক্ষণের প্রতি। সুমন্তে কহিলা পুনঃ রাঘব সুমতি॥ না কর চালন অম্ব প্রমন্তের প্রায়। সারথি সঙ্কেতে বুঝি স্বামি অভিপ্রায় ! স্থ্য অন্তগতে অখে করিয়া বারণ। সার্থি নিবু**ভ করে আহার কার**ণ॥ ভক্লণ ভক্লণ ভ্ল ভুরক্ষে শ্বরায়। সহিতে তম্সা বারি আহার করায়॥ পশ্চাতে পশ্চিমা সন্ধ্যা করে উপাসনা দেবিয়া দারুণা রাত্রি অভ্যন্ত ভীষণা 🏾

সৌমিত্রি **সহিতে** স্থত সম্বর তথন। করিছে রামের শয্যা অপুর্বে রচন॥ সুকোমলা কুডা শ্যা তমসার তীরে নির্থিয়া লক্ষণে কহেন ধীরে ধীরে॥ এই আমি পত্রের শয়নে ইই স্থির। বলিয়া সীতা সহিতে শ্যাগত বীর। সভাষ্য শয়নে রামে নির্থি লক্ষণ। পশ্চাতে স্থাতের প্রতি কহিলা বচন॥ বিখ্যাত রামের গুণ গণ করে গান। অপুৰ্ব্ব ভ্ৰম্যাভীরে রাঘ্ব বিশ্বান্ 🛚 মহাতীর্থ তথায় গোকুল সমাকুলে। দেই রাত্রি করি বাস রাম বৃক্ষমূলে॥ বহুবিব বিধ্মুখী গণে সুবেষ্টিত। জাগিয়া লক্ষ্মণ বীর অতি প্রতিষ্ঠিত। বলিতে বলিতে স্থত সহ রামগুণ। সারণি সহিতে সুখে লক্ষণ নিপুণ॥ এই রূপে রজনী বিগতা নদীতীরে। নিশীথ সময়ে রাম রঘুবংশ বীরে ॥ সৃপ্ত দেখি সঙ্গের সকল প্রজাজনে। লক্ষণে শুভ লক্ষণে কছেন গোপনে ॥ আমাদের অপেক্ষায় এই প্রস্তাগণ। দৈপেকা করিয়া আসি আপন ভবন॥ বৃক্ষ মৃলে পশু কুলে বেষ্টিত কুস্থানে। সুপ্ত ভাবে লুপ্ত জ্ঞান দেখ বিভাগানে॥ রম্য হর্ম্মালয়ে বথা তথা করে বাস। আমার প্রভাগমন মনে অভিসাৰ॥ যদি আমি অধোধ্যায় না করি গমন। তখনি ভাজিবে তন্ত্রিশ্চয় লক্ষ্ণ 🛚

ইহাতে সংশয় নাহি জান এই স্থির। অতএব সাবধান শুন মহাবীর ॥ যাবত্ শয়নে সুপ্ত রহে প্রাজাগণ। তাবৎ আমরা চল বাই তপোবন। ्वन পথে भीख तथ क्रत्रह गमन। থাকুক সকল প্রজা করিয়া শয়ন॥ বারস্বার অসারে ভাবিয়া সার যুক্তি। वह पृथ्य ममस्त्रत छटन अहे उंकि॥ তক্তল আশ্রয়ে শীতল যত কণ। ভাগাইয়া পরিতাপ দিতে নাহি মনঃ। পুরজন পুনর্কার প্রবেশিলে পুরে। নৃপতির গুণে তাপ ছাঞ্চিবে অদুরে ॥' নতুবা এখন যদি করিয়া ভাগ্রত। বনবাসে যাত্রা করি করে। অভিমত্ত ॥ অমুতাপে ভাপিত হইবে অতিশয়। পুর বাসি দৃঃখে দৃঃখ যোগ করা নয় 🛭 অনস্তরে রঘ্বরে কহেন লক্ষণ। দাকাত্ প্রীরামচক্র ধর্ম পরায়ণ। সার যুক্তি মহা প্রাক্ত করে।ছ উত্তম। শীজা রথাক্রড় হয়ে চলা রঘন্তম 🛭 नक्स त्वतं मह वांका खेका टेहरन भरत । সারথির প্রতি রাম কহেন সম্বরে। বরায় তুরঙ্গে রথ সাজাও সারথি। উদঙ্মুখে উদেষাগী হইয়া বন পথি॥ পরে হৃত সম্বরে সাজায়ে সুস্যক্র। স্বরায় যোজন করে তুরজম গণ 🛭 क्रुडाञ्जनि को जुरुनी करत निर्वतन। প্রবাদি গণ মনোমোহন কারণ ॥

প্রীরাম কছেন স্থত গুন সাবধান। মুছর্ত্ত ব্রায় পিয়া কর অবস্থান ! मा कारन रामन श्रुतवामि कान कन। সে রূপে সন্থরে ভূত লাধ প্রয়োজন ॥ রামের বচন স্থত করিয়া শ্রবণ। শীত্রগতি সার্রথি সাধনে আয়োজন 🛭 যোজন করিয়া রখে উপযুক্ত হয়। সজ্জিত হইল রথ দেখ মহাশয়॥ সেই রথে মনোরথ করিতে সাধন। সলক্ষণ সীত। সহ রথে আরোহণ ॥ অতি শীঘ্রগতি সেই তমসার তীর। তরল তুরক যানে যান রঘুবীর ॥ ऍडीर्ट्याताम मुड्झ प्र उपिनी। অকণ্টক অপ্রমাদে গ্রন্ত রঘুমণি॥ खाश्य इहेग्रा यङ श्रकावर्ग शरत। শ্রীরামের চিহ্নিড স্থানের তত্ত্ব করে॥ নিশাক্ষয়ে অতি রয়ে গতি করি স্থির। পুনর্বার অযোধাায় চলিল অচির॥ আদিকাণ্ডে অধোধ্যায় তমসা নিবাস। ত্রিচন্বারিংশতি সর্গ সাঙ্গ সুনির্যা**স**্থ 8७ मर्गा ।

ত্রিপদী।

রাম গত বনবাসে,পুরবাসী আশা আশে, নিরাশ হইয়া পরস্পর। পাইয়া চেতন পরে, চলে নিজ্ঞ হারে, পুজ্ঞ দারে আরুত সম্বর॥

বিশ্বর রোদনে গত কাল। खिश वास्तव वर्ग, गठ रेट्टन भन्न चर्ग, তাহে নহে এমন জ্ঞাল। এই রূপ অযোধ্যায়, শোকে অভিভূত काश, ताम दनवारम खन्नावर्ग। পুরে না রহিতে চায়,মুখে শব্দ হায় হায়, চক্ষে বারি সতত বিদর্গ॥ কেই না প্রবেশে পুরে, অযোধ্যার অতি मूद्र, खक इर्या भक्षशीन तरह। धिष्ठां जिन करत दशम, वरण मिष्ठा शति-শ্রম, ধর্ম ব্রহ্ম কিছু সভা নহে॥ क्ट ठटक वातिथात, निवातिए नाहि পারে,সুদৃঃখিত বহুজাতি জন। শ্ব্যাগত কত জনা, সতত হত চেত্ৰা, ছিল বুক সদৃশ বিমনঃ॥ স্নানে নহে সুস্থচিত্ত,এসংসার নহেনিতা, বণিজে বাণিজ পরিহরি। শোকেতে প্রসারি গণ,করে জব্য প্রসারণ, স্থিত ধন পরিতাগ করি॥ ध्रुष रहेश पृथ्य, ७४) मालु नार् मृष्य, প্রদায়ে না করে কেই পাক। रुष्टे गर्ह ज क भरत, अञ्चल अमृना धरन. রাম রাম ভিন্ন নাহি বাক্॥ রাম শোকে অভিভূত,চিত্ত দেখ্যে ছেপ্ট गुड, अननी आहत नाहि करत। কুলে কুলে নারীগণ,নিয়ত করে রোদন, নিজ ভক্তঃ সত্ত্বে নিজ ঘরে ৷

কাত্র করুণ স্বরে, অফ ধারা মুক্ত করে, নিন্দা করে অকুক্ষণ, দৃংখে পার সম্পীড়ন, বাক্য ছারা স্তুতি নাহি করে। তাহা বিনা রঘ্ভম, স্তৃতি নিন্দা, সর্ক্রাসক হস্তি প্রায় অভিভূত স্বরে॥ কিবা করে ধনে জনে,কিবা দারা পরিজনে, ভবনে জীবনে কিবা সুখে। नश्राम ना (मर्थ याता, को मना) नश्रम তারা, তারা পুরী প্রবেশে কি মুখে। এক মাত্র ধরা ধন্য, পুরুষের অগ্রগণ্য, লোক মাঝে লক্ষ্মণ চাকুর। সীতার সহিতে যেবা,করিতে রামের সেবা, • অনুগত অরণ্যে বিধুর॥ নিন্দা করে স্থতি ছলে,কোন কোন নারী, বলে, কুতপুণ্য ধন্ম নদীগণ। পথিমধ্যে শুভ অতি,যে সলিলে রঘুপতি, করেন শ্রীঅঙ্গাবগাহন 🛚 श्रिक वाति कति भाग, तायत धरतन आन, পরিত্রাণ পথ পরিশ্রমে। ধন্ত শৈল স্থিত তরু, মধুদানে কম্পতরু, সমুন্নত মঞ্জরী কুসুমে 🏾 সভেষ করিছে রামে,অতুল অরণ্য ধামে, ফলে ফুলে মূলে সর্ব্যক্রমে। গিরি গত তরুকুল, রামে হয়েয় অভুকুল, আগত দেখিয়া বন জনে : পশ্চাতে লম্বিত কায়, 🕬 🧸 হয় সঙ্গে यांग्र, পाइन (यमन প্রিয় तन्तु। অতিথি অট্ট না জন্ম, মহাব্যস্ত সর্ববারণ্য, क्ट्रिंग क्ट्र (मंत्र क्यू

लाভयुक कताहरत, विविध कानन मिटन, महारयांशी युनताक, माधिरन मन कांय, বছ দ্ৰব্য কি আছে সংশয়। योगक्यम रहेरव मकला। মনে নান। নদীগণ, মহাকৃপ সনাতন, জ্বনক দুহিতা সীতা, যোগিনী সুযোগান্বিতা, নারীকুলে কটাক্ষ কৌশলে। সারুমন্ত যত গিরিচয়। मुभीउन रेमनेशन, 'जूबिटा त्राध्यत यनः कतिर्वन मुखाशिनी, ज्राध्य मृथ ज्ञाशिनी, প্রসবিবে সুশীতল বারি। বথা রাম তথা কিবা ভয়। নানা ধাতু সুবিচিত্র, বিলাবে পর্বাত মিত্র: না হ্ট্রে পরাভব, করের এই অন্নভব, निर्माण्डा निर्मात थहाति । নিকটে গমন শুভ হয় ॥ রঘকুল শশী রাম, স্কল বিশ্রাম ধাম, महावाच् महासूत कतिदन मृश्ये मृत, কিবা শৈল কিবা বসুমতী দশরথ সৃত গুণবান্। অনেকের ধর্মা পাল, দেহ যুক্ত গুণ জাল, উৎকণ্ঠা সতত ত্রাসে,এ কষ্ট জনক বাসে, বীর দশরথের সন্ততি। পায় প্রীতি কেবা মতিমান্ ॥ যথা রাম তথা জয়, নাহি পরাভব ভয়, क्कियीत वहें ताड़, यि इस उत्व छाया. জগৰাথ জগতের গতি। ধর্ম পথ হবে পরিরাদ্ধ। (मरे मर्ख পतायन, नता अप नातायन, भर्मा अनारशत श्रीप्र, अधर्मा मन्श्र्न जाय, সকলের পতি : ছপতি। मम (मम तहित्व जन्म ॥ কি কারণে দুরে রব, তদকুগামিনী হব, এ স্থানে জীবন রাখা, কোণা অর্থ কোথা शम इाग्रा लव नाती मत्ता। থাকা, কোথা বা রহিবে পুজ্রগণ। হইলে তাঁহার দয়া, হইব অকুতোভয়া, কিবা এক পূর্ব্ব স্থত্তে,পৃথিবী পালের পুছে. তদত্রে বসতি স্থান হবে। ঘুণা হীনা পাঠাইল বন ॥ আমরা যোষিত্গনে, পরিচর্যা প্রাণপনে, যদি রাজা ইচ্ছাযুক্ত, ভরতেরে অভিষিক্ত, করিব সীভার সর্বক্ষণ। করিতে হবেন দৃঃপান্বিত। यांद्रेत स्रोवन जात, कतित्वन सर्ग लाज, তোমরা পুরুষ যত, রাঘবের অবিরভ, কর গিয়া উচিত সাধন 🛭 অধর্ম হইবে অপ্রমিত॥ এই রূপ বহু রূপ, পুরনারীগণ রূপ, এখর্য্যকারণে মোহে,ভাজে পতি পুত্র স্বেহে, সক্রপে বিরূপ স্বামি প্রতি। তারে কি চাহিবে প্রজাগণ। হইয়া দু:বে পীড়িতা,রামশোকে খেদান্বি-কদাচ না হবে শক্তা, প্রজা রক্ষা অনুরক্তা, ্কুলপাংশু কৈক্ষী এখন। তা, কহিতেছে কুঠিতা আক্লতি।

কৈক্য়ী যভাপি পরে,সম্পূর্ণ পালন করে, जधालि ना उत अहे त्माम পুরের শপথ করি, যছপি জীবন ধরি, र्शत रहि आद्या किया (भारत ॥ রাম বনবাদে গেলে, মহীপতি মহীতলে না রবেন জীবন কাবল। মৃত হৈলে দশরথ, উজ্জ্বল বিলাপ পথ. व्ययोधा इंहेर्ट पात रन ॥ चत्रा भिथा निवास, इहेव लक्का नास, বাস হত সীতারাম তথা। অযোধ্যা রাজ্য কারণ, ভরতে অভিষেচন ক্তে যভে পশুগণ যথা। হব রামে অনুগত, কিন্না প্রাণ পরিহত, অথবা করিব বিষপান। আমাদের কীণ পুণা,এ দুর্গতি সেই জন্ম, বনে যাব পরিহরি প্রাণ ॥ अहे क्रल मांतीशन, नशत निवामी स्नन, করিতেছে অসংখ্য বিলাপ। রামশোকে সুপীড়িতা, হয়েয় অতি খেদা-श्विजा, यथा वन्नु विष्ठ्र वानाश ॥ হইয়া আতুরা অতি, রামে অনুগত মতি, পুজ্র পতি হত সহোদরে। যে রূপ রোদন করে, অচৈতভ্য পুরঃসংর. উक्टिश्यत महे क्रथ कता॥ रेजि श्रुवनाती विलारभः 88 मर्गः।

পয়ার।

দেই রাত্রি শেষে রাম যান অতি দুরে। পিতৃ আজ্ঞা অনুসারে পরিহ্রি পুরে 🖟 याई एक श्रुक बताखि थे जाका तस्त्री। প্রাতঃ সন্ধ্যা উপাসনা হেতু রঘুমণি॥ किभिष् विषय कति इत्थ चारहार्व। সভার্যা সপরিচ্ছদে করিলা গ্রমন॥ শ্রীমতী আকুলাবর্ত্তা তরি মহানদী। গ্রীমান শিবদ পথে নগর সংসদি॥ মহাপথে মহাবন উপবন সব। শুভদ স্বরূপ রূপ দেখেন রাঘ্ব !! প্রতীরে প্রত্যেক গ্রাম বিশাল বিস্তার। নিকটে বিবিধ প্রচ্পা উভান প্রচার ॥ নগর চত্তর ঘর পরম শেভিন। সমত সঙ্গল ভূমি শুভ সুলকণ। উৎকृष्टे উৎকृष्टे शांग मीमा ममरणांछा। পুষ্পে পরিপূর্ণ বন শ্রেণী মনোলোভা। শ্রেন পক্ষি সম গতি অতি বেগবান। উত্তম তুরঙ্গে বহে সমান সমান॥ দেখিতে দেখিতে বন ম্রাবান্রাম। গ্রাম বাসি মনুষ্যের শুন্তে বাক্য গ্রাম 🛭 কহে তারা পরস্পর নারী নরগণে। ধিক্ধিক্দশরথ রাজার জীবনে ! কাম বশীভূত কর্মা অশ্রুত বাহার। তাহার অধিক ধিক কেকয়ীরে আর ॥ পাপিনী পাপিনীগণ সন্ধিনী সতত। সম্ভেদ করিয়া স্থর্য্য ময্যাদ। নিয়ত॥

ক্রে কর্ম করে সেবা কেবা হেন আছে এমত শোভন সুতে অরণ্যে দিয়াছে ॥ বাজ পুত্র রম্য রাম ধার্দ্মিক প্রধান। মহাত্মা উপরে করে আক্রোশ সন্ধান # **সতন্ত্র স**তক বৈদ্ধ কুনয়ন। ना रेट्टन अखास्य क्रिन श्रेटल मिटन दन এই রূপ বহু রূপ মনুষ্যের ধনি। চলিলা চঞ্ল চিত্তে রঘুকুল মণি 🕆 অচিরে ভটিনী ভীরে করেন গ্মন। কোশলা দেশান্তপতি অতি বিচক্ষণ " করিলেন বেদধনি কত মুনি গণ হইয়া একাগ্র শ্রুতি সূশ্রতি শ্রুবণ 🖰 শিবাবর্তা মহানদী হইয়া উত্তীর্ণ। অগস্তা সেবিত ভূমি তপস্বি বিকীণ্ 🎚 গমন করিয়া চির কাল তার পরে। স্বচ্ছ শীত জলান্বিত গ্রেডমী বিস্তরে " অকুল গোকুলাকীর্ তরি সেই নদী। ব্রাবান্ভগবান্ গোতমী সংসদি। অতিক্রম করিয়া অত্যন্ত জ্ঞাবে যায় : ফলঙ্গে লজ্জিয়া নদী তুরঙ্গ স্বরায় : শিখি কুল সুসংকুল অকুল বিস্তার। হৎস কারণ্ডব রবে সেবিত দস্পার 🛭 मिड्रे भनी महयु कतिय्री मखत्र। যে ভূমি ঈশ্বাকু নূপে মনুর অর্পণ । প্রফুল হইয়া রাম সেই সব স্থান। বিস্থার বলিয়া পরে সীতারে দেখান 🖡 व्यवस्य त्रवृत्वतः भातिथि উष्मिर्भ। কহিছেন রম্বংশ প্রতি আশানেশে।

হে হুত সুমন্ত্র কবে হবে সেই দিন। মক্ত হংস স্বরে রাম জিজ্ঞাসেন দীন 🛭 কবে আর পুনর্বার আদিব এ স্থানে : পুষ্পিত সর্য বন দেখিব সন্মানে ॥ মৃগয়া করিব আর বন পর্যাটন : পিতা মাতা সহকারে সর্য দর্শন 🖟 রাজ ঋষি গণ পুরের বেমন মৃগয়;। আকাক্ষী অনেকে সেইরপ করে দয়া কবে বিধি বিচক্ষণ দৃষ্টে করি দৃষ্টি। আকাঞ্জিত আমারে করিবে রক্ষা সৃষ্টি। অভান্ত জাক জেল হয় সদা মম মনে। নিয়ত মৃগয়া কবি সর্য কাননে। রতি পাই রাজগৃষি সমূহ সেবিতা। সাধ লোক সমুদায়ে যাহা প্রতিষ্টিতা : সংপ্রথে সতত গতি ঈক্ষাকু সদৃশ। ভাষেন মধর ভাষে আশে হয়ে রুশ অন্তরের বাক্য এই করিয়া উচ্চার। ভাষর সমান শীঘ্র সমর সঞ্চার। মহা পরাক্রমী দেব সেবনীয় কায়। সায়।ক্র সময়ে রাম চলিলা ব্রায়। অতি জবে শৃঙ্গবের পুরে উপনীত। দেখিয়া দেবতা তুল্য প্রফুল পৃষ্কিত 🛚 मुमञ्ज উদার চিক্ত অসি চর্মা ধর। যুবা উ**ত্ত**ীয় **গণ্ড যুক্ত কলেবর**॥ সেই স্থানে ভগবানে করিয়া দর্শন। গাঁতোখান করিছোক নিষাদ নন্দন॥ नीम नवघन वर्ग आंत्रक लाइन। রামরপ নিরীক্ষণে প্রফুল বদন ।

রামায়ণে অযোধ্যায় জীরামের রন। সন্ধার্কালে শৃন্ধবের পুরে আগমন I ८६ मर्श्ह লঘ ত্রিপদী। পরে পরাৎ পর, রঘ বংশ ধর, পরম মহর্ষি কায় : मिथि ভव ভन्ना, विक्शमी शना, বিপুল তরঙ্গ তায় : ত্রিপথ গামিনী, বৈষ্ণবী বাহিনী, कनानी भीडन छा। শৈবাল রহিতা, ঋষীক্র সেবিতা, নক্ত চক্ত ভ্রমে যায়। रूप कार्रं कर. मार्गिम मत. করে মধুরব অতি। मकत मखनी, टिएम कुछ्छनी. মীনাবলী প্রতি গতি। আবর্ত্ত অভ্যন্ত, নাহি উর্দ্দি অস্ত, শোভান্ত কে করে তার। নির্ধি নির্মার, বাহিনী বিস্তর, রঘবর **সুখ পা**র॥ ताम मानत्थि, शृद्ध महातथी, সার্থি প্রতি আদেশ। क्रज १३ इत्ल, वाम खाल इत्ल. কর্ত্তব্য দিবস শেষ ॥ निविध निकर्छ, रमत नमी छटछ, ভঙ্গ রটে পুষ্পোপরে। পরম শোভন, অতি রমাবন, मर्भन कत्र मद्भारत ॥

उक्र ठत थक, व रेक्न ही उक्र, নিবাস স্বরূপ বোগ্য। দাশরথি বাক্য, শ্রুত মাত্র ঐক্য,__ শরীর অতি আরোপ্ত 🛭 সমন্ত্র লক্ষাণ, অতি বিচক্ষণ, তৎক্ষণ দিলেন সায়। ভাল ভাল বোলে, চলে বৃক্ষ তলে, সার্থি অতি স্বরায়॥ রাম অনন্তর, অতি মনোহর, मुभावि मधील यान। म भी जा नामान, जानम वर्धन. পরিহরি হরি যান। অবতীৰ্ণ তলে, স্নিঞ্চ গঙ্গাজলে, দেব তর্কিনী তীরে। मुमल मद्दत, मर्का व्यव्य तदा, বিমুক্ত করে অচিরে। বৃক্ষ মূল গড, রাম অবিরত, कानकी मह यथाय। কর পুটে পরে, রাঘব গোচরে, সার্থি স্থিত তথায়॥ এই অবসরে, সে স্থানে সম্বরে, আগত নিষাদ পতি। রাম পূর্বে সখা, করিবারে দেখা, নিকটে করিল গতি। धार्मिक नूथीत, मछावामी वीत, श्रक्ताम महावनी। রাম আগমন, করিয়া অবণ, হইয়া সুকুতৃহলী

অমাভা বেষ্টিড, সে বনে চেষ্টিড,
সৃষদ্ধ পর নিবাদ।

ক্রাভিগণ তার, সহ পরিবার,
অবতার অবিবাদ॥

প্যার 🏻

नियान नम्मान ताम निरुधि निकारे : মুমৰ্ যেমন প্ৰাণ পাইল লকটে ॥ দুর দৃষ্টে অদৃষ্টের অসুখ অভান্ত । নিকটে নিগ্রহ নাশ সন্তাপের অন্ত ॥ লক্ষ্মৰ সহিতে পেরে। ছতি হিতকারী। উঠিলেন উদ্ধরাত করি অগ্রসারী ॥ গুহ অতিগৃঢ় স্নেহ দেখিয়া প্রকাশ। নিকটে আসিতে পরে বাডিল বিশ্বাস 🏽 বারস্থার নমস্কার করিয়া বেষ্টন। পরে পরস্পরে হয় প্রেম আলিক্সন 🛭 আনন্দ লহরী চিত্তে নাহি যায় লেখা। ডুব্যেছিল সুখতরী কালক্রমে দেখা ॥ রাঘবের প্রতি কহে নিবা**র স**স্তান। এই পুরী জান স্থা অবোধ্যা স্মান 🛚 কি করিব কহু যিত্র বে চিত্তে ভোমার। অবিরোধে এইকণে কর্ন্তব্য আমার ॥ সমুদায় উপস্থিত শুদ্ধ অশ্ব পান। **বাঞ্ছা করি দিতে** হরি যদি কর পান । मि**र्ड बहि रगश्च अर्घा भीज आ**ड्डा मिरल। ভক্ষা ভোচ্ছ লেছ পের আনি এই স্বলে। উপ**স্থিত যথোচিত উচিত যে হ**য়। जुनका अ**श्रक्त भगा आहर न**म्मस्

বাজিগণে সন্তোষণে তুল সমবায়। পরিতোৰ যাতে হয় তুরক ত্রায় ॥ ওহ্কের পুরে তব সুখে আগমন। তোমার পালিতা মহী সমস্ত ভবন ॥ মহাবাহু বহু শিষ্য প্ৰেষ্য তব আছে। শীম্রগতি কর আজা কি করিব কাছে॥ সাধ্রাক্স সুপালনে তুমি যোগ্য পাত্র। শবর সমূহ তব দাস এই মাতা। যথেছা তোমার তাই আজ্ঞা কর প্রভু। আমাদের নগর স্বাধীন নহে কভু। আমাদের যেমন তেমন এ তোমার। ততোধিক কিন্ধরের কিঙ্কর অপার ॥ গুহু বাক্যে অভ্যন্ত আনন্দে রঘুপতি : চরাচর গুরু চাহি ক্রণ্ডালের পতি !! শুন মিত্র বিচিত্র এ নহে কদাচন। অচিত আনিত তব রাঘব নন্দন॥ আমরা তোমার তুমি আমাদের সভা। এই কথা জানিবে সর্বাথা মিত্র তথ্য 🛭 স্নেহ ভরে গুহ বরে করে। আলিখন। মস্তকের আজ্ঞাণ লইয়া নারায়ণ॥ কহিলেন দর্শনেতে জেনোছি আরোগা। সবান্ধবে সুখে রবে লয়ে। ভোজ্ঞভোগ্য॥ এইক্ষণে কর স্থা কুশল বিস্থার। রাজ্যে মিত্রে সুখে ধনে কুশল তোমার॥ যন্তাপি কিঞ্চিৎ প্রিয় নিমিক্ত দাতবা। প্রতিগ্রহ একালে আমার অকর্ত্ব্য॥ কুশ চীরান্ত্রর ধর মম কলেবর। ধর্মে স্থিত বনে রত নকে অলোচর॥

যা আছে ধবস ভোষ তুরত্ব সকলে। তাহাদের আডিখ্যে আডিখ্য এই স্থলে এই রূপে অছা তর্ব হইব পৃঞ্জিত। মম পিতা দশরণ মধা প্রতিষ্ঠিত॥ অশ্বন্য থেমন পিডার সুপালনে। नुर्थ तर्र मा क्रांट् अर्याधां ज्वान । । मिहें क्रेश मित्र कह मद्दत उहाँक। তাহাতে পৃঞ্জিত ভাবে সুখে রব রঙ্গে ॥ রামের রমণ বাক্য শুনি সুমধ্র। বুন্যে কাল চগুল জ্ডায় কর্ণগুর 🛚 আজ্ঞা দিল অবিলয়ে কিন্ধরের প্রতি। দেও২ মন্দুরাতে আহার সম্প্রতি॥ অনস্তরে রঘুবর চীর বস্ত্র ধর। कतिला माय्रभक्ता मह मरहामत्॥ সৌমিত্রি আনেন পরে জাহুবীর জল। সন্ধ্যার নিমিত্ত অতি পবিত্র নির্মাল। পরে দিয়া প্রকালিয়া রাম পদ্ধয় ভাষ্যা সহ অবস্থিত যথা দয়াময় ॥ প"চাতে পুন"চ বৃক্ষ করি আচ্ছাদন। রাম সীতা রক্ষণার্থ রহিলা লক্ষ্রণ। তথায় দৌমিত্রি সহ রহে গুহ বীর। 🎒রাম রক্ষণে চিত্ত করিয়া সুস্থির 🏾 वृक्षमृत्न नमीकृत्न अरूकृत विधि। मू व कारण इहिरणन मूर्य दामनिधि দাশরণি রঘুপতি মহাত্মা অভ্যন্ত। দুঃখের উচিত কালে হইল সুখান্ত॥ वह करण रम तसनी हहेग প्रजाजा। ইঙ্গুদী বৃক্ষের মূলে বাস দিলা ধাতা।।

অযোধা ইঙ্গী ঝাস শৃঙ্গবের পুরে। ষট্ চত্তারিংশ সর্গ সাঙ্গ এত দুরে। ৪৬ সর্গঃ।

পয়ার

নিদ্রাগত রামচন্দ্র স্থানকী সহিত। জাগ্ৰত অগ্ৰন্ধ অধ্ৰে অমুক্ষ বিহিত 🛚 হতত্রাস নিজানাশ বাস বৃক্ষ তলে। लकान लकन प्रत्ये। खर निशं वटल । সন্তাপে সম্ভপ্ত তমু কেন এই কহে। সুকুমার এ ভোমার যোগ্য কার্য্য নছে 🏾 সুখাসন সুদর্শন সুশোভন আছে। তব জভ্য কিবা অন্ত কব তব কাছে 🛚 অপ্প অপ্প সুখতপ্পে করহ শয়ন। রজনী রমণী যোগে না জাগ লক্ষণ চ রাজপুত্র কর্ম স্থত্র কি দেখি তোমার। অরণ্যে অ**গ্রন্ধ জন্মে জাগ সুকু**মার 🏾 সুখোচিত যথোচিত উচিত এ হয়। মহাক্লেশ দীন বেশ তহু দুঃখময় ॥ ঞীরাম রক্ষণে এইক্ষণে স্থাগি আমি। काकू ६ इ हमा मृद्ध हल नया नामी ॥ রাম পর প্রিয়তর নাহি নর মম। শপথ ভোষার অগ্নে না কর সম্ভ্রম 🕽 রামের প্রসাদে অবিবাদে অবিবাদে। ষশন্বী তেজন্বী হব ইক্ষা অপ্রমাদে॥ मूथ প্রাণ্ডি ধর্মাবান্তি অর্থ সিদ্ধি আর। भरुषी गरुषी कीर्छि गुर्श्वमारम यात्र॥

দেই আমি ধর্মগামী প্রেয়খামী রাম। সীতা সহ শয়নে সম্প্রাপ্ত সুখ ধাম॥ উভয়ের আবরণে রক্ষণাবেক্ষণে। ধমুষ্পাণি রক্ষনী জাগিব জ্ঞাতিগণে ॥ অবিদিত কিছুমাত্র নাহি এই বনে। সর্বকাল গতায়াত সৈম্ভগণ সনে চতুরঙ্গ সৈভা সঙ্গ রিপুভঙ্গ করি। অপরপ রাম রূপ রঘ্ডুপ মারি॥ লক্ষা কিঞ্ছিত্কান্। করি বিলয়। কহিলেন ধীর বীর স্থির অবিলম্ব॥ नाहि ভय नितायय ममूनय मूथ। रैमच मह खांशि तह नाहि कह पृथ्य। রাম চিন্তামণি চিন্তা অন্ত চিন্তা কিবা। দাশরথি মহারথী চিন্তা রাত্রি দিবা ॥ সেই বীর ধৃত চীর পৃথিবীর মাঝে। ধৃলি শযা। সুথ শযা। সেবকে কি সাজে॥ দেখ গুহ নপ নিজাযুক্ত দীতা সহ। নহে মান নহে প্রাণ দেহ সুখাবহ। দেবাসুর যেবা সুর যার ভয়ে ভীত। मिथ मिहे वीत शहे ज्ञामत्न हिंछ। যে সীতার গলহার সোণার পাল**ছে**। ধ্সরা তৃষার পরা সীতা সামী অক্ষে। ভাৰ্য্যা যোগে তপোষোগে বিভব বিহীন কত মহাব্রত রত অবিরত দীন ॥ দশরথ মনোরথ করিলা পুরণ। গুণধান পুদ্র রাম পেয়ে সুলকণ 🛚 এই রামে রা**জ্ঞা**মে বিরামে বিত্তর। मुः (४ तर् युक्त नर्ट् तर्ट् करन्दतः ॥

গত তাতে দুঃখ তাতে দুষ্ট বাতে মহী। विधवा इहेरव अरव मृःथ शारव मही ॥ नरतक ভবन বন नियन निश्वरह। হতসুখ গত শুক শুকী সম রহে 🛚 কৌশলা। দুঃখিনী ভুলা। রাজা রাচ্ছহত। জননী জননী মানে নৃপ অনুগত॥ বিনাশ সুধের নাশ হৈয়ে আশ ভঙ্গ। এ রজনী গিয়া আর হবে দিবা সঙ্গ। যদি বাঁচে তবে আছে উপায় মাতার। নিকটে সঙ্কটে ত্রাতা শক্রত্ম কুমার ॥ এক পুত্রা কৌশব্যা কি দেখে ধরে প্রাব। অবস্থ বিনাশ পাবে কি আছে বিধান 🛭 অনুরক্ত রাম ভক্ত অযোধ্যার জন। সুখ নাশে বৰবায়ে জীরাম যখন। রাম শোকে সর্ব্ব লোকে পাইয়া সন্তাপ হবে নষ্ট পুরে কষ্ট করিবে বিলাপ ॥ মনোরথ হয়ে। হত দুশরথ পিতা। সর্ব্ব নারী দৃঃথকারী তাজ্যে রাম দীতা: রাজ্ঞ সূথে বিমুখে পাচায়ে। রামে বনে। হত আশ পিতা নাশ লব্ধ সেইফণে 🖟 হায় হায় পিতা তায় বৃদ্ধ অতি 🗷 রা। রামশোকে জীয়তে হবেন যেন মর।॥ উপস্থিত হৈলে কাল লবে কাল ভাঁরে। প্রেত কার্য্য করিবে সগোত্র ব্যবহারে 🛭 মনোরমা অনুপমা অযোধ্যা নগরী। দেবাগারে হর্দ্ম্য হারে সর্ব্ব শুভঙ্করী ॥ বিশাল প্রাসাদ মণি কাঞ্চন মণ্ডিত। তুরঙ্গ মাতঙ্গ সঙ্গ মহা স্থানান্থিত।

র্থপত্তি পদাতিক মঙ্গল ঘোষণ। নিনাদ নিম্বনে সর্বে লোক সন্তোধণ॥ मुत्रक्रण मक्न मन्भन्न मिरे थूरत । হৃষ্টপুষ্ট বিষয়াদি সমন্ত প্রচরে॥ আরাম উভান স্থান বিমান সম্পর্ণ। সেই স্থানে সুধিগণে শাসিবেক তুর্ণ॥ সমাক্ষ উৎসৱ সব বাজধানী ময়। ছিতীয় অমরাবতী জিনি অতিশয়। কালে সভা প্রতিজ্ঞার সহিত সকলে। আমরা কোশলা যাব পরম কৌশলে। বনবাদ নিবৃত্তি প্রবৃত্তি দেশাগমে। তখন শন্মন সধা হবে সুধা শ্রমে। এই রূপ আলাপনে দৃই জনে বনে। অতীত রজনীমান নিষাদ লক্ষণে ৷ প্রজাহিত বিহিত রহিত নিজাবোগ। নরেজ্র নন্দনে গুহু করে ত্রেহ্ যোগ। অভান্ত সৌহতে ধহ হৈয়ে। খিল্লমান। ভাসিছে নয়ন নীরে নিষাদ সন্তান ॥ ব্দরাতুর যত দুর দেহের সন্তাপ। অধিক অৰোধ্যাকাঞ্ছে লক্ষ্মণ বিলাপ ৷ ८९ मर्गः।

ত্রিপদী।

রজনী প্রভান্ত কালে, রামচন্দ্র সুকৌশলে, লক্ষণে বলেন এই ভাষা। লক্ষণ শুভ লক্ষণ, দেখ সুমিত্রা নন্দন, প্রকাশিল পূর্ণ পূর্বর আশা॥

निभा टेश्न अमर्भन, डांकत कत मर्भन, क्तरहं मर्भन शिक वरत। হইয়া অভান্ত হষ্ট, পলবাথে মিষ্ট মিষ্ট্ৰ--কি উৎক্লপ্ট কলরব করে। नीलकर्थ कर्थ्यनि, निमास मगर गिन, निर्छारि मुनित मनः इरत । এইকালে মহারথী, চল গঙ্গা ভাগীরথী. গঙ্গা পার হইব সম্বরে॥ জানিয়া রামের প্রীত,অভিমত মনোনীত, গুহ সহ সুমিত্রা সন্তান। সুমস্ত্র সারপি সঙ্গে, অগ্রগামী এক রঙ্গে, • জ্রীরাম সমীপে বুদ্ধিমান॥ পরে করে শর ধনুঃ, অসি খড়নধারী তনু, অনুজ দহিতে রঘুবীর। উত্তরিয়া গঙ্গানীরে, সৃস্থিত হুইলা তীরে, সুমত্র সার্থি সহ ধীর 🛭 বিনীত নিকটে গিয়া, রাম নাম সম্বো-थिया, इस्या भाविथ भाविधान। कि कतिव छनमनि, ताम तघवरण मनि, কুলমণি কহিবা বিধান॥ প্রাঞ্জলি পূর্ব্ধকে পরে, সার্থি বেদন करत, नित्रख इहेटल नील काछ। किशा भधूत ভाष्टि, नृशमूख नृशमाम, কানন গমনে মতৈকান্ত 🛚 অবণে সুমন্তিবর, সকাতর কলেবর, আর্ত্রস্বরে করে নিবেদন। हरेगा अञ्चल वाश, मुमल श्रेक्ष अश, भना यात्र मर्स्वाटक भनन ॥

अन ताम छन धाम, नतमूर्व्यामण छाम, অনেকের অজ্ঞাত এ কথা। "নেহ নাহি করে তক্ক, প্রভাতে বিলুপ্ত অর্ক, জনিবে এমন মনো ব্যধা। ভোমার বন গমন; সহিতে সীতা লক্ষ্ণ এমন মানসে ছিল কার। ना स्थानि कांग्र के धारी, वाणाकारण वनहाती, स्थाहना ना करत भरत, मुम्ब्थिक करणवरत, কি কর্মের এ কল তোমার। মদতা কজুতা যত, সে গুণ বিগুণ এত, যাতনা সমত বিধাতার। রাজ্ঞ নাশ বনবাস, অজি ভয়ম্বর ত্রাস, আশা ভঙ্গ তরঙ্গ তোমার। তবে তুমি, তৃপ্ত রবে, অরণ্যে অনেক হবে সহায় সম্পত্তি সমুদায়। त्रहित्व महित्व षृश्यं,कहित्व खत्नक्षृत्र्य তিন লোক বিজয়ির প্রায় 🛭 আমরা এবে নিহত, দুঃখ ভাগী অবিরত বশীভূত হয়ে। কেবয়ীর। পাপিনীর পাপে পূর্ণ,ড্বিলাম সবে ভূর্ণ, পুর্ণচন্দ্র গ্রাসিল তিমির ॥ म्हे भाभिश्वात मात्रि, অस्मि मुश्यत ভাগী, বনে জাগি আছি বৃক্ষদলে। ইতাদি আত্মীয় সম, বাক্য জালে রঘন্তম আহম অভাত অমুকুলে 🛚 বন গামী রখুবর, নিবর্তিলে মন্ত্রিবর, নির্ধি কাতর কলেবূর। অভান্ত রোদনামিত, বাষ্পবারি বিগলিত গঙ্গাবারি স্পর্শ করি পর **।**

तांमहस्य मस्तिवतत, सूमध्त वांका स्रत, পুনঃ পুনঃ করেন সান্ত্র।। ঈক্ষাকু বংশের মাত্র, অতুল্য সূহৎপাত্র, তব সম সংসারে দেখি না॥ যথা দশরথ পিতা,মাতা অতি শোকাম্বিতা, আমার নিমিত্ত স্থতবর। বুদ্ধ তাত না হন কাতর 🛚 আমার বিয়োগোছেগে,পর্ণচক্র গাসে মেঘে, मूर्गार्ग जन्मै जन्नकात। উভপ্ত অভান্ত ভূপ, তপ্তায়ঃ স্বরূপ রূপ, যেযে আজ্ঞা করেন বিস্তার ॥ কেকয়ীর প্রিয় জন্ম,অধিক কি কব অস্থ, (मर्हे (मर्हेकर्पात मोधन। সে মহাত্রা মহাজন, সভাধর্ম পরায়ণ, না করিবে আদেশ লঙ্কন ॥ নাহি হন মনঃকুণ্ণ, কিঞ্ছিৎ আমার জন্ত, অপ্রশংসা নরে নাহি করে। কোন কর্মে কোন ধর্মে,ব্যাঘাত না পান মর্দ্মে, আজ্ঞানের আশা ভঙ্গ ভরে 🛭 সমাশ্রিত নূপ ৰত, বাধ্য রহে অবিরত, সাধামত করিবে পালন: আমার চিন্তায় বাথা,নাহি পান নূপ যথা, তুমি তথা করিবে যাজন। আমার বচনে স্থত, হইয়া স্বর্ণম দূত, কহিবে বশিষ্ঠ মুনিবরে। তপস্বী অতি দারুণ, সর্বাকাল সকরণ, উপাধ্যায় অতি গুক্লতরে॥

কহিবে অভিবাদন, এই মম নিবেদন, নৈ পুত্র কুপুত্র অভি,পিতৃকার্য্যে হীন মভি, কেক্ষ্মীর প্রতি নতি সীমা। সুমিত্রা মাতার পদে,প্রাণিপাত পদে পদে, যেমন অসংখ্য দ্রব্য,থাকিতে না হয় ভ্রা, অন্তমাত চরণে অসীমা। মাতা অপ্স ভাগ্যবতী, পুজার্থে কাতরা অতি, যদি প্রাণে থাকেন বিরহে। কহিবে প্রণতি মম, বৃধা কণ্ঠ পরিশ্রম, আমার নিমিত্ত নাহি সহে। অদৃষ্ট নিষিভ দুঃখ, নৃপতি রহিত সুখ, আমার বিচ্ছেদে সকাতর। প্রণতি বিনতি স্ততি, অসংখ্যের মম নতি, করিয়া অযোধ্যা জ্ঞাগ, যার২ অনুরাগ, জানাইবে বচন বিস্তর ॥ বিষাদ সন্তাপ তাপ,অকর্ত্তন্য এ আলাপ, চতুর্দ্দশ বৎসরান্তে,পুনশ্চ অযোধ্যাপ্রান্তে, আমার নিমিক্ত অনুচিত। অথবা লক্ষ্মণ প্রতি,দীতা 🗫 মহামতি, দেখিবে আপন সুতে, সুখের সংবাদ कमाहिए ना इन ভाविए॥ जाँहात निमित्र आमि, इहेम्रा कानन शामी, आमित्र तम मव मिन, कमाछ ना इत्र मीन, कर्ष्ट्रे तिह महमु वदमत्। তথাচ আমার দেহে, কিঞ্চিৎ অসহ নহে, এই কথা মহারাজে, কহিবে হৃদয় মাঝে, यर्ग यथा मुत्री मुद्रम्त ॥ করি রম্য বনে বাস,কিঞ্চিৎ না ভাবি ত্রাস, কৌশল্যা মাতার কাছে,কহিবে কি ভাব্য নিবাস জ্ঞাজিয়া নূপবর। পুজ বিনা কোন্ জ্বন, পিতৃ কণ্ট বিমোচন, পুনঃ পুনঃ বুঝাইয়া, কহিবে আশ্বাস দিয়া, করিতে সমর্থ কলেবর॥ कृष किन्ना चून दन, कट्टे मित्र मुमाकन, খণ্ডনে বেমন ধন্বস্তরি। দেইরপ নরপতি, সুপুজে পিতৃদুর্গতি, অমিতীর খণ্ডক বিচারি॥

ভার আতা পবিত্র না হয়। निक्षि रयत नाहि मुर्थाम्य ॥ यण्यि नतकशामी, टेश्ट इस पृभित्रामी, किन्ना याजा खुनस्र जनत्न। স্বীকার তথাপি তাই,আজ্ঞা ভেদে শক্তি নাই, ষাতে তুমি নিন্দ্য ধরাতলে। শোচনার সুবিষয়, আমি নহি মহাশয়, নহে সীতা অথবা লক্ষ্ণ। • वर्त स्थान नरह स स सन ॥ দৃঃখান্তে সুখের অনুক্রমে। দূতে, কহিবে অবশ্য রঘুত্তমে। आभाष्ट्रत विशीन इहेगा। না থাকেন দৃঃখেতে ভাসিয়া॥ আছে, কি বলিবে অস্ত মাতৃগণে। জানাইয়া প্রণতি চরণে॥ শুন স্থৃত এই কথা, আমার যেমন তথা, नकान मीजात উक्ति এই। কহিয়া নৃপতি স্থানে, ভরতে বেমন স্থানে, শীজ্ঞ যানে আন যুক্তি সেই।

মাগত হইলে ভ্রাতা, শিরে ধরাইবে ছাতা, নরভোগে দিবে শ্রেম পদ দক্রাইরে অভিষেক,না কর তাহে বিবেক, যৌবরাজ্ঞ ধনাদি সম্পদ। मछाश स्मिर्क कष्टे, महात्या मा इत म्ल्बे, সম্ভষ্ট তাবত লোক তাহে। ভরতে বজব্য এই, নৃপতি স্বর্দ্ম দেই, সকলে সমান চকে চাহে 🛚 সম সর্বে মাতৃগণ, - সকলের সুপালন, সকলের প্রতি মনঃ থাকে। क्किशी मुभिका यथा, आभात खननी उथा, **आशिमित्व मृष्ट्रिनी गार्क**। विष्णार योगि मयस, अध्य योत मुनिर्द्ध स, যৌবরাজ্ঞ তাক্ত তার সূত। তৃষিবে তনয় ভাবে,না থাকেন দৃঃখভাবে, আমার অভাবে কভু স্থত । শাসন করুন্ধরা, কেকয়ী জ্বনী পরা, প্রজ্ঞের সহিতে পতি স্নেহে। পাঠায়ে আমারে বনে,রা**ন্তপু**ল্লীরান্তা-मत्न, दोख्यभूख नार्या मृद् प्राट् । षरगाशाय माध्वर्ग,षष्ठेठवातिश्म मर्ग, সুধাসম রামের সন্দেশ। বাল্মীকি মুনির উক্তি,যাতনা বারণ যুক্তি, শ্রবণে পবিত্র সর্ব্বদেশ। ८৮ मर्गः।

পয়ার।

রামের সম্পে বাক্য পরিপের পর। লক্ষাণ সারথি প্রতি কহেন সম্বর॥ কেক্য়ী উপরে করি ক্রোধ অতিশয়। পরিহরি সুদীর্ঘ নিশ্বাস কোপ ময়॥ দ্র কৃটি ভীষণামন অতি ভয়ঙ্কর। হইবেন পরাত্ম খ হয়ে৷ ধরাধর ॥ আমার বচন ধরি সার্থি সমুরে। কহিবে আমার এ ভারতী নূপবরে ॥ জানাবে জগতীনাথে প্রণতি বিস্তর। বহুমান পুরঃসরে পুনঃ গুণাকর॥ কিবা অপরাধে ভূমি রাজ রাজেশ্বর। পাঠাইলে বুনে ধর্মদীল গুণাকর ॥ নূপতি রাঘ্য তব সর্ব্ধ সূত ছে। গুণ জ্বেষ্ট শান্ত শিষ্ট সর্ব্ব প্রকা শ্রেষ্ট সর্ববিথা কেকয়ী কার্য্য করিয়া রক্ষণ। করিলে দৃদ্ত কার্যা কি হেতু রাজন্। निस्तीय यसः यात्र यात्र खितलात्र। कि कहिला किक्री वहम अवनाय ॥ নিদ্যা নিমায়া নিন্দনীয়া তাহে নারী। নপুংসক প্রায় নৃপ বশীভূত তারি ॥ তাগ দিলে তনুজে মনুজে একি পারে। কি নাম ইহার নূপ সুধাই ভোমারে॥ অতিশান্ত নিডান্ত সরল স্বান্ত বার। मर्का প্রাণি প্রিরম্বদ পৃথিবী প্রচার ॥ কি পাপ শক্ষিত তাপ কি দিল তোমারে। আমার সহিতে বনে ভাগে দিলে তারে # পিভা,পিতামহ আদি পালিত যে রাজ্ঞ। প্রতিজ্ঞা করণে রামে করাইলে ভাজ্ঞা ভয়ে কি অধর্ম চয়ে হয়ে। পরিবৃত। পরিতাগ পুত্রধনে কিবা কর্ম ক্লত। ভোমার সমান্নূপ কে আছে এমন। বিনা অপরাধে পরিহরে প্র ধন॥ विष्माय धानत त्मर जुरवण जुम्हत। যশঃ ধর্ম রক্ষিতা সুরম্য রখ্বর॥ এমত কর্ত্তবা অতি অকর্ত্তবা শেষ। বনবাসে চীরবাসে সভার্যা প্রবেশ ॥ या हरात हरेग्राष्ट्र कि बात माठना। কিন্দ্র অঙ্গে অঙ্গার সন্ত্যক্ত গোরোচনা। তোমার সমান আর যশস্বী রক্ষিতা। ভুবনে দর্শনে যোগ্য কেহ নহে পিতা। তথাচ ভোমার সম সংসারে কে আর। প্রতি রূপ এরপ শরণ্য কে বা সার ॥ বেহেতু আপনি প্রভু স্বজ্ঞান পূর্ব্বকে। বন বাসে বিসম্ভ্রন দিলেন বালকে শোচনা উচিত নহে এবে নূপবর। সাধর বারুণী পান সঙ্গোপন পর। তোমার সমান সাধু নৃপোত্তম বারা। স্বয়ংকুত কর্মে তাপ না করেন তাঁরা। এই কথা কহিবে সারপি বিচক্ষণ। ক্রোধ করি কটু উক্তি কহিল লক্ষণ॥ নিবারণ নির্দ্ধারণ করি রখুবর। দেখ্যে অধোমুখে স্থতে অতি দীনপর কহেন কোমল বাক্য কমল নয়ন। ন্থন স্থত কোধ যুত সম্প্রতি লক্ষাণ ॥

যে কথা কহিল কথা যদ্যপি উচিত। তথাচ নিষ্ঠুর কাব্য অপ্রাব্য নিশ্চিত। না শুনাবে নূপে না শুনিবে সভাশীল। विरमस्य भ्रम् मणः मृत्रभाषिम ॥ করণা সংক্রান্ত ভ্রান্ত ভ্রাতার বচনে। প্রবাস দৃঃখিত পিতা পাঠাইয়া বনে ॥ হঠাৎকার এ প্রকার কদাকার কথা। প্রবণে জীবনে পিতা পাইবেন ব্যথা। অপরন্ধা জীবন করিয়া পরিস্থাগ। কঠোর কথনে কি করিবে অমুরাগ # এই হেতু সার্থি হইবে সাবধান। নপবর কলেবর করি পরিত্রাণ। উপজীব্য জনে কড়ু বিপ্রিয় বচন। না কহিবে শুন স্থৃত অনুষ্ঠীবি জন। নৃপ হাদিগত স্নেহ লুপ্ত নাহি হয়। সভোর কারণে বনে পাঠায়ে। তনয়॥ কৈকয়ীরে বর দানে সভো সম্মোহিত। অভ্যন্ত বাধিত ধর্মে এ কর্ম বিহিত। আমারে কাননে ভাগ বিরাগ বিস্তর। সভ্যে বন্ধ আত্মবশ নহে নৃপবর॥ প্রবাসে পরম রোধে নিঃস্নেহ লক্ষ্রণ। অনিশিত নূপে কহে নিৰ্দয় বচন 🛚 এ কথা কথার কথা কর পরিহার। সর্বাদা কহিবে প্রিয় সম্পে পিতার॥ **এই বাক্য कोणरम कोणमी हराग्र स्ट**् নিবর্জিয়া নিজ আশা দেশে চলে দুত। ঞীরামের ভিয়াযুক্ত ঞীঅঙ্গ শ্রীমুধ। নিরখি সম্পূর্ণ আঁখি নীরে ভাসে সুখ 🛭 '

শাকে আকৰিত চিত্ত সূভ্ত সার্থি। সহ ভারে রঘ্বরে কহে দাশর**থি**। ্হীন জন প্রতি অতি সকরুণ স্বরে। यं वर्षन तर्रन क्विवन स्त्रह उत्त ॥ মত এব আমার উপরে এত ভার। প্রদানে উৎসাহ প্রভু কর্ম কি ভোমার কান্ত হও ক্ষমাগুণে করি অবলয়। তোম। হীন হইয়া হইব নিরালয় ॥ কি করে। অযোধ্যা পুরী করিব প্রবেশ ॥ পুজ্ৰ শোকাকুল প্ৰায় কোশলা বিশেষ রামের সহিত রথ করে অনুমান। মৃত প্রায় আশ্বাদে পাইয়া নিজ্ঞাণ॥ जामहीन तथ प्रिय मुमूची धत्नी। অবশু বিদীর্ণা হবে রম্বর্ণ মণি॥ দীনগণ সর্বেজন অর্থের আশয়। আসিবে অযোধ্যাপুরী নিতে রামাশ্রয় त्राम भृष्य यान प्रशि श्रान ममाकूल। (मेनाध)क मघरत घतर्व (मनाकृत। मिर क्रेश विक्रश विख्य जावि पृथ्य। না দেখিবে কদাচ কখন মম মুধ॥ দুরছ ভোমারে জানি জানি প্রজাগণ। নিশ্চয় ভোমার তত্ত্ব করিয়া চিন্তন 🛭 জীবন ধারণ করে হয়্যে নিরাহার। ্অতিকুশ সদৃশ তুলন। নাহি আর ॥ আর্দ্রনাদ বিসম্বাদ নিরাহ্লাদ তায়। তোমার প্রবাসাবধি এই রূপ যায়। রপস্থারস্তব ভূজা এ আমারে। निष्ठत्र क्रम्त्र भूभी **खानम् ख**र्भारतः॥

শতগুণ সমাহলাদে সুসন্থাদে মনঃ। কহ প্ৰভু কি কহিব সুধাবে যখন॥ সুকুমার যে সতীর পতি সভা হেতু। আনিয়াছি অরণ্যে হইয়া ধূমকেতু॥ তিনি যদি জিজাসেন আনিলৈ কি রাহ কি কহিব কৌশল্যায় কহ কহ রাম॥ সংপ্রাপ্ত মাতুল কুল সম্প্রতি রাঘব। ভ্তা हरया भिया। कथा कहा कि मस्रव !! সভাবাদ প্রিয়ন্তাদ গুরুজনে করে। কি করিয়া অপ্রিয় বচন বলি তবে॥ আমার শিষ্য সমান ঈক্ষাকু বাহন। तामहीन तथ तका करत वांचि श्रेग ॥ তোমার নিকটে বাস বাঞ্জিত আমার। কুপাঞ্চে কুপাময় কুর অঙ্গীকার। যাচমান জনে कि পরিহর শেষ। রখের সহিতে হব অনলে প্রবেশ। হইবে কাননে যে যে তপঃ বিম্ন কর। র'ধের সহিতে আমি বাঁধিব সম্বর॥ তোমার নিমিত্ত রথ পরিচর্যা সুখ। হইয়াছি প্ৰাপ্ত প্ৰভু হবে না বিমুখ। ধর্মার্থ অপর স্বার্থ সকলি উদয়। পরম সমত এই আজ্ঞা সমুদয় 🛭 তোমা বিনা এই সুপ হবে কি আমার। অতএব লইবারে কর অঙ্গীকার॥ প্রসন্ন হ্ইয়া এই বল রশ্বর। ভাষার সহিতে বনে বাইব সম্বর। পরিচর্মা করিব রহিব তব সঙ্গে। প্রাণান্ত নিতান্ত মনঃ হবে আশাভলে ॥

ঘচ্চপি আছে তোমার বনে ব হস্তন। সেবনে আসজ ভক্ত বনবাসি গণ॥ তথাচ তোমার পরিচর্য্যায় ভূপতি। পাইব পরম গতি গমনে সম্প্রতি॥ ভোমার শুহ্মৰা কর্ম্মে বিক্রীত পরীর। করিব কাননে তাই শুন রঘ্বীর ॥ অযোধ্যা অপর স্বর্গ লোক পরিতাগ। তোমার সেবায় সদা আত্ম অনুরাগ 🛚 ভোমা বিনা অযোধ্যা প্রবেশে নহি শক্ত নিকটে রাখহ নাথ জানি নিজ ভক্ত॥ ইন্দ্র রাজধানী জানি জগত উপরে। দক্ত কর্মিরে দেশ সেও পরিহরে॥ এই যে উত্তম অশ্ব আমার বিহীনে। বনবাসি সমাজ সেবিত প্রতিদিনে ॥ কানন নিবাসি গণ সেবায় সম্প্রতি। পাইবে পরম গতি খণ্ডিবে দর্গতি॥ वनवाम क्या थान्त इहेरव वयन। মুম মনোর্থ সিদ্ধ হইবে তখন ॥ এই রথে লয়ে মনোরথের রতন। প্রবেশ করিব পুনঃ অযোধ্যা ভুবন ॥ ठकुर्द्भण वद्मत कतिया वस्न वाम। ক্ষিতীশ্বর কণ মাত্র ভানিব নিহাস॥ ভোমার নৈকটা পরিহরি যদি রাম। শত শত বৎসর জানিব গুণধাম। ष्मि ए उक्त वदमन भानक मस्तान। ভৃত্য ভক্ত স্বধর্মে সর্বাদা অধিপান ॥ পথমধ্যে সঙ্গত সতত আছি আমি। পরিত্যাগ করিবার যোগ্য নহ স্বামি 🏾

বছবিধ বিলাপ করিয়া অতি দীন। স্বভূতা সুমন্ত্র মুখ অহান্ত মলিন। দেবিয়া বিশেষ দরাময় রখুবীর া----বচন কহেন রাম সুমক্তে সুধীর ॥ बाउ बाउ मुमल हहेश जूमि जूष्टे। পরিতৃষ্ট করিবে না রছে কেহ রুপ্ট ॥ ना कट्टन खननी खनरक मन्त्र वाती। সুধার্মিক নরনাথে মিথা বাদী জানি॥ পরিতৃষ্ট রহিবেন দৃঃখিনী যাহায়। সুমন্ত্র হইবে তুমি নিযুক্ত তাহায়। আমি বনগামী বল্যে জননী আমার। না করেন ভরতে অস্নেহ অঙ্গীকার॥ জানিবেন ভরতের রাজ্ঞে রাজ্ঞমাতা। প্রতিবাদী সম্প্রতি আমার প্রতি ধাতা। মম প্রীতি হেতৃক আপনি গিয়া পুরে। নুপতিরে সম্ভোষিবে সর্বার্থ প্রচরে॥ যে রূপে প্রবোধ পান জনক জননী। বুঝাইবে সেই সেই বাক্যে গুণমণি ॥

ত্রিপদী।

পরে রাম রঘুপতি,বহু বাক্য স্থত প্রতি,
পুনঃ পুনঃ করিয়া সাজ্বনা।
গুহুকেরে নিষোজন, সমস্ত শুদ্ধ বচন,
হেতু বাদ দর্শন কামনা॥
ধরিয়া মস্তকে জটা, করিয়া তপম্বি ছটা,
গুমন করিব বন বাসে।
ভূমি আন গুহু বীর, বিশিষ্ট বটের ক্ষীর,
শুস্থে গুহু আনে আনায়াসে॥

করিয়া আপন জটা, লক্ষণের জটা ঘটা, ভ্রাতৃ আজ্ঞা শিরোপরি, করি সীতা করে কিবা শোভা দুই জটা ধর দীর্ঘড়জ বীর্ষয়, ঋষি সম শোভাময়, সামু**জ শো**ভিত রঘবর॥ ় পরে গলা অভিমুধ, পুণাদা অশেষ দৃঃধ, অনন্তরে রঘুবর, রাম ভাম জলধর, হারিণী তারিণী সুরধনী। তৎপথে আশ্রম করি,লক্ষণ সহিতে হরি, করি তরী আরোহণ, একত্রিত তিন জন, রামচত্র যান যেন মুনি। তপঃ ব্রত সমাভায়, করি রাম দ্যাময়, श्वश्वरत कहिएकन वांगी। এই मूर्व खन शम, जार्भय जाशम शम, বিপদ রক্ষক তুমি জানি॥ কর এই রাজ্ঞ রক্ষা, জিনিয়া বিপক্ষ কক্ষা, তমি শর দীক্ষায় নিপুন। এই রূপ বহু রূপ, প্রেশংসি স্বরূপ রূপ, প্রকাশেন প্রভু নিম্ন গুণ। অতি ব্যগ্র শীঘ্রগতি,গঙ্গাগর্ত্তে গুণবতী, সীতা সহ সলক্ষণ রাম। খরা তরশ্বিনী ভীরে, তীব্রগতি দুই বীরে, তরণী তরণ পর ধাম ॥ তরিবারে ত্রিপথগা, জনক তত্ত্বাভুগা, অ**মুজে কহেন** রঘুবীর। जूमि रुष्मा पतावान, जती गर्स्ड मिजमान, নরব্যাম্র আরোহ সুধীর ॥ भिक्त मक्त आक्रमरन, मीठा मह आद्वाहरन, नाविष्कृत वाका वर्ष, त्नोका ভारम महा-मनारयां कत धनवान्। তপম্বিনী করে ধরি,মম আজ্ঞা শিরোপরি, धतिरव ना कतिरव विज्ञान।

ধরি, তরীর উপরি তুল্যে বীর। আরোপিয়া অবলায়, পরে লক্ষ্মণ ত্রায়, নৌকায় উঠিলা অতি ধীর ৷ তরণী উপরে তরাবান। জানকী লক্ষণ ভগবান্। পরে নিষাদাধিপতি, ওহ জ্ঞাতিগণ প্রতি. महामि कि कतिम আहम । সুমন্ত্র সারধিবরে, তরিতে সম্মতি করে, পরে পরে করিল প্রবেশ ॥ उत्री निकारे प्रिमामाचा अगल मुची, নাবিকে করেন রঘ্বীর। ভাগে কর হুরা করি,যেরপে জাহুরী ভরি, পর পার করহ মৃধীর। অনন্তরে রঘ্বরে, ত্রিপথগা পার করে, পারে মহাপারগ নাবিক। প্রেরিডা ভরণী ভীরে, জাগ করি ভাসে-নীরে, সোতস্বতী গঙ্গা স্বাভাবিক॥ প্রেরণ করিল তরী,রাম সীতা সঙ্গে করি भावभारम लक्षार लहेग्रा তীরস্ব ধহক স্ত,দেবিয়া অতি অ দুত, বাম্পথৰ হামে নির্থিয়া॥ वरा, कल कल कमल करहारिल। उक्र डेक डेर्नियात्रा, आक्टानिक महारमय, চক্র তারা জ্যোতিশ্যক্র দোলে ।

গ্লান্থার সলিস মাঝে, তরণী চলে অব্যাজে, যখন তখন তথা দীতা। জ্ঞানকী কনক লতা, রাম ভুরুহ সঙ্গতা, গঙ্গাকে কহেন মহাভীতা। রাম প্রণয়িনী ধনী, ধনিজ্ঞিত পিকধনি, भूत्रध्नि कति निर्वतन । দশরধ নৃপ সৃত, পিতৃ বাক্যে রাছ্চ্যুত, মহারাজ রাজ বংশ হন॥ রাজার প্রতিজ্ঞা রক্ষা, হেতু হরি রাজ্ঞ দীক্ষা,ভিকাশ্রম করিয়া স্বীকার। তোমার রক্ষিত দেবী, শুভদ সলিল সেবি, তব পুণ্যে হইবেন পার। ठलूर्फण वर्ष मीमा, इहेश इछ महिमा, जिभित्व गृतिस्थन वरन। অনুজ অবলা সঙ্গে, মহাক্লেশ সহা অঙ্গে, পুনর্কার গমন ভবনে 🛭 পরে দেবী সুসম্প্রদা, হইয়া মঙ্গলা স্পদা, পৃষ্ঠিব শ্রীপাদ পদ্মে তব। रहेशा मुखरमाष्ट्रिजा, मर्खकाम ममस्यिजा, শিরোপরি নিয়াছেন ভব॥ তুমি ত্রিপথগামিনী, ব্রহ্মপুর নিবাসিনী, ধরণী ধোতকারিণী হয়ে। উদক নৃপতি দারা, স্বস্থান হইয়া হারা, প্রকাশিলে পৃথিবীতে রয়ে সকল লোক পাবনী, ত্রিলোক শুভদা-য়িনী,তোমার শরণাগতা আমি। তোমার প্রশংসা করি, ভুবন পাবন তরি, সম্বামি দেবর নমস্যামি ॥

উত্তীর্ণে কানন বাসে, আসিয়া তোমার পাশে, প্রকাশে পুনশ্চ রামচক্র। मश्रुख मोगिबि मह, महम्मत् वर्हतह. পৃষ্ঠিবেন তব পদ চন্দ্ৰ 🚩 🐣 বহুবিধ উপহারে, প্রেম যুত হেমহারে, প্রাপ্ত রাজ্যে স্বকার্য্য সাধনে। ममग्रा इहेर्द भिर्द, निका मुमझन मिर्द, পাবে লক্ষ সদৃশ্ব গোধনে ॥ বহু বস্ত্র আভরণ, প্রেদানে সম্ভুষ্ট মনঃ. ব্ৰাক্ষণে বিলাব এই রূপ। ভোমার প্রিয় কারণ, করিব ব্রভ ধারণ, যখন হবেন রাম ভূপ॥ এইরপ বাক্য ছলে, সীতা চলি গঙ্গা-জলে, তরীচলে কমলে বরায়। বায়বেগ করি হত,তরী যোগে তীরগত, রাজসুত সমাশ্রিত তায়। পাইয়া উত্তর পার, দেবী পদে নমস্কার, নৌকার সম্ভার গেল দূর। दिद्रार्श लक्ष्यन महत्र जिला शहय तहत्र. গঙ্গাপারে প্রণতি প্রচুর। বানপ্রত্ব বেশগারী,চক্ষে বহে প্রেমবারি, রাঘব দীক্ষিত বনবাসে। সুমিত্রানন্দন প্রতি,আদেশেন মহামতি, কর মনঃ কানন প্রবেশে 🛭 তুমি হও অগ্রগামী,পশ্চাতে রহিব আমি, মধ্যে দীতা করিয়া রক্ষণ। অভ বিদেহ তনয়া,হয়ে সামি সমাশ্রমা, বন দৃঃখ জানিবে এক্ষণ

দঃখের অঙ্কুর উপস্থিত। রিভুবন অদ্ভত চরিত। मुमल दिन ठत्क, शांद्र कति मृष्टि तत्क, मूत्रदेश्ट शबात्वनी, मर्गात्र नावना त्वनी, পডে বক্ষে অবিরত নীর। সীতার সহিতে রাম, সলক্ষণ গুণধাম, কাননে চলেন দুই বীর॥ ধরামধ্যে ধনুর্দ্ধর, রঘুবংশ শোভাকর, দ্বিতীয় নির্জর ধরাতলে। পরে হৃত গুহ সেই স্থা निवृद्ध रहेश्रा जारम, भवन्भव स्त्रर्गारम, जभव ज्यव वर्रा, माश्म ज्या उपमर्ग, রাম গুণোল্লাসে বর্ত্তমান। কানন ভ্ৰমণ করে, আছর বিহুগস্বরে, বন ভূমি ভূক়হ সন্ধান ॥ ্সুপুষ্পিত অগ্রভাগ, তরুকুলে নানা রাগ বিভাগ করিয়া পক্ষিগণ। নিরখি অরণ্য শোভা,মুনি জন মনোলোভা, সুস্থ মনঃ শ্রীরাম লক্ষাণ ॥ পরে অতি দূর বনে,গিয়া ভ্রাতা দুই জনে, দেখেন অত্যুক্ত বট বৃক্ষ। क्रो घो ममाकीर्न, उथा श्रा वन ठीर्न, मिक्रिक कितिएन लक्षा॥ প্রকৃল সংকুল সমস্ত্র। চক্রবাক সমূহ সংগ্রস্ত ॥

সিংহ ব্যান্ত ঘৃষ্টি রব, করিবেন অনুভব, রামচন্দ্র জানকীরে, অনুজ্ঞ লক্ষ্মণ বীরে, नमी नीदा कतान मर्भन। এই রূপ রাজসূত, বিপিন গমন যুত, দেখ দেখ অবরজ্ঞ, পদ্মিনী হয়ে জলজ্ঞ, সংযোগে সরস সুশোভন। চিত্রকৃট নগেন্দ্রের শোভা। मिवा वादि वाहिनीत, मन वटर छज्नीत, মন্দাকিনী জনমনোলোভা ॥ পানীয় করিয়া পান, সলক্ষণ ভগবান, মৃগয়ায় মৃগহতা। করি। হইলেন অদর্শন, যুগল নৃপ নন্দন, হিতাশনে করি যোগ, পকু মাং সকুতভোগ. পিতৃগণে নিবেদিলা হরি ॥ প্রথমে পৃত্তিলা দেবগণে। দেব পিতৃগণোচ্ছিষ্ট, মৃগমাংস অতিমিষ্ট, ভুঞ্জেন সমীতা সক্ষম্মণে। ালের নিমিত্ত পরে, স্থির করি বটবরে, রহিলেন গ্রীরাম লক্ষণ। এই কালে গুহ হুত, मूमल मर्खन। পৃত, অনুমান করি দুই জন ॥ যত কৰ নিরীকৰ, রামচক্র গত বন, পরক্ষণে না দেখি নয়নে। বহুদূর পথে আর, না হয় দষ্টি সঞ্চার, ठकू **क**रण ভारा पूरे करन ॥ मुमर्भन। नाटम नमी, পचिनी वन मरमि, अत्योधा कारश्वत कथा, श्रवि ध्योक मुधा यथा, विद्मबंधः शका मखत्। হংসবংশ করে কেলি,কারগুবকুলে মেলি, সর্গ একোনপঞ্চাশ, শ্রবণে কলুম নাশ, শুদ্ধমনে শুন সাধ্ জন॥

85 मर्गः ।

পয়ার

ভাগোধ নিকটে নব দুর্বাদল ভাম। সায়ৎসন্ধ্যা স্থাপন করিয়া জীরাম। রমণী রমণ রাম রমণীয় কথ!। লক্ষ্মণের নিকটে কহেন হরি তথা। এই ভাই লক্ষ্মণ নিকটে আছা নিশা। নির্মে নিয্ক গণে সদা করে কুশা। জ্যোতির্গণ যেমন স্বজ্বন পরিহরি। সেই রূপ সীতাসহ আমারে আচরি ॥ मडार्गाय मृत्य यात्र याभिनी मर्खना। প্রেতনাথ সম মম দর্শায় প্রমোদা॥ ভীষণা ভৈরবরবা দেখ্যে যামিনীরে। না হউক তব ভয় সুদর্শনা তীরে। স্বন্ধনে সংত্যক্ত তুমি সুজন সৃস্থির। কি উৎকণ্ঠা এখানে তোমার আছে ধীপ্ন যে বাথা সে বাথা এই অরণ্যে আমার। वष्ट हिः मु পति পূर्व खतवा विखात ॥ সুমন্ত্র দাক্ষাতে নাহি চাহি কারু মুখ। এ জন্ম উদিয় নাহি হবে ভেব্যে দৃঃখ। অভাবধি গুণনিধি গুনরে লক্ষণ। তোমার আমার ভার সীতার পালন॥ कति रव किञ्चत कार्या निर्धाया अधर्मा। নিযুক্ত থাকিবে ভাই সাধ্সেবা কর্মে॥ **আন ভূণ সমূহ আমার শ**য্যা করি। আপনার সন্ধিধানে স্বশ্যা সঞ্চরি !!

সৃষ্টিরে পদ্মার তীরে সমীরে শয়ন। শুনিয়া সৃষ্ট্র চিত্ত সুমিত্রা নন্দন॥ বিলক্ষণ তৃণ চয় আনিয়া লক্ষ্মণ। সুরম্য রামের শব্যা করিলা রটন বুক্ষের পল্লব পত্র বুক্ষম কে বাশ্বা তথায় গ্রীরাম চিত্তে সস্তোষ প্রকাশ। मिट जुन भग्नत जिमित प्रत मन। মহামল্য ময় মণি শয়নে উপম॥ भयाय मञ्जी क तम हे यामिनी कांगत। জানকী অনুজ যোগে কথার বিস্তর॥ জ্ঞটাধারী বিচারি মানসে কতথান। । উপজে কতেক দৃঃধ না হয় সন্ধান হে লক্ষ্ণ বিলক্ষণ সময় সুন্দর। **অ**रयाधाम मुथभामी वृक्त नृপवत ॥ সকামা কেক্য়ী সেবা রসে সেবামান অধিক মনের ভূষ্টি স্কাভীষ্ট বিধান 🛭 রাজ্ঞলুকা অক্ষুকা অত্যন্ত নিন্দনীয়া। নৱাধিপে নিতান্ত আপন বশে নিয়া॥ আগত ভরত বীর নৃপতির দেশে। অঘ্য প্রাণ সমর্পণ সন্মাসির বে**শে**॥ অতি বৃদ্ধ নিরূপায় ছে। সূত হীন। বিনা ক্লড রাম সৃত অক্যন্ত মলিন। কেক্যীর বশে প্রাণ অন্ত মান যায়। দেখিয়াও না দেখেন নারী বশতায়॥ পিতার কামনা হেতু করি অনুমান। অভান্ত কপ্টের কাল হৈল বর্ত্তমান। অর্থ ধর্মাণ্ডভয়ের অধিকন্ত কাম। এই হয় মম মতি কহিছেন রাম॥

বিশেষে বিশের ভার বসুন্ধরাপতি কি লাজ সে বুদ্ধরাজে কাম পথে গতি। কে এমন বিশ্বান প্রমান প্রমোদার। ব**ে** বনবাসে ভাজে পিগুদ কুমার॥ নেবাত্ দাধ্ৰ সজ্জন স্বধর্মে হয়ে। স্থিত। প্রমদার প্রিয় কার্যো প্র<u>জাদি রহিত ॥</u> অকারণে অনায়াসে পুত্র পরিতাগ। প্রিয় পথে প্রবিষ্ট স্বপিতৃ কর্মে রাগ॥ . मुथी महा खाधवान क्विग्री मछान। ভরত ভারত ভূমে পুজের প্রধান॥ প্রযোদিত যথোচিত অধিরাম্ব প্রায়। ভূপতি হইয়া ভুঞ্জে ভোগ অযোধ্যায়॥ অषिठीय या मृथ जूरक्ष महातथी। नर्स द्राष्ट्र मृत्य मृथी मिहे मानद्रि । তাতের তাবত্বয়ঃ হইয়াছে বায়। অরণ্যে আমার গতি গত কপ্টচয়॥ य स्थान कतिया जात धर्मा जार्थ प्रया ্সে কেবল কামের বশতাপন্ন হয়। সেই জনে জানিবে অধিক কণ্ট পায়। অবিরত দশরথ নৃপতির প্রায়॥ বুঝিলাম বিশেষ সংশয় মাত্র নাই। নৃপতির অস্ত হেতু দেখিবারে পাই। বিশেষে আমার বন বাসের কারণ। महातां क टक्क्यीटक करतन शहन। অপর বিশেষ হেতৃ ভরতের রাজ্য। তিৰ কৰ্মে কেক্য়ীর উদাহ সংগ্রাছ ॥ অপর এখন সেই কেকয় ননিদী। স্বপতি সৌভাগ্ত মদে অহান্ত গর্কিণী।

কৌশলা। জননী পুজ বিরহিণী প্রায়। কেক্ষ্মী হইতে কি বস্ত্ৰণা নাহি ভায়॥ মম পক্ষে চিক্ত রক্ষা সদা সুমিত্রার। তপ্রিনী সুদীনা কি দশা কষ্ট সার॥ অতএব এই কালে সেই অযোধ্যায়। লক্ষণ গমন কর ভাবিয়া উপায়। আমি একা সীতার সহিতে যাব বন। দ্ই মাতা অনাথারে করিবে রক্ষণ। অতি কুতা রাজ্য মুদ্রা পাইয়া ইদানী। কলুষ নিশ্চয়া তাহে কেকয় নন্দিনী॥ সে নিন্দিতা কদাচ না করে লোক ভয়। আমারে সতত বেষ মনে অসংশয় ৷ সেই হেড় আমার জননী পীড়া পাবে। দেখিলে ভোমার মুখ জীবন জুড়াবে॥ অন্ত জাতি স্ত্রীলোক ষেমন পুক্র হীনা। कष्टे भाग्र भारेरव अननी मम विना ॥ চিরকাল আমার পোষণে মনঃ করি। জতান্ত দুঃখ ধারণ সূত্রত আচরি॥ ফল কালে আশা বৃক্ষ আমি এই তাঁর। কৌশল্যা কেক্য়ী হৈতে নিক্ষলা এবার। ধিক্ ধিক্ আমারে অধিক কিবা কর। কোন নারী হেন পুল্র না করে প্রসব। লক্ষণ আমি মাতার শোকের কারণ। অত্যন্ত দৃঃখদ দেহ করে।ছি ধারণ। উন্মন্ত ঐত্বর্য্য মদে হইবে ভরত। স্বামি সোহাগিনী না দেখিবে ধর্মপথ। গত প্রায় নপতি একণে বৃদ্ধ ওক। জ্ঞেষ্ঠ পুজ্ৰ বন গত অদ্ভূত কৌতুক।

শুক পদে রাজ্ঞ পদে কেক্দ্রী সন্তান। দশবিধ কথালাপে হয়ে হত মান ৷ জননী হইবে হত সম্বন্ধার প্রায়। শারিকা সমান অফুমান করি তায়॥ বেহেত থাকিতে আমি স্বামির সম্পদে এক মাত্র ভরত উদয় নভঃ পঞ্চে॥ তাবত্দে শুক পদ নহে সুখ প্রদ। আপনার শরীর রক্ষণ দৃঃখাস্পদ। সপদ্বী স্বভাবে জীবে অশেষ যন্ত্রণা। ভাজিবে কি ভরত সে জননী মন্ত্রণা। নানাবিধ স্থচনায় মন্দ ভাগ্যবতী। উপকার হত তার আমি কুসন্ততি। পুক্র পেয়ে। অপুক্রার কর্ম্ম দেই সুতে। অতি অপ্স ভাষ্যবতী জননী এমতে ॥ क्तिवन पृथ्य जातिनी मृत्यंत विनयः। এই মতি সম্প্রতি আমাতে সমুদয়॥ ব্দগতের বশীভূতা নহে বসুস্করা। সতত আমার শক্তি তারে বশ করা। তথাপি জননী ভাগ্তে কি কষ্ট ধারণ। ধিক্ ধিক্ আমার এ বীর্যা অকারণ ॥ অধর্ম সংপ্রাপ্তি ভীত লোক পরীবাদ। ভয়ে শক্ত হয়ে। पृथ्य প্রাপ্তি সুবিষাদ। मामान्ध कत्नत थात्र करहे बात्र कान। এই রূপ করুণা বিলাপ মোহজাল॥ ধৈর্য্য হত হয়েয় রাম করেন রোদন। বাষ্পপূর্ব জ্ঞ টাধর যুগল নয়ন॥ সুস্বরে বিলাপ ভরে নিরত রাঘব। खुल्छ जनम (यन ममुज्ज्ञ्च मर॥

माखुना करतन वीत तघुवीत वरत। লক্ষ্ম ণের বাক্য বারি নির্ব্বাপন করে। निवृक्त ममूख दिश मन्त्रवाम् द्यारिश। সেই রূপ মুক্ত রাম শত্রু রূপ রেচিগ। লক্ষণ কহেন রাম তুমি মহা লঙ্বা শোক বশীভূত হওয়া নহে যোগ্য তত্ত্ব। তোমার সমান জনে শোচনা না করে। মহা কপ্ত পায় যদি দৈবে কলেবরে ॥ এ নহে অধিক কষ্ট সঙ্গে আছি আমি। ইহাতে অসুখী না হইবে লোক স্বামি॥ সর্ব্ব লোকে চাহে রাম তব অভ্যুদয়। অনুরাগ হেতৃ সন্ত্রু সেতৃ দয়াময় 🏾 নিতান্ত দুৰ্দ্দান্ত যে অশান্ত পাপী জন। তারে অমুকম্পাবান্নহে সাধ্রাণ। মঙ্গলের নিমিত্ত সকলে করে তব। বহু কষ্টে পাপিরে না করন্নে রাঘব॥ বিপদে যাহার গুণ লোক শ্রবণীয়। অবস্থ মঙ্গল তার পরে ভাবনীয় 🛚 সে নহে তাহার কষ্ট সুবিশিষ্ট সুখ। কি কারণে বাসনে সুলান বিধ্মুখ। অভ তব বনবাসে অবোধ্যা নগরী। সমুদায় সুদৃঃখিতা তব দৃঃখ মারি ॥ প্রকাশিতা নহে পুরী অন্ধকার দিনে। माटक ना भर्वती यथा भभाक विशेषन ॥ সামান্ত জনের প্রায় এ পরিদেবন। এ নহে উচিত কোন উপায় কারণ॥ সীতার আশার মাত্র বিলাপের মূল। অত এব ধৈষ্য ধর হয়ে। অনুকৃষ।

আপনি আপন দৃঃখ করি নিবারণ। না কর না কর শোক লোক নিস্তারণ ॥ নিৰ্বোধ নিতান্ত শোক পদ্ধে মগ্ন হয়ে শীর্ণ হয় জীর্ণ দেহে দুঃখ পায় রয়ো ॥ क क्रेंगे कि नीर्व स्त्रीर्व किया (जाभारत। জ্ঞানকী কমল প্রাণ রাখিতে কি পারে ॥ আমিও অশক্ত নাথ জীবন ধারণে। জীবন বিহীন মীন বাঁচে কি জীবনে ॥ পিতা দশরথ আর শক্তম বালক। সুমিত্রা জননী আর বয়স্য শাবক ॥ ভোমা বিনা দেখিবারে না করি কামনা: মনে নাহি সুরপুর দেখিতে বাসনা। যথার্থ লক্ষ্মণ বাক্য করিয়া এবণ। বনবাদে স্থিত রাম পরম পাবন ॥ অশেষ বিশেষ শোক করিয়া খণ্ডন। অতি স্নেহে লক্ষণে করেন আলিঙ্গন ॥ শোকহৈতে দেখ আমি হইলাম মুক্ত। শ্ৰীরাম বিলাপ বিমোচন উপযুক্ত।

৪০ সর্গঃ |

ত্রিপদী

ব্টবুক্ষ মূলে রাম,করের রাত্তি সুবিপ্রাম, পরে প্রভাকরের উদয়। क, अवरलांक महाहर्य मह

্প্রাতঃসন্ধ্যা উপাসনা,করি ভাই দুইজনা, উদ্দেশ করিয়া সেই দেশ। গঙ্গাজলে করি স্থান,সমস্ত কার্য্য বিধান, নানারণ্য পৃথক প্রবেশ ॥ विविधविणिष्टी जुमि,नानाटमण नानाट्यमि, मत्नातम अश्रुख अमृष्टे। यमचि लांकित द्यान, मर्गान श्रुवा मञ्जान, অনায়াসে বিনাশে অরিষ্ট ॥ অপুর্ব্ব মঙ্গল পথে, চলিলেন মনোরথে, वङ वृक्ष कतिया मर्भन। কিঞ্ছিভাষ্ণর কর, নিবর্ত্তনে রঘ্বর, লক্ষণে বলেন সুবচন। নিকটে তীর্থ প্রয়াগ, দেখ ধ্ম শিখা যাগ, সমুখিত সুগন্ধি মিলিত। ভগবান্ বৈশ্বানর, দুখ্য শিখ মনোহর, নিকটস্থ সুনীক্র নিশ্চিত। मस्थाश मक्त एन, पक्रन पृथि पक्रन, যমুনা গঙ্গার সহযোগ। पूरे महानहीं जल, अकहरण कोलाइल, শ্রবণে বিনাশে কর্মভোগ। এই যে সমস্ত দারু, হোম হেডু শুক্ক চারু, ভগ্ন করি রাখে বনবাসী। ভরদান্ত দিক্তাশ্রমে, বহু বৃক্ষ মনোরমে, मृष्टे इय प्रथ तानि तानि॥ অন্ত পূর্ব্ব দিবাকরে, সুখে বহু ধনুদ্ধরে, বাস করে মুনির আশ্রমে। लागीतथी भूरागामरक,यमूना मरमर्ग ला- वारम रहाम विकित्ते , विकावारम निम्न। क्षे ইষ্ট সাধে কণ্ট উপরমে।

পুণ্যাস্থা সেবিত স্থলে,পাইয়াঅতিকৌশলে, আপনি করিয়া মত্,হয়ে মম অনুগত, লক্ষণ দীতার দহ রাম। ছিলাশ্রমে করিতে বিশ্রাম**।** मूनि वर्णनाकाष्क्राय, व्यक्ष न दाम भीषाय, कतित धर्मा । दर्श कल मूलाणन, नका कति कृषीतित बाता। তথায় দপ্তায়মান, মুনিবর করি জ্ঞান, প্রবেশ করান নিজ্ঞাগারে ৷ অগ্নিহোত্রী ক্ষিবর, যাগস্থিত মনোহর, মহাভাগবত অতি শিষ্ট। লক্ষণ দহিতে রাম, প্রণমিয়া গুণধাম, নিরীক্ষণ করেন বিশিপ্ত। নানা মৃগ পক্ষিগণে, সুবেষ্টিত শুদ্ধাসনে, সুস্থিত সতর্ক সাবধান। আগত সুঅভাগত, নিরীক্ষণে মনোগত, अक्र नामि करत्रन विद्यान्॥ স্বাগত সংবাদ মুনি, জিজ্ঞাসেন রঘুমণি, দিতেছেন আত্ম পরিচয়। **म**नतथ न्भवत. অযোধাদি রাচ্ছেশ্বর, তাঁর সূত এই ভ্রাত্রয়। नाम जीताम नमान, जानित्वन विष्करन, ভার্য্যা সীতা জনকের কন্সা। কল্যানী বাজকুমারী,পাণি গ্রহণীয়া নারী আমারি সুন্দরী ধরা ধন্যা॥ তপোবন উপগতা,আমার পশ্চাতে রতা भमन करत्रन वनवाम। পিতা পাচাইলা বন,আমাকে সভা কারণ লক্ষণ করিল অভিলাব॥

দৃঢ় ব্ৰত অনুজ লক্ষণ। মূগরায় মূগ মারি, স্বস্থ অন্তে রাক্ষসারি, গুম্মে বাক্য পিতৃ উক্ত,অরণ্যবাদেশিযুক্ত, ভুক্তভোগী প্রবেশিব বুন্ঞ 🐡 वहन छनिया मुनिवत। অত্যন্ত বিষাদ মনে,পরে সেই তিন জনে, পাত অর্ঘ্যে পুজেন সুন্দর॥ আসন উদক পরে, অঙ্গীকার সমাদরে, করিয়া সভোষ রঘুবীর। মুনি দ্ভ ফল মৃল, ভোজনীয় অনুকূল, পানীয় পাবন গঙ্গানীর॥ পৃষ্ণা লয়্যে প্রীত হয়ে, আত্ম পরিচয় कर्या, मुद्ध (मर्ट् वरमन जामान। ভরষাঞ্জ মুনিবর, ধর্ম যুক্ত মনোহর, হিত কথা কহেন তৎক্ষণে। আমার আশ্রম গত, পরম মঙ্গলান্থিত, অবগত হইয়াছি আমি। দশর্থ অকারণ, তোমারে পাঠান বন, হইয়া কৈক্য়ী বাক্য গামী॥ তুমি এই অবকাশে,যভপি আমার বাদে, আসিয়াছ অনুগ্রহ করি। অতি রমণীয় স্থান, গঙ্গা যমুনাধিপ্তান, भूग जीर्थ यथा खङकती ॥ স্বিখাত ত্রিভুবন, বৈদি তব হয় মনঃ, বাস কর আমার সহিত। **बहे वन माधातन, मकरणत उर्পावन,** নিকাসির নির্জ্জন বিদিত॥

এই বাক্য মুনি উক্ত, শুনি রাম বুক্তিযুক্ত,। शक्ष মাদন নিকটে, চিত্রকৃট গিরি বটে स्क मम माध्य रहन। ক্লডাঞ্জি করি পরে, রঘ্বীর মুনিবরে, क्रातन विष्मय निर्वामन । निवाम निवय शानं, मथा जूबि जगवान्, অমুগ্রহ সুগ্রহ বিস্তর। किन्छ এই इन मूनि, जशास निक्रे स्नि, আসিতে বান্ধব বহুতর ॥ थामारक क्रियत मत्न, ताङ्गा करत मर्स्व অনে, এ স্থানে উচিত নহে বাস। নতুবা পুণ্যদ ভূমি, সহায় সম্পদ ভূমি, পরিভাগে বাসি বহু ত্রাস ॥ कर मृति यरखम, अश्व भूगान आध्यम, वित्रम मकम एम खला। এ রূপ আশ্রম কহ,জানকী লক্ষ্মণ সহ, वाम कति शत्रम कुणाल । না জানে স্বজন গণ,সুখে থাকি হেন বন, ৰথা বাস উদ্বেগ রহিত। ঞ্জীরামের বাক্য গুনি, ভরণাঞ্চ মহামুনি, কিছু কাল হয়ে। ধ্যানান্বিত॥ ष्ट्रीय यथा कतिरव निवाम। এস্থান হইতে স্থান, যোজন ত্রয় প্রমাণ, তথা গিরি গৌরব প্রকাশ। महर्षि रमविष्ठ च्ल, श्रुना श्रव मृनिर्मान, मकन एउम मर्खकान। शोनां मून श्वायुष्ठ, श्रक किन मुस्मिविष्ठ, त्रमा मन्त्राकिनी वरह, मुभीष्ठन वाति तरह, চিত্ৰকৃট বিখ্যাত বিশাল॥

বাবত ভাহার শৃঙ্গ দেশ। मर्भन करतन नत्र, छात्र कन्यान शत्र, ধর্মে মতি এই সবিশেষ॥ मिहे इल वहउत, वहकाम मुनिवत, বাদ করি পরে তপোবলে। স্বৰ্গাক্ত হয়ে যান, তোমার বিশেষ স্থান, वाम वाथ यां अतर ह इतन ॥ अथवा मम निकर्षे, वाम कत अक्षकरहे, প্রকটে বা তব কিবা ভয়। সর্বাধারতে কৌশলে,আশ্রমে এইমগুলে, नहेया जीनका मीजाय । এই কথা সাঙ্গ পর, ভরষাজ মুনিবর, আতিথ্য করেন তিন জনে। অনুজ সহিত রাম, ধর্মলীল ওণধাম, থাছ করি মুনির সেবনে। 'जुक्तवल धिन मह, निवाम निड्झन त्रहः, नाना कथा कहिया तस्त्री। জাগেন যোগেন্দ্র সহ,রজনী প্রভাত অহঃ, উপস্থিতে উদয় তরণি ॥ কহেন শ্রীরাম প্রতি, শুন বলি রখুপতি, প্রাতঃসন্ধ্যা উপাসনা,করি পরে তিন জনা, ঋষির নিকটে অবস্থিত। ভরষাজ মুনিবর, কহিছেন রঘ্বর, গচ্ছ চিত্রকুটে মুরাম্বিত। লক্ষণ দীতা দহিত, হয়ে৷ তথা উপনীত, করিবে বিহার বলবস্ত। শোভার সীমার নাহি অন্ত॥

আমি এই জ্ঞান করি,সেই স্থলি পুণাকরী, রাঘব এ দেশ সব, দেখিবে শুনিবে রব, ফলোদকে রমণীয় হয়। তথায় মাতঙ্গ বহু, ভ্রমিতেছে মুহুমু হুঃ, সন্ধিকটে পুণ্য করী, যমুনা সুপুণ্য তরী, কুরক বিত্তর যথারয়। বিহার করিছে বনে, দেখিবে আনন্দ মনে, না করিবে অবহেলা, মকর ক্রুন্তীর নেলা, লক্ষ্মণ সহিতে দীতা পতি। ভালক ভালুকী ডাকে,পানীয় কক্কু টকাঁকে, ইহাতে বিহীন ভেলা,দৃষ্ঠ অস্ত করে খেলা থাকে থাকে কোকিল ভারতী। निनामिक तमरे नातम, धताधत व्यविवादमः মঙ্গ মঙ্গালয় হয়। মন্ত মগ বহুতর, ক্রীড়া করে সুকুঞ্জর, বাস যোগ্য স্থান রম্য ময়॥ অযোধ্যা কাণ্ডের কথা, मिष्टे ठान्मी मुधा यथा। তাহে তত্ত্ব কুধা নিবারণ। এক পঞ্চাপত সর্গ, হ্রুত মাত্র চতুর্বর্গ, **অপ্রিফল নিস্তার কার্ণ।** ७५ मर्शः।

ত্তিপদী ॥

্সেই স্থানে মান্যমানে,বাস করি নিশামানে, অবসানে শ্রীরাম লক্ষণ। ভत्रवास मूमिवटत, ध्वनियश ममानदत, গিরিবরে করেন গ্মন ॥ গমনে উভোগী দেখি, মুনিবর মহাদৃঃখী, निवातिया नयरनत क्रम । **उ**श्राम्भ (हम महाव्या)

না রহিবে কদাচ এ বনে। তরিবে ছরিতে তিন জনেশী বহিছে বিস্তর বেলাগণ। · সঞ্চিনী অবলা পরি**ভা**ন॥ পর পারে নাতি দূরে,মহাবৃক্ষ সুপ্রচুরে, कलम कलिनी मर्खकाल। वृत्कत यावज् भनं, मकलि इतिज् वर्न, সুঞী রম্য ভগোধ বিশাল॥ নানা অন্ত্ৰগণাবৃত, ভামবৰ্ণ সুশোভিত, দীতা এই বুক্ষের নিকটে। নমস্কার করি পর, ইচ্ছা অনুসারে বর, আকাজ্জা করুন এই বটে।। ক্রোশ মাত্র গিয়া পরে,দেখ নীলগিরিবরে, সুশোভিত কানন তথায়। পলাশ বদরী বংশ,ব্যাপিত অনেক অংশ. অনৈকাম্গণে শোভা পায় ॥ সেই চিত্রকৃট বরে,কত বার গিয়া পরে, वर्ड्जन करता हि. मणः व्यामि। मुत्रमा आञ्चम वर्षे, शमरम विशेष घर्षे, বনদোৰে নহি তথা গামী॥ এই রূপ উপদেশ, সে পথের পরিশেষ, वरना मूनि निवर्छिन। श्रेत। চিত্রকুট গিরিপদে, গমনে সম্পদ পদে, খ্রীরাম লক্ষণে কোল,দিয়া আনন্দে বিছ্বল সীতার প্রণতি গ্রান্থ তর ॥

মুনিবর পরাক্স্থে, জ্রীরাম অভ্যন্ত সুখে, পাক করি মগমাংস,দেব পিভূগণ অংশ कहिएइन मञ्जलतंत्र छोछि। অনুকম্পা করিলা সুমতি॥ वह करवानकथरन, शदत छाहे पूरे खतन. সঙ্গে সীতা অগ্রে অগ্রে করি। কালিন্দী নদীর তীরে, উপস্থিত রঘবীরে, নাবিক লইয়া ধায় ভরী॥ काश्वमश्री मुख्रती, जाशास्त्र तास्त्र निमनी, উভোলন করে। র্ঘ্মণি। আপনি ভাতা সহিত, তরণীতে উপনীত, সন্তরণ করিয়া তথনি। তরী করি পরিহার, যমুনারে নমস্কার, অপূর্ব্ব অযোধ্যাকাঞ্জে,বনবাস রসভাণ্ডে, मूनि डेलिष्टि वहेमाल। শীত ছায়া মনোহর, সুশোভন তরুবর, সুমন্দ মারুত পারুকুলো ॥ বৃক্ষকে অচিচ রা পরে, সীতা কুতাঞ্জলি करत, প्रार्थना कतिला এই वत । শন্তর আমার ঘরে, চিরজীবী রন পরে, ক্লপা করে। অযোধ্যা ঈশ্বর॥ ভর্ত্তা চির জীবী হন, করি এই নিবেদন, लक्षनामि मकल प्रवत । रकी मना। वित्र की दिनी, जना छ मनल दानी, এই বর ভিক্ষা বৃক্ষবর্॥ थ्रमक्रिन जिनवाह, वाहसाह नमसाह, গমন করেন শীত্রগতি। काम माळ शिशा शह, नीलवर्तन ह्युवह, নুগগণে নাশি রঘপতি॥

অর্গিলেন রঘ্বংশধর। কৃতার্থ যথার্থ পুণ্য,ছিল ভাই সেই জন্ত, পশ্চাতে প্রসাদে প্রীত,মৃগমাংস মনো-নীত. বনচর বেশে গুণাকর। मिहे वन পরিহরি, পথ পরিক্রম করি, मिथिलन मग्रालु ताघत। वत्न वह विश्वम, कर्ल कृत्न मरनातम, উৎক্রষ্ট সুপুষ্ট মৃগ সব॥ অনন্তর রঘবর, বাস হেতু মনোহর, শিবদ পুণাদ নদীতীর। उथा तरह शक्त तह, यम यम अहतह, तरुः चात्न तरुन मुधीत ॥ यमुना नमीत जीदत वाम। ঞীল মহতাব্চত্র, মহীস্থ মহা মহীত্র. আজ্ঞায় রচিল বিপ্রদাস। ৫२ मर्गह।

পয়ার।

অভঃপর রঘুবর গুণাকর রাম। সেই নিশা গতা আশা উষার বিশ্রান। রঘ্বীর চক্ষেনীর করিয়া নিক্ষেপ। লক্ষণের উত্থানের উচ্চোগে আক্ষেপ। मन्म मन्म बन्नु बन्दु मधुत्र निश्वन। হে সৌনিত্রে শুন চিত্র ডাকে পক্ষিগণ ॥ বহুতর পিকবর উচ্চস্বর বনে। বারসার শব্দে তার আছন কাননে॥

পথশ্রম সুআশ্রম সন্ত্রম বিহীন। নিক্রা যান হত জ্ঞান উপনীত দিন॥ নামবর্ণ পরিচ্ছন কর্ণে প্রবেশনে। ব্যস্ত ভাবে উঠিলেন কাকুৎস্থ তথনে ॥ নিদ্রা তার্গ কষ্টভার নাশে জাররে। গত ভ্রম পথ শ্রম হত ক্রমগণে ॥ প্রত্যথানে জ্ঞানবান সন্ধান গমনে। मु का यन नहीं सन यूथ श्रकानता। প্রাতঃকিয়া সমাপিয়া সন্ধ্যাদি বন্দন। অপ্রকটে চিত্রকুটে করিল। গমন॥ শীজ্রগতি রঘ্পতি গিরিপতি পথে। সমুদ্দেশ উপদেশ মতে মনোরথে ॥ অপক্ষণে চিত্রবনে হয়ে। উপনীত। মীতা প্রতি রঘুপতি বাক্য সুধান্বিত। দেখ প্রিয়ে প্রকাশিয়ে প্রফুল নয়ন। কিবা চিত্ৰ স্বিচিত্ৰ চিত্ৰকৃট বন ॥ यानिनी कुम्य त्यानी यन्ताकिनी छीत्तः। কিংশুক অশোক বক পংক্তি পুষ্পশিরে। আলো করে গঙ্গানীরে কিংশুকের ফুল। প্রদীপ্ত উদ্দীপ্ত রবি ছবি অমুকূল। চমৎকার কর্ণিকার স্বর্ণাকার ফুল। इटक इटक द्रांटक नहीं मूवर्व मृकृल ॥ ভলাতক তিশক কেতক সকেতকী। কাঁটাল হিন্তাল তাল তমালামলকী। ফল ভরে শোভা করে ভ্রমরে মঞ্জিত। জীবন জীবন রক্ষা কর রসাম্থিত ॥ এই বনে অবস্থানে আছে সুখোদয়। पूर्ग इत्या वर्गभात्र ठिखकू हे तम ॥

मिथ श्रिय नित्रिया अष्ट्रांत नयन। মধ্ভরে মধুকরে শোভা করে বন ॥ বিহ্সম সঙ্গম কি মনোরম স্থান। ডাকে ডাকে থাকে থাকে সুস্থ হয় প্রাণ্॥ শুনি ধনি প্রতি ধনি করে নীলকণ্ঠ। অস্ফুট ভাল কুরুট অগঃ করি কণ্ঠ॥ পরপুষ্ট করে তৃষ্ট কুহু কুহু রবে। গায়ক নায়ক গুহে গায় যেন যবে ! প্রতিম্বন কানন করিছে হয় জ্ঞান। পুষ্পোপরে ভ্রমরে গুপ্পরে স্থিম্ব প্রাণ॥ মন্দাকিনী কামিনীর কমনীয় স্থল। শ্যাকারে সজ্জীকৃত কুসুম সকল। करम करम् जरम जरम जमही निष्य। নদী নীরে বৃক্ষশিরে তীরে পুষ্পাময় ! সুশীতল শিলা তল বিমল সুন্দর। লতা নমুমানা তাহে বিতান বিস্তর 🏻 অতি রমণীয় স্থল কমনীয় কান্তি। যুকোমল দেখি স্থল পলায়িত। প্রান্তি॥ মাতঙ্গ উভকুষ কত মূথে মূথে রয়। বিহৃত্বম মনোরম করে রব চয় 🛚 অশেষ বিশেষ বেশ কুরক্সের কুল। क्षिङ कानत्न ज्ञात्र वात्रात्म विश्रव। এই শৈলে ভোমার সহিতে সুখে প্রিয়ে। ভ্রমিব ভূধরে অঙ্গে অঙ্গ সমর্গিয়ে॥ এই স্থলে সুকোমলে আমার সহিত। পাইবে প্রম প্রীতি সুরতি বিহিত॥ पिरित मुमूथी यत मनाकिनी नमी। त मनीय मर्गनीय रेणलाख मःमित ॥

পরে রাম গুণধাম চিত্রকুটে যান। নানা কুসুমিত তক্ত তথা বিভাষান। महर्चन्य मनिएन बावुड निवादिएन ভার তলু তুরুমূলে অতি সুশীতলে॥ আশ্রম উত্তম তথা করিয়া শ্রীরাম। লক্ষ্ণ জানকী সহ করিলা বিশ্রাম। আনিয়া মাতক ভক্ত তরু দারু সব। বনান্তর হৈতে অতি সানন্দ রাঘব॥ লতা পাতা রচিত উচিত চন্দ্রাতপ। নিবাহিতে নিরমের হবি চক্রাডপ ৷ রচিলেন রমা গৃহ পৃথক্ পৃথক্। পর্ণশাল সুবিশাল সুরম্য রোচক 🗈 পর্বশাল পরিষ্কার করেন শোধন। শ্রীমান লক্ষ্মণ যাতে হয় সুদর্শন। . পবিত্রা মৃত্তিকা লয়ে। জনক নন্দিনী। লেপন করেন পক্ষে পক্ষজনয়নী ॥ আশ্রম রচনা করি কহেন লক্ষাণে। রামচত্র সুমধুর পবিত্র বচনে। অতি মনোরম মৃগ কর আহ্রণ। শীত্র চারু মাংস চরু করহ পচন। সেই সৃপবিত্র পাকে করিবারে যাগ। আশ্রম দেবতা গণে দিতে অনুরাগ। সুযুক্তি রামের উক্তি করিয়া প্রবণ। নষ্ট করি ক্লফ মৃগ আনিলা লক্ষ্মণ॥ করি মৃগ আহরণ জ্বালিয়া ইন্ধন। পরিদার পাক তাহে করিলা লক্ষ্ণ ॥ ক্লভাঞ্জলি কহি**লেন শুন জ**টাধর। হুইল প্রস্তুত পাক সাঙ্গ রঘুবর॥

কর যাগ অনুরাগ যেরপ অন্তরে। আকাজ্জিত দেবে সেব নির্মাল অমবে ! লক্ষাণের বচনে শ্রীরাম কুত স্থান। যথা বিধি জপাদি করিয়া সমাধান ॥ দীপ্তানলে মন্ত্র বলে অর্পিলেন ঘৃত। দেবতা সহিতে পিতৃগণে পরিমিত ॥ পবিত্র পত্রের পাত্রে করি পরিবেশ। অর্পিলেন দেবে পিতৃগণে পরিশেষ ॥ ভূতগণে বিধানে দিলেন বনে বলি। পশ্চাতে লক্ষ্ণ সহ হুইয়া কৌতুহলী ॥ হুত শেষ ভোজন করেন দৃ**ই** ভাই। পূৰ্ণালে পূৰ্বপাত্তে দৃঃখ মাত্ৰ নাই॥ পরিবেষ্টা সদা চেষ্টা স্বামির সম্প্রীত। পশ্চাতে ভোজনে সীতা যথা নারী রীজ বহুবিধ বিহুঙ্গের সুবিচিত্র নাদ। মনোরম কুসুমের সৌরভে উন্মাদ 🛭 নগোভমে নরোভম স্বদারা সহিত। সলক্ষণে সেই স্থানে অসংখ্য সম্প্রীতঃ চিত্রকুটে চিত্ররূপে বহে মন্দাকিনী। চন্দ্র শেখরে ষেমন শিখরিণী॥ পুষ্পা ফলে কুলে অনুকৃলে দিবাগতি। নিবাস নিয়মে তথা রঘুবংশপতি॥ অযোধ্যায় বনবাসে চিত্রকুট গিরি। निवान निन्छत्र यथा (मवी नुदत्रभती ॥

৫৩ সর্গঃ

नच् जिभनी।

বাম গিরিবরে, দেখিয়া সভরে, গুরু সুমন্ত্রের সহ। গ্রহাপার গত, রাম পরিণত, কত শত বার দেহ। সুমন্ত্র সহিত, নিজপুরে স্থিত, কিঞ্চিত্ বিলম্বে স্থত। গুহ আজা লয়ো, যত অশ্ব চয়ে, যোজনা করিছে দুত। পুরী অযোধ্যায়, স্থত ষবে যায়, পীড়িত অতি অন্তরে। আত্মীয় রমণী, নরগণ ধনি, শুনিতে দেহ বিদরে। সর্ব্ব খূন্ডা পুরী, বিহীন মাধ্রী, भक्र शैन नित्रानम्। यठ श्रुतवामी, नुश माम मामी, क्ट नर्ह महानम्॥ নির্জনে যেমন, লান পদ্ম বন, রব না করে জমর। (मर्थ এই क्रभ, मृभूती विक्रभ, সুমন্ত সুমন্তি বর॥ रुश्या অতি দীন, निठास मिनन, প্রবেশে শৃষ্ট নগরী। রত্ব বহু তর, করীন্দ্র বিস্তর, তুরক কুরক ভারি॥

হয়ে হত শোভা,জন মনোলোভা, (भौकांनल मन नत्र। यावजीय स्त्रन. नाती नत : ४. বিষয় বিমনাঃ রহে ॥ এই চিন্তা করে, অযোধ্যা নগরে, প্রবেশে স্থত চিন্তিত। রাম শুন্ত রথে, হত মনোরণে, দশরথের বিদিত # মক্তিবর যায়. দেখিয়া তথায়. ख्धांत्र महमुखन। সর্ব্ব গুণধাম, কোথা বল রাম. এ সর্বে জন জীবন॥ मुमञ्ज मकला, कहिएइ कोणला, ভূতলে হয়ে উন্তীর্ণ। भन्ना प्रवी जीत्र, त्रास्था त्रष्वीत्त्र, হইয়া অতি বিশীর্ণ॥ আজ্ঞা লয়্যে তাঁর,দেখ্যে গঙ্গা পার, हहेलन त्रचुপछ। সীতা সমন্বিত, লক্ষ্ণ সহিত, চিত্ৰকৃট গত ইতি॥ মজিবর স্থানে, শুম্মে হত জ্ঞানে, যত পুরবাসি বর্গ। खल পরিপূর্ণ, নয়ন বিঘর্ণ, **(मर्ट्स वह डेशमर्ग)** অহো অহো ধিক্, কি আর অধিক, इहेनाम প্রাণে হত বহুতর খেদ, গ্রীরাম বিচ্ছেদ, বাক্য এই রূপ যত

সুমন্ত্র সার্থি, এই রূপ পথি, জনগণ বাকা শুনি। আমি কি নির্লজ্জ,প্রাণে ধরি ধৈর্য্য, অজিয়া অমর ধুনী॥ विट्मबंकः द्राप्तः प्रता अভिताप, পরিহরি ধরি প্রাণ। श्रुनः অযোধ্যায়, আসিলাম হায়, কি ধন লইতে দান। मना महादमक मर्वन मृत्रक সতত জন সমাজে। नर्स मृख्या श्रुती, विशीन माध्ती, কি করি রব নির্লাজে ! विना त्रघ्वत, स्म नत कूछत, সর্বেক্তন আকাঞ্জিত। কি নাম ঘোষিব, কি দিয়া ভোষিব, কি দেখো পাইব প্রীত। এই রূপ বহু, চিন্তা মুহু মুহিঃ, করে। পরে আর্ত্তনাদ। श्रुत नातीशाल, मकाल द्वामान, कत्रया ताम विवाम ॥ नातिथि कि कछ, ह्रा ताम शृच्छ, কোথা করে। পরিতাগ। অযোধ্যা নগরে, কি সুখে বিহ্রে, ' পুনঃ করে অনুরাগ॥ এই রূপ অস্ত, শোক হত গণ্য, বচন শুম্মে নার্থি। जेयम् हिखिछ, नभग्न उँहिछ, বিভিত ভাবিয়া পথি ॥

তাজি সেই পথ, যথা দশরণ, তথা গিয়া উপনীত র্থ হৈতে পথে, হত মনোর্থে, মঙ্গিবর জরান্বিত 🎚 নরবর প্রুরে, দেখিছে অদুরে, मश्राध थय मुथ । শোক সমাবৃত, নরেক্স আশ্রিত, সর্বজন অধোমুগ। পুরী হত শোভা, নহে মনোলোভা, প্ৰভাহত যত জন। शहत नत्रवत्र, नातीश्रव खत्र, অস্থির পরিবেদন ॥ लामादम लामादम, तामछन नादम, विशासिकारिम मिथात । জীরাম সহিত, গিয়া বনে হিত, বিহিত কেন না করে॥ রাঘব রহিত, হয়ে উপস্থিত, কি হিত কারণে মন্ত্রী। जारगंधा नगात. श्रीतमन करत, কি তত্ত্বে হয়ে। সুতন্ত্রী ॥ कि (यम कि थिम, अमग्र मस्यम, শুধারে কৌশল্যা রাগী। স্থৃত কোথা রাম, সর্বগুণ ধাম, কি কথা কবে না জানি॥ জন্মমাত্র জীব, শিব কি অশিব, মরণ হয় নির্ণয়। সমাগত কালে,দুঃখ মিলে ভালে, মরণ বুঝিবা নয়॥

নতুবা ভদ্ধনে, পুজে দিয়া বনে, कोमना जीवत तह। রাজ্জী গণের, এই বচনের, वर्ष (छ। मित्रर्थ न दूर ॥ সতা এই বাণী, পদে আমি মানি, भाकामरम पर्र (सर्। রাজ গুইে যায়, উৎক্তিত কায়, সারথি করে কে স্নেহ। প্রবেশ করিয়া, অতি ক্ষীণ হৈয়া, রাজারে দেখিয়া দীন। অহান্ত উন্মনঃ, উন্মন্ত লক্ষণ, পুত্ৰ শোকে অতি কীন॥ **२७ यठ तल, मञ्जामि मकल,** শোকানলে অভিড্ত। निकछेड हरमा, किছूकान तरमा, দেখিয়া অতি অদ্ভুত॥ করিয়া প্রণতি, চাহিয়া নূপতি, বলিছে রামের কথা। করে৷ ক্রভাঞ্জলি, বিস্তারে সকলি, কহিছে কাননে যথা॥ করিয়া ভাবণ, সম্রান্ত চেতন, নপতি সংজ্ঞা রহিত। আসন হইতে, পতিত মহীতে, দৃঃখিত শোকে মৃদ্ধিত। न्ल न्लामनं, छाती नातीशन, দেখি পুরস্থিত যত। বাহু প্রদারিয়া, নরেক্রে ধরিয়া, তৃলিতে সবে উন্নত।

পতিরে পতিত, ভূমিতল গত, সুমিত্রা কোশলা আদি। त्रभी मकरम, (मर्थ) अरकीम्राम, वल श विधि कि वामी॥ কালের উচিত, বলে উপনীত, তব সূত পুর ভাগে। দৃষ্ণর কানন, তাজিয়া সজ্জন, আইল ভোমার আগে॥ কেননা জিজ্ঞাস, যেন হত শ্বাস, ঘণায় লজ্জায় তুমি। कृषिजरण मूठ, नृभ उठ उठ, কি লজ্জা এ তব ভূমি॥ এনহে সময়, শুন মহাশয়, তনয় কি লজ্জা তায়। যে সুত কাননে, মোহ্ সে কারণে, জিজাস নাকেন হায় ॥ क्मांठिज् यमि, क्किशी विवामी, তুমি গুণনিধি তাত। স্ত উপস্থিত, বিজ্ঞাসা উচিত, সুখ দুঃখ বিধি হাত ॥ এই কথা বলে, রাণী শোকানলে, मका इत्या मृष्ट्री यात्र। পতিতা ভূতলে, নয়ন কমলে, मिल ভাসিছে কার॥ করিয়া বিলাপ, বহুতর তাপ, পতিরে পতিত দেখে। भारके मुरमाहना, कक्षण नियना, काँ एक एक इस दिया।

পুরন্ত্রী গণের, শব্দ রোদনের,
ভাবণে ভাবণ জ্বলে।

কৈ বৃদ্ধ তরুণ, সবে সকরুণ,
ভাসিছে নরন জলে॥
গৃহে গৃহে নারী,কাঁদে শারী শারী,
না পারি সহিতে দুঁঃখ।
রাম গৃহ্য রথ, মৃচ্ছা দশর্থ,
সকলে রহিত সুখ॥
রামে রেখ্যে বনে, পুনশ্চ গমনেসুমন্ত্রের অযোধ্যায়।
চতুঃপঞ্চাশত্, সর্গ তাহে গত,
ভাস্থে সাধু মোহ পায়॥

७८ मर्गः।

পয়ার।

অনন্তর নরবর সৃত্তির চেতন।
ধরাধর পীচোপর দৃঢ়তরাসন॥
জিজ্ঞাসেন স্থাতে নৃপস্তের বচন।
তুর্ণ জ্ঞাপূর্ণ চক্ষুঃ সৃদীন বেমন॥
পরিহ্রি বনে করি নবীন বন্ধনে।
নগরে রোদন যথা করে প্রতীক্ষণে॥
আশা নাশ দীর্ঘাস অতি উষ্ণতর।
বারন্থার তাজে আর অপার কাতর॥
রথে রেণু পূর্ণ তন্তু সম্মুখে সারধি।
করে কর করি রহে মারি দাশরধি॥

চক্ষে বহে জল ধারা ধরাধর ধারা। স্থতে সৃত প্রশ্নে বাক্য নিমীপিত তারা। হে সুমজ্র মজিবর রঘ্বর রাম। সৃহানে কুহানে কোন্ হানে গুণধাম॥ कर कर तर्हें तर जरतर कथा। কোথাথেক্যে কোথারেখে দিতেএলে ব্যথ কোনৃস্থানে বিসর্জ্ঞানে রাঘবেরে ভূমি। আমার নিকটে এল্যে এ অযোধ্যা ভূমি। রাম রমণীয় অতি কমনীয় কায়। ক্ৰিনীয় দৃঃখ নহে সহিষ্ঠা তায়॥ ভূপতি নন্দন ভূমি শয়নে কেমনে। রহিবেক রাজীব লোচন রাম বনে 🛚 কি প্রকারে বিজ্ঞানে অত্যন্ত যোর বনে বীর চূড়ামণি গুেল চলিয়া চরণে ॥ नना निश्र मार्जिन मकून मिर इन। অনাথ জনের প্রায় যাত্রা সুকোমল॥ যে জনার গমনে পশ্চাতে গামী নর। অশ্বরথ অসংখাক কুলাতি কুঞ্জর ॥ সূকুমার অঙ্গ যার শিরীয কুসুম। পদব্রজে রামব্রজে ব্রজে গুণ ভ্রম 🎚 সুকুমারী তপস্বিনী জ্বনক তনয়া। রাম অনুগতা দীতা দাধী দর্বজয়।। কোটী কোটী কণ্টকে কুটিল দুর্গবন। কি রূপে যাইবে রাম চাপিয়া চরণ। অপ্রমিত তেজম্বী তনয় সুকুমার। বিশেষতঃ অনুগত লক্ষ্য তাহার **॥** ভক্তিভাবে ভ্রাতৃ অনুগামী গুণাকর। তুমি সিদ্ধ ক্লভার্থ সুমন্ত্র মন্ত্রিবর॥

হৈ হেড় মম কুমার শ্রীরাম লক্ষণ। তপস্যায় দীক্ষিত কর্যেছ নিরীক্ষণ ॥ নর নারায়ণ ঋষি তৃপ্য সুতম্ম। কি কহিল কহ সূত রাম দ্য়াময়। কি বলিল সুকোমল সুমিত্রা সন্তান। সামি প্রায়ণা সীতা সাধীর আখান ॥ গমন শয়ন আর ভোজন বিষয়। **कार्याधा क्याधि वन मीमा ममूनग्र** ॥ অশেষ বিশেষ শেষ বৃত্তান্ত সকল । সীতা রাম **লক্ষ্ম**ণের গমন কৌশল। **এই প্রশ্ন শুনি মন্ত্রী নরেন্দ্র বদনে।** সমুদায় কথা কয় সজল নয়নে ॥ পুরী হৈতে পরিসীমা অশেব বিশেষ। यर वार्खा वनयाजा यर उपाममा এই উক্তি উক্ত হয়ে৷ নপ মন্ত্রিমূপে ৷ রহিলেন চিত্রিত পুতৃলী প্রায় দৃঃখে॥ পরে স্থত রামের সন্দেশ বাক্য কয়! ক্লভাঞ্জলি পূর্ব্বকে কথিত সমুদয়॥ রামচন্দ্র নিতা নত নরেন্দ্র ভোমারে। কহিলেন আলিঙ্গন করিয়া আমারে॥ শুন স্থত হয়ে। দুত করিবে গমন। মম কুডাঞ্জি নৃপে জানাবে যখন॥ অগ্রে হয়ে বিনীতমন্তক প্রণমিয়া। নৃপেক্র কুশল বার্তা অগ্রে জিজাসিয়া॥ পরে পিতা জিজ্ঞাসিলে আমার মঙ্গল। কহিবে নৃপতি তব মঙ্গলে মঙ্গল ! তব অনুগ্রহে অনুগ্রহী চিরদিন। শা করি শোচনা শোচ্য নহি ভবাধীন !

কি দোষ নুপের দোষ আমার লালাটি রাজ্ঞ নাশ বনবাস দৃঃখ পরিপাটী ॥ জাত মাত্র জীবের যাতনা সুথ যোগ। ভবিতব্য মতে ভূপ কুভোগ সুভোগ অতএব আপনি আমার শোচা নহ। আমি নহি তব শোচ্য ভাবি অহ্রহ : यिन हां आयात कलाा नत्त्वतः। না করিবে শোচনা না হইবে কাতর। নিতা তুমি আমার সকল মাতৃগণে। জিজাসিবে কুশল কৌশল সুবচমে : অশেষ বিশেষ রূপে করিয়া প্রণতি। অভিবাদনাদি কর্মা সুনীতি পদ্ধতি সমাপিয়া সমুদায় কোশলা নিকটে ! আমার কুশল বার্তা কহিবে প্রকটে ৷ মম শোকে সুকাতর ভ্রমক স্তত। জননি কুকথা না কহিবে রবে নতঃ করিবে শুশ্রুষা নিতা স্বামির সেবন। আমাদের শোকে শোচ্য নহেন যেমন। श्चनर्खात आभात गमत जूष्टी तरद। মম স্বেহে নৃপে নাহি নিশ্বাস ভাজিবে : কহিবে ভরতে মাত্র এই কথা ভূমি। সদা লাঘ্য তোমার সম্প্রাপ্ত রাজ্য ভূমি 🛚 সমভাব ভাবিবে সকল মাতৃগণে। নরাধিপে পৃষ্ঠিতে রাখিতে শুক্রমতে।। তোমার সেবায় সদা রহেন সন্তোষ। এই রূপ করিবে না লবে কোন দোষ॥ ইতাঃদি অনেক বাক্য ধর্ম রক্ষা বায়। কহিলেন দ্যাম্য শ্রীরান সামায়॥

বাষ্পবারি পরিপূর্ণ তোমার সন্তান। ক্রন্ধ আন্থা হ**ইলেন মন বিভ্**ষান॥ নির্দোর্গ লক্ষ্ণ অপ্প রোষ সমাশ্রিত। সুমিত্রা তন্তুজ বাক্য তিক্ত সুধাত্রিত। কোন অপরাধে অর্নুরোধে পুজ্র ধন। জিজাসিবে হৃত পিতা পাঠান কানন। আমি রামানুজ কিবা অপ্রিয় তাঁহার। করিয়াছি কুকর্ম ফলিল ফল তার ॥ রাম পরিস্তাগে কিছু না দেখি কারণ। কেকয়ীর প্রিয় হেতু পুজে দেন বন 🛚 অথবা কেকয়ী লয় পুর্বের বরদান। পুত্রে বন সে কি দান সাধ্ সমাখ্যান ॥ कीर्छि भर्म विक्रक गाहार् वृक्ति ताथ। নহে কথা যশস্করী নহে সাধু বোধ॥ সৎপুত্রের সৎকার সকলে কইর তাই। পিতা इत्या कानत्न পाठाय छनि नाहै॥ আমার সভত এই হেতু মেহ ভাগ। না জনায় যথার্থ জনকে অনুরাগ দ পিতা মাতা সূহুৎ আমার অভা রাম। বন্ধ গুরু লোক প্রিয় নাথ সুখধাম 🛭 এমন সন্তান গুণ্বান কুল শ্রেষ্ঠ। हाघरव माघव नाहि मना मुख रक्षत्रे 🗵 ै তাঁরে রাখি কাননে কেমনে রাখ প্রাণ। ভরত হইতে ইছা কর কি কল্যান॥ ভরতের বিভ্যমানে নৃপ সন্নিধানে। এই কথা কহিবে সার্থি সাঝানে॥ যভপি শ্রীরামচন্দ্র হইতে কল্যাণ। বাঞ্জা কর ভরত থাকিবে সাবধান 🛭

মাতৃগণে যতনে জানিবে সম ভাব। সকলের সেবায় করিবে ধর্ম লাভ ॥ পবিজাগ কবি বাজ্ঞ বিষয়াভিমান। কহিবে সহিবে নিভা রহিবে কল্যাণ॥ জানকী জনক সূতা ছাজিয়া নিখাস। বাষ্পবারি আন্ত্রীভূত পরিধেয় বাস ॥ অতান্ত চিন্তিত চিন্ত চতুৰ্দ্দিক চেয়ে। অদৃষ্ট ভাবিষা কষ্ট চিত্তে সম্বরিয়ে॥ রাজকন্তা ধরা ধন্তা তায় বশন্বিনী। অশপূর্ণনয়না সুদীনা নিভন্মিনী ॥ ভাল মন্দ কোন কথা না কহিয়া সতী। শুক্ষমুখী নিরীক্ষণ করি নিজ পতি॥ বাষ্পবারি পরিতাগ করিয়া কেবল। আমার নিমিত্ত দৃশ্ব চকুঃ ছল ছল ॥ রাম গুণধাম অঞ্চ পরিপূর্ণ মুখ। ক্লভাঞ্জলি করিয়া শোকার্ত্ত ভেব্যে দুঃখ উদ্দেশে প্রণাম করি তব পদ্ধয়ে। শোকে সমাকুল চিন্ত সীতারামভয়ে। পঞ্ পঞ্চাশত সর্গ সাক্ষ সমুদার। জীৱাম **সন্দেশ কথা কাণ্ড অ**যোধ্যায় : ७० मर्नाः।

শঘু ত্রিপদী।

গ্রীরাম কথন, করিয়া শ্রবণ,
নৃপদীন হীন প্রায়।

গ্রীরাম সন্দেশ, শুনিব বিশেষ,
শেষ কহু পুনরায়।

নুপতি বচন, করিয়া শ্রবণ, রোদন বদন স্থত বাষ্প কণ্ঠ অতি, সম্বোধি ভূপতি, রাম শোকে অভিভূত ॥ ह्हेग्रा मखान्छ, त्रायत बुङान्छ. একান্ত বিস্তার করে। रुत्या छाषेत्र, परे मत्रापत्र, वक्क शतियां शति॥ হয়ে গঙ্গা পার, নরেন্দ্র কুমার, প্রয়াগ মুখে সঙ্গত ! নৃপ অনন্তর, শ্রীরাম অত্তর, হয়ে পর অশ্ব যত ॥ वाष्ट्र वाति शूर्व, भतीत विघ्वं, कुर्व कतिया त्रापन। রাম মুখ চাহে, রথ নাহি বাহে, **८इश ८**६ त्रध्नस्त ॥ नृश मुख ६८म, क्रुडाञ्जल १८मा. माँ जारत साइन्दी छी दत । भूनद्राध्यम, नरह यय यनः, ডাকেন যছপি ফিরে। তোমার গৌরবে, গুহু আদি সবে, রাঘবে করিয়া দষ্টি রামে অনুরাগ, গৃহ ধর্ম ভাগে, না ভাবি বিভাগ সৃষ্টি॥ কি কব অপর, আমি তো কিছর, সহজে কাতর প্রাণ। বনে ভরু কুল, রামে অনুকূল, আমল সমত লান ॥

সপত্র শুবক, অঙ্কুর নবক, পাবক প্রদানে যথ।। नमी नम शंव, सदांच्या दमन, করিছে রোদন তথা। यणिन श्रस्त, कुल न्ल छन, দ্বিশুণ পদ্মিনী গুণ বিগত কিরণ, তক সমীরণ, नियन हीन विखन। মৃগ কুল লান,রামে করি ধ্যান, করিলে প্রস্থান ভামু। न। करत हार्त, थाछावधार्त्त, অঙ্গমে অড়িত জানু॥ नक नक भकी, बाहात উপেकि, স্থির তর বুকোপরে। ब्राय्युक्त वष्टन, क्रिब नित्रीक्रण, নীরব রোদন করে॥ खनक्छ यठ, यहारन मर्यठ, नरह जरह न्श्रवत। इन दिउ छन, नरह निर्धाञ्चन, স্বস্থান সংভ্রপ্ত নর 🛚 পরে তব পুরে, পথি দুরাদুরে, পুর জন পুরে যত। ঞীরাম শোচন, না করে যে জন, না দেখি দে জন কড 🛚 অবোধ্যা নগরে, মম কলেবরে, নারী নরে নির্বিয়:। নিন্দে অনুক্ষণ, কি পাপী এ জন, এলো রামে বলে দিয়া॥

एः त्थं एट्ट छक् , विना ताम नक. कि तम चक्र देशनीं। कि इत कि इत, त्राम त्राम तत, কত দিন ববে প্রাণী। वियात श्रीयात. ना प्रतथ कि मात्न, खीवत कि मान रिश्या छात्री निकाशहर, श्वाटक नगदर. নাগরী না ধরে ধৈয়া: हाम काती वाचि. इत्या श्रुहशासी, দেবে স্বামী মম মুখ: अधेशा व्याकृता, तिर्दर्श विष्ठता. চক্ষে ধারা ভাবি দঃখ इस्र) व्यक्ति मीमा, महीमा छाठीला श्रकीश मर्ख मात्रहों। অযোধ্যা প্রধেশে,নিন্দিছে বিশেস সহি শেষে সে কি করি কছে অহে পাপ, মুমন্ত্র কি তাপ দিলে আলাপ এ মাত্র : काशा (१ (व) दास्म, मर्ख छन्यारम, স্বধামে দহিলে গাত্র কি ভব গরির, কি চিত্র বিচিত্র, নিত্র কি অমিত্র সবে निवास खवीन, किना উप्तासीन. मर्ख्या खनत्त । প্রহান্ত পীড়িত, আমি পরিচিত, এই কি উচিত ভূপ। जरत ভाবে भार, ना प्रिय विरूष কি কৰ বিশেষ ৰূপ :

नश व्यक्ति मीन, भूतवामी कीन, পীড়া মলিন বছন। ল্লান উপবন, ষত বৃক্ষ গণ, সুস্বহে কোন জন। রাদিত মদিত, অভ্যন্ত পীডিত, ধোরতর শন্দ করে: निहानक प्रश्न, डेंड्साट मध्य, না করে শরীরে নরে ৮ नाहि दश्हेकात, पश्चम मधात, बोबाकात त्य करतः গতে বাম ধনে, শকুলিত ছনে, বেষ্টিত ভব নগতে रेष्णामि अत्यक्ष, जीतांच विद्यक, टान सम्बाग ककः इन्द्रके, खनरव कुल्डि, पामिक भडाच पृथ्य । राष्ट्राति अनं, अजिमीन उनं, কহিলা ভূমিপ ভাষা -মিগা উপচার, করিয়া প্রাচার, (करुशी कट्ट कि मणा: होंग (भिष्ठ, न) करत किभिन्छ, মন্ত্রণা সুমন্ত্রি সহ। প্রমাজ ভান, পর গুরুগ্র, সভাৱিত মহরহ॥ পাইবারে ভাপ, ছিল কোন পাপ, জিজাসা না করি কারে। সহসা বিষ্টু, হুইলাম কটু, কেক্ষী নিগড়াগারে 🛚

ভবিতব্য যাহা, কে খণ্ডিবে তাহা, हाहा कि विधि निर्मग्र। শিব শিব শিব, কি আর অশিব, द्राम विरम स्त्रीय द्रम् ॥ न कति वातन, मृध्य निवातन, সে মর বারণ রামে। ভুমি মন্তিবর, নিবারণ কর, রঘবরে আন ধামে : বিনা রঘ্বরে, আর কলেবরে. ধরিতে না পারি আমি বাম গ্রহ্ম নারহে জীবন, শ্যন ভ্ৰন গামী। কিন্দু গভায়াতে,বিলম্ব ভাহাতে, মন্ত্রি বজ্কাল হবে : বলে শীঘ্রগতি, স্থাপি মহামতি, শ্রীরামে দেখাও তবে সে নর কেশরী, স্কন্ধ আহা মরি. মহাবাহু মন কোথ! সুমিত্রা নন্দন,কোথা বা লক্ষ্ণ, নন্দন সম্ভান যথা 🖁 বদি প্রাণে স্থিত, জানকী সহিত, দেখক এ পাপি জনে ! পূর্বচন্দ্র কান্ত, বদন সম্ভান্ত, দেখিতে কি পাব বনে : সুচার নলিন, দল সুলক্ষ্ मुर्लाहन घम अहि . यमि ना मिथिन, स्त्रीतन कास्त्रित. যাইব শহন ধাম।

সুমন্ত্র সূপ্রিয়, স্বতঃ প্রকীয়, यमि उर करता शकि। তবে কি অধিক, মম প্রাণাধিক, দেখাবে দেখিব বা কি । রাখিবে জীবনে: অতি স্যত্তেন. রাম প্রবাস সলিলে বাষ্প শোকচয়, বেলা ভাহে বয়. অগাধ ভীষণাত্রলে ! কষ্টে হয়ে ময়, অতিশয় ভয়, সুযোর তরঙ্গ ভ্রমি। রাম শোকার্ণবে, কি হবে কি হবে ममा हो हा तत्व अभि : नुश्रुल विद्याश, এই মহারোগ, দৃঃধে আয়ুঃ প্রায় গত এলোক সাগ্র, অভান্ত দ্বর, নিপ্তার কর নিয়ত : হার্মে সুভুকা, হাহার্মানুকা, পান্তভ্ৰতে কে বৈদেনি সুদংখ পাঁড়িত, অনাণ প্রমৃত, कानिया मर्भन स्मिहि : কে গাড়ে এমন, হে রখনদ্ন, পুঞ্জন দৃষ্ত কারী। অন্তর্গত প্রাণ, ততোধিক প্রাণ, রামধন বনচারী 🤋 দেখিতে না পাব, যমভূমি বাব. রোদন রাঘব রবে -এই রূপ তাপ, করণা বিলাপ, कतिका इनिड पति।

দুংখে হও নীত, মৃত অমুমিত,
সহসা মৃচ্ছিত তায়।
পতিত ভূতলে, হাহারাম বোলে,
সঘন কম্পিত কায়।
হইয়া নির্জীব, পতিত পার্থিব,
বিমূচ করুণ অঙ্গ।
উপরি ধরার, পড়েয় পুনর্ফার,
দেখিয়া দুঃখ তরঙ্গ।
জমিল মমতা, পরে রাম মাতা.
কাদিয়া করিয়া তাপ।
অধ্যোধ্যায় ভাষে, বিপ্রিপ্রেদানে,
কোশলা পতি বিলাপ।
ও৬ সর্গ্র

পয়ার ।

হত জনে গত ধনে সৃদুংখী যে রপ
নপতি পতনে ধরাসনে সেই রপঃ
কান্দেন কোশলা। দেবী কার্য়াবিলাপ।
সৃমন্তের প্রতিবাক্যে এরপ আলাপ ।
লও লও সৃমন্ত রামের সন্ধিধানে।
যথায় যশসী পুজ দেখো বাঁচি প্রাণে।
স্মন্ত সারথিবর কর অবধান।
বিনা রাম নাহি রহে পাপিনীর প্রাণ।
এ দেহ ধরিতে নাহি উৎসাহ আমার।
সারথি লইয়া চল যথায় কুমার॥
কর রথ কানন গ্রমনে সুস্জ্রিত।
রামের নিকটে চল হয়েয় স্বরান্বিত॥

যছপি না যাবে যথা কুমার আমার। শেৰ যাত্ৰা করি ভবে দাক্ষাতে ভোমার চকুঃ জলে ভাসি বলে সুমন্ত্র সার্থি। ক্লডাঞ্জলি পূর্ব্বকে ভাবিয়া দাশরথি॥ কৌশল্যার প্রতি স্থত করিছে আখাস। কল্যাণি না কর শোক না ছাজ নিখাস নাহি কর সন্তান বিয়োগ জন্ম শোক। সুখী রাম তথায় যেমন দেব লোক ॥ লক্ষণ লক্ষণ যুক্ত চাপিয়া চরণ। भूशी मर्खकान जांत वन गर्ट वन স্বধর্মে নিয়ত সদা করি শুদ্ধাচার। পরলোক প্রাপ্ত নন রাঘব কুমার : कानकी निर्द्धान वान ताम वान वरन। र्ना जी मार्ग भी को उद्धा यथा **यर्ग इरल** । न (इस निकीं नी ना तास कच्छा वस 🎚 🗝 চিত প্রতিভা প্রভা যথা স্থর্যা সনে 🗉 নগরে শোভিতা সীতা মধোধ্যা আরামে পূর্বের যথা তথা বনে রঞ্জিতা শ্রীরামে : नः कत स्माहनां प्रति देवएमधी कातन পুৰ্চজ নিভাননা জানকী যেমন 🔻 অতুল সম্প্রীতি লাভ করেন জানকী। সুখদ সম্প্রীতে যথা সুখে রহে শুকী॥ রাম গত হৃদয় জীবন রামাধীন। অযোধ্যা অটবী প্রায় হৈলে রামহীন ॥ পথে২ দীতা দশরথের সন্তানে। জিজাদেন স্থানকী সন্তোষ প্রাপ্তা মনে কোন্বন এ রন নগর রখ্বর। क्यणाक कर् अहे कान् मदबादत ।

ংহ সুহৃদ এ সরিত কিবা ধরে নাম। প্রীরাম লক্ষণ মধ্যে করিয়া বিশ্রাম। **औतिक तामत** मात्य कथला मर्मान। বিরাজেন বিধুমুখী নছে মুখ লান 🛭 পথশ্রম সম্ভ্রম বিভ্রম মাক্র নাই। সন্তাপ রহিতা দীতা মুখে সর্ব্বদাই॥ সদাব প্রভাব অঙ্গে সর্বেদা সীতার। কোন হানি ঠাকুরাণি না হয় সঞ্চার ॥ শতদল সুনির্মাল শশি সম দ্যতি ৷ বদন নয়ন জ্যোতিঃ না হয় বিচাতি : অলক্তক যাবক জিনিয়া পদতল। **সহজেতে প্রভাতের আদিত্য মণ্ডল**া मिने क्रेश हास्त्र तक हा जी देत श्रीय নৃত্র্র রহিত গঞ্জে বঞ্জনে তপায় ॥ ক্ষিতিভলে খেলিছেন ক্ষিতীক্র কুমারী! ভতার অনুগা যথা কমলা সুন্দরী ॥ সিংহ বনমাতক শার্দিল নিরীফণে। উদ্বেগ রহিতা সীতা সর্ব্বকাল বনে : স্বামি বীষ্য বলাশ্রয়ে নিভয়ে গমন তথা তব পুজ্ৰ রাম সুমিত্রা নন্দন দেহে ল্লানি কোন মানি না হয় শরীরে পরস্পর প্রিয় ভাব দৃই রঘুবীরে 🛚 প্রিয়বাদী বিসম্বাদী নাহি কোন स्नत। পিতা মাতা পুভৃতি ভাবনা শৃত্য মনঃ ॥ উভয়ে উভয় হিত হিত জানকীর। না কর শোচনা দেবি চিক্ত কর স্থির। উপ**হিত চরিত যে সকল সংপৃতি**। আচরেন পক্ষণ জানকী রঘপতি !

এই সব স্থাতি রহিবে তিন লোকে।
মনঃ হির কর দেবি পরিহর শোকে।
মহজম রছ্জম মহর্ষি সমান।
তপানার তনয় তোমার বর্তুমান॥
সত্যে রত মহাব্রত মহা তপঃকারী।
মহাঝা মুনীক্র বৃত্তি কলমূলাহারী॥
স্মস্তের সৃন্দর আশ্বাস হিত কথা।
ক্রবণে জীবনে তুষ্টা নষ্টা মনো ব্যথা।
তথাপি তনয় পি্যা কোশল মন্দিনী।
প্রলাপ আলাপ ত্যাগ না করেম রানী॥
প্রিয় পুক্র লালসে নরেক্র বর জ্বায়া।
আখাসে বিশ্বাস নাহি শোকদক্ষ কায়।
অংশগ্যায় সংক্রথা কৌশল্যা সমাশ্বাস।
সপ্ত পঞ্চাশত্সগ্র ভবে বিপ্রদাস॥
সপ্ত পঞ্চাশত্সগ্র ভবে বিপ্রদাস॥

ত্রিপদী

নৃপতি শোক বিহ্বলে, নিময় শোক কলোলে, শয়ন সমুদ্র সমতুল।
পশ্চাতে মূর্ছিত তাপে,কৌশলা নাথে
আলাপে, জলপূর্ণ নয়ন অতুল !
বারস্বার আসে যায়, প্রাণ মৃতজন প্রায়,
কহিলেন রাণী এই কথা।
যভাপি নরৈক্র তব, ত্রিভুবন অনুভব,
যশঃ পুঞ্জ পদ্মকান্ত যথা !

তথাপি তনম বনে, পাঠাইমা ত্রিভুবনে, मिहे यणः निर्याम श्नष्ट । এই রূপ অনুমান, মম চিত্তে বর্তুমান, হা নাথ অনাথ এ কি কষ্ট ॥ কে আছে এমত জন, পরম পিয় নন্দন, অকার্যা করণ ত্যাগ কারী। সে পুজে পাঠায় বন, হয়ে পতিশ্রুত জন, বিশেষতঃ নপ দশুধারী ॥ রাজাভিষেচন জন্ম,আনিপুল্র অগ্রসণ্য, অরণ্যে অর্পণ কি উচিত। যদি পিয়পত্নী পক্ষে,সহায়তা করে রক্ষে, শুভ চক্ষে চাহি বরার্পিত। তবে ভূমি কি কারণ, শ্রীরামে অভিষেচন, পতিজ্ঞা করিলে নৃপবর ! অসত্য বাদিম হেতু, চিত্রবন্ধ ভয় সেতু, ভার্যা পক্ষে করিয়া নির্ভর 🛭 আনীত জানিত সৃত, সৃপ্রিয় পরম পৃত, বাক্য দন্ত রাজত্ব প্রামে। ত্রী হেতু কামের সেতু,বন্ধ করে ধৃমকেতু, তারা পায় ভয়দ বিমানে। অধিক কি কব প্রিয়,হইলে অজিতে স্প্রিয়, সভোতে সস্তামৃত, সভাহীন জন মৃত, দেখ তব উভয় সমান। না করিয়া স্বিচার, পক্ষপাত পুতীকার, সত্তরূপী ভগবান্, বৃষরপে অধিষ্ঠান, না দেখি জগতে বৰ্ত্তমান ! সর্ব্রদা অমৃত বাদী, কেবা তব প্রতিবাদী, স্বর্গ আর অন্তরীক্ষ, ধরণী ধারণাধ্যক, मिवाय मध्यक मर्ककान। ঈম্বাকু নৃপতি বংশ,সভাবাদী সভাঅংশ, সভাধর্মে করে বল,মনে করে যে সকল, বিখ্যাত সকল কিতি পাল ॥

সেই বংশে জন্ম তব, প্রতিজ্ঞায় পরাভব योवताका नाहि मिला तारम। वित्रमिन अहेरणांक, च्यित मकन लाक কলঙ্ক রহিবে তব নামে। পূর্বেব ব্রহ্মা প্রজাপতি, সত্য পরীকায় মতি, তুলাদগু করিয়া ধারণ অশ্বমেধ দশশত, এক তুলে অবস্থিত, অশুত্রে সত্যকে ধারণ 🛭 তৃলিয়া আপন করে, প্রজানাথ দেখ্যে পরে, বহুষজ্ঞ হৈতে স্থা ভারি এই হেতু সাধ্জন, করেন সভারকণ, যাবৎ জীবন সভাচারী॥ নাহি দতা সম ধর্ম,তিনলোকে অম্পর্কর্ম সভা হৈছে সোম প্রাপ্ত হয়। সোমপ্রাপ্ত হৈলে পরে, ব্রহ্মলোক পার নরে, অন্তে হয় অমৃত সঞ্যা। জলে জন্মে অগ্নি ধারা, অগ্নিহৈতে বসু-ন্ধরার সকল প্রাণিগণ। मरण्यत मक्षारत त्रवि, जाशक वरमन कवि, সভ্যে শশী করেন প্লাবন। সত্ত হৈতে প্রতিষ্ঠিত লোক। নাম ধর্ম সদা হত শোক ॥ मक्रमाज कर निर्मातन। মতা লোক গৃত মাধ্জন

लाक वि लाक करत, भठक्कु हरत। त्थ्रियमीत मित्रा धता, तारम वनवामी कता, পরে, সাধ্ পথে করয়ে গমন। দতাবাদী রাজাগণ, প্রতিজ্ঞা করি পালন, দেই দেই লোক প্ৰাপ্ত হন। যে পথে পথিক বিধি,সেই পথে যত্ৰাৰিধি সতের সম্মত চির যথা। সাধুমতে নৃপবর, দুই পথ মান্ড তর, অহিংসা অপর সতা কথা। মুখা ধর্মা অধিধান, প্রতিষ্ঠিত বর্ত্তমান, সেই ধর্মাধ্রণ তরে। কুতধংসী কি আর অপরে॥ এই ধন্ম তবাশ্রয়,ধর্মে থাকি মহাশয়, মন্থন করিলে যশঃ সিন্ধ। প্রস্থান প্রদাবে গন্ধ, প্রদাবয়ে মকরন্দ, প্রতি বাত নহে এক বিন্দু॥ धर्माष्ठ अश्वर्त गन्न, मन्द्रात श्रुगागन, पृष्टे गन्न ना रुग्न ममान। অগুরু চন্দন অতি, মহামূল্য মহানতি, চির দিন নহে বর্ত্তমান ॥ যথা গন্ধ কীর্ত্তিনয়, সাধুর চিরস্থ হয়, তথা নয় অন্ত গন্ধ গণ। এই छ। इत शक्त, उद क्रुड मूपूर्वक, চিরকাল চরিবে ভুবন ॥ অন্তভ প্রধান কর্ম, নাশিয়। সমস্ত ধর্ম, हिंदि जमर्था मरवदमह । এই কর্মে অনুমান পর।

এ ধারা কি ধারা ধরাপতি। कहिত किक्सी यमि, निवातिया मृश्यनमी, রাঘবে বিনাশ মহামতি॥ এমন ধার্মিক তুমি, প্লাকিতে লইল ভূমি, দ্রভ কি ছিল বল তায়। আমার কপাল ক্রমে,না যাচিল রঘৃত্তমে, প্রাণ রক্ষা পেল্যে পুত্র যায় ॥ কি কহিব প্রাণ দহে,এ অতি অদ্ভত নহে, ঈশ্বর অভ্যন্ত বলবান্। দেই ধর্ম হে রাজন, তুনি কর উৎসাদন, স্বলে দুর্বলে ধরি,অক্লেশে সংহার করি, যত্ত স্লেপগুর সমান। पिथ अहे नद्राणांक, ताल वनाधिक लाह्क. দুর্বলৈ অক্লেশে হানি করে। বিজ্ঞানে যেমন করি, বলে ধরি করি জরি, সিংহ নাশে অক্লেশে সন্বরে॥ শ্রীরাম আমার সুত, বল সত্ত্বে ধর্মপুত, पूर्विण रहेण धर्मा প্রতি। পরিহরি মনস্কাম, কাননে গেল সে রাম, ত্যাগ দিয়া আমারে সংপ্রতি॥ দৈব বাক্য দারা ভূপ দেখ দেখি অপরূপ, তোমারে পাইয়া মহীপাল। तारम किवा প্রয়োজন,পরকার্য্য অন্বেয়ণ, অতি মন্দ আমার কপাল॥ অসত্য ভোগের জন্ম,কি আর কহিব অন্ত, অরণ্যে ষ্থ্র যায় রাম। জুণহত্তা বহুতর, করের ছিলে নরবর, আমি অত্রেগিয়া তার,করিয়া বাহু বিস্তার, বিস্তর বিনয় করিলাম

हन श्रुक्त श्रूनः घात, यानक धतिया कात्र, त्य या कात्र छान कारु, तम मां अखारी कहिन ना याहेत सन्ति। बनवामी व्याम हव, यश्चम मुस्टित तद, ত্যজ্ঞিব এ অযোধ্যা অবনী॥ স্বামি সন্নিধানে যাও;ক্লপা করি ক্ষমা পাও, এই সত্য করিবে পালন। क्रमत्क जेश्वत यथा, जावित्व मा कत्व कथा, এই সত্যে না হবে চালন ॥ এই কথা বারন্বার, দাক্ষাতে কহি আমার. তুমি গো আমার জন্ম রাণি। व्यामात पृथ्य पृथ्यिनी, इहेग्र। जुनि जननि, না কবে জনকে কক বাণী 🖟 स्य दारका উष्टिश इंग्न, शिष्टा इन दार्थामग्र, সে বাক্যেতে নাহি প্রয়োজন। এই রূপ বছ রূপ, কি কব অধিক রূপ, করিল সে রাখ্য শাসন দেই আমি তব দারা,তোমার শাসন ধারা, थत्त्र् आष्ट्रि नृश ित निन। তথাপি সন্তান স্নেহে,জীবন সৃস্থির নহে, কহিলাম কুবাক্য কঠিন ॥ मधा (भाक महार्गत, बरनाष्ट्रि मन ताचरव, ্মম চিত্ত বশীভূত নয়। নত্বা কি প্রয়োজনে,মন্দবাক্য প্রিয়জনে, আমার সমান জ্ঞানে কয় ॥ সংকুলে সম্ভবা আমি,ম্বরণ থাকিতে স্বামি, সুবিনয় জানি বহুত?। এই লোকে নারীনর,শভাবে সুন্থির পর, মধর অথবা উগ্রতর 🏾

নহে, পুজের বিরহে মহীনাথ। কহিনু কদৰ্যা ভাষু বাতে বশঃ কীৰ্ত্তিনাশ . অপ্রিয় কথন প্রিয় সাত। তুমি সুমধর ভাষী, বচন অমৃত রাশি, মম ভাগ্য বশতঃ কঠিন। ভাগ্য মন্দ জানকীর, কি অভাগ্য রঘ্বীর, সুমিত্রা সন্তান ভাগ্রহীন। তুমি অত্যন্ত আত্মীয়,একণা কি চিন্তনীয়, देवत आलाहनीय मकन। নতুবা তুমি ভূপাল, কি মন্দ মম কপাল, कल कारल इंहरल निकल नि*हरा (मार्यत खन्ध, खामारत न। करि অন্য, এ জগত্বস্থার নির্মিত। या करतम छाडे इग्र, श्रुत्वय ८५ श्रिक नग्र, সেই হেতু এ দশা আশ্রিত। महे द्रामहळ गुड,इत्या एव आब्हाशंड, সংপ্রতিজ্ঞা করিতে পালন। এযোগ্যা করিয়া ভ্যাগ, অপ্রতিম সুখরাগ, পরিহরি প্রবেশিল বন ॥ পুর্বমতঃ দৃঃখারস্ত,কৌশল্যার উপাল্স্ত, অষ্টাবিক পঞ্চাশহ সর্গ। জীরামের বনবাস, কে,শল্যা নূপ সম্ভায়, ভাষায় छनङ् मात्तर्श॥ उन्मर्गः।

श्रमात् ।

ক্রোধভরে কৌশল্যার বোধের অপ্সতা বছবিধ বিলাপ বিস্তব্নে রাণী রভা ॥ না পেয়্যে বোধের পার কহিছেন পুনঃ স্থ্যবংশ পতি পতি তথা নহে ৪৭॥ অনিযুক্ত উপযুক্ত রামে, ভক্তিমান। বামের পশ্চাতে রত সুমিত্রা সন্তান ॥ প্রেমভারে রঘ্বরে করে অঙ্গীকার সেই সৃত শোচনায় প্রাণান্ত আমার। অভিষেক নিবৃত্তি প্রবৃত্তি বন পথে। टाम्मान का किया निक्या मनवर्थ । পত্রবাণ ধারণ করিয়া ধতুর্দ্ধর। নিঃস্ত বিষ্ম ত প্রায় ধান ধীর বর॥ ক্রোধে হয়ে কম্পিত কনিষ্ঠ ছেষ্টপ্রতি। কহিলেন যে সকল হয়ে। ভ্রান্ত মতি॥ यगुरह डेथिडं अधि ना कहिया ड्वान। ধর্মাত্রা ধনুদ্ধারণে করিলা সন্ধান॥ কোপে তাপে তরুণ অরুণ তুলা নেত্র। ক্রোধে ধান মন্ত করী প্রায় ভূজে বেত্র। क कतिल ताम ताक डिप्फ्म विधान। ইহা বলি রামচক্রে সৌমিত্রি সুধান 🛭 तारम जारम मन्य कथा हरक वरह भीत। সেই মুখ স্মরি মম দহিছে শরীর॥ र्रा जांज वध्मण स्ननी कति छात। রামের পশ্চাতে বন গমনে সুরাগ। অন্ত আমি বন্ধ পুত্র বাৎসলোর ডোরে। রামাপেক্ষা অধিক তাহারে নেত্র ঝোরে॥

জনক নৃপতি অতি মহাঝা মহেক্র : তাঁর সূতা জানকী ভজিল রামচক্র 🛚 অনিন্দিতা দেই সীতা করিয়া মারণ। অভ্যন্ত উত্তাপে হয় বাসনা মরণ॥ বিধম্থী জানকী জনক নুপতির। অতিম্নেহে পালনীয়া কোমল শরীর॥ শীত উষ্ণ বর্ষণ সহন করে কায়। দেহেতে থাকিতে প্রাণ একি সহা যায়। দর্বদা শীতল গুহে শ্রম হয় যার। কেমনে অরণা ভাপ সঞ্ হবে ভার ॥ সভাত উত্তাপ বহে বসুন্ধরা **তলে**। কেমনে চটুলা বালা চক্রমুখী চলে। दङ्विधं मध्यामि साम् खवा हरा। আসাদনে যে অবলা পরিভৃপ্তা নয় বন্সদল সকল অতাম্ভ তিক্ত তর। কটু ভক্ষে কোমলার সুনিশ্ব অন্তর॥ মহাম্ল্য মণিময় মন্দিরে শয়ন। রমাশ্যা উপরি বিরা**জে সর্বেক**ণ 🏾 অরণে। নুপতি কন্তা শ্যা পর্ণশালে। হা বিধি কি বিধি তব কি না করে কালো বেণ বীণা নিস্বনে নির্জ্জনে নিজা তায়। কাননে সে কেমনে জ্ঞানকী নিদ্রা যায়॥ ঘোরতর বহুতর পক্ষিম্গ রব। বিধ্মুখী রাম বধু লভে সুখোদ্ভব ॥ পূর্ব্বে যে অপূর্ব্ব বস্ত্র করে পরিধান। কুশ চীর ধারণে কেমনে বাঁচে প্রাণা मुन्दत लगाउँ यात मुहातः कुछन । পদ্মকান্ত মৰি প্ৰায় বিত শত দল ॥

ব্রণ হীন বদন দশন মনোহর। সুতরু সুহ্নু নেত্র পরম সুন্দর। পূৰ্ণচক্ৰ সমান সুমুখী সৰ্ব্বকাল। বনে হবে সমীরণে মলিন কপাল প্ভাকর খরতর ক্রিত বদন। বিবৰ্ণতা প্কাশে স্মারিয়া দহে মন ॥ সূতনু মনুজ্ধন্ত পুল্র দাশরথ। যশস্বী তেজস্বী যাত্রা করে বনপথি 🛚 नशकुलक्ष भील भीतम मुन्दत । কি অবস্থা প্রাপ্ত বনে কণ্ট বহুতর॥ নিশ্চয় কাননে যাতে ধরণী শয়নে। সর্বদা বিরাজ যার রাঙ্কব আসনে 🛭 वाङ्गृण अलूकृण भीर्ष উপধান। কেমনে নিজিত বনে দৃঃখিনী সন্তান পদাগন্ধ গাত্রে যার সুবিচিত্র কেশ। পুর্বচক্র বদন মদনতুহার বেশ II श्रवामन निर्माण नयन यत्नाव्रतः। কবে আমি দুর্শন করিব রঘ্বরে 🛚 বিধাতার কি পাৰাণ গঠন হৃদয়। রামহীন কঠিন জীবন মম রয় 🛭 🖰 বিদীর্ণ না হয় শত সহসু প্রকার। এই সব কট্ট নৃপ কারণে ভোমার॥ এ সকল কুকর্ম ত্রিলোক বিগর্হিত হুইল তোমার ক্লভ এই কি উচিত॥ महावटन नन्द्रत क्यारन शाहाहेग्र।। ধরাতলে রহিয়াছি পাপ দেহ নিয়া॥ ষ্ঠাপি শ্রীরামচন্দ্র সতে হয়ে। পার। शक्षमण वर्षि (मर्ट्म व्याटम श्रूनर्वात ॥

এই यে অযোধা। রাজ্ঞ লক্ষ্মী ভূমি দিলে क्या विष्यु पूज पृत्र पृथ्मी ला। উৎক্রষ্ট সন্তান রাম জ্বেষ্ঠ শ্রেষ্ঠ বীর। ভরত উচ্ছিষ্ট রাজ্ঞ লইবে সৃস্থির॥ পরভুক্ত মালা যথা জালার সমান। পরভুক্ত মাংস ভুঞ্জে সিংহের সন্তান 🛚 নরসিংহ নীরদ বরণ মম রাম। এ রাছ্য ভরত ভুক্ত লবে গুণধাম॥ ঘৃত চরু অর আর কুশ পুরোডাশ। হ্রুবাদি সকল জব্য যজীয় নিযাস।। প্যু তিত হইলে না লবে পুনর্বার। ভাতৃতুক রাজ্যে রামে তথা অধিকার ॥ কেমনে এমন রাজ্য করিবেক ভোগ। এক যজ্জ শেষ ঘৃজ্জাতা যজ্জে যোগ॥ যভপি অক্রোধী রাম না হইত তবে। অভ কি অযোধা। রাজ্ঞ ভরতে সম্ভবে ॥ তুমি নৃপ অগাধ সাগর সমতৃল। মন্দর শিখর তব গৌরব অভুল। যাহার নিশিত শর মন্দর মারণ। ক্রোধ করি যদি তাম করিত ধারণ 🖰 গৌরব রহিত তবে সৌরভ কোথায়। ধর্মান্তা বলিয়া রাম সহিয়াছে তায়॥ সোম সূর্যা গ্রহ্গণ সহিত আকাশ। সকোধ হুইলে রাম ক্ষণে করে নাশ। যদ্যপি আকাশ নিপাতনে শক্তি রয়। স্তা নিপাতনে তবু শক্তিযুক্ত নয়॥ रेगलमङ् वनुष्ठता ममर्थ ठालान । দে তেজন্বী পুজ্র নহে গৌরব হেলনে।

এবস্তত বলাম্বিত খ্যাত পরাক্রম। **म श्रेल कानान मिल इत्या त्रघृ**खम ॥ অন্মদাতা হইয়া তনয়ে পরিতাগ। যেমন জলজ জল্ত স্বসুতে বিরাগ। এই রূপ অতিক্রম হেত নপবর। অনুমান করি বিধি বঞ্চিত সত্তর॥ ভোমার শরীর হৈতে কীর্ত্তি গুণবভী। অভাবধি পরিভাক। জানিবে ভূপতি॥ পুরাতন ধর্ম আর শাস্ত্র বহুতর। শুম্রেছি দেখ্যেছি বহু শুন নূপবর॥ मृष्टे छक इहेटा भीतव नाहि भाग । পরিজাগ করিবে অবস্থ লোকে তায়॥ পিতা মাতা সেই রূপ দোষাশ্রিত হয়। পরিতাগে পাপমাত্র নাহি শাস্ত্রে কয় ॥ বে জ্ঞান অন্ধায় পথে করায় গমন। मिक, वास्तव ना इस क्लाइन ॥ এ রপ আচার यमि भाज मिक्त হয়। সে আচার তোমাতে না করে দয়াময়। তুনি যদি ক্লত পাপী হয়েছে নিশ্চিত। ধর্ম হৈতে কভু রাম না হবে ঋণিত। এই রূপ স্বরূপ কহিয়া রাজ্বরাণী। বিলাপ করিলা রাম মাতা ধন্তমানি॥ পুনর্বার হেতুবাদ সহ বাক্যচয়। কৌশল্যা নাথের প্রতি কহিলা নিশ্চয়। আপনি প্রথম গতি পুরুষের জানি। সম্ভান দিতীয় গতি কহে শা স্তে জ্ঞানী। তৃতীয় সুসাধু সঙ্গ গতি মহাশয়। চতুর্থ জানিবে গতি ধর্মের সঞ্চয়।

চারি গতি ধর্মহৈতে তুমি পরিতাক্ত। ভাগ দিয়া বনে প্রিয়সূত পিতৃভক্ত। অকারণে সে সাধ্ সন্তানে পরিহরি। চিরজীবী না হইবে অনুমান করি॥ ধর্ম কর্ম যে সকল ওব স্বোপার্জিত। কেকয়ী নিমিত্ত হৈলে সকলে বৰ্জ্জিত ॥ সম্ব তত্ত্ব কীর্ত্তি আর আমার বাসনা। রাম সুত পৃতি তুমি ছাজিলে কামনা॥ পরিত্যাগ করিবে নিশ্চয় তবে পান। তোমাহৈতে হইলাম হত। হতমান। তোমাহৈতে অযোধ্যা নগরী হৈল নাশ। পূৰ্ব্বপথ যত কীৰ্ত্তি হত অভিলাষ। ধর্ম নাশ আত্মনাশ পুজের সহিত। বিনাশ নাগর লোক জানিবে নিশ্চিত॥ কেক্য়ীরে রাজ্ঞদানে সকলি সংহার। নিষ্ঠ দারুণাক্ষর উক্তি বারস্বার॥ শ্রবণ করিয়া নৃপ দৃঃখে মোহ যান। মুদ্রিত নয়নে ত্যঞ্জি নিশ্বাস বিধান॥ হত সত্ব চেতন রহিত রামশোকে। :কাশল্যা বিলাপ বাক্য বজ্ৰপায় লোকে অযোধ্যায় এক উন ষষ্টিতমাধ্যায়। সাঙ্গোপাঙ্গ শ্রবণে অংশৰ ভাপ যায়॥

७ मर्गः

ত্রিপদী।

কৌশল্যার বাক্যশ্রে, তাপিত নৃপতি পরে, মোহ্যুক্ত পতিত শয়নে। বারস্বারদঃশভারে,চকু,না মিলিভেপারে, প্রতি যত্ন তাহে প্রতিক্ষণে ॥ -কিছুকাল এই রূপু,অন্থির থাকিয়া ভূপ, প্রনর্কার পাইয়া চেতন। कति हकू उचीलम,नटर पृथ्य विद्याहन, কত কষ্টে কহিলা বচন ॥ পাৰ্ম দেশে কৌশল্যায়, দেখিয়া নুপতি তায়, কহিলা হইয়া ক্লপাবান। **এদখ সতি প্রাপ্তব্যাধি,তব করে ধরে**য় সাধি, শোকার্ত্ত বিগত প্রায় প্রাণ ! ক্লডাঞ্জলি করে৷ বলি,সম্ভবিবে এ সকলি, कि छ थिए यम वकः इत्न। বিক্ত ক্ত বিস্তার,কেন আর দেও ক্ষার, পুল্লাকে চে পুলু বৎসলে ॥ मलान विद्रहरू मनः, इहेरछह विनातन, আর প্রিয়ে সহ্ নাচি হয় । কেন ভাগ কর আর, বাক্যশর বারস্বার, জীবন যাহাতে হয় ক্ষয় ॥ শুন বাক্য গুণবতি, সাধীর দেবতা পতি, গুণবান অথবা নিগুণী। স্থানিবে পরমগতি,পতি পৃষ্ণতম সতি, আছে পূৰ্ব্ব পুৱাতন ধনি 🏽

কর দেবি ক্ষমাশ্রম, অত্যন্ত আর্ত্তহ্দয়, না করিবা ধর্মা অতিক্রম। অপরাধী যদি সাধি,একে দৈব প্তিরোধী, না কর বিনাশ রাথ ভ্রম ॥ আমি জানি সুকল্যাণি, ধর্মজ্ঞা বলিয়া মানি, চক্ষের গোচর নারী যত। তুমি সর্ব্বোক্তমা রামা,লোক মাঝে নিরু পমা, অবাচা ৰা কৰে অবিৱত ৷ দীন হীন জন ভাবে, ভূপতি করণভাবে আভাসে সেভাবে রাম নাতা। করি পুরু শোকভাগ, পতিপৃতি অমুরাগ, শিরোভাগ করিয়া নম্তা ॥ অহান্ত সম্ভান্তচিত,মারি স্বামি দেবাবুত, নপ পদে হয়ে। নত শিরাঃ। कत्रभू हो अबिकारे, अहे वाका मुश्करि কহিলা সম্ভমে হয়ে স্থিরা॥ ষচাপি ক্ষমিল ভ্ৰম,তব ভক্তি অতিক্ৰম, চিত্ত ব্যতিক্রম ক্রম। কর। পুল্রশাকে চিত্তম্চ,নাজানি কুকর্ম গঢ়, করিলাম বলে। বহুভর ॥ म कुकथा পরিহরি, চরণ যুগলে ধরি, भमन गर्रामा हत्व जुल। इंड्कान भवकान, पृष्टे देशन कि खञ्जान, রামরাজ্ঞ কি ভাল স্বর্মপ। ক্ষমা কর ক্ষিতিপাল,সহজে ভগ্ন কপাল, পাপ জাল করহ খণ্ডন। পুত্রশোক পরিতাপে, পতি বাতিক্রম প্রাপে, অঙ্গ কাঁপে একি কৃকরণ॥

তুমি পুভু পরমেশ,না জানি ভজিবিশেষ, এইরূপে কৌশল্যার, করুণা বচন সার, আমার আমার পুত্র মান্ত। নাজানি বিশেষ ধর্ম,জানিমাত্র তুমি ধর্ম, সভাবাদী ধর্মাজ্ঞ বদান্ত॥ পুত্রমোহে কি বিরহে, পতিপুতি ভগ্ন त्त्रहर, किलाम मन नंभवत । হইয়া বিজ্ঞানহতা,শোক পরিভাপে রভা, করিলাম কি কর্মা দৃষ্ণর॥ শোক অতিশক্ত হয়, শোকে করে জ্ঞান কয়, শোক নালে অশেষ পটুতা। শোকে করে ধৃতিনাশ,শোকহৈতে অধো বাস, শোকে হয় অশেষ কটুতা। महिवादत भाति जूभ,अधिन्भमं कालक्रभ, অন্ত্রধার দারুণ দারণ। না পারি শোক সম্ভব,সহিবারে দৃঃখ লব্ নুপতি এ নহে সাধারণ॥ এ শোকে সর্বজ্ঞ বাঁরা, ধৃতিমান জ্ঞান जाता, धर्मार्थ मः नम्र दीन याता। যতি অতিশয় জ্ঞানী,মোহ পান যোগিপ্ৰাণী, অসহ সর্বদা শোক ধারা ৷ গত হয় পঞ্চদিন, অভাবধি পুক্র হীন, रमरे मिन कि मिन आयात। বর্ষ শত সম দিন, পুজের প্রাস দিন, গত হয় যেন কত বার॥ রামগতাসক্তচিত্ত, এহে তু আমার নিতা, বৃদ্ধি হয় সদা শোক চয়। ভাগীরথী জলবেগ,ভাপাছ্যয়ে বাড়ে বেগ, तिहे ऋषे भारिकत समग्र॥

मिनकंष्य स्वां इय जरा। পুবোধ বচনে পরে, নৃপশোক দুরতরে, পরিশ্রম বিনাশ সমস্ত ॥ নৃপনিকা বশীভূত, বিশাত হইয়া সূত, ইতি দশর্থ প্রসাদনা। অযোধ্যায় সুবর্ণন, বাল্মীকির নিরূপণ, ভাষাপভ इक्न वर्गना॥ ইতি দশরথ সান্ত্রা॥

পয়ার।

নিদ্রাগত ভূপতি ভূপতি ভার্যা পরে। সুমিত্রা রাম মাতায় বুঝান বিস্তরে 🛭 को भना। विनाभ वानी कतिवादत मूत्र। নৃপতি পুমদোভ্রমা কহিলা পুচুর ॥ ধৈষ্য সমশ্বিত বাক্য স্বধর্ম রক্ষণ। শোক পরিহর কর ধৈর্যা নিরীক্ষণ্ ! দিব্যগুণ গণযুক্ত তোমার সন্থান। পিতৃবাক্যে বনবাদে করে অবস্থান। সে রামের প্রতি শোক কেন কর আর। সভাদেব সন্থ সতি তোমার কুমার। পুজাহীন নহে অপেদশী নহে রাম। পিতৃবাক্যে স্থিতিমান কল্যাণে বিশ্রাম যেহেতু তোমার পুত্র রাজ্যসূথ হত। সভোর সাধনে সাধু বনবাস গত। অতএব মহান্কলাগ প্ৰাপ্ত হবে निष्ठि এই मिष्ठ सम देशवाँ हरहा इरव ॥

সাধ্ আচরিত সুবিহিত ধর্মে স্থিতি। সতত যশবি পথে রহে রম্বপতি। ধর্মধারী পথাচারী পুজ্র শ্রেষ্ঠতর। তার ঐতি শোককরা না হয় সুন্দর॥ রামের বিপুল সভ্য বিজ্ঞান বিস্তর। অভান্ত উদার চিক্ত দেখে দিবাকর ॥ প্রভাকর নিজকর নিকর বিস্তারি। তাপ দিতে তপন তনয়ে কই পারি॥ मर्खमा मुद्राचि शक्त. यदर मुथानिन। না জানেন যুবরীক তাপ এক তিল। অতি শীত ভাত নহে রহে মহাসুথে। তাপ কেন কর দেবি তুমি তার দুংখে 🛭 সীতা সহ সন্তান শয়ন ধরাতলে। সুধাকর স্থিক্ষকর অম্বর মণ্ডলে। সেই করে করে রামে পরমাহলাদিত। অযোধ্যার অধিক হারন্যে পায় প্রীত ॥ যাহারে অতুল শাস্ত্র পূর্বেব দিলা শুনি। সম্প্রীত হইয়া বিশামিত মহামুনি ॥ বেট্ সর্ব্ব অস্ত্র শস্ত্রে সুপণ্ডিত রাম। তার পরিশোচনা অযোগ্য অবিশ্রাম॥ কীৰ্ত্তিভূষা ভাষায় সংযুক্ত সদা ষেৱা। ভাতিমান মতিমান ধৃতিমান কেবা। সেই রাম রাজ্ঞ পাইবার উপযুক্ত। তার জন্ম শোক করা অত্যন্ত অযুক্ত ॥ রাম শোকে পরিতাক্ত যত নেত্র জল। রাম আগমনে হবে আনন্দ সকল। পুত্রতব যশোষারা লোকব্যাপ্ত পর। **एड्रफ्रम वयमहारख स्मर्थे धर्मध्**रह ॥

ভূপতি হইয়া ভোগ করিবে মেদিনী। তখন আমার বাক্য ম্বরিবে রম্ণী। কুশ চীরাম্বর ধর দে নর কুঞ্জর। कानन श्रमतालामी त्र घ्वरण ४त । পশ্চাতে লক্ষ্মীর প্রায় অত্মতা সীতা : আর তার কি দৃর্ম ভ কেন হও ভীতা॥ তোমার তত্ত্ব রাম মুত্রু প্রধানে। অনুক্ত সহিত অযোধ্যায় অধিষ্ঠানে ॥ य मिन ठत्र । उर म्लान कतिरव। मित (य पित इटव मित मित मिति विदित्त ॥ দেখিয়া পদাবনত নলিন লোচন। বন্দমান সন্তান সাক্ষাত্ সনাতন॥ তুমি তায় অশুক্তলে করিবে আসিক। যেমন শৈলেজ করে ঘনালি বিবিজ ∥ এই রূপ শুনি বাণী লক্ষ্মণ মাতার। নরদেব পত্নী পান আনন্দ অপার। শোকামি मञ्जाश क्राप्तर इस मृत। অনল শীতল যথা বোগে জলপুর ॥ অৰোধ্যায় সুমিত্রাসুস্রী শুভভাষ। নরেজ্র আদেশে ভাষে বিপ্র বিপ্রদাস।। ७० मर्गः ।

ত্রিপদী।
শ্রীরাম লক্ষ্মণে, প্রবেশিলে বনে,
নৃপতি সদনে পরে।
শানা মহোৎপাত, স্বরাজ্ঞে ব্যাঘাত,
বিপুল দৃঃথিত নরে।

नल मगदय, (मर्या धर्मालय, সংযুত না হয় নর। ইন্দ্র সম ভূপ, সকলে বিরূপ, কেই লা করে আদর॥ स्रो ताल्धाख, यथा महा राख. তটস্থ নপতি ভায় চ দিনে অশ্বকার, লোক হাহাকার, ষষ্ঠ দিন গত প্রায় ৷ ভ্রীরামের শোকে, পরিপূর্ণ লোকে, ভাবিলা মনে নুপতি। এর্দ্ধ নিশাকালে, কি লিখিত ভালে. কি হেতু এত দুৰ্গতি । আপন দক্ষতি, স্মরি নরপতি, কহিলা কৌশল্যা প্রতি। যভাপ জাগ্ৰতা, ভাবিয়া মমতা, শুন মম দৃঃশ সতি॥ ভভাভভ করে, যে সকল নরে, ভাব ফল পরে পায়: ক্রমাগত কালে, সুখ দৃংখ জালে, অবশ্য গ্রানিবে ভায় 🖟 লঘু ওরতর, সমারক্তে নর, যভাপি না করে দষ্টি। গুণ কিন্তা দোষে, শিশুবল্যে ঘোষে, সাধ্গণ ক্লত সৃষ্টি 🛚 তাজি আয়ুবন, পলাশ কানন, আত্রায় যে জন করে। পুষ্পাভন, করিয়া দর্শন, क्न किट्टी भाग नदता

সেই রূপ আমি, আম বনগামী, इहेग्रा आग्र ना शाहे। পলাশ কানন, করি অদেষণ, ভালে এত ঘটে তাই ॥ বুদ্ধি মোহ ক্রমে, গুজে রঘ্ভমে, শোচনা করি দুর্মতি। ত্রণ সময়, নম মনে হ্র, দৃষ্ত করণ নতিঃ খামি বাল্যকালে, যবে পুর্ব্বকালে, भक्टरिध नाञ्च। कति। লাইয়া দে শর, কুকর্ম দ্দর, বিস্তার প্রকাশ করি। महे भाग कन, मन्त्राश्च इहेन, বিষপান প্রায় অছ। না ভেন্তে গরল, পানে প্রাণে ফল, গ্ৰহণ বিনাশে সভঃ 🛭 সেই রূণ আমি, হয়ে দেশ স্বামী, পূর্বের ক্লড কি কুকর্ম। क्लिमाला सिकाल, जिल्ला अन्तर्भातन, অভূঢ়া কি জান মৰ্ম ॥ আমি যুবরাজ, করেছি কুকায, সে কথা করি বিস্তার। शीभ रेह्रल क्य, वर्षाकारलाम्य, মনঃপ্রীতি কর পার 🛭 লয়ে ভূমিরদ, করিল বিল্স, জগতী রবিজ তাপে। ছিল তপ্ত প্রায়, ঘনোদয়ে তায়, मृतम পয়ে। দালাপে ॥ (२५)

ন্নিপ্না বসুমতী, দিগু দিক পতি, বিহঙ্গ অতি উল্লাস। উন্মত্ত ময়র, দেখিয়া অদর, পাইয়া অন্ত দ বাস ৷ কি বক সার্জ, করে মহারক, জলজ জলজীবন यठ नहीं नह, मकरल श्राम. श्रेन्कन क्रम्भन्। कुणाख कमबा, वाति मृतिमण, বিমল সুবিল যত। विश्विष्ठ उद्यान, खन खन यान, চলিছে অদ্ভত দ্ৰোভঃ মেঘ জালে ধরা, হইল অগরা, ভূবি পরিপূর্ণ হেরি -উন্মন্ত সারক, শিখণি বিহন্ধ, নাচিছে তমালে যেরি। শাহল সকল, অতি প্রকাশিল, হরিণ কুল মোদিত। এই কালে আমি, নদীকুলগামী, ধনুঃশর সনা শ্রিত সর্যুর ভীরে, গমন অধারে, পত্রবিছা শীলতায়। শব্দেরে মনে, করিব যতনে, এই অভিলাষী প্রায় : (मंद्रे नमी उछि, किभिन् निकर्छ, निशास मिल्न शास यछ भूत्रतन, कीवत्न कीवन. রাখিতে চলে সে স্থানে :

ধরে শরাসন, করি নিরপণ, মগ কি মগীসংহারী। মহিৰাদি বন্থ, মারিব প্রথা যে শব্দ শ্রেবণাচারী ॥ ঞ্চল কুন্ত লয়ে, ঋষি সুত গিয়ে, रिमर्त उथा अन करत। कहेल नियन, कहील (यमन, নিপানে বংহিত করে ॥ পুথ পুথ শর, শাণিত বিত্তর, কামুকৈ করি সন্ধান। সেই শক্ষে শর, নিক্ষেপ বিশুর, হুট্ল মোহিত প্রোণ 🗈 শর নিপাতনে, শুনি সেইফণে, मक्त्र वह रागे। মানুষের উক্তি, হাহাপ্রাণ মুক্তি, করিল কোন অজ্ঞানী " কি রূপে আমারে, হানিল সংহাত হরিতে তাপস প্রাণ। কোন্নরাধম, বিনিন্দিত তম, কে নিক্ষেপিল এবাৰ ॥ জ্ঞল আহরণে, রাখিতে জীবনে, নিশিতে নিপানে আমি। কোন্মহাবীর, অধ্মী অধীর, कर्या नहीं उठे शामी। কার অপকার, কর্য়েছি, নিস্তার. ना इंड्रें विष वादन। আমি মুনিসুত, সদা তপঃপুত্ত, अवरन रम कि ना **का**रन

বাহি জানি নাম, জীবন বিরাম, य कतिल श्रे श्रामः वक अञ्च मनि, कि विश्ववा छनि. থমন করিল বাবে। ম্নিস্ত হৃদি, বজাঘাত বিধি, এ বিধি কি বিধি হায়। নিক্ল আরম্ভ, মাত্র পাপারম্ভ, অনৰ্থ উৎপত্তি যায় 🛚 रक्यन विश्वान, छानिया मस्तान, भिषा हाया छक नाथ । জানিয়া এমন, করে কোনু জন. कीवन পথ विद्याद्य গ্রিতেছে জ্ঞান, গেল মম প্রাণ. শোচনা ভাবনা মাত্র। গন্ধ পিতা মাতা, হায় রে বিধাতা, কে আছে রক্ষণ পাত্র । महे अक्ष क्य, वृक्ष की लाम्य, দীঘ কাল গত হবে। গেলে মম প্রাণ, পাইয়া সন্ধান, কেমনে জীবনে রবে ॥ পিত: মাতা আমি, কষ্ট প্রথামী, · কে আসি দুরাঝা নর : এক বাবে প্রাবে, হানিল সন্ধানে, কেমন কঠিন ভর ॥ তপস্বি ব্ৰাহ্মণ, ফল ম্লাশন, • কুপণ দুৰ্ম্বল অতি। धरे मकद्रन, वहन मह्त्रन, অনুণে সভয় অতি 🛚

अधर्णात जग्न, मृजीज क्षमण, করে ছিল শরামন। देश्य इभि शंड, गाइम विश्ल. নিকটে গিয়া র্ভখন । (मथि चिकानत. केंद्रोक्षिन धर. অতি দীন পড়ো জলে। नित्रि वामारत. मिळ नीत्थारव. मृमुचरत अहे वरन ॥ भहीत माहन, कति एव एयमन, এই রূপ মূনি ভাষে। কিবা অপকার, করোছি ভোমার, সভত কানন বাসে গুরু জন জন্ম, আসিয়া অরণ্য, বারি অন্তেষণ করি। করিলে মারণ, ভুমি কি কাবণ, হইলে তাপস এরি। अनांश कुलन, उत्म मृष्टे स्नम, মম পিতা আর মাতা। এতি বৃদ্ধ তর, স্পীণ কলেবর, প্রতীক্ষা করিয়া স্থিতা 🛚 কৃমি এক বাণে, হত কর প্রাণে, তিন জনে এক কালে। হানিলে ভাদয়, কেন পাপাশয়, আঘাত কর অকাপে তুমি শীব্রগতি, গিয়া রঘুপতি. জনকৈ কহিবে তাপ। कहि तचूट अहे, ना कतिव नष्टे, না দিব তোমাকে শাপ।

এই প্রে ত্মি, মুমু পিত ভূমি, রাঘর কর গমন। করি প্রসাদন, কহিবে বচন, যভূপি কপিত হন ॥ দেখো তব পাপ, না দিবেন শাপ, বাঘৰ না ভাৰ ভয়। दिमला जाभारत, करता प्रथ्य शास्त. পাঠাও হে নরাভায় ৷ তব কর ক্ষিপ্তা. এ শর প্রদীপ্ত. অশ্নি সমান আছে। ক্রদয় ভেদন, করে অনুস্ণ, প্রাণ রোধ করে পাতে । এ শল্য সহিত, জীবন রহিত, না হই এমন কর : ভূমি বলবান, হয়ে রুপাধান, होग्व ! উक्रत भत ॥ বুক্তিতা অন্ত, পাতক অগণা. সে ভয় ছাজ নৃপতি গুড়া গর্ভাত, দিল সূত্ খ্যাত. অন্ধ দৃহ্যনরে গতি ॥ এই द'का दला, एक भदान ल, বালক জলাত্র তন্ত্র। করিয়া বিলাপ, শরহত তাপ, নিশাস ভাজায়ে অনু 🛭 मत्रवृत करण, सञ्जिक पृद्यारम, দেখিরা শিশু বিমুনঃ : সদয় হইতে, সে বাণ দ্রিতে, বিমুক্ত করি সঘন !

হয়ে সাবধান, অতি যত্ত্বান, মুনিসূত প্রাণ রুহে। শর উদ্ধারিতে, হিতে বিপরীতে, বিধাতানুকুল নহে॥ বহে হিককা খাস, দেখি মহাত্রান কস্পিত সঘন কায়। टारा छेक्नंतित, शांत मृनि श्रुल, জীবন গাঁজিল তায় : ङ्केटल निधन, यह विनम्न. মন যশঃ সহ তথা। নরক অপারে, রাখিয়া আমারে গ্ৰহান্ত ভাবিত যথা॥ বিম্বত চেত্ৰ, অপার বাসন. অভাষ্ট সংশয়াপর ! অ্যোধ্যা কাণ্ডীয়, রস রম্পীয়, একষ্টি সুসম্পন্ন 🖁 ७५ मर्गर।

পয়ার।

পরে আমি সেই শর করিয়া উদ্ধার।
প্রদীপ্ত ভুজার সম ভয়ক্ষরাকার।
গমনে ধারণ করি সেই জালাধার।
আন্ধা ক্ষি বাসাত্রমে দিতে সমাচার।
দেখিলাম দিজবরে সহিতে রম্পী।
উভয়ে নয়ন হীন সক্রপণ প্রাণী॥
অপকার কর্ম্মে হীন সতত নিশ্চয়।
প্রশৃহীন প্রক্ষি সম রক্ষণীয় নয়॥

भिन्छ मन्त्रिक्षिती कथा करत जानाश्रत : পুলু আসা লালসে ব্যথিত দথা মনঃ ॥ আমা হৈতে হতাশা হইয়া হায় হায়। কি পাপ অজ্ঞান হেতৃ সঞ্চারিল তায়। मीन मनः कीन मृद्दे खन उপिश्वतः। **मिथिया मोक्न मृश्य উৎপন্ন मोतीत ॥** শুনিয়া আমার পদশব্দ এই কহে। কি হেতু সময় এত গত যুক্ত নহে 🛚 আন আন পানীয় করিব শীঘ্র পান। যজ্ঞ দক্ত চিরকাল উত্তপ্ত এ প্রাণ ॥ বহুকলে জলক্রীডা করিলে নন্দন। উৎক্তিত পিতা মাতা তব দৃই জন॥ যভাপিও তুমি স্বন্প করিলে কুকর্ম। ক্ষমিলাম সে সকল ভেব্যে বাল্য ধর্ম 🛚 পরে আর তোমার না হয় হেন মতি। অন্ধের নয়ন তুমি অগতির গতি॥ তোমাতে আসক্ত প্রাণ পুত্র কি কারণ না কহ্ প্রীতিদ ভাষা জীবন ধারণ। পুত্র পুত্র এই মাত্র করুণা বচন। পুজের আসার আশে কহে দৃই জন। ভয়ে হয়ে। অতি ভাঁত চিন্তিত অন্তর। অল্প অল্প পদব্রজে গমনে তৎপর॥ মুনির নিকটে নম নিঃসরে না বাক্ বাষ্পবারি পরিপূর্ণ বিধির বিপাক 🏽 ক্লতাঞ্জলি পূর্ব্বকে কম্পিত কলেবর: ভয়ে গদ গদ বাক্য কহিলাম পর ! আমি প্রভু ক্ষরিয়, সন্তান নহি তব। मभात्रथ नृष्य अक अर्दम समूह्य ॥

সজ্জনের অসমত পাপ কর্মে গিয়া। তোমার নিকটাগত জলপাত্র নিয়া সবিশেষ কহি আমি সর্যুর তীরে। চাপ হস্ত পাপশীল অহাত অধীরে॥ আকাজ্জিত পশুহিংসা করিতে মানস অজ্ঞানতঃ মম তাহে হত হৈল যশঃ॥ জলকুন্ত পুরণের ধনি আমি শুনি। গজ জ্ঞানে শর হানি মুনি প্রতি মুনি॥ নিহত হ**ইল তাহে** তোমার সন্থান। তার শব্দ শুল্মে মম উদেক্ষিত প্রাণ॥ ভীত ভাবে যাইয়া মুনীক্র মৃত দেশ। দৈখিলাম তপদী নিশাস মাত্র শেষ॥ শব্দ বেধি বিদ্ধ গজ শঙ্কায় শরীরে। নারাচ নিকেপে নারে ভাসিছে অধীরে महे भार मकरण कितरण ममुकात। প্রাণভাগে স্বর্গত নন্দন তোমার॥ তপন্বী তেজন্বী ঋষি তোমরা দৃজন। চিরকাল করি**ভেছ যে পুজ্র শোচন** ॥ সেই পুত্র কর্ম সূত্র ক্রমে আমি পাপ। অজ্ঞানে করিয়া হত ক্লত মম তাপ 🛭 মহাতেজঃ মমোপরি করিতে নিক্ষেপ যোগ্য ভূমি হও প্রভু তাহে কি আক্ষেপ অন্ধমুনি শুনি বাক্য রঘু নৃপতির। মুহুত্ত মৃচ্ছিত পরে চিত্ত করি স্থির। শরীরে আগত প্রাণ করিয়া আমাস। ষদি ভূমি কুকর্ম করিলে অবিশ্বাস। কহিলে আপনি প্রাণি বধের কারণ। শোকানলে মন দাহ কে করে বারণ।

জনিয়া ক্ষত্রিয় কুলে জ্ঞান পূর্ব্ব যদি। করেয় থাক বানপ্রস্থ বধ পাপ বিধি ॥ শীজ্রগতি স্থান ভ্রষ্ট ব্রহ্মা হৈলে হয়। মুনি পুত্র বধ পাপে জানিবে নিশ্চয়। পুর্ববাপর সপ্ত সপ্ত পুরুষ তোমার ৷ ় নৃপাধম নরকে পড়্ক বাক্য সার ! যদি তুমি অজ্ঞানে করিয়া থাক হত। ভবে প্রাণে রক্ষা পাও হত্যা পাপ গত। অভাপি রাঘব কুল আছে বর্ত্তমান। : অজ্ঞানে বধিলে ভূমি ঋষির সন্তান 🗈 य द्यात कतिल इंड जागात नन्ता। भिष्टे इरण गरग्र हम खनरत मुर्व्छन 🥫 🕯 এ অন্ধের অন্ধ যতি আছে যেই স্থানে। গিয়া আমি স্পর্শ করি জ্ঞাব পরাণে 🛚 পুত্ৰ অঙ্গ স্পৰ্শ পেয়ে যদি জীয়ে প্ৰাণ ক্রধিরে আসক্ত অঙ্গ আমার সন্তান। ্বিন্তীর্ণ অজিন অঙ্গে শিরে জটাভার। ধর্মরাজ্ঞ বশ গত আমার কুমার 🎚 তার অঙ্গ স্পর্শ করি ভাষ্যার সহিত। কর এই কর্ম ভূমি হয়ে৷ সাবহিত 🛚 পরে শুন হে সুন্দরি বিস্তার কথন। চলিলাম আমি যথা মুনির নন্দন 🎚 नहेशा उथाय मिहे पृथ्यि पृहेकता স্পর্শ করাইয়া সেই মৃত প্র<u>ভ্র</u>ধনে ॥ কিতি তলে মৃত পুত্র দেখিয়া পতিত। পুজ্র শোকাতুর মুনি অত্যন্ত পীড়িত। উভয়ে পত্তিত মৃ**ত সূ**তের উপরে। 🕫 হাহা পুক্র পুক্র বলি আর্ত্তনাদ করে

় মৃত সৃত মাত। পরে সেই মৃত মুখ চুন্থন করিয়া কালে ভাবে অতি দৃঃখ 🛚 অত্যন্ত করুণ রবে করিছে বিলাপ। বৎসহারা গাভীপ্রায় চীৎকার আলাপ প্রাণাপেক্ষা প্রিয়ত্মা আমিরে তোমার यञ्चमञ्ज मम उञ्ज शौन कि श्रकात । দুর পথে কি প্রকারে করিলে গমন। না কহ বচন কেন মাতৃ সম্বোধন 🗈 এসে। পুজ্র বক্ষঃস্থলে করিয়া নিবাস। পশ্চাথ পদ্মিনী পতি পুক্ত গৃহে বাস : কিবা পুজ্ৰ মম প্ৰতি কুপিত অন্তব্ধ। যেহেতু না কহ ভাষা আছু নিক্তর 🛭 পুনর্ব্বার পিতা তার হইয়া পীড়িত। গাত্র স্পর্শ করি ক্টেহ্ বাক্য বিমোহিত : জ্ঞান ধেন সঞ্চীবন নন্দন আমার। আত্র হইয়া করে অঙ্গ অঞ্চীকার 🛭 হে পুত্র, আমি রে তৃব পিতা উপনীত। নিকটে নিশ্চয় তব জ্ঞানী সহিত 🛚 উঠ উঠ কণ্ডে সুগু আসি দুজনার। পররাত্রে স্বাধ্যায় শুনিব আমি কার 🏾 কে করিবে ফলমূল বারি আহরণ : কে করিবে অন্ধের পিপাস। নিবারণ ॥ কে দিবে আহার আর তোমার বিহীনে কুৎপিপাসা যুক্ত অন্ধ এই দুই দীনে ! এই অন্ধা বৃদ্ধা তব মাতা তপশ্বিনী। আমি অন্ধ পরাক্রম গত বৃদ্ধ প্রাণী। একাহ অপেকা কর অযোগ্য গমনে। কল্য যাব ভব মাতা পিতা দুই জ্বনে 🛚

গ্রমন করিলে পুত্র আমাদের সঙ্গে। চির দিন তব শোক না সহিবে অঙ্গে॥ প্রাণ পরিত্যাগ আর মরণে নিশ্চয়। উভয়ের জানিবে প্রতিজ্ঞা পরিচয় ॥ এস্থান হুইতে যাত্রা যমের ভবনে। প্রার্থনা করিব যমে তোমা পুল্র ধনে ! পুজ্র ভিক্ষা দেও এই উক্তি করি তথা। তব সহ আদিব না হইবে অন্তথা ॥ সন্ধ্যা উপাসনা করি ক্লন্তন্মান পৃত। অগ্নিতে করিয়া হোম কে আসিয়া সৃত। করন্বয়ে পদ্ধয় করিয়া ধারণ ! কে করিবে আহ্লাদিত আছে কে এমন: নিস্পাপ হইলে পাপ কর্মা হৈতে হত। **এডএব হবে ভুমি পূর লোক গভ**া নাহি যায় পরিবত্ত তপন্ধি জনার। বীরগণ নুপ স্থান গমনে ভোমার॥ গুরু পরিচ্যা। বৃত্তি যে সকলে করে। যাগ কর্মেরত সদা দৈব কর্মাচরে 🕆 সেই সেই লোকে তুমি করিবে গমন বেদাঞ্চ বেদ পারগ যে স্থানে স্থাপন ৷ যে সকল স্থান পায় রাজ্ঞ্ঞযি চয়। ययां जिल्हें या जिल्ला मा मा मा मा मा विकास विका গুহু মেধিগণ দবে যে যে লোক পায়। একচারী সমূহের সংস্থাপন যায়॥ বে লোকে গমন করে অভয় প্রদাতা সভাবাদী গণ স্থান স্ফিলা বিধাতা ! সেই সেই লোক যাত্রা কর পুজবর। मन शान करन तरन वर मन्द्रमत्।

। এতাদশ কুলে জন্ম করিয়া ধারণ। না হয় অগতি প্রাপ্ত বিশেষ কারণ॥ অতএব এ স্থান হইয়া পরিচ্যুত। যাত্রা কর সেই লোকে যথা মধচ্যত। ই্ভাদি পীড়িত কিঞাবিরহ প্রলাপ: সভাব্যক বছবিধ মুনির বিলাপ ॥ দঃবে হয়ে অচেতন প্রেতাবধারণ। সেই স্থানে দৃঃখে করে সৎকার করণ অনস্তর করিল উদক ক্লুতা তার। সুদীন মানস দিজ ভাবিয়া অসার॥ পিণ্ডাদি প্রদানে পুত্র পেয়ে। দিবা দেহ। বিমানে বিমানোপার গত গতমেহ ॥ মুনিপুল্র কর্মা স্থত্ত করিয়া ঈক্ষণ। মাতা পিতা প্রতি কহে বাক্য বিচক্ষণ গ তোমাদের উভয়ের পরিচর্যা করি। পুণা প্রাপ্তি সদা সুখকরী॥ ত্রাপনারা উভয়ে অত্যব্স কাল গতে। ইপ্ট স্থান প্রাপ্ত হবে অতি ইপ্ট মতে॥ না করিব অতএব উভয় শোচনা। নহে রাজ্ঞা অপরাধী কর বিবেচনা । ভবিতব্য ছিল এই নূপ হৈতে হত। मिरे (इंडू इंहेलांभ निधन मञ्जूष अहे উक्ति बुक्त बुक्ति कराग्र मृति नृष्ठ : मिता (मरक् राम्य यारम अर्ग हरना अव्ह সেই অন্ধ বিঞা পরে ভার্যার সহিত। করিয়া পুজের ক্রিয়া জানিয়া বিহিত 🛚 শুন প্রিয়ে পুনন্চ বৃত্তান্ত সুবিস্তার। ক্লতাঞ্চলি আছি আমি অগ্রেডে তাঁহার 🛭

আমারে কহেন অন্ধ তপন্থী ব্রাহ্মণ। যশস্বী হুইয়া তুমি নপ কি কারণ॥ রাজ্যবি মহাআ নৃপ ঈক্ষাকুর বংশে। নরাধম অবিনীত অজরাজ অংশে 🖟 না ছিল বিবাদ তব আমার সহিত। 🕴 স্ত্রী নিমিত্ত ক্ষেত্র জন্ম কিন্তা অপ্রমিত যেহেতৃ অধর্ম দেতু করি আরোহণ। এক বাণে কর তুমি উভয়ে নিধন ॥ অভ্যানে আমার পুরে করিলে নিহ্ত এই চেডু অভিশাপ দিব কর্মগুড় শুন শাপ পাপমতি স্বকর্মো নিদান। পুত্র শোকাত্র হয়ে জন্ত নিজ্ঞাণ বেমন আমার প্রাণ দহে পুত্র শোকে। এই রূপ দ্বা হয়ে৷ যাবে পর লোকে 🛭 এই রূপ অভিশপ্ত হয়ে। প্রিয়ে আমি। श्वनकीत जाशनात रुखा श्वतगांभी ॥ श्रुल (मारक मिहे अधि हित्रकीदी नहा। সেই ব্ৰহ্ম শাপ অগু আমাতে উদয়ঃ পুত্র শোকে পীড়িত আমার যায় প্রাণ না পাই দেখিতে চক্ষে মাতি সমাধান॥ দেবি বৈবস্বত সৃত দুতগণে ক্রত। যামা যাত্রা বার্ত্তা কহে দেখে অভিভূত यज्ञि अकारन सिंह कान निवादन । মম অঞ্চ শ্পদে রাম রাজীব লোচন। অথবা আমার সঙ্গে করয়ে সম্ভাষ ! তবে মম জ্ঞান সতি জীবনের আশ যেমন অন্ত স্পর্শে মৃত প্রোণ পায় : সেই রূপ আমার জীবন প্রাপ্ত কায়

সেই সুলক্ষণ সুত পূত প্রিয়তর। দেখিয়া আমার যদি হয় দেহান্তর। উবে আমি পুজ্ৰ শোকানলে নহি দগ্ধ। ইদানী রামের চিন্তা করে চিন্ত ক্ষর॥ কি আর আমার প্রিয়ে আছে দৃঃখতর। শ্রীরাম বিরহ ভিন্ন মানি না অপর 🛭 রাম মুখ দর্শন করিয়া ভালি প্রাণ। অধিক কি সুখ আছে তাহার সমান ॥ রাম অদর্শন জন্ম মম শোকানল। न। (मग्र कीदरन शीड़ा सिर्ह सि मक्ल । তটিনী তটের তরু তীরে পুনব্বার। বারি বেগে যদি হয় কথন সঞ্চার। সেই রূপ বনবাসী সজ্জন সন্তান। এযোধ্যায় পুনরাম্ভ করে অবস্থান 🛚 কবে হবে সে দিন সমস্ত সুখীমনঃ। স্বগাগত ইন্দ্র সম রাঘ্র নন্দ্র॥ **मिथित इहेत्व भूथी मञ्जन मक्**छ। শোভন দর্শন কান্ত সুন্দর বিমল 🛭 मुठाङ कमल एल निर्माल नग्नन। ভারানাথ ভূলা মুখ করিবে দর্শন 🛭 শারদীয় প্রফুল কমল তুলা মুখে। মন্দ মন্দ মারুত নির্গত হয় সুখে। त्मरे ऋश मुशीशन अरयाध्या निवामी। দর্শদ করিবে হবে চিক্তে সুখ রাশি 🎚 এই রূপ রাম রূপ করিয়া স্মরণ। শয্যাতলে স্থিত নৃপ বিষাদিত মনঃ 🛭 ক্রমে ক্রমে প্রাণ বায়ু হয় পরিভাগ। রাত্রিক্ষয়ে চত্রের বিগত যথা রাগ।।

হা পুজু হা রাম এই বাক্য উচ্চারণ। পুজ্র শোকে প্রিয় প্রাণ হয় নিঃসারণ । সেই রূপ দীন ভূপ কয়ে। পুত্র কথা। বনবাস গত রামচক্র হৃত যথা॥ অদ্ধি রাত্র গত হৈলে শয়নে নৃপতি। আপনার প্রাণভাগ করিলা সুক্রতী 🛚 ব্ৰহ্মশাপ আখ্যান এ রূপ অযোধ্যায়। **দিষ্টি দগীয় কথা সুধাদিন্ধু প্রায়** ! ७२ मर्गः।

ক্রিপদী।

এই রূপ বহুতর, বিলাপ করিয়া পর, নরবর নীরব হইলে ৷ নিদ্রাগত নরপতি, এই জ্ঞান করেয় সতী-कोमना काउता (मरे इला॥ তথা, শ্বায় শ্রন গতা রাণী। বারসার পুজ শোকে, সকাতরা কোন লোকে, না কহিলা কারে কোন বাণী !! পরে রাত্রি হৈলে শেষ, প্রাতঃসন্ধ্যা সু-প্রবেশ, বন্দিগণ আসি নপছারে। যোগ্যমতে অবস্থান, করে রাজস্তুতিগান, নিজাভঙ্গ বাক্য সহকারে 🛚 ভাহাদের বাক্য কলরবে। নূপ পুরনারীগণ, অন্থ যত পরিজন, আগ্রতা হইল তারা দবে।

আপন আপন কর্মে,সমূচিত গুহুধর্মে, নিয়ক নিয়মি লোক যার।। নপতির সন্ধিকটে, উপস্থিত সপ্রকটে, অদ্ভত দেখিল নূপে তারা॥ গন্ধবারি পরিপূর্ব, কুস্কুশ্রেণী আনে তর্ব, রঞ্জত কাঞ্চন বিবচিত। নূপে করাইতে স্থান, সমিধানে বর্ত্তমান, গন্ধক্র প্রপ্তর উচিত। মঙ্গল কারক যারা, মাঙ্গলীয় দ্রব্য তারা, আনে অন্যে অন্য বছতর। যথা যোগ্য উপহার, আহরণ উপচার. করে যত বিচক্ষণ নর॥ নিকটে নিদ্রিত পরে,নির্থিয়া নরেশ্বরে, নারীগণে করে সচেতন। পাছে হয় স্থােদিয়,নুপতির আয়ঃক্ষয়, এই ভয় করে সর্ব্ব জন 🏽 না বলিয়া কোন কথা, শোকে সমাকুলা জাগ্রত করিতে পরে,সংজ্ঞাহীন নরেশ্বরে, দেখে। তারা করিছে সংশয়। লুপ্তজান সুপ্ত ভূপ, একি দেখি অপরূপ, इ**हेन जन्न**त्त सूर्याम्य ॥ শঙ্কা করি সকম্পিতা,যে শুনেসে সশঙ্কিতা, कम्भ इयमकालत (मर्ह। পরে তাহাদের ত্রাদে,কেহ্ নৃপ পাদে. পার্থিবে করিছে স্পর্ম স্লেহে॥ • দেই বন্দি মাগধাদি, দদা তবতোত্র বাদী, অঞ্জ সূচালন করি, নিজ পাপ তাপ স্বরি, निष्द्र कतिन नादीशटन। নরাধিপ প্রাণ হত, সুনিশ্চয়ে অবগ্রু, मकस्थित (- इ मक्ष गत्म ॥

এই রবে পতিতা ভতলে। উচ্চৈংম্বরে পরিতাপ, আর্জনাদ দীর্ঘালাপ, সেই রবে সকলের, প্রাণগতে রাঘবের, অবণে জাগ্ৰতা দেই ত্ৰলে ! দেখিয়া সকল নারীজনে हाहाकात कि हहेन, उद्धारा एक महिला, জিজাসিলাপরে দৃই জনে ৷ শয়ন হইতে উচ্চো,লপতি আসনে চুটো, সন্ধটেতে সকল্প শরীর। দর্শন স্পর্শন পরে, মতান্ত দৃংগ অন্তরে, হতপ্রাণ জানিলা সুঙ্গির। বিধমুখী বনিতা বোদন: खावन कहिया शरह, जन्दः भूतनामि चरहः नप्राय काश्य मर्स स्वय मकरन धकत इरग्रा, इंडम ९ छ। टरग्र दरग्रा, त्तामन कतिया उँकिश्यतः कृततीत आग्र तव, कटत श्रुद्रमाही मव, कुमुल इहेल ताख्यरत। পুরী ভাপে পরিপূর্ণ,সকলে জাগিল ভূর্ণ, নগরে নাগর অনাহত। अतिनिया हास्रश्रुतः,विश्रम तम्श्रिया मृत्तः, শঙ্কাচ্যুত চলে যুগে ঞ্জ অপর অপর নারী,পুরে চলে শারি শারি, ष्ठाति नग्रम् वाति दस्य। नकल अञ्चनात्रन, अकळ मीर्घ त्रामन, কার সাধ্য স্থিব চিন্ত রহে।

সসক্তমে হাহা রবে, বিধবা হইব সবে, সকলে বিক্লত আস্য, হাছা নুপতি পঞ্চাসঃ शक्षक शाहरेल देहन किया। অযোধ্যা নগরে দৃংখ কিবা ॥ কৌশল্যা সুমিত্রাসতা,নিদ্রাভঙ্গে দুঃখরতা,কিবা বৃদ্ধ কিবা শিশু,বঞ্চে যেন বিদ্ধ ইযু নপ কণ্ঠ সকষ্ট বিরাগে। ভয়স্কর নপাসন, সমাকুল সর্বা জন. বেষ্টিড চেষ্টিড দেহ জাগে: পরে বারদার রুশা, স্বামি গতে সুপড়্য: বিনাশ দৃংখিতা অতিশয়। প্রভিয়া ধর্নী তলে, কহিল। রোদন বলে কোপা গেখে নৃপতি নিদ্যা নৃপতি নিস্পদ্দ অক্ষি, ঐশ্বয় ভোগ উপেকি, প্রলিতে লুখিত কায়, উম্মন্তা অধিনী প্রায় তত্ব আপেসচেষ্টিতা সতী। সপ্রীপণ সভিতে, নাপারি সূজা রহিতে। (58) ही बर खरा तम् प्र हो। इडेग्रा प्रलि धमति, कारमन स्पन कुदती-शक्तित आग ममाकूना। শোডাহীনা অতিদীনা, সপ গ্লীসহিতে ক্ষীণা-मिलिया राष्ट्रकः प्रध्याकुनाः॥ নিশ্চয় নবেজ গত, জ্ঞান করি উপরত্ত. वश्वी एडझ्वी न्वतः। বার্থার করণাম, রোদন করিয়া ভায়, ককণা সক্ষরে মুক্ত ক্রে॥ धवन कतिया कत, कान्सरय वा नरतचन. कि क्षेण शिरण कृषि काथ।। वाथिया पृथ्यिनीशत्व, कक्रवा कष्टे शहरत. मद्भ कति मन मह वाशी

বাসায়বে অযোধায়ি, দশর্থ গত ভায়, जरुः श्रेत्र निवानि (तापन । িরম্বস্তি সর্গায় কথা, প্রবাণে অভান্ত ব্যথা, তথাপিও পদিত্র প্রবরণ ७७ मर्गहा

প্রার

নপতিৰ মৃত কায় নিৱ্যিয়া ভায়। ত্রনল শীতল যথা সমুত্র শুকায় । ্রস্তগতে আদিকা যেমন ছোতিহীন। মেই কপ স্বৰ্গ গত নৃপতি মলিন ! শ্রীরামের বনবাস পতির বিনাশ। पृष्टे पृश्टय पृश्यिमीत शृद्ध श्रुतवाम । স্থানি পদে ধবি সভী করিয়া বিলাপ। বিস্তার করিয়া রাণী আপনার ভাপ 🕆 সাধ্বাদ স্থানিরে সভ্রে দেন সভী। তুমি ধন্ম ক্লতপুণ্য শুদ্ধ সন্ত্র মতি। তুমি মান্ত মানদাতা কি কথা তোমার: অস্পকালে পুত্রশোকসিন্ধ হৈলে পার: একণে অবনীনাথ অনাথের প্রায় বামশোকে দক্ষ নাহি দেখি তব কার : কুমার বিরহে দেহ সম্ভুত সন্থাপ। তাহে নাহি দহে সেই না কর বিলাপ ॥ महे थान इत गांधि वाधिक ना इत्या। স্বর্গ গত হৈলে তুমি কিছুকাল রয়ে।। সতা সন্ধ পুণা দেহ তুমি মহীশ্র। মহাত্রা প্রধান নরে সর্ব্ধ শোভাকর।

করণা আশ্রয় ভূমি করণ ভ্রম্য। এই হেত করণা না করিল আ শ্রম । আমি অতি অওদ্ধা অতাও সন্ধ্রীনা : অদ্য সেভিত নীচ স্বভাবা সুদীনা। এযোগ্য আমার অতি জীবন ধারণ। मझ् इर्त पृथ्य श्रीन तरह जकातन्। মৃত্যু ভাল যে অৱস্থা হইল এফণে। अभन्य भगन्य खोन मः मर्ग कहरन জীবন ধাবণ মাত্র কষ্টের কারণ। এ এবস্থা অতিশয় নি**ন্দি**ত রা**জ**ন॥ যে এবস্থা এ অবস্থা অবস্থার শেষ। ইংলেক্ষা তত্ত্ব জাগ সুরাগ বিশেষ 🗵 এমন জীবন যার মরণ উচিত। জীবন হাজিলে হয় অহান্ত প্ৰজিত। যে শুদ্ধ সভাব তুমি পুল্ল শোকানল। আমাকে অর্পন করি হইলে শীতলঃ সেই পাপ তাপ দহে সতত আমায়। শুদ্ধভাবে সম্ভবে সন্তোষ তব কায়॥ পুল্রশোকে সমাকুলা অতি সকাতরে। যে সকল কথা আমি কহিনু ভোমারে 🖟 সে মনু। আমার প্রতি না করিবে আর! প্রসন্ন হইয়া নাথ না কর স্বীকার 🛭 শ্মা কর কে। নীপতি অক্ষমার দোষ। তুনি দেব সত্ব সদা পরিতাক্ত রোষ 🎚 মারণ না কর প্রভু মম অপরাধ। পণ্ডিতের পুণ্য দেহে না গাকে বিষাদ ॥ সকলি সহ্ন হয় সাধ্র শরীরে। क्यित मानीत लांच नित्तमन धीरत ।

পরে রাশী করিলা কেক্য়ী তিরস্কার। कति स्म अनर्थ कर्ष नमन मः हाह ॥ রাছ্য লোভ হেতু অতি গহিতাচরণ। কুদ্রমতি প্রাপ্ত হৈলে পাপ একারণ 🖟 কামনা সম্পর্ণ তব হইল এখন। অকন্টকে বাজ্ঞা ভোগ কর বিলক্ষণ॥ হরিলে পতির প্রাণ করিলে কি কর্ম। ধিকার স্বীকার করি কর রাজ্ঞ ধর্ম। সুখভোগ অর্থােগ দাতা গুরুতর। দেবত। প্রম ধাতা পতি নির্ভর॥ কে আছে কুৎসিতা নারী তোমার সমান। নাশিয়া আপন নাথে দেহে ধর প্রার॥ লোভে কার্য্য কি অকার্য্য না কর বিচার। না ভাবিলে কীর্ত্তি লোপ সাধর আচার। নরকে গমন ধর্ম না করি মারণ। অধর্দ্ধে নাথের মতি তোমার কারণ 🛚 অভান্ত আপন হিত না করিলা জ্ঞান। অগুক্তে হইল যুক্ত করে৷ অবিধান 🛚 তোমার সভোষ হেতু মহাঝা হইয়া। প্রাণ প্রিয়তম পুল্লে বনে পাঠাইয়া॥ ভাগ করি প্রাণ প্রিয়তম রঘ্তমে। সেই শোকে তরু তাগ সৃদৃংখ সম্ভ্রমে। তিন কর্ম একবারে করিলে সাধন। বৈধব্য অযশঃ আর ত্রিলোক নিন্দন ॥ লোভ হেতু এই সব তব আচরণ। এ সকল মম প্রিয় নহে কদাচন ॥ श्रीमान कमलम्ल नयन श्रीताम। অধিলের সুদর্শন ইন্দীবর স্থাম।

পিতার জীবন নাশ হেত বন গত। একর্ম কি কভু হয় মম মনোগত। জনক তনয়া সুকুমারী তপ্রিনী। ভোষার নিমিত্তে দঃখভাগিনী কল্যাণী অতি উগ্র ভয়স্কর পক্ষি মৃগ নাদ। अतरव উष्टिश महत्र ভাবিষা विशान ॥ মৈথিলী নিবাস স্থলী করি পরিতাগ। শ্রীরাম সহিতে গতা বনে অনুরাগ[®] (य विकि मक्षादत द्वारम मिटन वनवाम । সে বৃদ্ধি পিতার নহে গেল রাজ্ঞ আশ । ধর্মিষ্ট কুলের শ্রেষ্ট হৈল বনগত। একর্ম কি ভরতের হবে অভিমত। বিতর করিবে নিন্দা ডোমারে সন্তান। অপ্রিয় অহিত ক্রম্ম তব অনুষ্ঠান 🛭 নিষ্পাপা ধর্মিষ্ঠা ভূমি ছিলে চিরকাল। कि एक हमानी दिश्ल काम क्रांस काम। অধর্ম আশ্রয় করি করিলে অধর্ম। চিরকাল ব্যক্ত রবে তোমার কুকর্ম॥ কি রূপে সে মহা সত্ত্ব ভরত সন্তান। দৃঢ়ব্রত রামে অনুগত যার প্রাণ॥ निष्णांश, कुकर्ण (यह मक्षण विहीन। তব দোৰে দোৰী হয়ে। হইবে মলিন॥ রামক্রত বৃত্তি যার ভরত সুধর্মী। তব বুভে বুভ হয়ে৷ না হবে কুকমী ॥ নিন্দিবে আগত মাত্র তোমার করণ। করিলে যে কর্ম তুমি অবণে মরণ॥ যে কর্ম করিয়া তুমি আপনাকে সভী। সাধ্জ্ঞান কর সে কি সাধ্জ্ঞন নতি 🛭

কি করিব স্থামির শোচনা আমি পরে রামের **কি লক্ষ্মণের অতি দঃখ** তরে ॥ কিলা বৈদেহীর জন্ম করিব শোচনা। কিবা আপনার দঃখ করিব ভাবনা। এ বহু অনুশোচনা আমার শরীরে। একেকালে অমূভব হইবে অচিরে। এ দৃঃখ महिया দেহে এ প্রাণ ধারণ। ইহাপেকা সুমঙ্গল বর্গ মরণ॥ আর্মারে করিয়া ভাগে বনবাসী রাম। স্বর্গ গত স্বামী মম দৃঃখের বিরাম ॥ স্বার্থ পরিতার করি তাত্ত করি স্বর্গ। কুপথে ভ্রমণ অভ করিব কি দুর্গ ॥ হা নাথ অনাথ নাপ কুপণ ব**ৎসল**। আমি অতি দীনা ক্ষীণা নাহি স্থিতি স্থল পরিহরি কিন্ধরী অগাধ সিন্ধজলে। এ খোক সাগরে ত্রাণ কর রাথ স্থলে। সুখেতে পালিতা আমি স্থামি পরায়ণা ভাজিয়া ভোমাকে করি কার আরাধনা॥ ধিকং আমার জীবন দেহে ধিক। তোমার অপ্রিয় কর্মে কি সুখ অধিক। ভাষ্য কর্ম সতী ধর্ম সুজন সাধন। পতির সহগমন স্বামির সেবন ॥ সে কর্মে বিরত আমি হইলাম অগ্ন। বাম দর্শনের আশে প্রাণে আশা সভঃ। তবে আমি সুকর্ম না করিলাম কিবা। তোমার সহিতে যদি হয় অগ্নি সেবা॥ এ দেহ তোমার সহ দক্ষ হৈত যদি। अপात पृश्टभंत्र পात कीन कर्मा नही।

পরলোক গমনে পরম সুখ লভা। তোমার সংযোগেগতি প্রশংসিত সভা ভোমার বক্ত কর্ম যে সকলে হিত। অছ আমা হৈতে হৈল তার বিপরীত॥ পতি লোকে পাপিনীর যাত্রা নাহি হয় এই হেতু যোগ্যা আমি নহিব নিশ্চয়॥ বেই হেতু আমি অতি কুকর্ম্মে মলিনা। পতি চিতা আরোহণ তাহে মম ঘণা॥ ধিয়,তা কুপাপাশ্রিতা কাল বশতায়। জীবির জীবন ভাগে ঈশ্বর ইচ্ছায়॥ জীবনে আমার আশা ভাজিয়া ডোমারে। না হৈলান অনুষ্তা তব সহকারে॥ सर्गात्र मभावथ सामी मर्खाताशा। অরণ্যে অপূ**র্ব্ব পুজ্র সভ্যে হ**য়্যে বাধ্য । একা আমি উভয়ে করিয়া পরিজাগ। শাখা মূল হীন বৃক্ষ প্রায় দেহ রাগ ॥ কোথা পুজ্র মহাবাহু রাম মম প্রাণ। কোথা পুত্ৰ হে লক্ষ্মণ সুমিত্ৰা সন্তান ॥ হাহ। সাধী সীতা কোথারাজার কুমারী। দুঃখিনী আমারে মার ভুবন সুন্দরী॥ কেক্যীর বচনের বাধ্য নরপতি। রাম পুজে বনবাস দিয়াছ সম্প্রতি। এই কথা শুম্মে ব্যথা পাইবে যখন। সত্ৰীক সন্তাপী হবে জনক রাজন॥ একে অপ্প অপস্ত তাহাতে বৃদ্ধ অতি। তোমার সন্তাপে তপ্ত হইবে নৃপতি॥ তব শোকনিলে দেহ সম্ভপ্ত হইবে। নিঃসংশয় নৃপ সিংহ জীবন ভাজিবে 🛭

ত্মি সীতা পতিব্ৰতা সাধী সুল্কণা। সুখ দৃঃখ সম করি ভত আরাধন। ॥ গ্রীরামের পশ্চাতে পশ্চাতে গেলেবন। এই ट्रिकु (मह पृश्य नाहि मिटन मनः ॥ স্বামী বন্ধ গুরুদের স্বামী অতি গতি। প্রম আশ্রয় লোকে স্ত্রীলোকের পতি। পতি শোক পুত্র শোকে মলিনা সুন্দরী। পতি পুজ্র শোকাকুলা যেমন কুররী # অত্যন্ত পীড়িতা হয়ে। অনাথার প্রায়। বিলাপ করিলা সতী কৌশল্যা যথায় ! দৰ্বে পূজ্ঞ নহাঞ্ৰি ব্ৰহ্মার কুনার। বশিষ্ঠ সর্ববিত্র যার রুদ্ধ নহে যার॥ • স্ত্রীরণের মধ্যে আসি হয়ে। উপদীত। কোন ছলে নূপতির করিবারে হিত॥ দেখিলেন ধিচ্ছবর নূপবর মৃত। বিলাপ করেন রানী হয়ে। অনাশ্রিত। রাজ্ঞার যে সব আর অপরা রমণী। পীডিতা কোশল্যা খেদে রামের অননী। পরে করি নির্জন বশিষ্ট মনিবর। করিলেন মন্ত্রি নহ মন্ত্রণা বিস্তর॥ প্রাপ্ত কাল কর্ম্মের কারণে অতি ধীব। তৈল পাত্রে রাখিলেন নবেক্স শরীর 🛚 মক্রিগণ পুরস্কন প্রবর সহিত। মন্ত্রণা করেন মুনি সময় উচিত। व्याया। इहेर्ड गाडांगर कुल गड। চিরকাল তথা স্থায়ী শক্রন্থ ভরত॥ খানয়ন কর প্রয়োজন সাধিবারে। রাজপুত্র বিনা কেবা সমর্থ সংকারে 🛭

মব্রিবর্গ দেখি উপদর্গ উপস্থিত। কোশলেজ রক্ষণাবেক্ষণে সাবহিত পরে সেই মুনীন্দ্র সহিত মন্ত্রিগণ। रिज्ञाती माथा नृत्य कहान भग्न ॥ দেখিয়া দৃঃখিতা অতি যুবতী সকল। এই নৃপ এই নৃপ বলিয়া বিকল ॥ উদ্ধবাহু মুহুমুহঃ নিম্বন নিৰ্ঘাত। উরঃ শিরঃ জঘনে সঘনে করাঘাত। শশিহীন নিশা দিবা দিবাকর হীন। সেই রূপ অযোধ্যা হইল নপ বিনা ॥ অঙ্গনা সৌন্দর্য্য হীনা স্বলাথ বিহীনে। সেই রূপ অযোধ্যায় অস্কুকার দিনে ॥ হাহাকার শোকাপার সর্বঞ্নাকুল। পথ পুরী সনগ্র চত্তর ব্যাকুল ॥ হত প্রভা স্বর্গ শোভা প্রভাকর বিনা। নিষ্পাভা যেরপ নিশা নিশাকর হীনা 🛚 সেই রূপ মহাপুরী শোভা নাহি পায়। মহাস্থা মহেত্ৰ হীন তথা অংবাধাায়॥ नदनादी विठाविष्य পद्ध वावसाद । করিলেন বহু নিশা ভরত মাতার॥ व्यव्याधा नगद्र नह अवीत विनाटम । বিলাপ বাহল। মাত্র মানব মানদে। অনন্তর নৃপবর গত হৈলে পর। দুঃখিত তাপিত বিনা নহে কোন নর 🛭 পাদপ পদ বিহীন পড়ে ভূমিতলে। সেই রূপ বিনা ডুপ মানব সকলে ॥ ভিক্ষক না পায় ভিকা উপেক্ষায় ফিরে তিন দিন শোভাগীন পুরী শোকনীরে। ı

অযোধায় নরেজ সংক্রম চিন্তা জনে চতৃঃষ্ঠি সর্গ সাঙ্গ বেদ রামায়ণে ॥

৬৪ সগঃ।

मधु जिल्ही।

শর্করী সংক্ষরে, প্রভাত সময়ে, वाषिक उपरा भत्। त्रांखाध्यः श्रंग, नद्यक्त ভবन, চলিলা অতি সমূরে ॥ অমাভা সহিত, সভা উপনীত, ममल विक श्रेतत । विभिन्न कार्वान, महिल विकान, বামদের যশস্কর ॥ মৌলালা গোতন, নর্ম দিজোত্তম, মার্কণ্ডের মুনিরাজ। সকলে মিলিড. বেমন উচিড, ধিজকুল ধিজারাজ ॥ হয়ে উপবিষ্ট, সম্মুক্তে বশিষ্ট, শ্রেপ্ত রাজপুরোহিত। প্রসঙ্গ উত্থান, করিলা বিধান, ৰথা কাল সমূচিত # मभत्रथ करा, सुनी असूनरा, এই একাঁ মহা নিশি। বৎসর প্রমিত, হয় অনুমিত, একি বিপরীত শ্রুষি।

পুরবাসী জনা, করয়ে শোচনা, ভাবনা মৃত রাজনে। নপ স্বর্গত, অরণ্য আশ্রিত, **बिहाम मह नम्मा**त्॥ কেকয় নগরে, গিরি ব্রজপুরে, ইতঃপূর্বে তদমুক্ত। শত্রুত্ম ভরত, বহু দিন গত, ন্পাত্মজ মহাভুজ ৷ কর অনুভব, ইম্বাক প্রভব. এ রাজ্য সম্ভব কারে। অরাজক রাক্ট, হৈল প্রায় রাক্ট, বিনপ্ট হইতে পারে ৷ स्र्यावः मध्रत, वह खनाकरत, রাজা কর অযোধ্যায়। भागासक भन, दिश्ल स्नाभन, বিত্তর বিপদ তায়। वर्षि ना घनानी, मरू अ अभानी, थत कत वाली मम। অরাম্বক পুরে, শদ্য অতি দুরে, ভূমি বীজমুষ্টি যম॥ অরাজকে সূত, বহু গুণযুত, দেখ কি অদ্ভুত মুনি। না রহে শাসনে, স্বন্ধু ডাত সনে, ষুবা রত নহে ধূনী॥ অরাজকে শিষ্য, করয়ে অবস্থ্য, **ध्कु मरु मगु**। ভাব। ना खरन वहन, इटत इष्टे धन, কুবচন মাত্র লাভ 🏽

नाहि तरह यमु, नत नत्र नत्र অপ্প অসু হীন জ্ঞান। কি আর অপেকা, ভিকুকের ভিকা, লাভ শিক্ষা হত মান। অরাজ রাজত্ব; মহতী মহত্ত্ব, প্ৰভুতে প্ৰভুত্ব হীন। वलवान स्वत, मुर्खाला धन, रत्र था छ अती। व्यतास्त्रक ध्रा, व्यक्तकाती याता, यक्क जाहा नाहि करत। रुदत रख्ड धन, जानि मनुग्रान, শরীর পীড়ন পরে। অরাজক রাজ্ঞ, ক্ষান্ত সভা কার্য্য, অ**স্থা**য়ে সতত রত। ना करत उद्यान, स्थन त्रमा द्वान, প্ৰপা পুণ্যথান যত ॥ भूग छहाइनी, इहिं नकनि, রহিত নর্ভ্বক নট। ना करत छेदमव, मभाव मखव, সুখ সমূদ্রব ঘট। नरह वर्ष निक, निख नम वृक्क, সভত নিষিদ্ধ করে। লোক ব্যবহার, দুর পরিহার অপার কুকর্মাচরে ॥ বৰ্জিত স্বধর্ম, কোথা ধর্ম মর্ম্ম, मञ्जून तक्षन व[†]ग्र। বেৰ হীন বিঞা, পাঠ ভাজে ফিপ্ৰা, নিবুতি নিগ্ৰহ তায় ॥

সুকথক গণ, কহিয়া কথন, यमनः त्रक्षक नरह। নৃপহীন দেশ, কে বুকে বিশেষ, কার স্থল কথা কছে। कच्यका विवार, जारह मरहादमार, না দেখি না শুনি আছে। অরাজক পুরে, দৃঃখিত প্রচুরে, অনুদেগ কর কাছে। कतिया विश्वाम, मानकादा वाम, না করে কম্মকাচয়। ক্রীড়া বিবর্জিড়া, রাজমার্গে হিতা, অরাজকে ভীতা হয়। অরাজক স্থানে, বিহার উভানে, ना का का किनी मह। कामूक मकला, निर्देश कोश्रल. ক্ৰীড়া অতি ভয়াবহ। जताक नगरत, धनीशन घरत, कू पूज ना करत वाम। मण्ड मञ्जा, मम् मित्र र्य, সম্বরে ফি রূপে ত্রাস। নৃপহীন দেশে, বণিক না এসে, यमि अस्म सम श्रमाग्र। দুর্গতি দাখান্দ, লয়ে নিজপণ্য, अ**अ (मर्म (वर्ग शंत्र**॥ कृषि कीवी कन, ना करत कर्यन, অরাজক ভূমিপথা। পশু वृक्षि नर्ह, कि जाश्रास तरह, কে কহে পীলন কথা 🛭

এक चान हत, यक मूनिवत, मदम अग्रद नरह। ভয়ে হয়ে ভীত, নুপতি রহিড, গুহা শ্রমে গিয়া রহে ॥ নূপ হীন স্থান, তাহে কি কল্যাণ, কভু আছে মুনিবর। এরাজক পুরে, বিজয় সূদ্রে, কে কাব বল কিন্ধর " यशा निमा ग्रान, तकि कीदन, ज्वहीन दन यथा। অগোপ নগরে, গোধনে কি করে, অরাজক প্রয়ে তথা । माद्रशि विश्लीन, द्रश्र म्लांडा शैन, তুরক কুরক করে। হবিলে গমন, অবশু পতন, তথা অরাজ নগরে: ধনী কেহ্নয়, নৃপাহীন রয়, (एक् मिन भ जारवाछ। দুর্ববিশের ধন, করিয়া হ্রণ, বলী করে উপভোগ্য ॥ पृत्रील खनात्त्र, मश्कात्त आकृत्ति. मर्काश मवन काशः যথা ক্ষুদ্র মীনে, আনিয়া স্বাধীনে, वली भःभा धति थाय॥ রাজ হীন রাষ্ট্র, তাহে বহু কষ্ট্র, नारिक निर्माष्ट्र सना। ধর্ম পথ নাশে, সদা পাপ ভাষে. করে কে গুলি গ্রনা

অন্ধ তমঃ প্রায়, অরাজক হায়, গুণাগুণ তায় সন। কে জানে বুভান্ত, শান্ত কি অশাং পয়ঃ পয়ঃ সমোপম । लाहा भेत धन, गुर्थ में सु। जन, অচিস্তিত মনঃ নহে। একে यम इस, इत्स नात्न तस. বিনাশ বসু বিরহে : অভএব মনি, কর নপম্লি, যদি চাহ সকলাগে! किस्नान कथा. वहरन मंत्रभा. नुपामिक धनदान् ॥ বশিষ্ঠ আপনি, মক্তি শিরোমণি, মন্ত্রিরা কহিলা পরে। ন্প বর্ত্মানে, রাজ সন্ধানে, অনুগত তৰ নৱে 🕫 নরেক্স সহিত, তব বশে স্থিত. গ্রামরা অথিল জন যাতে রহে রাজ্ঞ, কর সেই কার্য্য, স্থায় তব তপোধন। কুমি বিশা সূত, অহাতে অদ্তে. অনুভব অনুভাব। ঈক্ষাকুর বংখ্য, কুমার প্রশাস্য, শক্ৰ জন দাহে দাব! রাজ্যে অভিষিক্ত, করা উপযুক্ত, অবাজকে তিক্ত মন্ত। নূপ সুধান্তি, করাইয়া সৃষ্টি, রক্ষা কর ত্রোধন ।

७७ मन्हा

প্যার ৷

হিজ মন্তিগণ বাকা করিয়া শ্রেবণ ! প্রতিবাকা কহিলা বশিষ্ঠ তপোধন মাতামহ কুলে স্থিত ভরত কুমার। শক্রম সহিতে সেই বীর গুরাপার ! আন দুত হারা শ্রীম ভরত কুমারে। শীঘুগতি চরপ্রতি শাসন সঞ্চারে: তর্ম্বি তুরগে গিয়া আনিবে স্থরিত। না করিবে নুগতির বিনাশ বিদিত বশিষ্ঠের বদলে বিশিষ্ট বাকা শ্রুত। তথাস্ত গছতু বাক্য কহিলেন ঞ্চ : कडे हुए। मन्ति हारग मुनिदद शहर জয়ন্ত মন্ত্রির প্রতি কহিলা সম্ভরে: যাও যাও জয়ন্ত সদুতে অতি জবে। নুপতির প্লুরে প্রিয় 🖰 প্রতেশিবে যবে -তাক্ত শোক হইয়া কহিবে এই কথা। কেহ যেন না শুনে অপ্রিয় বাক্তা তথা ! অযোগ্যা এবনীপতি এাদেশে এ স্থানে। आहिलाम युवताङ उन विध्यादन . জিজাবিয়া সুকুশল কহিবে প•চাহঃ মল্লি মহ নুপতির আদেশ সাক্ষাং। আছান্তিক কাৰ্য্য আছে তোমার সহিত। এই হেতু এ স্থালে আমরা উপস্থিত গ বরাবান্ জ্ঞানবান পিতৃ স্থান চল। বিজ্ঞবর বহুত্তর বিলম্প বিফল 🖟

না কহিবে নূপতির নূদেহ পতন। পুত্রশোক লোক ভয় বিকার বচন। শ্রীরামের বনবাস অভিলাব ধৃতা। লক্ষ্যণ জানকী সহ প্রবেশ অর্গ্য বভবিধ বাকে। আর নাহি প্রয়োজন। জিজাসা করিলে তব করিবে গোপন टाक्रायाथ উপভোগ্য বসনাভরণ। লয়ে যাও কুমারের সম্প্রীতি কারণ। এই রূপ সংবাদ শুনিয়া দুভগ্ন: ষ্ঠ চিত হয় ছিত কবিল গমন তর্ধি ত্রস্থোপরি করি আরোহণ অভিজ্ঞান সাধিতে পরম প্রয়োজন : श्रीतिमाः भारतमान श्रेणक উद्धतः ক্রত দতগণ পিনা হস্তিনা নগবে 🗈 পার হয়ে পত্তিত গাবনী পাপ হর্ গঙ্গা ভব ভয় ভঙ্গা ভোগা মেঞ্চি পরা -পশ্চাতে পঞ্চাল দেশ প্রবেশ করিয়া। কেতৃহলে পরে কুরু জাঙ্গলেতে গিয়া প্रक्ति हाचि भूही भाद इहेग्रा वादगी। করফেরে সর্বতী সংসার তারিণী " स्टोबान बलवान मृष्ठश्व श्रेष्ठ । সন্ম খে প্রস্করাবতী পার হৈল তায় : সরোবর বিশুর প্রফল্ল পদ্ম ময়। নদীগণ বিলক্ষণ বেগৰতী বয় 🛭 নির্দাল কমল ভার চল চল করে। नितीकत्व कष्टे घटन ठिल्ल सङ्दरः॥ কার্যাবশে অভিলাযে করে পরিঞাগঃ नहीं मर्या डेम्पिता केंबर है असूतांग !!

পুণ্যকরী দুস্তরী দৃষ্টির অগোচর।। বিবিধ বিহঙ্গ কুল সেবিত বিস্তরাঃ भारतम् । अठ । विश्व कृत्रवर्छ। যাবতীয় জলচর নিচয় বস্তি : পুরের সম্পূর্ণ পুজা চৈতা বৃক্ষবর। সভ্যের প্রার্থনা তথা করে বছনর 🗈 সমলে পুজিয়া বুকে করিয়া প্রবাম। ভূলিক নগরে পরে যায় দৃত্রাম ॥ অজকুলা বিপুলা পাইয়া ভার পরে। ध्यदम कतिल एक कोरीत भगरतः অনন্তর ক্ষিবর নারদ রচিত। ইক্ষাতী নদী তীরে দত উপস্থিত : ত ভূবেবিদ বেদান্ধ পারেগ বিপ্রাগবে। প্রণাম করিয়া পথ জানে জিল্লাসনে : হয়ে। শ্ৰুত ক্তু ক্ৰাণীৰ্মাদ লয়ে।। চলিল প্রম রঙ্গে রাম কথা কয়ে। रापा हाथि हमाश्वान वास्तीरकत प्रमा। উভরে সুদাস রাজ্য না করে প্রবেশ । पृष्टे शास्त्र विक्षुश्रम मञ्जल नश्ती। দক্ষিণে শালালী মধ্যে গিরিব্রজপুরী -সপ্ত রাত্রি মধ্যে দূত প্রবেশে তথায়। গমনে অহান্ত আন্ত সবাহনে কায়! করিতে প্রজার হিত সকুলে রঞ্গ। নুপতির বংশ পরিগ্রহ প্রয়োজন ॥ বরাবন্ত অভাত যাবত দুতবর্ম। श्रीत अतिभारत भाक्ष येष्ठ यष्टि भर्ग ॥

৬৬ সর্গঃ।

প্যার ৷

যে দিবস দুতবর্গ প্রবেশিল পুরী। গিরিব্রজে ভরতে দৃঃস্থা হয় ভূরি : এতাত ভয়দ স্ব অণাঠি হোচক। স্বগু দেখি মারিলেন প্রবৃদ্ধ জনক। অহান্ত উল্লেখ্য নরেন্দ্র কুমার। দর্শন করিয়া স্থাপ্ত চন্ত্কার " প্রিয়বাকা নানাবিধ কথোপকপুন। তাহাতে লে দঃখর াশি করিতে খণ্ডন দ বিস্তর বচনালাপ পরে নভা গীত। নাট্টোক্তি বিষয়ে নানা মৰ্ত্তি প্ৰকাশিত হামা পরিহাস চিত্র বিলাস কারণ। কলে বছবিধ কথা প্রিয়বাদি গ্রা বয়স্যা বর্গের হান্য প্রকাশু প্রবনে । কিপিছ নস্তোয নামি ভরতের মনে। ভবতের ব্যথা দেখো ব্যথার ব্যথিত। কোন প্রিয় সখা জন কহিছে স্বরিত॥ কেন কেন নথা হেন অবস্থা তোমার। স্থাগণ সেবনে বিমর্থ বার্ত্যার ॥ গ্রসন্থোষ চিত্ত নৃত্যগীত বাছারসে। भूश मृश्य मधान मर्दाना आजावरम ॥ কি দৃংখ এমন মুখ্য করিলে খ্যাপন। অবহা করিব মুক্তি উপায় স্থাপন॥ নিজ ভক্ত মুখে উক্ত সময়োক ভাষ। ভরত স্বপ্নের কথা করিলা প্রকাশ 🛭 व्यरङ्क मत्नामृश्य मृश्यक्ष मर्भात । এবণ কবিবে তবে গুন সর্বে জনে !

দেখিলাম আমি অভা শয়নে নিডায়। ক্ষিতিতে গতিত চন্দ্র সাগর শুকায়। স্থারোদে অনায়াদে মৃত্যুভিঃ রাহ। রক্ত বস্ত্রধারী পিতা ভগ্ন পদ বাল 🛭 নত্রণ বন্ধন করিরা মম ভাতে। চলিল দক্ষিণ মুখে তাড়ন নির্ঘাতে ॥ পুনর্ব্বার চমৎকার স্বপ্ন উপদেশ। তৈল পরিপূর্ণ তনু মুক্ত রোম কেশ : উচ্চতর অদ্রিবই উপর আরোহ। পুনর্বার অগাধ দাগরে ময় দেহ। পুনশ্চ গোময় ক্লে হইয়া মন্তিত : উন্মন্তন নিমন্তন করিয়া উথিত অঞ্জলি অঞ্জলি করি কট তৈল পান ে,তি আহ্লাদিত চিত্ত সুন্তা সমান পরে পান করিলেন তৈল্ময় নীর। श्रुवः श्रुवः छिर्द्ध श्रेष्ठ जात अवः भितः रेजनानम रेजान जम नगर गडन्म । উমিয়া বসিলা পিতা করিয়া খাদেন লৌহময় ক্লম্বর্ণ গীঠের উপরি। নরনাথে দেখ্যে হাস্য করে কভ নারী: कमरा क्रम शिम्नणा अभमा अरीता। দেখ স্থা দেখি কেন অসম্বল বিলা রাসভ সংযক্ত রপে করি আরোহণ। রক্ত মালা রক্তান্তর করিয়া ধারণ ৷ হইয়া দক্ষিণ মুখ অতি ক্রতগতি। ইতোনধ্যে **অস্ত স্বপ্ন হ**য় উপস্থিতি॥ প্রদীপ্ত অনল শান্ত হয় জলদানে : भारत मध मख शक भौर्ग (महे द्यारा ॥

বিশীর্ণ শিখর বর ভগ্ন চৈত্য বৃঞ্চ। মহাধ্রত্ত পতন রহিত উপলক্ষ। এই রূপ দৃঃস্বপ্ন দেখিয়া ভয়ন্ধর। অনুমান করি স্থা অশুভ বিস্তর 🛭 বাক্ত হয় স্বপ্ন চয় দর্শনে আমার। রাম কিন্তা রাজা হত রাজ্য ছারথার ৷ যে জন রাসভ রথে পরিত 🕏 হয়। সেই মতা জন শীঘ্র যায় যমালয়॥ এ নিমিত্ত হুইয়া অত্যন্ত দীন তর। তোমাদের মিষ্ট বাকো না করি আদর। बड़े श्रेष्ठ कर्मात न! जूड़े इंग्र मनः। सर्वति । श्रम्दरा छाट्या मृज्याश्च मर्भाम ॥ অস্তানে পতিত দেখো মম দেহেশ্ব। विश्वन अभारतीयनः माति बहदतः। मिलान (पोन्मका शीम (मिथा कटनावह) व्यक्त एवं नृथं क्षयं मूनिक्तं छह ! **९**हे तुन्ध्यम् स्था कतिय। हिस्रम । লৰ্মণ বিষশ আমি ব্যশিত বেমন 🛭 भाविका गुर्भ लाख आगात अस्ट्रातः धरा अनिष्ठे मृष्टे इकेरत मदरत । ष्यायाम् उत्टाउतं मुश्यक्षं मर्मनः मक्षवष्टि मर्ग कथा श्रावान घर्षन् । ৬৭ সর্গঃ। ত্রিপদী।

স্থা কথা হয় যথা,এই কালে দুত তথা, স্বাখনে অতি আন্ততর। পীড়িত বাহ্ন পণ, যথা রাজ নিকেতন, প্রবেশিল গিয়া বস্তত্ব॥ গমন করিয়া শীঅ, ভরতে দেখিয়া বাগ্র, পদছয়ে করিয়া প্রণাম। त्राभियां उपाणिकन, विज वज्र विष्ट्रमन, মণি মুদ্রা ষত রক্ত গ্রাম। কহিছে রাজার চর, শুন যুব রাজবর, वाहेनाम व्यवस्था इहेटा। পরোহিত মন্ত্রিগণ, বিশিষ্ট সভাস্থ জন, সকলে কাতর তব হিতে॥ কায়িক কুশল কহু, কনিষ্ঠ ভ্ৰাভাৱ সহ, মাতামহ মাতৃলাক্তা পরে। হয়ে। অতি ত্রাবান্,রাছেত চল ভগবান্ আত্ততিক প্রয়োজন গরে ৷ लंड बहे महाम्लाः, जुन्दान मा इस जुला, বছজেবা বসনাভরণ। তব তব মাতৃলের, নৃপতি গোষ্ঠীবগের, আনিয়াছি সন্তোষ কারণ 🛚 जिटकारि कोरयम् वाम स्था काउन ध কাশ, তব মাতামহের তোবৰে এক কোট দিবা চেলি, গঞেছি সকলে নেপি, রজাম্ব অক্ত দর্শনে । অনুগত সুহজ্জন, সহিতে কর গ্রহণ, এই কথা করিয়া প্রবণ। দূতগণে ভোষিবারে, বহুষত্ব পুরস্কারে, কহিলেন মধ্র বচন ॥ कर पूछ मुकूमन, अभगांश मूर्य इन, পিতার মঙ্গল বিবরণ। বৃদ্ধ দশা দশরথ, বিরত কি পুণা পথ, অবিরত সৎপথ গমন 🛭

मका भीन मान धर्मा, मूश्वास्त्रीन कर्मा, করণে সর্বাদা যাঁর মতি। যাঁহার সুথে মঙ্গল, কহ তাঁর সুমঙ্গল, কেমন আছেন রঘুপতি। জ্ঞেষ্ট ভাতা ধর্মময়, রাম রম্য গুণাভায়, সুশীল লক্ষ্য মহামতি। সর্বাদা ভাতৃ বংসল, উভয়ে মম কুশল, ই মারণ কি করেন সম্প্রতি॥ को मला। धर्मातिनी, एक है। यां के म-লিনী, পতিব্রতা পতিপরায়ণা। मुमिका यक्षमाणा, य गर्ख मूत्रवणीला, ' লক্ষণ সূলকণ ধারণা ॥ শক্রত জননী যার, গুণদীমা প্রাপ্তি ভার, কুশলে আছেন পুণ্যবতী। অপরা আমার মাতা, সদা ধর্মকার্য্যে রতা, গর্মিতা প্রচণ্ডা জুদ্ধমতি ॥ ्कत्भी कि गुकूणना, शक्कारव मुमन्नना, আছেন সুনিশ্চলা কহিবে। এই মুকুশল কথা, ভরতের প্রশ্ন তথা. দূতগণ কেমনে সহিবে॥ বহু দুঃখে দূতগণ, শোকার্ণব সম্বরণ, করিয়া হইয়া হপ্ত মনঃ। সকলের স্কুশল, সর্বাত্ত ত্লামঞ্ল, मूर्य हाना अछात महन ॥ কুশণীতোমার পিতা,সর্ব্বমাতা সুখাল্রিতা বিশেষে কেকয়ী গুণবতী। তाँत मूर्य मर्ट्स मूथी,मर्खम। मूश्रामापूरी, একণে সুশান্তা বশে পতি।

পতির নিকটে নারী,গতা হৈলে সুখভারি, সুখে গৃহে গচ্ছ গচ্ছ,প্রাপ্ত হবে পদ উচ্চ নিন্দাবাদ করে। গুণ ফলে। পরে কয় দ্তচয়, অপর কি পরিচয়, অযোধ্যায় সকলে কুশলে ॥ কহিলেন তব তাত্ত,শীঅগতি চল তাত, নরনাথ নিরীকণ হবে। কি জানি সংপ্রাপ্তকাল, অতি বৃদ্ধ মহী পাল, বিলম্মে অহান্ত খেদ রবে ! জানাইয়া মুধাজিতে,অবিলম্বে উপস্থিতে, আবশুক না হবে অলস। মন্ত্রি সহ নৃপবর, তব দর্শন কাতর, প্রবেশিলে পরিবে মানস । এই কথা দত মুখে,ভরত শুনিয়া সুখে, কহিলেন অবশ্য হইবে। नकरन मुझ्र्छ कान, द्वित थाक मही भान, मक्रमात्व बाहेः स्नानितः দৃতে কহি এই কণা,স্থির করি রাখি তথা, মাতামহ নিকটে গমনে। मृठ উक्त विवद्गन, कदिलान विज्ञालन, কেক্য়ী সন্তান হুপ্ট মনে। অযোধ্যাপ্রী গমনে, ইছা করি নৃপ মনে, নৃপতি দৰ্শনে নৃপাক্তায়। দ্তগণে করে তুরা,দেশাগমে আজ্ঞাকরা, আপনার যুক্ত শোভা পায় ॥ ভরতের প্রার্থনায়, নূপতি কহিলা তায়, যত্ত্ৰে লয়ে মন্তক আন্ত্ৰাণ। জানি তাত তুমি ধন্ত,কিআর কহিব অন্ত, শুদ্ধমতি কেকয়ী সন্তান॥

মাতামহে মানদে রাথিবে। প্রবৈশিয়া অযোধ্যায়,মঙ্গল সংবাদ ভায়, লিপি দারা শীত্র পাঠাইবে। मक लात मुक्नाल, आभारतत मुमझल, कानाइत जनकत शाम সতত আমার হিতে,জানাইবে পুরোহিতে, কহিবে গ্রীরামেরে সন্মানে 🛭 अशास्त्र गुमर्वाम, मकाराद आंभीर्स्ताम, জানাইবে সুমিতা সন্থানে। মজিবর্গে পুরস্কার, সহিতে সুসমচোর, কহিবে কৌশলা। মাতৃ স্থানে। मृशिकांत मुक्कार्य, यसास मगर करन, বচনে তৃশিবে স্বভবনে। এই কথা নূপবর, কহিয়া সরলান্তর, বিচিত্র কম্বল কুশাসনে ! অপর অজিন ময়, দিলেন আসন চয়, वक्र मुका वनम कुष्रात्। রাজযোগ্য সুবিহিত,যে যে দ্রব্য উপস্থিত, मिना गुल (मे) दिज (डायरन I রৌপ্য নিক্ষ দশ শত, তার দশগুণ যত. তাহার দাদশ গুণ করি। * দৌহ্তে করিয়া স্বেহ,ভরতের মাতামহ, ধন দিলা অতি পীত করি॥

^{* (}অর্থাৎ ১২৯৬০০০০ মুদ্রা ভরতকে मिर्मन।

ভাহার অবাত্ত গণ, বহুবিধ বহু জন, শক্তম সাহায্যকারী,অপরেরা আজ্ঞাধারী, শ পূর শুচি শুদ্ধ ভক্তিমান। পীতির নিমিত্ত সমাধান॥ বেগবান প্রন সমান। সুদ্ভা অতান্ত বলবান। न्পতि इहेग्रा ठुष्टे, অस्ट श्रुतहाती भूष्टे, দিলেন ভরতে বহু জন। क्मिति भागत्व क्य, हर्भत्व मृह्या छत्र, তীক্ষ অস্ত্রধারী বিচফণ॥ মহাপুর পরাক্রমী, স্বামী ভক্ত মহাশ্রমী, দিলেন স্বপ্নরের রক্ষণে মনোরথ যোগ্যরথ, বিচিত্র আসন পথ, শোভাকরি স্থিত সুকিরতে॥ গো অস্ব রামভ উক্ট, বহনে নিযুক্ত পুষ্ট, पूष्टे इत्या मिलन नृश्छि। मिहित्त नहेश यात, वीतशन ममजात গোষানে বিমানে অবস্থিতি ॥ পাইয়া প্রতিদ দ্রব্য, ভূপসূত অতিভব্য ভরতের বহু পরিতোষ। মাতামহে করি নতি,তপা মাতৃলের প্রতি পুণতি বিনতি স্ততি যোষ। রথে করি আরোহ্ণ, মঞ্চল নৃপনক্ন. শক্তম সহিতে যান পুরে। वनवान निष्म वर्ण, यान वनी प्रश्ववण অমাভা বেষ্টিত মহাভূরে ॥

অনেকে হ্ইয়া সুবেষ্টিত। ভরতের সঙ্গে পরে, দিলা নৃপ সমাদরে, दिতীয় দেবেত্রপায়, নৃপেজ্রনদন তায়, পুরে ধান হয়ে পতিষ্ঠিত। দিলেন সহসু অখ,নানাজাতি শুভ দৃশু, অযোধ্যা কাণ্ডীয় কথা,দূত সন্দেশন তথা, 🕠 माङ्गालाङ अध्यष्टि मर्त। হেম মালী গজ শত, ভরতের অনুগত, । শুনিলে বিনাশ পাপ,দূরে যায় ভবতাপ, ই मनानाल कत माधवर्ग॥ ७৮ मर्नाः ॥

পয়ার।

शृंक्त मृत्य मृत्य यान त्कक्षी नन्दन। হতী অশ্ব রথ পূর্ণ শোভন ভা**জ**ন ॥ নানা জ্বা দিবা দিবা জনে সুবেষ্টিত। নিজ দেনাগণাবৃত পরম পণ্ডিত ॥ বেগে ধান পেয়ে তায় পিতার আদেশ বিশেষে সভোষ চিত্ত গমনে স্বদেশ। দর পাতা তটিনী অহাস্ত সোক্ষতী। বহু দেশ ব্যাপিয়া চলেন বক্রগতি॥ পুনর্মার পরে তার পারে ঘোরতর। শতक मिन পूर्व खिम ভशकत ॥ ক্রমে ক্রমে পরিক্রম করি তার জল। উক্ষাকু নন্দন গতি সংযোগে সবল দ পশ্চাতে অপূৰ্ব্বা বীষ্ণধান্তা নাম নদী। **विश्व क्**रेश थाय ज्नशाय यनि॥ উৰুরিয়া পশ্চাতে পার্থিব পুত্র যান। অমর কন্টক শিলা অকর্পনি স্থান 🛚

আগ্নেয় শৈল কর্ত্তন হইয়া উত্তীর্ণ। সভা শীল শুচি গামী নহে তাহে জীৰ্ণ শিলাবহা পুভৃতি সুন্দর নদী নদ। দর্শন পূর্বেক যান করিয়া প্রমোদ॥ সোম বেশ ক্লড বন চিত্র রথ ক্লড। হইয়া উভয় পার বাহিনী আবৃত ॥ विमिनी इमिनी कांक़ शर्खा पंचा धुनी। প্রম পারনোদকা পাতক শোধনী ॥ যমুনা পাইয়া পরে-পারে উপনীত। উত্তীৰ্হইয়া নদী স্বল সহিত ॥ আখাসিয়া স্বগণে সন্তোষ সাধভাষে। অশ্বগণে আশ্বাসেন শীতল বাতাসেঁঃ শ্রান্তি দূর করিয়া হইয়া পরে স্নাত। পয়ঃ পান করে অশ্ব পূর্ণ বলান্বিত । অপূর্ব্ব যমুনাবারি করিয়া গ্রহণ। বেগবস্ত যাবস্ত ভরত সৈম্মরণ । রাজপুত্র মহাবাহ অতি খরতর। অনল অনিল পূর্ণ শোভা মনোহর। ভদ্র যানে ভদ্রবণে হয়ে। উপনীত। বলবান তুরক্ষে চলিলা তুরান্বিত ! द्विद्या थान वाशु यान स्थमन श्राद्य । मिट्टे क्रथ प्रजुद्ध उर्द्धीर्ग मिट्टे वरन ॥ व्हेटलन পরে व्हिग्री नमी পার। প্রবেশিল অহিস্থল পুরে দৈন্য হার॥ তহপরে তোরণা নদী রাথিয়া দক্ষিণে খগণে বারণ স্থলৈ প্রবেশ তৎক্ষণে 🛭 বরণ নামক গ্রামে দশরথ বৃত। উপনীত হ্ইলেন সর্ব সৈন্তে জং

সেই নিশা সেই স্থানে করিয়া প্রভাত। श्रुत्रमूर्य हिलालन तघ्वरम नाथ॥ অর্বা উভান উচ্চতর তর্রুবর। भाग वन महापूर्व छेडीन महत्। বাহিনী চত্রঙ্গিণী আশাসিয়া পর। শীল্লতর উপনীত রঘুবংশ বর 🎚 উভানিকা নাম নদী উভীণ হইয়া। কাবেরী অরুণা কন্মূ পাচাতে করিয়া 🛭 রথয়া যাতর নদী যবে যান বীর। অগণিত নদ নদী তরণে সৃস্থির ॥ সপ্তস্পদ্ধি পার হয়ে। কুটিলার পার। লোহিতা নিকটে আসি নরেক্স কুমার # পরে অতি সমরে উত্তীর্ণ কপিবতী। এক শালে উপনীত যথা স্থাপুমতী। বিনতা গোমতী নদী পশ্চাতে করিয়া। কলিছ নগতে খাল বন উত্তবিয়া। শীঘ্রগতি অশ্রান্ত বাহন নৃপস্ত । দেশিলেন গোমতী নিকটে মহাদ্ভত। পকিকুল সমাকুল দ্কুল বাহিনী। যামিনী স্বাগিয়া চলে প্রভাতে বাহ্নী॥ দিবানাথ দীপনে উদ্দীপ্ত দিক্চয়। উচ্চতর মনুধাম দুরে দৃষ্ট হয় ॥ অপূর্বা অযোগ্যাপুরী আদি রাম্করতা। গোমতী তরণে ভূর্ণ বহু জ্বনাশ্রিত।।। অতি দীন যানস মহেক্স সূত বর। সপ্তরাত্রি নিবাস করিয়া অনন্তর॥ দে বিয়া পরমাপুরী প্রভায় বিহীন। मात्रियक किश्लिन छत्रछ मुमीन॥

निकरि वरि श्रेती श्रेन मृत्र इस । বন উপবন কেন প্রভাযুক্ত নয় ॥ হতশ্রী যেমন দেখি শ্রীমান নগরী। যেমন রাজ্যের রাজা করিলে শ্রীহরি॥ मातथि, अ मागतथि नगरत विधान। নানা বেদ বেদাঙ্গ পারগ তেজস্বান্। বাবভীয় দিল্লগণ যাগ যজে হত। ি রা**জগ্**ষি ক্ষিরা**জে** রাজে অনুগত গ अरगोगांत्र शृंखं श्रीत्र महा तहस्री । বহু জন গণ দেব দেবালয় ধনি॥ দে ধনি অধনি মানে বিয়তি ব্যাপিত। শ্রুত হয় দাগর দমান রবান্বিত। বায় যোগে জল যোগে কলোল উথিত मिह भव मनान मर्खना हजूर्जिङ কি কারণে জনস্বনে রহিত নগুর। গতঞী সমান শোভা অতি দানতর॥ রমাতর অনেক উলান ছিল পূর্বের। आस्मारम अस्मारम कीड़ा कत्रिड अशुर्स्सः জনরব রহিত সম্পে উপলক্ষি। না দেশি পূর্বের প্রায় শোভা তরগকী। অরণ্য সমান দেখি পিতার নগর। শূষ্ম উপবন বন উত্থান বিস্তর 🛭 নর নারী রহিত বিহীন গজ বাজী: যাতায়াত রহিত নগর জনরান্ধী॥ অনিষ্ট হুচক সব দেখি আমি স্থত। উপস্থিত বুৰি কোন নিমিত্ত অদুত 🛭 কে বি শরীরে কম্প হয়।

পরে নরাধীশ পুজ্র প্রবেশিল। পুরী। পূজা করে নৃপতি কুমারে যত দারী ৷ একাগ্র মানস হয়ে। পুত্ততম জনে। প্রীতি বাকো পুঞ্জিলেন বিমর্ষিত মনে। অম্বপতি সার্থিকে কহিলা ভখন। রঘ্বংশধর বীর কেকগ্নী নন্দন॥ मिथ माहिश यमन शृद्धि कानि। शृथिवी विनाम काटन जाकारतत आनि ! দেই রূপ অযোধার আকার প্রকার। ম্পিন বদন জন শক্ষ হাহাকার॥ অক্রপূর্ণ নয়ন অত্যন্ত ক্রশ দীন। नद्रनाठी नक्लि नगरद जुथहीत॥ এই কথা কহিয়া ভরত হৃত প্রতি। সুদীন মানস দেখে। নরেজ্র বসতি ! **ब्रु (मिथ म**मस् भूदहर मोह श्रु । मकल मूलत गृश् छक्त मत्नुद्रथ ॥ তাহে নাহি শোভান্বিত অযোধ্যানগুৱী। লোকেতে ব্যাকুল লোক পুরী ভয়ঙ্করী ॥ অপ্রিয় দেশিয়া সব জদয়ের ভাপ। ছिল ना এমন शृंदर्भ खिला कि भाभ। अर्थामूर्य अनूर्य मृमीन ममाक्षाछ। পিতৃ বেখা প্রবেশন কথন সমাপ্ত !

७৯ मर्बर ।

দীর্ঘ ত্রিপদী। মহেত্র ভুবন প্রায়। অত্যন্ত শ্রীযুজ, নালিভা বিমুক্ত, প্রবেশ করিয়া তায়।

न क्रिया छन क भीत त्म इंकि इहेर्ड, जानम इहिर्ड, নিগত চিক্ত অন্থির ॥ खननी छवरन यान। मिथिया जतरण, निका मानाताथ. কেক্য়ী পাইল প্রাণ ॥ আসন হইতে তুর্ণ। প্রফুল লোচনা, নরেন্দ্র ললনা, হর্ষে দেহ পরিপূর্ণ। ভরত ভাবজ্ঞ অতি। अन्नी ভবन, करहा পুবেশन, বুনিলা রাজ্ঞের গতি शाम नुप्रोहेश नितः। চরণ ধারণ, মাতৃ পরায়ণ, ঈক্ষাকু বংশীয় বীর । किक्यी जरेन जरहा লয়ে শিরোভাণ, মৃত দেহে প্রাণ, সঞ্রে সূত শশাঙ্গে। জিজাস। করে ভামিনী। कछ पिन পরে, অযোধা নগরে, পবেশিলে গুণমণি ॥ এস্যেছ পরম সুথে। গত পথ অম, কুশলী সম্ভম, চুদ্দন করি শ্রীমূথে॥ কুশলে আছেন তাত। কহ কহ সুত, শুনি শুনি প্লত,

অছ নিশা সূপুভাত 🛚

যুধাজিত সুকুশলী তোমার মাতৃল, মহিমা অতৃল, ন্পসূত মহাবলী ! मुन्दत यद्गाल हिला। মাতামহ পুরে, মহিমা পুচুরে, কত দিনে বা আইলে। কেকয়ী বচন শুনি। হয়ে৷ অতি ক্ষীণ, ভরত সুদীন, मद्राय कहिला छनी॥ ঁগ্ৰনাগ্ৰমন ক্ৰম। गितिवस रेहरज, स्नामित्व मिन्हरज, গত দিবস সপ্তম ॥ ুকুশলী তোমার পিতা। मक्राल माजूल, अभग जजूल. পুরী সুমঙ্গলামিতা : সতা কহিবে জননী। জিজাদি তোমারে, প্রশ্ন অনুসারে, হবে উত্তর দায়িনী ॥ **३७:शृर्स्स এই** श्रूरतः। श्रष्टे श्रष्टे खन, बावुड रयमन, সে শোভা গিয়াছে দুরে **#** কি হেডু এই নগর। मीन सन भून, अखास विभीन, শ্রীবিহত নারী নর। নিকৎসাহ ময় পুরে। नितानक मम्, विक नमूनम्, **अधायन অভিদুৱের**

আমাতে দেখিয়া লোকে। न कार मखाय. कि मांगी कि मांग. অচেতন যেন শোকে। কি হেতু না দেখি তাতে। স্থকীয় ভবনে, কিবা প্রয়োজনে, অন্য স্থানে শক্রঘাতে ॥ কিন্তা বনি অনুভবে। কৌশল্যা মাতার, গৃহে অবতার, ভেগা বা কি কার্যা রবে ॥ কি হেতু প্রস্তুতি ছেন। নরেন্দ্র রহিত, তোমার সহিত, শষা শূন্য হেরি কেন ! **এই অযোধ্যা निवामी**। क्टि कष्टे नरह, यन कष्टे मरह, প্রকাশিতে দৃঃখরাশি 🛚 অন্ত । আমি অতি বাগ্ৰ। क्रमक (य ज्ञात्म, याहेटा म ज्ञात्म, উৎসাহ মানসে শীত্র। भा (मर्था भरतन्य वरत । এ দুঃশ্ব পর্যাপ্তি, নহে সুখ প্রাপ্তি, न। द्राष्ट्र हिन्छ এ घरत । ভবত ভারতী শুনি। সম্রমে সত্তর, করে প্রত্যুত্তর, ভাবে ভরত জননী ৷ এই অপ্রিয় বচন। निर्मञ्ज माक्रना, त्रहिंठ कत्रना, क्ष मा करक छन्द ।

ना कत छेए। शि मनः। অধিক কি কব. স্বর্গে পিতা তব, সহিত আশ্বীয় জন॥ বলি সৃত শুন সূল। ভোমারে অর্পন, এ রাছ্য এ ধন, পুত্ৰ শোক সমাকুল। बड़े मुमाकन वानी। শুনিয়া ভরত, কেক্য়ী নির্গত, অজ্ঞান হইলা জানী ৷ পড়ো ভূমিতলে ভূর্ণ। ্ছিন্ন তরুপ্রায়, অবনীতে কায়, নিগতিত ত্রাস পূর্ণ॥ বিলাপ করি বিস্তর। वाक्न हेलिय, वहन विधिय, স্বর্গাত নরবর ॥ हा कष्टे कि क् जूबाम। शृद्धि उव मर्, भिठा এक (मर्, শ্যন শোভনত্য ৷ অল নরেক্স রহিত। भया। भाजा हीना, वज्रुख मिना, নহে নরেক্র আশ্রিত। আমার জিজ্ঞাসা জন্ত। তব বাক্য চয়, यनि भिथा। ह्य, তথাপি শ্রবণ ধম্য ! প্রসন্মা ভব জননি। অত্যন্ত পীড়িত, কহিবে নিশ্চিত, কোন স্থানে নৃপম্বি॥

এই রূপ সকাতর : क्रमक मर्भात, वाञ्चा मत्म मत्म, ভাৰত রাঘ্য বর ৷ कृषि देश्ट डिठाहेश। পতিত ভরতে, কংখ বিধিমতে, दहन नदुक्त किश्री॥ উঠ উঠ হে সন্তান। পিতা পরলোক, গত তাহে শোক, যোগ্য নহে জ্ঞামবান ৷ না করে শোচনা কভু। তোমার সমান, যে হয় বিছান, म्ष्टे धर्मा कर्मा अञ्च करत विछ (मव (मव)। धत्नी भामिया, मायछ लानियः, यख्डांनि कत्रस्य (यत्।। কে তাঁর সমান আছে। গত স্বৰ্গ লোক, বৃথা কর শোক, অনর্থ আমার কাছে 🛚 मणद्रथ नद्रवत् । অতি সুখকরী, মহেক্স নগরী, **था**श्व नरतन निर्द्धात ॥ সত্য পরায়ণ ভূপ। সুধর্ম ভাজন, তত্ত্তা কে জন, न्दार दार खक्रे । এই উक्ति मुनाक्ता। কেক্য়ী বদনে, ভরত এবন্ধে किट्रिंग मक्क्री

मृक्ष्यी हर्या वांत्रश्वात । हा विधि हा विधि, ताम भीका विधि, না দেখি তার সঞ্চার॥ न। कतिया टैक्क यात्र। যে আশা সংক্রত, সংকল্প বিহিত, বরিত আসানুরাগ ॥ ना (मथि छनक द्राम। সম্প্রতি সকল, হইল নিক্ষল, কে করে চিত্ত বিরাম ॥ ' জনক মত সংবাদ। शांकित्न मुथुना, खान मिहे धन्छ, लाटक करत माधवाम কিন্তু কৰু মাতা কৰু। পিতা প্রাণে মুক্ত, কি ব্যাধি প্রযুক্ত, সহিয়া মম বিরহ॥ আমি অভাতন জন। राज्य राज्य राज्य, तारमत कि श्वा, সামান্ত নহে লক্ষ্ণ 🛭 হট্যা কুনার শ্রেষ্ট। করিলা সংকার, অন্তিম সংস্কার. সলম্পূণ নম ছেছি। এই অতি অকোশল। বুদ্ধ মম ভাত, যে কালে নিপাত, অজ্ঞাত তাত বৎসল। বিষাদিত কলেবর। निया **आणि स्टार कृत्**न ना करिया जन्मा

কোপা সুখকর যোগ। অতি সুখাকর, স্নেহের আকর, ना मिल विधि स्म खांश॥ যে নুপতি করযোগে। माणिया मार्ड्सन, एउ डेलार्ड्सन, অক্লেশে নাশে কুযোগে ! কোথা পিতা সম রাম। নাথ বন্ধ গুরু, সৌর ভে অগুরু, তাপিত শীতল রাম॥ অগ্ৰন্ধ আমার ধীর। थांड मूलकन, ना करत जेकन, শোকে শরীর অধীর॥ দেখিয়া যে রামধন। পিতৃ শোকাকুল, অর্ব অকূল, উন্তীৰ্ণ সুখ সাধন। হইয়া যে পদাশ্রিত। জীবন ধারণ, নিবৃতি কারণ, অশেষ গুণ উচ্ছিত। সুধর্মি শেখর বীর। ভার পদতল, অতি সুশীতল, পালন কর্মে স্থবির। অনিন্দিত ধর্মাপর। मुधर्मा वदमल, भालन कूणल, ধর্মাঝা সকল নর। ्रताक्षणाच्या राष्ट्र कर दर्मा र दर्ग राज्य करान, विदर जिल्लामा

কহ কহ গো জননি।
কিবা মনোরথ, নৃপ দশরথ,
ভারতী সৃখ জননী॥
করিলেন কিবা থেষ।
অথবা বিহিত, উত্তর সৃহিত,
চিত্ত বারণ সন্দেশ॥
কহ কহ অবিকল।
করিলে শ্রবণ, পতিত পাবন,
বিহুর বাক্য সকল॥

পয়ার।

ভরতের বাক্য শুনি ভরত জননী। কেকয়ী কহিল পরে বার্ত্তা পুরাতনী 🛭 রাজপুত্র তুমি মহাসত্ব গুণাধার। বিশেষ প্রকারে শুন তত্ত্ব পরিষ্কার॥ বিধিমতে মম বাক্য কর আন্ধাদন। কদাচিত্বিযাদিত না হবে নন্দ ন ॥ ষেহেতৃ তোমার পিতা ছাজি প্রিয় প্রাণ। স্বর্মে গত মহীনাথ মহেন্দ্র সমান ॥ পুত্র শোকানলে রাজা হইয়া তাপিত। প্রাপ্ত কালে কালদণ্ডে শরীর ব্যাপিত। মৃত্যু পূর্বের যে কথন করিব বিভার। হা পুত্র হা রাম হাহা লক্ষণ কুমার। এই বলি বারবার করিয়া বিলাপ। প্ৰাণ ত্যাগ পূৰ্দে এই বৃত্তান্ত প্ৰলাপ । কহিলেন নরবর অপর বচন। **ठ** जूर्फिण वर्ष भागी श्रेटव व्य अन ॥

সীতা রাম লক্ষ্মণ সহিতে অযোধ্যায়। (व मिथित मिहे थन्छ कहिया प्रताय ॥ 🍱 ই কথা শ্রবণ করিয়া রাজসূত। বিৰাদিত ভৱত পীডিত অতি ক্ৰ**ত**। দিতীয় অপ্রিয় শঙ্কা করিয়া ভরত। বিষয় বছন অতি কিবা অভিযুক্ত ৷ स्वनीतः सिद्धारमन रुखा यप्तरान्। अकृत्व (कांथाय दाम मर्ख क्वांधान I কি হেতু বা বন গতে বৈদেহী সহিত। কি হেতু বা **লক্ষণে**র সহ সমাভিত। **এই कथा अ**खरत कहिना भूनर्सात। কেক্য়ী অপ্রিয় ভাষা ভয়স্করাকার ॥ প্রিয় বলি পুজে বলে অপ্রিয়ের শেষ ভরত মাতার পাপ জানিয়া বিশেষ । আপনার ভাল কথা তথাপি ভরত। অসম্ভোষ অহান্ত । । নহে অভিমত। কি কথা কহিলে কহ কেকয় নন্দিনি কখন ব্ৰহ্মহারী নহে রঘ্মণি ॥ কিবা আঢ়া কি দরিক্র বিক্রাবক নন। বেহেতু শ্ৰীমান্বনে এত কষ্ট সন ! ষে কারণে কাননে পাঠান পুত্র বরে। প্রাণের অধিক প্রিয় সৃস্থ কলেবরে ॥ কৃদাচ নহেন রত ভ্রাতা প্রদারে। ভ্ৰহ্তা পাপী দম নিবাদ সদারে ॥ দশুক কাননে পাঠাইলা দশরথ। কিবা অপকার কর্মে হত মনোরথ। শ্রবণ করিয়া ভরতের বাকা সার। ত্রী সভাবে কেক্সী কহিছে পুনর্কার

আপনার অত্যন্ত উত্তম কর্ম করা। আনাইছে যবরাজে হইয়া সহরা। অলভের শেষ কর্ম শুভ বলি ডারে ৷ পাপীয়সী ভরতেরে জানায় বিস্তারে। অত্যন্ত অজ্ঞানা মৃঢ়া পশ্চিত মানিনি। কি হবে ভবিষ্য বাৰ্ত্তা কিঞ্চিত না জানি না বাপু ব্ৰহ্মসহারী নহেন ঞীরাম। পরদারী নহেন প্রবীণ ঘনস্থাম ॥ সুশীল ধার্দ্মিকবর রাম জিতেন্দ্রিয়। সর্বদা নিস্পাপ দেহ সকলের প্রিয়। तामक्षरत रक्षिक स्मित्रा मर्खकरन। ধর্মাঝা রামেরে রাজা করিবার মনে # অভিষেক করিতে উচ্চোগী নববর। সেই কথা হয় পম শ্রবণ গোচর !! ভোমার নিমিত্ত চিত্ত হইল ব্যাকুল। করিলাম ষাচ্ঞা বর দৈব অনুকূল 🛭 ষৌবরাজ্যে যুবরান্ধ তবাভিষেচন। **ठकुम्म वर्षकाम खीतारमत वन ।** পুর্বর বর প্রতিশ্রুত ছিলেন ভূপতি। त्म दे दे व नगता त्य तारमत वमि । সভাশীল রাম পিতৃ ধর্ম পরায়ণ। বনগভ পিতৃ সত্যে সসীতা লক্ষ্য ॥ वनगठ অভিমত পুক্ত অদর্শনে। অত্যন্ত পি**ভূ বৎসল ভাবিয়া নন্দ**নে ॥ পুত্র শোক পরি 🙀 🍀 ভিত শরীর। তাক প্ৰাণ স্বৰ্গনীৰ মাৰণশা সীমু ভাল মন্দ কি আমি সাহোতি এই ক্ তোমার সম্ভার্ত হৈছে গ্রৈপের ইয়ার্ম

সর্ব গুণেগুণী পুত্র রাম প্রিয়তর।

যার শোকে পরলোকে গত নৃপবর॥

সংসারের ইষ্ট প্রাণ করের পরিতাগ।

গ্রেতরাক্ষ বশে গত অভান্ত বিরাগ॥

যা হবার হইল এক্ষণে রঘূত্তম।
রাচ্ছ লয়ের সফল করহ মম শ্রম॥

আমার আমার মিত্র জনের সম্প্রতি।

আনন্দ বর্দ্ধন কর শুন মহামতি॥

শুন পুত্র কর্দান্ত্র করহ সার্থক।

আনাইয়া বশিষ্ঠ প্রভৃতি অধ্যাপক॥

যথা বিধি বিহ্ত নৃপতি সংস্কার।

যৌবরান্তে অভিষ্কে কর আপনার॥

অযোধ্যায় ভরতের সৃন্দর ভাষিত।

সমাপ্ত সপ্রতি সর্গে বিহ্ত॥

প্র সর্গঃ॥

পয়ার।

পিতা মৃত বনগত শ্রীরাম লক্ষণ।
অত্যন্ত অপ্রিয় কথা করিয়া শ্রবণ॥
বিপরীত পীড়ায় পীড়িত নৃপসূত।
পুনরায় জননীরে জিজ্ঞানেন ক্রত॥
তে কণুর্বা কি কুকার্য্যে আর্যোদিলে বন।
করিল জি শুনুকার রুমার লক্ষণ॥
করি মুদ্দ প্রিয়াশ বিষামলক্ষ্য।
নিশ্বীয়া পাণ শ্রী জার নিরয়॥
রাজ্যনীতে ক্রেক্টেই ফিডীক্রপ্রধান।
হরিয়ে ভত্তার প্রাশ্ নাম্যন সন্তান॥

যখন যশন্বী পুল্লে পাঠাইলে বন। তখনি নিশ্চয় তব নরকে গমন ॥ ধিক ধিক কি পাপ চারিণী পাপীয়সী। ঘণাহীনা পতিপ্রাণ ঘাতিনী মানুষী। যদি তুমি রাজ্ঞ লোভে অধোগতা হবে। কি হেতৃ নির্দোষ পুজে আত্মমতে লবে॥ हाहा इंड इहेनाम मुख दिन मनः। নিন্দিতা জননী হৈতে এ দেহ পতন।। এখনি করিব তদ্ধর না রাখিব প্রাণ। সুবিনী হইয়া থাক নাশিয়া সন্তান ! তব ভর্তা কিবা রাম মহাত্মা যুগল। কেবা অপকারী তব করিলে নিক্ষল !! মৃত্যু পাশ বনবাস উভয় সমান। বিভাগ করিয়া দিলে প্রাণ সমাধান : ভুণহত্যা ব্ৰহ্মহত্যা পাইলে পাপিনি। রামে বনে পতিপ্রাণে বধিয়া জাপনি 🛚 না দেখি সমান তব স্বামী সংঘাতিনী। নাহ্উক তব তুলা সংসারে ভামিনী॥ কেক্য়ী নরক যাত্রা কর শীজ্রগতি। পতি শাপে মহাপাপে না পাও নিষ্কৃতি রাজ্ঞ লোভ করিয়া দহিলে মম দেই। ररेणान पक्ष नष्ट এতে। नट्ट (बर्) কি করিবে রাজ্ঞভোগে মাতুরোগে রক্ত তপ্তলৌহ ভোমাতে পড়িয়া তলু হত # পিতা ভ্রাতা পিতার সমান দুই বিনা। কি করিবে অর্থ রাজ্যে জীবন ধারণ।।। দেবকৃণ্প জ্ঞাক আমার জ্ঞেষ্ঠ রাম। উভয়ের অসমতে এই রাজ্য গ্রাম 🛚

শাসিতে সামর্থ্য কিবা সৃদুর্জ্জয় রাজ্য। শক্ত হই যভাপি তোমার কিবা কার্য্য॥ কদাপিও না সাধিব তোমার সাধন। মাত গন্ধ আছে বল্যে তব পূৰ্ব্বণপণ। বিবাশিলে আমার নিমিত্ত পতিপ্রাণ। বনবাসী করিয়াছ ধর্মিষ্ঠ সন্তান ॥ কি আশ্চর্যা এ পাপ মস্তকে কেন দিলে। काननी इहेबा श्रुट्य व्यवः भारत निरम ॥ নিস্পাপ নর্বদা আমি তোমাহৈতে হত। ত্রমি পাপ সংকশ্প করিলে নিস্তমত । उत्ति मिरल लवन मृश्य कि मृश्य मिरल । পতি সংহারিয়া পুজে বনবাসে নিলে। কূলের বিনাশ হেতৃ জনক আমার। কাল রাত্রি আহরণ করিলা ভোমার॥ না জানিয়া তোমার সংকশপ ঘোরতর। উপাৰ্জিলা আপনার মৃত্যু নৃপবর 🏾 मर्शिनी मर्शिनी खाग्र जूमि विष्य भूनं। ভর্তার পালিত। হৈয়ে। দংশিলে সম্পর্ব। সত্যের সন্ধানি পিতা ভূমি পাপ্মতি। ছলিয়া লইলে প্রাণ পুজের সংহতি॥ যথা রাম তথা ভ্রাতৃবৎসল লক্ষ্ণ। পিতার গৌরবে বদ্ধ প্রবেশিলে বন। কৌশল্যা সুমিত্রা পুত্রশোকে আদ্র দেই। যভাপি জীবনে রহে সৃদুদ্ধর সেহ। জানি অতি জাতিমান কেকর রাজন। নে জনের উরসে কি তোমার জনন ॥ তুনি পাপ বৃত্তি শীলা হয় এই জান। রাক্ষদের উর্নে হইলে মূর্তিমান।

অর্থ সিদ্ধ রাম নাম কল্যাণ ভাষ্কন। অকল্যাণি কর অকল্যাণ সম্পাদন ॥ যেহেতৃ করিলে মাত্র আমার অকার্য্য ভুবনে অযশস্কর হইল নির্দ্ধার্য।॥ যেই স্থলে কৌশল্যা আমার জ্যেষ্ঠা মাত मुधर्म मर्गिनी मना अक পথে त्रा॥ ক্ৰিয়া ভূগিনী প্ৰায় দেখেন ভোমায়। কি হেতৃ প্রবর্ত্তা হৈলে বিনাশিতে তাঁল প্রিয় তর পুত্রে তাঁর পাচাইলে বন। মহাত্মারে দিলে চীর বক্কল বসন ॥ পাঠাইয়া বনবাসে না কর শোচনা। তোমার সমান নারী কে আছে নিঘুণ।॥ भीर्षभाग याची महान् शृत छित। রঘবং**শে অবতংসী ধিতী**য় মিহির ॥ গুণবান্রামে স্থান দিয়া বনধানে। কি গুণ দেখিবে তব গুণি হাঁন গ্রামে 🛚 যেহেতু কানন গত করিলে শ্রীমানে। ताका रहजू जनर्थ इहेरव अहे द्वारन পুরুষ শার্দ্দলি রাম অতুল বিক্রম। সুলক্ষণ পদ্মণ প্রতাক শক্ত যম। विन। पृष्टे मिक्षि खंडाशी এই तासा। तकर्त উৎসাহी इहे आग्नात कि कार्य। ॥ করিব কি শব্জি মতে অযোধ্যা শাসন। পাপিনি! করিলে পাপে জীবন তাপন व्यमिक महीक्षेत्र व्यमित महीत्य कि पुक्रमा के बिट्या का निया तिया ति ॥ রাজ্য লোভ করিয়া আইনি পার্লাচসী। नाभिरल धार्मत मेख वहा। यह प्रति ।

ঘোরতর অঞ্চিয় আমার উপার্জিলে। আমার সুখার্থে রাজ্ঞ যেহেতু যাচিলে॥ বিনা সে পুরুষ ব্যাত্র মহেন্দ্র বিক্রম। উপেজ সদৃশ বীর পুছা,রঘ্ভম ॥ এরাজ্ঞ রাখিতে শক্তি কি আছে আমার কি রূপে করিব রক্ষা নিয়া মহাভার॥ সেই রাম ছে। ব্রাভার জীব লোচন। -আমি ভক্ত তদাশ্রয়ে আমার গমন॥ মুমের আশ্রয় করি যেমন তপন। সংসার উচ্ছল করি করয়ে ভ্রমণ॥ অতি ভার এই রাজ্য ভার গুরুতর। যে ভার বহনে শক্ত পিতা নরবর। নব্য বৎস যেমন না বহে কোন ভার। বহিতে কি শক্তি মম তুলা হয়ে। তাঁর। রাম বিনা এ রাজ্য শাসনে কে সমর্থ। কেবল দঃখের হেতু সাধিয়াছ স্বার্থ ৷ আশ্চর্য্য ঐশ্বয় আর বহু আত্মজন। পাইয়া আমার সম রূপে যে গ্রন॥ পরিভাগে কামনা উচিত সমুদয়। এই বৃদ্ধি আমার নিশ্চয় মনে হয়॥ অতএব সমত তোমাকে পরিতার। মাতৃবৎ শিভবে হইয়া হত রাগ। তোমারে ভাজিলে ভাগ না করেন রাম পরিজার প্রাণ জাগ উভয়ে সকাম॥ পাপিনী হনশে পাপ না হয় নিশ্চয়। हिश्मु (क हिश्मा करें) कही नग अर्था अरमकी जनर्व वाहिनी। मर्कार जाम शिक्षेत्रभा सरकातिनी ॥

উচিত আমার কুলে ছেস্টাভিষেচন। পিতৃ প্রায় পুছা ছোঁ ব্রাতা নিরূপণ । জ্ঞেষ্ঠ সত্ত্বে কনিষ্ঠের নাহি অধিকার। তোমা হৈতে কুলে দোৰ হইল আমার। অপ্প পুণ্য আমি তৃনি আমার উদ্দেশে। রাজ্যলুকা হয়ে। রামে নারাথিলে দেশে। মহৎকৃলে জনিয়া এবৃদ্ধি কেন হয়। সজ্জন নিন্দিত সদা, সম্বত্ত এ নয়॥ ধার্মিকের অংশে ধর্মদীল বংশজাতা। অনুচিত কর্ম তব না সাধিব মাতা। যেহেতু জীবন ক্ষয় হয় নৃপতির। তোমার অপ্রিয় কর্ম্মে রাজ্য লোচে স্থির অযশঃ সংপাত কর মন্তকে আমার। না করিব কর্মসিদ্ধি এ হেত তোমার॥ জানাইয়া নিম্ব ভক্ত অনুরক্ত জন। আপনি সাধিব রামে ধরিয়া চরণ ॥ महावल तथ्वः भ वीत (ऋ) छ। है। ক্ষিতিনাথে ক্ষিতি দিতে কিছু ক্ষতি নাই গিয়া বন নিবর্তুন করিব আপনি। রাজপাটে বসাইব রঘ্বংশ মণি॥ চতুর্দ্দশ বৎসর করিব বনবাস। পিতৃ সভা ভার তাঁর না লবে কি দাস 🛭 পুর্ব্ব পিতৃ আজ্ঞা রাম করে। বলবতী। অযোধ্যা নগরে পরে রাজা ভবিষ্যতি। এই কথা কহিয়া ভরত মহাবীর। ঘোরতর বিভর্জন গর্জন গভীর॥ নিন্দা করি জননীরে তাজিয়া নিশাস পর্বত কশতের সিংহ সম শব্দভাস॥

देखार्ष जरगानात्थ किन्मी गर्न। একাধিক সপ্ততিক সর্গ সমাপন ॥

คร สสร์ เ

ত্রিপদী।

এইরপে রঘবীর, নিন্দা করি জননীর, তাহাতে না হইল সন্তোষ। व्यक्तास पृश्य वारिष्टे, मानस जारिया एकाई, भूनकात विखाति धारकाता। কহিলাপাপ খভাবে,কেক্ষী কেমন ভাবে, ত্রিলোকের পরিবর্তে,ধাকিবে নিরয়গড়ে নিন্দিতে এবিপরীতে মনঃ। ভমি অতি হতলজ্জা,ধরিয়া রাক্ষ্মী সজ্জা, হয়ে ভার্মা নিতান্ত আপন ভর্ত্তার কি অপরাধ, দেখো দিলে প্রাণে वाथ, तारमहत्र कि मार्च मिर्ट्स यस । এমন নিষ্কুরা ক্রা, পাপরপা ক্রোধপুরা সমুচিত ভোষার ঘাতন। সর্বাদা ভোমারে ধিক্,কি তব কর্ম এলীক, কুল পাংশু ফি পাপরপিণী। এই मर्स छा लाक, मकलात मिला শোক, কি হেতু অলজ্জিতা তাপিনী: সকলের প্রিয় নহে,দে কেন ধরায় রহে, धताधदत उर्कु घाछिनीदत । क्त काछ इन शांशिनीय ।

সর্বলোক সুনিন্দিত, তব কর্ম অনুচিত, তথাচ তাঁহার কোপানল। ना करत राजारत मार, अथन कीवन हार. मालु এहे. खनस वनन ॥ उव मार्य आमि मुंगा, वे मृत्या इहे श्रुगा, অদ্ধা আমার দেহ রহে ৷ ইহাতে কি আছে হেতু, কুলধংস ধৃমকেতু, পাপ গর্বজাত বলো সহে ! যে নিলেপতির প্রাণ,কাননে দিলেসন্তান. লোষ দিয়া আমার মস্তকে। করিয়া অভান্তলোভ,অবশু পাইবে গোভ, निखाद ना इहेरन नद्राक ॥ তথাপি না হট্টবে নিস্তার। মাতৃত্বপেশকভাবে,রাজাকামাইপ্রপাতে, সাধিলে শ্বভাবে আপনার 🛭 নিঘ ণে পতিঘাতিনী,আপন স্বার্থসাদিনী. দে ক্রিয়া কি আদার উচিত। কভু বিধাতব্য নছে, এ দুঃখ কি প্রাণে সহে, ধৰ্মৰংম বংশের কুরীত। কৌশল্যা সুমিত্রা অস্থা, সর্ব্ব মাতা ধরা ধভা, কেকয়ের কন্সা পাপদীলে। নির্লজে ভোমার দোষে,পাড়াপায় লোকে द्यारम, अभरमाः कि य**ञ्चना मिरल** ॥ कृषि गर् (कः १११ - ११ शहाला त्रीकरः । कर्षास्त्रीतस्थानः। পিতা নপ ঋষিকপ্প,তব দেখি নহে অপ্প, কেকয় বাজাল ক্ষাতি ক্ষিত্ৰ লিল ল त्कोष न्यू अनली मही रहता है।

भन्दिलोक श्रिय त्रोम, श्राम्य मन्गून धाम,। मृत्रजी प्रतीमन,करता हेस्स नित्रीकन তোম। হৈতে বিশ্রাম কাননে। ত্র সম পাপত্যা, এমন নির্লজ্জা রামা, কে আর হইবে ত্রিভূবনে ॥ পিতার বিয়োগ জভ্য.কি আর কহিব অভ্য. महापृथ्य উৎপन्न कतित्व। ভ্রাতৃষয় পরিত্যাগ,ঐহিকে অতি বিরাগ, शक्थ ना साहित मित्रला শুদ্ধভাবা জ্যোধা মতো,কৌশল্যা সংকুল ভাতা, পুত্ৰ প্ৰাণা সমূত ধারিনী निवयमा कतिरल उपा, अ मृश्य कि महा যায়, কোপা যাবে নাজ্ঞানি পাপিনী : নাজানি কোশলসূতা,পুল্রশোকানলগুড়া, কত কষ্ট কবিবে আপনি। তুমি তার ইষ্টপুজে,বনে দিলে বিনা স্তরে, রাম রঘুবংশ চ্ডাম্বি 🛭 কি অঞ্চ প্রভাঙ্গ নষ্ট, হদয়ে বিশন কষ্ট. তবে হয় সন্তান সম্ব এই হেতু প্রিয়তর, প্রভা প্রাণ পুথাকর, **जुराम मधान अमछ**द # কহি পূর্ব্ব ইতিহাস, সর্ব্বজনে মুগ্রেকাশ $\sqrt{\gamma \gamma }$ আ বাহক অভি, কররে পুজ্র দুর্গতি मुद्रजी (१) मकल खनगी। সুরগণ আরাধিতা, পুরন্দর প্রতিষ্ঠিত: এक मिन आमिया ४३ वी : অতিক্লশ বাল্যাবস্থা, সন্তানের দূরবন্ধা, 🕆 🖫 হইয়া সন্তাপিনী। 🧗 🖂 नीतांक यूगनप्रस्क ে ১ ু খ্যু উত্তাপিনী।

कुषा উषक्षिण निकाम । সুবভীর অক্রন্তল, মন্ত্র পাতে আগওল, **छिछामिमा उँ।शहक मत्मह** ॥ এ নীর সুরভি গন্ধ, উষণতর কিবা বন্ধ, धक्या ६ इहेल लंडन । জিজাসিলা সুরভীরে, কুতাঞ্জলি ধীরেই নিকটস্থ সহসূলোচন ॥ কচ মাত। কি কারণ, অশ্রুবিন্দু নিপাতন **एक देश्र**क इंग्रेट रकामात। আমাকে কবিয়া ভয়, এই অনুভব লয়, কিহা আছে কারণ বিস্তার॥ কল মাতা বিধরণ, কি লেড ভব রোদন, কি উদ্বেগে এত উত্তাপিনী। একপা ইন্দ্রের মুখে, সুরভী শুনিয়াদুঃখে প্রহান্তর করিলা আপনি : ্বনি নৰ্ব্যজনাশ্ৰয়,তোমাকে কি জ্বন্স ভয় मिविट्मम खन गुत्रमणि। লামার নন্তান হয়, অভি ক্লশ অঞ্চয়, पृथ्यी तरमा पृथ्यिमी **आ**পनि ॥ লাঙ্গলে অতান্ত পীড়া পায়। ি কব ত্রিদশস্বামি,উদরে ধরেছি আমি সন্তান সন্তাপ সহা দায়॥ क्रमस्य इर्या উদ্ভব, 'मुकूबारत अत्रकाव, वामव मिथिया मव कष्टे। पृथ्य इग्न विवर्त्तन, आनम नम्मन धन, পুজ্ৰ সম নাহি প্ৰিয় ছে।

रहेल बक्श कड़, कहिलन भूकर्ड, সুবচন সুরভীর প্রতি। দবি ! না কর সন্তাপ, সন্তানের গত পাপ, নিমিত্ত স্ঞ্জিলা প্ৰজাপতি ॥ পূর্বের যত বুষগণ, তপঃ করি অনুক্ষণ, यग्रस्ट (व कत्रिन প्रार्थना । हकर्म माधन करन, शतरनारक वाम मिरन, প্ৰজাপতি সম্প্ৰতি সাধনা ॥ হিহেলন প্রস্থাপতি,গোগণ প্রতি ভারতী**,** मुर्खिमान् इहेग्रा निकरि । গিয়া ধরা নরলোকে. ষদি পাপ তাপ শোকে, বিনাশ করিতে ইচ্ছা বটে ॥ ভোমাদের বেবা ক্লেশ, বধ বন্ধ সবিশেষ, কুধা ভৃষ্ণা নরালয়ে প্রান্তি। ্সেই পাপ ক্ষয় কর,ডপঃ অতি সুদন্ধর, ভয় হর ভব ক্ষয় শাস্তি ॥ য অন দর্বল শ্রান্ত,নানা পীড়া পরিক্রান্ত, বুৰ হলে করিবে যোজন ৷ त्म अन चि निर्माय, नत्त्व यात्त निम्हय, গো হ্জার পাপী সেই জন ॥ वहरनत উপযুক্ত, সমর্থ গরিষ্ঠ শক্ত, বলবান্ বুষকে বাহিবে। দিয়া উপযুক্ত গ্রাস, উপযুক্ত স্থানে বাস, म कनाठ भाभी ना इइरव ॥ শরীরে পাইয়াকেশ,কভু না করিবে দেয়, कनाठ ना इहेर्य मध्कुक। (महे भूता छाड़ा माक, भाहरे भत्रम সোক, তপস্যায় খণ্ডিবে বিরুদ্ধ।

এই রূপ পুরাতন, গোগণে চতুরানন, कर्म मिग्रा कतिना नियक । বিধাতা শাসিত কর্ম,গোদের বহন ধর্ম, মন্ম করা নহে উপযুক্ত॥ বহু পুত্র সুরভীর, তথাপিও নহে স্থির, চক্ষে नीत পড়ে পুক্ত पूःथ। এক পুত্র জননীর, কোশল্যার চক্ষে নীর, নিবৰ্ত্ইবে কোন্সুখে ॥ রাম রঘুবংশ বর, প্রাণাধিক প্রিয়ডর, সে সুতের শোচনা কি যায়। অত এব কৌশলারে, মনোদৃঃখ অনিবার, শরীর শোষণ ঘোর দায় 🗈 তোমা হৈতে উপস্থিত,এই হেতু সমুচিত, সর্ব্ব শান্তি সম্ভবে তোমারে। পाইবে পরম कष्टे, निরয়ে শরীর नष्टे, কার সাধ্য সমর্থ নিস্তারে ॥ আমি জোষ্ঠ শ্রীরামের, দুর্গতি যত বনের. খঞ্চাইব তাতের কুষশঃ। লোকে তাহে উপযুক্ত,কবে পাপে পরি-মুক্ত, হৰে তবে ভুবনে পৌরুষ 🛚 व्यत्रत्या (यमन कती, इठाद वस्तन दिल, দঃথে তাজে উত্তপ্ত নিশ্বাস। ভরতের যে রোদন, সেই রূপ রামধন, বনবাসে হত নিজ বাস। বদ্ধ নেত্ৰ শিথিলাঙ্গ, নাহি কোন-ক্ৰিয়া मक, ठारका विकास करना পতিত ধরণীতলে, নৃপার্থী মঞ্জুলে हेळाबक रकारल (वर्गी 🛵

ইত্যার্থে অযোধ্যাকাণ্ডে, ভরত বিলাপ কাণ্ডে, পাপ তাপ খণ্ডে ক্ষিতিতলে। বিসপ্ততি সর্গ সাঙ্গ,নিস্তারে ভব প্রসঙ্গ, শ্রবণে গমন মোক্ষস্থলে॥

१२ मर्गः।

পয়ার

লক্ষাণের অনুজ্ঞ শক্তব্ম বিচক্ষণ। ভূমি হৈতে ভরতে করান উধাপন। কুক্তার মন্ত্রণা হেওঁ আতু ভেদ হয়। এই কথা শুনিয়া শক্তম মহাশয়॥ দঃখ শোকে প্রপীডিত কহিলা বচন। বিভাবান রামচন্দ্র অতি বিচক্ষণ ॥ সর্ব্ধ প্রাণি হিতে রত অনিন্দিত বীর স্ত্রী কর্ত্তক কি রূপে কানন গত ধীর॥ বল বীৰ্যা অন্ত শস্ত্ৰ সম্পন্ন লক্ষণ। শ্ৰীবানের অভিষেক কর্মে বিচক্ষণ ॥ কেন না করিলা ভ্রাতা হয়ে৷ রামভক্ত পিতার নিগ্রহ করি রামে অভিধিক্ত ॥ ধর্মাণ সন্দুলী ভ্রাতা লক্ষণ আমার। সমর্থ নহিলা কেন নিগ্রহে পিতার ॥ यश्रि खनरक नरह धर्वन উচিত। তথাপি কামুক জনে নিগ্ৰহ বিহিত ॥ এই রূপ কহিলেল শক্তম यथन। পুরদারে কুজাদ্ধী আসিল তখন। थवल स्का वसकी शास्त्रन भूनी। ठन्मन लिद्धि और शोत्रत्व, **आ**ष्णी॥

মহামল্য মণাদি মণ্ডিত মনোহর।। মপ্তল মেখলা দাম কটি দীপ্তি করা। কুঞ্জরী যেমন সাজে সুবর্ণ শৃখলে। সেই রূপ প্রোরবিতা সুগৌরবে চলে। তারে দেখি মহা দৃঃখী হইয়া ভরত। ষারস্থিত। পাপিনীরে দমনে উত্তত ॥ অন্তঃপুরে থাকে কুক্তা কুল ভেদ করা 🕂 भक्त प्राप्त अहे शांत्रिनी महता॥ यात कर्म्म शठ वर्सन ताम मम छक्र। সেই এই পাপিনী প্রাণমী বিষতক ॥ নিন্দিতার তিরস্কার যথা বিধি হয়। কর ভাই আমি তাই আদেশি নিশ্চয়॥ মন্তরা মন্তরাগতি দেখিয়া নিকটে। ভূমিতলে তেজমী পাড়িলা ধরে। জটে। গল হস্তে অতি ব্যস্ত ক্রোধে কম্পকায় ধরণী উপরে মুখ বিঘর্ষণ প্রায় 🛚 পাংশু পূর্ব পাপিনীর পাপিষ্ঠ বদন। 🔋 যে সুখের মন্ত্রণায় বনে রামধন ॥ কোপ করি কুজা প্রতি কহিলা কর্কশা সম্প্রতি সৃন্দরি হও শমনের বশ ॥ { পাঠাইব যমালয়ে পরম লাদরে। हेश विन श्वनः २ आकर्षिना करत ॥ মন্রার মহান্সুহদ জন যার।। আকর্ষণে মহা ভয়ে কম্পনান তারা।। আপনার আত্মীয় বর্গের আবাহন। আমস্ত্রণ শক্রাপ্রের সাস্ত্রা কারণ 🎚 ক্রোধ করি কুজারে না করিলা নিঃশেষ नाथ शैना मौना मानी भवना। विरभव॥

স্থাণ রক্ষণ হেতু অত্যন্ত কাতরা। ইহার রক্ষার জন্ম যাব অতি তরা । অনাথ বান্ধবা দেবী কোশল্যা জননী। শরণাগতের প্রতি কল্যাণ ভল্কনী। এই রূপ উপায় করিয়া সবে স্থির। দেখিয়া সকোপ তথা রঘ্বংশ বীর ॥ মহা কোপে শত্রুত্ব কুপিত কুব্বা প্রতি। ধরিয়া ধরণীতলে করিলা দর্মতি 🛭 व्याकर्षा घर्षा दील्यमा पृष्टी पानी। ইতত্ততঃ পতিত ভূষণ রাশি রাশি 🛭 বসন ভূষণে ভূমি ভূষিতা হুইল। সারৎকালে নভঃস্থলে শোভা প্রকাশিল। বলবান্ সুমিত্রা সন্তান অতি ক্রু। করিলেন মন্থরার প্রতি পথ রুদ্ধ ॥ কেক্য়ীর নিকটে ধরিয়া স্কটে তার ৷ কহিলেন দ্ব্রাক্য নয়ন রক্তাকার 🎚 পাপিনী মন্থরা মহদন্তভ কারিণী। কুল ক্ষয় কর কর্মা করিল সাপিনী। প্রতিকৃল। অবলায় কেকয়ী সম্প্রতি। কি রূপে করিবে রক্ষা দিয়া মুক্তি গতি॥ না করিল অপেকা যে পুজ্র নিজ যখে। নৃপতির অনিষ্ট সৃঞ্জিল আত্ম বলে। ্সেই এই কুকর্মের ফল সমুদয়। পাইবে যাইবে পাপশীলা যমালয়॥ অনর্থের মৃল এই কুল ক্ষয় করী। কুজারে করিব অন্ত করাল কিন্ধরী 🛚 হাদয় শোষণ কর মহদ্যুংখ মল। बीतांच तिष्क्रम खन्य क्षप्रत यूज ॥

মছরে শরীর তোর করিব ক্ষেপণ। পাপিনী পাপকারিণী নাহি বিমোচন। এই কথা কহিয়া হইয়া কোপাশ্বিত। পুনশ্চ কুব্জার কেশে ধরিলা স্বরিত। আকর্ষণ করিয়া ধরিয়া ধরাতলে। নিকেপে নিশাস বহে জডিত গ্রপে নিতান্ত নিষ্ঠার বাক্য শত্রুদের মুখে। শুনিয়া কেকয়ী পরিপূর্বা মনোদঃখে+ শক্রাথের কোপ ভরে আছম্ম শরীর। लहेल भत्र श्रुट्य विठातिया चित्र ॥ ক্রু দেখি শক্রমে ভঁরত মহাবীর। কহিলেন বাক্য অতি মধ্র গল্ভীর 🛚 অবধা অবলাগণ সবে জানে স্থির। ক্ষা কর কুজালে সম্প্রতি রঘ্বীর 🛚 বর়ঞ্চ মহাপাপিনী বিমাতা তোমার। শাসন যেরপে হয় কর হে কুমার॥ यमि ताम धनधाम ना करतन जाता। স্বয়ং করি মাতৃ বধ হয় হেন রাগ। জ্ঞান কহ্ অজ্ঞানা মস্থ্যা দাদী প্রতি। আপনার কর্মে আছে মৃত দেহাকুতি॥ বিশেষে যেহেতৃ পরপ্রেষ্যা বস্থা নহে। স্ত্রীজাতি প্রকীণমজি পরবলে রছে॥ এ কথা বভাপি রাম করেন ভাবণ। কুক্তা দাসী নাশিয়াছে শক্তম একণ। यथ्यी मर्सना द्राम मर्ज्य हिटल हारा। कतिरवन रहामीरत देशात श्रीविज्ञात ॥ **बहे ताका क्यान क**ड़िल्ल नृश मुख । कतिरमन चक्रभ क्यांका छाति अकृ॥

অযোধ্যাকাণ্ড

সরোধে আক্ষেপে ক্ষিতিমধ্য প্রক্ষেপন।
বিহ্বলা মন্থরা ভয়ে হয়ে আচেতন।
হইল কিঞ্চিদন্তরে প্রানান্তের প্রায়।
কেকরীর নিকটে শরন নিতে ধায়।
পাদতলে পতিতা কম্পিতা কুক্তা দাসী।
নিশ্বাস প্রশ্বাস ত্যাগ করে সর্বনাশী
করিল করুনস্বরে বিস্তর বিলাপ।
রিধি দিলে ধ্বা বিধি শান্তি যথা পাপ
শক্রম নিক্ষেপ স্বস্থা অতি সংজ্ঞাহীনা।
ভরত জননী দেখ্যে দাসীরে সুদীনা।
রুদিতা বকীর প্রায় প্রান্ভয়ে ভীতা।
অবসন্ধা বিষয়া পালিতা পদাশ্রিতা।
অবসন্ধা বিষয়া পালিতা পদাশ্রিতা।
অবসন্ধা বিষয়া পালিতা পদাশ্রিতা।
অবসন্ধাত সর্গ তায় হৈল সমাপন।

१७ मर्गः ॥

अच जिलमी।

ভরত স্থীর, নিন্দা জননীর,
কর্যে দুংখ শোকাকুল।
শক্রুত্বে দেখিয়া, কহিলা চাহিয়া,
বচন স্থর্দা মূল॥
স্থ দুংখ প্রাপ্তি, স্থিতি কি সমাপ্তি,
পুরুত্বি হোড় নয়।
করে জানিব, ক্রুতি ব্যাধন,
তথ্য স্কুলি স্যা॥

দেখ কি আশ্চর্যা, রাম মম আর্যা, त्रघ्वर्या विष्ठक्रव मर्क्त श्रुवाञ्चिल, मृश्य निर्याश्चिल, প্রেরল কাল এমন পুত্ৰ শোকে মগ্না রোজ্য আশা ভগ্না. ভর্ত্ত দৃংখে মগ্না রাণী। দেখ कि अधर्म, মম মাতৃ कर्मा, माम असा एम स्टानी। গহিত সম্পূর্ণ, দেখ দেখ তুর্ণ, অযশঃ ষাহে উৎপন্ন। यग्नि क्रिम्म, कर्म व्यमम्म, কালকুত সুসম্পন্ন। কি নারী কি নর, কি কব অপর, কুতান্ত বলে মোহিত। সুবিধান জন, কালে সমোহন, না বুংঝ স্বহিতাহিত॥ কালে বশীভূতা, লোক ধর্ম চাতা-গহিতা মম জননী। কেক্য়ী কি তাপ, করিল কি পাপ. কর্ম শক্তম না জানি॥ **दिय दिय छोड़े, हा कि पूर्ध शाहे,** ৰে কপ্তে না হয় ত্ৰাণ এই মহৎকণ্ট, কি কহিব স্পষ্ট, কৌশল্যা জননী স্থান ৷ माज मार्य मार्यी, भाशकरभ सावि, ताकभी उनदा जाउ। वित्रा विवाका, जांठ मह बेका, শিরোপরি করাঘাত।

রোদন সম্পূর্ণ, আতৃগৃহ পূর্ণ, হয়ে) ঘূৰ্ণিত নয়ন শুন্তে আর্ত্তনাদ, ভরত বিষাদ, প্রমাদ ভাবি তথন 1 ভরত শক্রম, অত্যন্ত উদিয়. রূগ্ন জুগ্ন জন প্রায়। (को भना) जन्मन, कतिया धारन, কহিলেন সুনিত্রায়॥ কেক্য়ী পাপিনী, স্বন্ধন তাপিনী, ধর্মিষ্ঠ তার সন্তান। আগত ভরত, বুকি তারি মৃত, আসিতেছে মম স্থান ৷ দেখিবারে তারে, আনন্দ অপারে, দৃঃখের উন্তারে মনঃ। विषया क वानी, पूर्य छक्षा तानी, করিলা বরুণখন ॥ দেখিতে ভরতে, সুমিত্রা সহিতে, मखायमाना वदादत । ভরত শ্রীমান, বিধ্মুখ লান, দেখিবারে যান তাঁরে ॥ পরে বৃহদ্বারে, দেখি কৌশল্যারে, দুঃখিনী করিতে তাপ। দেখিয়া দৃঃথিত, ভরত মোহিত, মারিলা জননী পাপ॥ অতি দুরে বীর, হয়ো নত শিরঃ, প্ৰণত ভাতৃ সহিত। যুগল নন্দনে, শ্বেহ আলিঙ্গনে, কৌশল্যা মনোমোহিত ॥

রাম দৃঃখানলে, মনঃপ্রাণ জ্লে, চকুজলে না নিভায়। প্রণত ভরতে, পুজ্র স্নেহ মতে, কোলে তলো পুনরায়॥ मভয়ে বিহ্বলে, तांनी मरा। কোলে, ভাসিলা করুণা ভলে। মাভৈমাভিঃ সুত, রাম রাজাচ্যুত, লোকে কালক্বত বলে। नजुरा नक्षन, इर्त (इन रक् न, কেকগ্নী তব জননী। করিয়া কৈতব, হেতু করি তব, লবে অযোধ্যা অৱনী 🎚 পাইয়া কি শিক্ষা,নৃপে যাচে ভিকা, তোমাত্র দীক্ষা এরাজ্যে। षिठीय खार्थना, आमाति चार्थना, নাশিতে বর্ত্তে অকায়ে॥ পুজুরাম মম, রাঘব সভ্ম, নহে কারু অপকারী। চীরখণ্ড তায়, কেক্য়ী পরায়, রাজ্য ভাগেরী বনচারী ॥ লক্ষণ সহিতে, অনুগতা সীডে, কি অনুযোগে পাঠায় জননী তোমার, অধর্ম অপার, हा चित्र (मिथिन छात्र। मठी संक्री जेगा प्रत्ये प्रक. T' TIMES TO NOT यून ताम देशिया देशिया दनदर्गाणा, gelwie eine gin o

শুলু দাশর্থি, গিয়াছে যে পথি। সে পথি গত লক্ষ্ণ। আমি সেই পথে, হত মনোরথে, অভা করিব গমন॥ সুমিত্রা সতিনী, অতি অনাপিনী, করিব সম্প্রিনী তায়। নীল শতদল, শোভিত যে হল, क्रमग्र भ ऋल्य थांग्र.॥ ভোমারে প্রার্থনা, মানস কল্পনা, পুরাও কামনা সৃত। তুমি কুপা করি, যথা অটাধারী, তথা লয়ে। চল ফত। मर्ख धन तक, नाउ करता यक, চতুরক দল সহ। কল্যাণ এ রাজ্য, পিতৃদত্ত গ্রাভ্, কর রাজ্য ভার এই ॥ জননী বাঞ্চিত, রাজ্যাভিষিণিত, আমাৰে বৃদ্ধিত বিধি। ইড্যাদি আলাপে, অনেক বিলাপে, উপলে শোক জলবি॥ रकोमना दर्शमन, कतिया खारन, किक्श नम्ब शहरा করি কুডাঞ্জলি, বাক্য পুস্পাঞ্জলি, निकुर्भ क्रिन्न नम्डतः॥ আনোনাৰ ভীষ্ট্ৰণৰ ভাণ্ডীৰ, ্রমন্ত্রিক নীর্মান্ত, গ । " চতুর্ব আক্রি, সর্বাধান্ত্রিক, क्षा उर्देश के बार्

98 **मर्ग**ः।

প্রার

কৌশল্যা রোদনান্তিতা গ্রীরাম জননী। অতি দীনা ক্ষীণা প্রায় দেবিয়া সদ্জ্ঞানী ॥ কুডাঞ্জলি করি পরে কেক্য়ী নন্দন। বাষ্প পরিপূর্ণ নেত্র গদাদ বচন॥ জননি না জেন্মে দোষ দিতেছ আমার। নিষ্পাপ জনেরে তাপ দান কি বিচার॥ রাম প্রতি মম মতি সর্ব্বদা সৃস্থিরা। কি কারণে অনুযোগ কর মা স্থবিরা॥ রাম বন গমনে সম্মতি আছে বার। কদাচ শান্তীয় বৃদ্ধি না হউক তার। প্রেষ্যা পাপ গতি পুতি ইতি হবে ডার। ভূষ্য দৃষ্টে করে যেন মল পরিহার॥ সুপ্ত গো পণের অঙ্গে করে পদাঘাত। যার অনুমতি হেতু শ্রীরামে ব্যাঘাত॥ উচ্ছিষ্ট বদন করি অগ্নিগো বাহ্মণে। मः स्थानं कति त्व तम्हे त्वतात हा कार्य ॥ গুরু নিন্দা করুক পাপিষ্ঠ সেই জন। যার অনুমতে বন গত রামধন। স্থিভার্যা গুরুভার্যা গমনে উল্লোগী। রমণে করুক মতি পাপিষ্ট দুর্ভোগী ॥ যার অনুমতি দারা জীরামের বন। त्म कक्रक तुम्हे शाशकर्मा कनाड्छन ॥ ভূতা দারা ভর্ভার অনর্থ কর্ম করে। নেই পাপ প্রাপ্ত হবে শাস্ত্র অনুসারে !

করিয়া মহত কর্ম আপন ভর্তার। নিরর্থক আপনি যে করয়ে সংহার॥ मिहे अधर्मात कल शादि महे खन। ্যার অনুমতি দারা ঞীরামের বন॥ সুততুল্য স্ক্রভূতে যে করে পালন। এমন নূপের অপকারী ষেই জান 🛭 যার অনুজ্ঞায় রামচন্দ্র বন গত। নেই পাপী এই পাপে হবে অনুগত॥ ক্ষেত্রাদিতে যা হইবেন্টপাৰ্জ্জিত ধন। নূপ হেতু ষষ্ঠ ভাগ ন কেরে স্থাপন ॥ তার অধর্মের কল করিবেক ভোগ। রাম বনবাদে যার অনুমতি যোগ ॥ যজ্ঞকর্ম করাইয়া যাজ্ঞিকের ছারা। পর্তিশ্রত দক্ষিণা বঞ্চন করে যারা ! (महे महे तक्षरकत भाभ इस यउ। সেই পাপ ভোগ তার্ন হবে অবিরত ॥ যদ্ধ স্থলে হন্তী অম্ব বিমান বিনাশ। অস্ত্র শস্ত্র পীড়া পেয়্যে ধরাতলে বাস : সজ্জনের কর্মা তারে নাকরে সংহার। সেই পাপে রত বনে অনুমতি যার॥ जुन्मत यथार्थ भारत इत्या उपिष्टि সেই সব বিনাশ করুক সেই দুষ্ট ॥ যার অনুমতি লব্ধ বনগত রাম। জননি যন্তপি ভাল মনে করিতাম 🖟 যে জন বিচার স্থলে করে পক্ষপাত। তার পাপ যে সকল সে পায় সাক্ষাত্ যার অনুমতি ক্রমে রামে বনবাস। জননি ভোমারে এই কহিনু নির্যাস

দেবতা অতিথি ভতা জনক জননী। এ সবে না দিয়া অন্ন যে খায় আপনি 🕏 করিবেক তার পাপ ভোগ দেই স্থন। যার অনুমতি হেডু রাঘবের বন ॥ শাস্ত্র সিদ্ধ বাক্য সেই প্রয়োগ না করে मজ্জনের সমীপে নিন্দিত হ্য় পরে॥ যার অনুমতি ধারা বনগত রাম। জননি তোমার স্থানে এই কহিলাম 🛚 🖰 আষাঢ়ী কার্ক্তিকী মাঘী তিথি পুণাকরী অদাতার গতি পাই যদি মনে করি॥ পায়<mark>স তিলান্ন মাংস অ</mark>দন্ত ভোজন। গুরু পৃতি অবজাকারক যেই জন ॥ তাহাদের যে পাপ সে পাপ হবে তার। বনবাসে গত রাজ জ্ঞাতসারে যার ॥ মাতা পিতা বৃদ্ধ গুরু আচার্য্য ব্রাহ্মণ। এ সকলৈ করক অবজ্ঞ। 🗯 ভান॥ সল্লোক সৎকীর্ত্তি আর সজ্জনের কর্ম। तमरे मत रेहरा जर्रे रेहरण य अथर्मा ॥ সেই অধর্মের ফল করিবেক ভোগ। होम वनवाटम यात्र आंट्ड मत्नारयात्र ॥ নূপ দারা বালক অপর বৃদ্ধ জন। তাহাদের বিনাশে যে পাপ সম্বলন !! ভূতা ভাগে করিলে যে অধর্ম নিশ্চয়। तारमत अश्रिम्न अहम सम्बे लाल इम्र है त्य भाग उल्लेखर के श्रिका माउटन । मिहे भाभ कात बात कि नाम बर्ग বিশাস ঘাত করে কুত্র যে পাপ হ গুরুর উদ্দেশ করে অধ্যক্ত আৰাপ

भिहे भागिरप्रत भाभ भाहेरत स्म सन যার অনুমতি ক্রমে রাম গত বন ॥ পদ বারা অগ্নি স্পর্শ করিলে যে পাপ ক্লতকর্ম বিনাশিলে যেবা পরিতাপ **॥** পরক্রব্যাপহরণে যে পাপের গতি। সেই পাপ তার যেই রামে হত মতি॥ অগ্রিদ গ্রাম ঘাতির নিশ্চয় বে পাপ। .মিত্রজোহি **জ**নের যেমন পরিতাপ॥ উভয় সন্ধার কালে যে করে শয়ন। সেই পাপ হয় যার রামে হত.মনঃ॥ অনর্থী অসতা বাদী এই দৃই নরে। বেদের বিহিত পার্প যে সব সঞ্গরে ॥ সেই পাপ অজ্ঞানে করিবে সমাশ্রয়। যার বৃক্তি ক্রমে রামে অরণ্য আশ্রয়॥ পাইয়া ঐখ্যা ভার করুক শাসন। কিন্দু অরিজ্ঞান সঙ্গ করক সে জান ॥ যে জনের অনুমতে বনগত রাম। সেই জন হইবেক অজ্ঞানান্ধ ধাম॥ গ্রামে বাদ করুক হইয়া গ্রামা পশু। একাকী মিপ্তান্ন ভোজী হইবে অল্পাসু॥ যার অনুমতি যোগে অরণ্য আশ্রয়। করিলেন মম জ্রেষ্ঠ রাম মহাশয়॥ এই রূপ আখাদ করিয়া বিমাতায়। দঃখ শোক তপ্তা পতি পুত্ৰ বিহীনায় ! क्षिणान महीदत्। क्रिक के बावीरत ॥ **্রেশ ইন্টেই টি তি**ত্র পতি। বিশা করি ন সতী।

শুদ্ধ সত্ত্ব সভাব ধর্মাত্র। পাগহীন। সর্বাদা তোমারে জানি কুমার প্রীণ 🛭 এরপ শপথ করে। কেন রে সন্তান। দক্ষ কর জননীর পূর্বে দক্ষ পূাণ॥ শ্রীরামের ভক্ত তুমি জ্ঞানি রে ভরত। ধর্মা পথ বিচলিত নহ অনুগত॥ চিরকাল কর পুজ্র জীবন ধারণ। গ্রীরামের সঙ্গী হয়ে। কল্যাণ ভাষ্ণন ॥ পিতার পতিজ্ঞা রক্ষা করণের পরে। আদিবেন পুনঃ রাম অযোধ্যা নগরে॥ এক যোগে দেখি যেন ভ্রাত চতুষ্টয়। এই আশীর্বাদ করি তোমারে তনয়॥ পুণ)কীর্ত্তি রাজগ্রি মহাত্মা সকল। তাহাদের আয়ংকীর্ত্তি ধর্ম অচঞ্চল ॥ **ठ**ञ्जूक्तम वदमहारस्य मळ मरघाउन । পুনশ্চ দেখিবে রাম সীতা সলক্ষণ॥ তৈল দ্রোণী মধ্যে তব পিতার শরীর। সংপ্রতি স্থাপিত এই দেখ রঘ্বীর॥ তোমার প্রতীক্ষা করি আছে নৃপ দেহ। জনকের সংস্কারেতে ব্যক্ত কর স্নেহ্ 🏾 धर्मा नशा दका शास मार्स अञ्चासन । সেই রূপ কর্মা কর ধরেন্দ্র নক্ষ্যা স্বর্গাত নুপতির তুষ্টি যাতে হয়। সেই রূপ কর্ম তুমি করিবে তনয়। পিতার বিয়োগ জন্ম দৃঃখ অনুক্ষণ। গ্রীরামের ভাগে হেতু কষ্টানুষ্মরণ। ত্যাগ দিয়া দে ভার ভারির প্রায় সয়ে৷ কুলভার ধর পুজ্র সৃস্থির হইয়ে॥

क्रेकुल आधारम विधाम कति यनः। শৌক ভারে ভারান্বিত ভরত যেমন। কৌশল্যার বিলাপ করণাময়াক্ষর। আবণে চঞ্চল চিত্ত স্থিরত দক্ষর॥ মোহ প্রাপ্ত বারন্ধরে ভরত দুঃখিত। শোচনা করিয়া শোকে হইয়া মোহিত পতিত পৃথিবী তলে তমু তাপময়। করণ বিলাপ জন্ম ব্যাকুল হদয় ! অস্থির ইক্রিয়গণ পিতার সরণে। ভ্রাতার নিবাস বনে মনঃ অচেতনে। ভরতের বিলাপ আলাপ দৃষ্টি করি। হতাশে হইয়া কুঃ অন্ত তিমিরারি 🖭 महन वहन वहरू घन मीर्घशाम। বারস্বার নব দুঃখ করিয়া প্রকাশ 🛭 त्महे मूथ विशेषा मर्खती ममूपमः। ভরতের প্রতি শত বর্ষ সম হয়। তদ্বতে দেখিয়া দিনকর কর জাল। নিক্রাভঙ্গ মন্ত্রিগণ মারিয়া গোপাল। যাবতীয় ধিজ্ঞাতি প্রতান্ত প্রতাবে। নৃপালয়ে প্রবেশিয়া নৃপগৃণ ঘোষে॥ গত মহী মহেক্র অনাথা মহী তায়। ভূতলে পতিত বীর মূর্ছাগত প্রায়। আর্ত্তনাদে অশ্রুপূর্ণ নেত্র শোকাকুল। মোহে মগ্ন উদিগ্ন মানস সমাকুল। मः छाहीन सन्धाप्र नातम नन्न ! এই क्रे ७३८७ मिथन नर्सक्र ॥ পঞ্চাধিক সপ্ততি সগীয় সমলাপ। ভরতের শপথ শুনিলে খণ্ডে পাপ !

१६ मर्श्र

ত্রিপদী সংপ্রাপ্ত অশেষ কষ্ট্র, বর্ণস্বরেক্রিয় ভ্রষ্ট্র, দঃখ পুষ্ট হয় বারন্থার। ভরত নব শরীর, দীপ্তি হীন মহাবীর, ক্ষরে নীর চক্ষে অনিবার # পিতার মহবে দীন, রাম বনবাদে ক্ষীণ, मिन किक्शी कर्मा (मार्व) পাপিনীর ধনলোভ,যাহাতে পুর্ব্বের ক্ষোভ, নহে শোভমান জনে ঘোষে॥ অতিশয় পীড়া তায়,চক্ষে নাহি দেখা যায়, भारतत ज्याम मृश्यानीत । मृः त्थत मालन वित्र, उत्रुख जादम् उत्थत. मूथं छत। यश नत नत् ॥ আমার নিমিত্ত তাত, মৃত্যুবশে ক্ষিতিনথে. রাম রঘ্নাপ বনবাদে। অপাপ মম শরীর, পাপ হেডু জননীর, নহে স্থির চিক্ত এ নিবাসে। कार्याहीन बाक्कशैन,व्यामा हरमा व्यक्तिन, वािम शैन रहेगा उन्दर । ठळ स्वर्ग विना स्वक्र, **राक्र** न रह मुहाक्र, পুরী তথা রাম অনুদয়ে। পিতৃ গৃন্ত এই পুর, নাহি বুখ কুটুন म्थी नरह पृथ्वि कार्य কি প্রকারে আমি সই,স पृश्य पृथ्ये हरे के जानान

পিতৃদহ হুতাশন, দেবিব নিশ্চয় মনঃ, অথবা ষাইব বনে আনি। রামের সহিতে রব, এ যন্ত্রণা কত সব, অবস্থ হইব বনগানী ॥ क्हेग्रा উভয়ে हीन, क्हेर अश्वास मीन, कीवत्न उदमाङ कीन इस। वन পরিক্রমে শ্রান্ত, হয়ে। নব নীলকান্ত, ভরুতল করিবা আশ্রয়। আমি গিয়া দেই কালে,চরণ কমল দলে, দেবিব রহিব সন্নিকটে। এই রাছ হৈতে শ্রেষ্ঠ,যেমন জ্রাতা কনিষ্ঠ, मिहे क्रभ यमि जाथा घटि॥ व्हेग्रा अञ्चरायुक, श्रीलात तत्सामूक, যুক্ত হয়ে। রহিব কাননে। অনুরক্ত পুষ্প আনয়নে ॥ हरेग्रा द्वारम विश्वान,नट्ट् मत्न এक निन, ত্রিদশের রাজ্ঞ যদি পাই। कि जन्न अस्योधा दाष्ठ, स्वननी कूकार्या ধার্য্য,অনিবার্য্য এ রাজ্ঞ কি চাই॥ অভ রামচন্দ্র আদ্যা,পূর্ণচন্দ্র সূপ্রকাভা, वात्रा नीना मुहाक लाहन নিরীকণে পিত মৃত,নিমিত সৃদৃংখ বত, াকা যুক্তিযুক্ত,

नगरनत जंदाहा, निवातिया मस्त्रामय, বশিষ্ট বিশিষ্ট ভগবান। অধোমুধ রঘুবীর, শ্রীচরণে পৃথিবীর, তলে রেখা করিয়া সন্ধান ॥ ভরতেরে সুবচন, কহিলেন তপোধন, कत् यमः नहत्त्वः नस्म । যে জন অভান্ত মৃঢ়, বিপদে স্কার্যাক্লঢ়, আবশুকে প্রতিপন্ন মনঃ ॥ महे धीत मूलिखंड, य तूरत कार्य। विहिंड, म्मायात वर्ण करत कर्म। ट्रा ठूमि रेवर्ग ४त, विमुक्त क्रम ख्त, গুণাকর সাধ কুলধর্ম । অজ্ঞান দুরীকরণ, যোগ্ড তুমি দাধ্জন, পিতৃকার্য্যে কর মনঃ স্থির। আরণ্য ফল ভক্ষণ,করিব আর্যো অচ্চ ন, পিতাতব রামশোকে, গিয়াছেন পরলোকে, তুমি না আসিতে রঘ্বীর॥ जिल्लान देशे थान, वर्श थाथ पिरा दान, বনবাদে সন্তান জীরাম। পিতা তব লোকনাথ, ধর্মান্সা যথা অনাথ; সেই রূপ দেহের বি**শ্রা**ম। তুমি পুজ্র যোগ্য তাঁর,তোমাবিনাকিঞ্রকার,. সংস্কার তর্পণ পিণ্ড হয়। সকলে করে৷ বিচার,তৈল পাত্রে তত্ন তাঁর, রাবিয়াছি আসার আশয়॥ রাখিয়া পুজের ধর্ম্ম,কর পিতৃ শেষ কর্ম্ম, অন্ত্যেষ্টি সন্তুষ্ট কর তাত। শান্তাইয়া মাতৃগণে, দুঃখ শোক বিমো-চনে, শান্ত হও জ্বন্ধ অঞ্পাত।

অবশু ভাবিয়া কার্য্য, তাহাতে ধারণা ধাষ্য, (महे छाया निर्याया खानित। তোমার সমান যারা,শোচনা নাকরে তারা, এই ধারা প্রমাণ মানিবে॥ মহাক্মা আগত জ্ঞানে, বৃদ্ধিমান স্কনে মানে, এ হেতৃ আত্মাকে কর স্থিत। না চইও অতি অজ,হে ভবত তমি বিজ্ঞ, अमरभीय त्रय्वरम वीत ॥ काकृ र कुल उहुरै, तलिश्व काल मञ्जर, কর্ম অতিক্রমে শক্ত কেবা। ভাবিয়া শোচনা জাগ,কবে৷ রাখ অনুবাগ. मुक्ष यादर मिछा नत (एवा । বারস্থার দৃঃখ হতা, সমস্ত বাজ বনিতা, ত্র পিতা প্রাণ আগ জন্ম। ক্ষুধা তৃষ্ণা তন্ত্ৰা আদি,সম্পূৰ্ণ দৃঃখ বিবাদী, এবা সব মৃতা হেন গণা। অনাগা স্বনাগ বিনা, তোমার উপেকা হীনা, জানিয়া যে বিধি হয় কব। উপ্ৰিত পিতৃ কুজ্বীসাধ হয়ে এক চিত্ত' ষথাক্রম ছিভোক্ত সুন্দর । শীব্র কর সম্পাদন,করিয়া ধৈর্যা ধাবণ, দৃঃখ জ্ঞান না কণ সম্প্রতি। এযোধ্যায় শ্ৰি কথা,শ্ৰহণে অমৃত যথা, সাঙ্গ সূৰ্য ৰুড্য সুপ্তি ¹ १७ मर्गः।

পয়ায় ,

নশিষ্টের বাক্য শুনি বিজ্ঞ রঘবীর। धक मृष्टि कहिलान वहन शस्त्रात ॥ অজ্ঞন্ত পীডিত হেত পীডিত বচন। সতত বিদীর্ণ করে আমাবে এখন 🖟 বল মুনি শুনি তব মুখে বিপ্ৰীত। দর্ম লোক নাথ রাম সত্তে উপস্থিত॥ আমি নাথ অবোধ্যায় কি রূপে হইবে। অযোগ্যে এ অনাথে কি নাথত সম্ভবে। কিন্দ্র এই কাষ্য কর জনক যথায়। শীভাগতি লয়ে চল আমাকে তথায় ৷ সর্বে জনে করি চল পিতাব সংস্থার। ইদানী এ চিত্র ধির না হয় আমাব ॥ হৈতেছে সহসু খণ ছিন্ন ভিন্ন মনঃ। দেখাও পিতাৰ দেহ বিগত জীবন। পরে সর্বে মন্ত্রিগণ বশিষ্ট প্রবর। সহিতে চলিলা যথা মত নূপবর যথা মৃত কলেবের তথায় গমন। সাজ সপ্তশত নগ লাখস্থিন' ম मंड नृत्य प्रिक्टि इंग्टिक केरि शाधा বশিষ্ট প্ৰভৃতি মাধ্ৰন, শ্ৰেচি বাংহা, প্রবেশ করিয়, তথা ভারত প্রামান । রাজ পরিগ্রহ শ্রহ দৈছিও বিমান কৌশল্যাৰ গুৰু পতিত অনাথ শ্লীৰ ছবিও দী

এই কণা কহিয়া কাতর মহাকায়। পতিত পুথিবীতলে ভরত তথায় 🎚 সংজ্ঞা হীন হইয়া পাইয়া সংজ্ঞা পরে **৮** (क्रिया क्रम्मना नश क्रिक्ट स्माह ভরে ॥ জীবিত আছেন যেন জনক আমার। প্রিয়ভাবে ভাষিলেন ভরত কুমার॥ কিতীন্দ্র কি কোভ কর কর গাত্রোথান। এই আমি উপনীত ভরত সন্তান ॥ পাইয়া তোমার আজ্ঞা অগ্রে উপনীত। লক্ষাণের সহোদর শক্রেম সহিত॥ মম মাতামহ তব সুকুশল কথা। সাম্প্রতিক সুধালেন কি করেন **ত**থা॥ ধরণী সুনত শিরঃ আমার মাতুল। বুধান্তিত্নেই মত প্রার্থক প্রতুল। যে কোন রূপে আগত হৈলে পরে আমি। কোলে ভূলে লয়ে কত সুখী হৈতে ভূমি। সেই আমি উপনীত সাক্ষাতে তোমার। না লয়ে। মস্তক জ্রাণ আছ কি প্রকার । धानमी हरा वानमी कत अनमता। কি জন্ম পুর্বের প্রায় না ডোষ ভাষণে। কেন আমি অপকার কি করে।ছি তব। না না পিতা কিছু না প্রসন্ন ভব ভব । ধন্ত সে অরণ্য বাসী পুজ্র তব রাম। অনুজ্ঞায় অঞ্না সহিতে ব্নুধাম। विकास करा के जारत । सरकारका मकादत ॥ CV ATT TE व्यक्त वर्गा सामि वर्गा भेषान । त्यत्व का अविक स्थामान

महा पृथ्यं करणवत करत व्याविकात। রাম শোকে পরলোক নিবাস স্বীকার॥ নিশ্চয় জীবন ক্ষয় হইল তোমার। না দেখিলা রামচত্র লক্ষ্মণ কুমার॥ বনবাস পরিত্যাগ করিয়া এখন। ना आरेमा पृथ्यी रुरग्ना अरवाधा जुतन ॥ মাত্দোৰে দোষী বল্যে কথা নাহি ভাষ। না কহিলে শক্রথকে সমীপে জিজ্ঞাস 🛭 কি অভাগ্য কি অযোগ্য কর্মা নূপবর। তুমি রাজ রাজেজ স্বাধীন বসুদ্ধর 🛚 পরাইয়া এীরাম লক্ষণে চীরবান। রমণী নিমিক্ত নিত্য ধনে বনবাস 🛭 কি বিরাগ প্রাণত্যাগ সোহাগ কেমন। এই রূপ বিলাপ করিয়া বহুক্ষণ ॥ নিরস্তে সমস্ত নৃপ নারীবর্গ যত। দঃখিনী অকিনী জলে ভাসে অবিরত # অত্যন্ত বিলাপান্বিত মহাশোকাকুল। ভরতে দেখিয়া বাস্ত যত দিজকুল 🛭 বশিষ্ঠ জাবালি ষয় হইয়া মিলিত। কহিলেন পরিহর শোক রাজসূত। তুমি মহাপ্রাজ্ঞ বিজ্ঞ অনুচিত শোক। কালে সঙ্কলিত নূপ প্রাপ্ত পরলোক॥ নরেন্দ্রের পরক্রিয়া কর সমাপন। পাইয়া উক্তম জ্ঞান বোগ্য মহাজন ॥ শাস্ত্র এই মৃত জন্ম যদি শোক করে। স্থেত্তু হট্য়া বান্ধবগণ পরে॥ নয়নে যছাপি হয় অশ্রুবিন্দু পাত। তাহে হয় মৃতে স্বৰ্গ বসতি ব্যাঘাত 🛚

শুন নর শাদু ল ইহাই সর্বা শ্রুত। পরম ধার্মিকগণ পূর্ব্ব অমুভূত ॥ ভূরিদান্ন নামা নূপ অতি পুগ্যবান। निष कर्म करन खाश महे वर्ग दान। পুনন্চ করিল মর্জ্যে উৎপত্তি ধারণ। श्रुना क्या वञ्जनन क्यान । অতএব রাজপুত্র শোক করা নয়। নিবারণ কর নেত্রোবিত বারিচয় ॥ স্বৰ্গ হৈতে নূপতিবু যাহাতে পতন। একর্ম ভোমার যোগ্য নহে কদাচন 🛭 শোকানল দথা ভাবে জনক তোমার। স্বৰ্গচ্যত হৈলে শাপ দিবেন অপার**॥** যতক্ষণ নুপতির মন্যু না জন্মায়। উত্তিষ্ঠ বিশোক হৈয়ে। ভরত ছরায়। শোচ্য নহে পিতা তব রাঘব প্রধান। সৎকর্ম অর্জ্জিত **েনকে প্রা**প্ত পরস্থান।¹ মনে কর নরসিংহ নৃপ নন মৃত। শ্রীরাম প্রভৃতি বার চতুষ্টয় সৃত। ধৰ্মান্তা মুহান্তা লোকে পৌরুষ প্রার্থিত অমর তেজধী নূপ মহা সভাু শিত ॥ মহেন্দ্র বরুণোপম সম্ভ্রম উত্তম। তাঁর তরে শোক কর হ**ইয়া সভ**ম ॥ विभिद्धित এই वाका कतिया व्यवन । ভরত ধর্মজ্ঞবর মহেক্স নন্দন ॥ তৎক্ষণে জনক শোক করি পরিহার। বাক্য বিজ্ঞ বশিষ্ঠে কহিলা পুনর্ববার॥ य कथा कहिला मृत्विर्ग में नामड। কি করি বলিষ্ঠ পিতৃশোক বিমোহিত।

হিতবাদী যথা বিধি শুক্ত জ্ঞানবস্ত।
তোমাদের নিবারণ বাক্যে হয়ে শাস্ত॥
শোক তাজি পিতৃকার্য্য করি সমাপন।
যথা দিষ্ট দ্রব্য আন নৃপ মন্ত্রিগণ॥
পিতার সংস্কার কার্য্যে বেং আয়োজন
সকল প্রস্তুত কর অন্ত বিচক্ষণ॥
এই বাক্য নৃপতি সন্তান মুখফত।
মন্ত্রী পুরোহিত সবে হয়েয় সাবহিত॥
হইল অধিক বৃদ্ধি বিভাবরী তায়।
শত রাত্রি দীর্ঘসম হইলেক প্রায়॥
রামায়ণে অযোধ্যায় ভরত বিলাপ।
শ্রবণে সপ্ত সপ্ততি সর্গার্থে নিজ্পাপ॥
ব্রবণে সপ্ত সপ্ততি সর্গার্থে নিজ্পাপ॥

ত্রিপদী:

तक्रमी व्यवस्थ, नृशिक ममाहम्म,
शित्रशिक्ष स्रुक माग्रं।
व्यम् भू नृश्च, श्रादाध वश तीर्व,
कतिर्व शर्त करत रविध ॥
मध्त वाका चरत, मकरम खिक करत,
मृत्याद शृदत मक्रिश्व ।
मृत्व मध्य वारक, मृन्छा महातारक,
मरक्षाद व्याद मृम्यूत ॥
वाक्रम स्मानक्रम, व्याव नृशक्रम,
मिरत करांत्र रहार ।
श्रादा यह स्मानक्रम,

শক্রম শুন শুন, এ আর হে কেমন, আমি তো নহি নহি ভূপ। किक्सी कर्मातारम, अयभाः लाकि वारम, সম্ভব নহে হেন রূপ। রাজার কুলধর্মা, গিয়াছে বুবা মর্মা, নপতি হীন হয়ে। ক্রমে। রাজন্ত্রী সুবিকলা, কি করিবে অবলা, অকর্ণা তরী তুলা ভ্রমে 🛭 ভরত এই রূপ, বিলাপ বহু রূপ, করিলা থেদে বারস্থার। मिथिशा मृध्य युष्, भाष्ठभा विमातिष, ন্পতি দারা হাহাকার॥ ভরত অনুগত, বশিষ্ট প্লুরোহিত, প্রবেশ করিলা সভায়। নগতি হিত জন্ত, সমস্ত মন্ত্রিগণ্য, মন্ত্রণা করিয়া তথায়॥ সুরেন্দ্র মনোলোভা, কিবা নূপতি সভা, সুমন্ত্রী গুরুগণ, নুপতি প্রিয়জন, বিচিত্র মূলিময় প্রভা। সংস্কৃত শাতকুন্ত, সুবর্ণে শতস্তন্ত, পাৰ্বাণ শশি শত শোভা॥ মহেন্দ্ৰ সভাস্থা, যেমন সুনিৰ্মাণ, मुधर्मा नामक मुन्दत । সুরেক্র বিরাঞ্চিত, গীম্পতি পুরস্থিত, বশিষ্ট ব্রহ্ম কলেবর ॥ প্রত্ন চিত্রাসন্ত্র ভূপতি ভক্রাসনে, र्मिया किलोहा शास्त्र । च्या कार्ति भी महिन नियाकिछ,

জৈমিনি বিজয়ন্ত, সুমন্ত্র সুধীমন্ত, मुमछ जामि मजिशन। অञ्च প্রধান গণ, মদ্রিহের সুগণন, প্রধান যে অপর জন। সমূহ জনতার, বিচিত্র সুসভায়, ভরতে দেখিতে প্রয়াণ। শ্ত্রুত্ব সহ্যুত, কেক্ট্রী গর্ত্তত, নৃপতি সুত বিছমান ॥ বিপুল কোলাহল, নিশ্বনে ধরাতল, পূরিত প্রবল সুযোষ। थनरा मियु छन, कसान कन कन, **नि**रम প्रजारम श्रामा ভরতে সেই স্থলে, দেখিয়া কেত্তিলে, मद्राल भूरको भरत क्रा যথার্থ পূর্বেরীতে, সুন্দর সুবিহিতে, ক্লতার্থ পুরজন চয়। স্থান সজ্জন শোভিত। नुधार् मगत्रि, त्रंजामन अहि, ় ভুবনে অতি প্রতিষ্টিত॥ ় নৃপতি দশর্থ, শোভিত কুল পথ, উজ्জ्ञन मिट्टे इन यथा। ভরত বিরাজিত, ভুবন পরাজিত, বিরাজে নৃপাদন তথা ॥ সুবেদ রামায়ণে, ভরত প্রবেশনে, অষ্টাধিক সম্ভতি সর্গ। नृপতি প্রয়োজনে, বাগীশ বিরচনে, সন্ত্রপ্ত ভব সাধ্বর্গ॥

१४ मर्गः॥

পয়ার।

আদিতা উদয় কালে সর্ব্ব আগমন। ভরতের প্রতি গুরু কহিলা তখন ॥ সমন্ত্রিক নৃপসুত কর অবধান। সকল প্রকৃতি বর্গ নাগর প্রধান॥ রাজার সংস্কার হেতৃ লয়ে। দ্রবাচয়। উপস্থিত তোমার নিকটে সমুদয়॥ উত্তিপ্ত উত্তিপ্ত সুত ভরত বিদ্বান। না করিবা কালাভায় অতি অবিধান # যথার্থ যেরপ কর পিতার সংস্কার। मिया क्रुति मिकिशा द्यामिक यथाठात॥ তোমার পিতার হোতা হয়ে। উপস্থিত। বেদাঙ্গ বেদ পারগ পদ্ধতি সহিত॥ অগ্নিহোত্র গ্রহণ পূর্ব্বক স্থিতিমান। জাবালি প্রভৃতি যজ্ঞ, সুদক্ষ বিষ্ণা গদ্ধকার এই সব সংস্কার কারণ। গ্ৰহণ পূৰ্বিকে অগ্ৰে স্থিত প্ৰেষাগণ । ঘৃত তৈল রদ পূর্ণ যত কুন্ত চয়। তোমার পিতার জন্য সজ্জীভৃত হয় 🕆 অগ্রিকার্য্য করণাথ ইন্ধন সকল। शक्तमाना शक्त रिजन श्रव्हेड श्रुक्त । অন্য গন্ধশ্রবা ধূপ অভক্র সম্ভব। সুসজ্জিতা শিবিকা জনক জন্ম তব ॥ নানারত্ব বিভূষিতা শিবিক উপরে। প্রবৈশ করাও দশর্থ নরবরে ॥

শিবিকার মধ্যে করি দশর্থ তাতে। উঠাইয়া আন বহিন্দেশে অব্যাঘাতে ! এই সব বৃশিষ্টের মুখের ভারতী। শ্রবণান্তে কহিলেন রাজেন্দ্রসন্ততি॥ তুমি প্রভু শ্রেষ্ট সর্ব্বাপেকা শ্রেষ্টমতি। বহুমতে পিতার গৌরবে অবস্থিতি ॥ যেরপ আপনি আজ্ঞা করিলেন তথা। করিব ইহাতে প্রভু না হৈবে অভাগা 🗠 আপনি ভমিপ মান্ত দেবগুণা রূপ। বিশেষে আচার্য্য গুরু দেবতা স্বরূপ : ভরতের এই বাক্যে হুইয়া সুপ্রীত। বশিষ্ঠ মুনীক্ষ শ্ৰেষ্ঠ হৰ্ষ সমাভিত ॥ অসহ শোহকর বেগ ধারণ দৃষ্ণর। সহা করি ভূরত 🕏 রেক্স পুজাবর 🏾 নুপতির ক্লেবর করিতে ঈক্ষণ । না পারেন শোকাসজ ব্যাকুলিত মনঃ। অর্ণব উল্লিজ উচ্চ জ্বল বেগ পাত। ধারণে অনেক হয় উথিত উৎপাত॥ সেই রূপ লোক বেগ করিতে আয়ত। কম্পমান কায় বহু বিলপনে মন্ত্র। শক্রবের সহিতে হইয়া শীঘ্রতর। লইলা নৃপতি ততু শিবিকা উপর॥ শিবিকায় সংনিহিত অলহত করি। যথা বিধি ৰিধানে সমস্ত কৰ্মাচরি॥ यहाम्ला वज्रात. कतिया आक्राप्तन । মনোহর দিবা মাল্য চাল্লি চন্দন 🛚 ধৃপে করে ধৃপিত সুত্রতি নাম তায়। প্রত্য দক্ষে পরিপূর্ণ নুগারির জার।

উত্থান করিয়া সেই শিবিকা সুন্দর। শক্রু সহিত সিজ বস্থা বহুতর। হা রাজন, মহাজ্ঞন জন কোথা যাও। আর্ত্তস্বরে হানি করে শিরে,ফিরে চাও 🛚 এই রূপ বছরপ করিইল রোদন। ব শিষ্ঠ শাসিত বাক্যে যত প্রেষাগণ 🎚 কি কর কিন্ধর গণ এ কেমন কাল। শীত্র সয়ে শিবিকা খণ্ডাও এ জপ্পাস। অগ্রেহ ব্যব্রে ধার ধরে ক্ষেত ছত্র। করিছে বাজ্ঞন বায় শোকাকুল গাত্র॥ আনিতে আনিতে নৃপে পুরিতাপে পূর্ণ। অগ্নিহোত্র পাত্র পূর্ব্বাহুত স্থানে তর্ন॥ জাবালি প্রভৃতি যত হোতা দিজ জাতি নৃপতির পুরোহিত বর্গ পুর ভাতি, আনিছে শক্ট পূর্ণ রত্নের কলস রত্ন পূর্ণ অতি তুর্ণ প্রকাশিতে যশঃ॥ সুদীন দরিত্রে জ্বনে বিতরণ জন্য। প্রেষা বর্গ বহু রত্ন আনে অসামান্ত। নূপতির অস্ত্যেষ্টিকরিতে সমাধান। ধরণী পতির ধনে নাহি অসমান। অগ্রে২ গমন করিয়া পড়ে স্তুতি। মধ্র সুরবে স্থত মাগ্ধ প্রভৃতি॥ বন্দিগণ সুবন্দন প্লানন্দ করিছে। কেহ অগ্রে কেহ মৃত নৃপতির পিছে॥ যে ক্লপ কর্মানের ভত্তাগ কালে। एके क्रम जो किए कार्मिनी मस्टल ॥ श्री भूरखन का लेका इंड गमन। उद्योग कुमात उक्त करिया दिशकत ॥

নগরের বহিদ্দেশ প্রবেশান্ত করি। নিবৃক্ত নয়ন যথা মগ্ন হৈলে তরি। ভরত শক্রত্ব পরে ভাই দৃই জন। সকলেরে সঙ্গে করেয় শিবিকা গ্রহণ 🛚 पृथ्य (भारक नमाकुल कतिया कन्मन। পশ্চাতেই যান অতি দক্ষ মনঃ॥ কৌশলা। সুমিত্রা আর কেকয়ী প্রভৃতি। অর্দ্ধ সপ্ত শত নারী প্রকৃতি বিক্লতি। প্রকীর্ণ সূপক কেশা ছিল্লবেশা হয়ে। কুররী পক্ষিণী প্রায় রোদন করিয়ে॥ পশ্চাতেই ধান সমস্ত অঙ্গনা। ন্পের শরীর লক্ষ্যে রাজীব লোচনা।। অনস্তর নরবর কলেবর লয়ো। সরষ্ তটিনী তটে উত্তরিলা গিয়ে॥ সুকোমল শাদলে সচন্দন সুস্থানে। অগুরু নীরস তরু রচিত বিতানে 🏾 অপুর্ব্ব নির্মিতা চিতা পরম শোভন। কালীয় মৃণাল জ্ঞাল পদ্ম অগণন 🏽 যথা বিধি বিহিতে করিয়া সুরদ্ধন। সেই চিতা মধ্যে ভূপে করিয়া স্থাপন 🛚 নৃপে করি চিতাগত করয়ে রোদন। অতি শোকে সমাকুল সজল লোচন ॥ পউ বঁজ্র পরাইয়া পুণিবীর পালে। চিতায় স্থাপন করে যত বন্ধু জ্ঞালে।। যজ্ঞপাত্র চয় করি তদৃপরি দিজ। সমূহে অভান্ত মোহে আনায়ো ঋদ্বিজ করিলা ত্রিবিধ অগ্নি সে স্থানে বিস্থাস। যথা বিধি শাস্ত্রমন্ত্র বিহিতে প্রকাশ।

🛎 ডি উচ্চারণ করি দাময়িক মস্ত্র। হোতাগণ যজ্ঞপাত্র স্বতন্ত্র ॥ পবিত্র মার্জ্জন করি আন্ধোর প্রক্ষেপ। চিতার উপবিভাগে কর্মে নিকেপ। क्किशाञ्च हममानि मुष्टलानुष्ट । করিলেন মধ্যে অগ্নি প্রক্ষেপ সকল। অরণি সহিত আর পবিত্র সকল। পশুমাংস সুসংক্তে সস্তোষে অনল। রাজার নিমিত্ত অন্ন আন্তরণ আদি। নিক্ষেপ করিলা বিপ্রগণে যথা বিধি !! পুৰ্ব্ব হলাকৰ্ষ ভূমি উপরে বিহিত। গো দান করিলা তথা যথা কুল্টীত !! ছত তৈল রসাদিতে করিয়া সেচন। বন্ধসহ করিলেন চিতা প্রজ্ঞান 🛭 জনল প্রদীপ্ত ময় সকল শরীর। দহন দাহন করে সংযোগে সমীর 🛭 চিতারত নিব্ত হইল কলেবর। বিহিত সংস্থানলে দক্ষ নূপবর 🏾 বেদজ সুবিজ্ঞ বিপ্রগণ মন্ত্র বলো r পাইলা পরম পদ নৃপ সুকৌশলে। যাগকারি যাবভের নির্নীত যে স্থান। यक करण हिलालन नृश श्रुगातीन ॥ এই রূপ হৈলে ভূপ স্বরূপ দাহ্ন ী মহাবল মহানল হয় প্রজ্লন ॥ নিশ্চিত জ্লিত চিতানলে নৃপ দেহ। দেখিয়া কাতর সব যার যথা স্নেহ্ ॥ আর্ত্তমরে করিলেন রমণী বিলাপ। পুরন্ধনগণ সহ আকুল আলাপ।

নরেন্দ্র সূষ্ট্রত নৃপস্ত হয়।
হা নাথ হাহা ভূমিপ বিলয়।
সকলের চিত্ত দাহ কি জ্ঞান্ত করিলে।
রাখিয়া বিবশ ভাবে কোথায় সরিলে।
অযোধ্যা অপুর্বাক্ষণা শোকের বিস্তার।
একোন অশীতি সর্গে অন্তেটি রাজার।

१क मर्गह।

ত্রিপদী।

পশ্চাতে পিতার চিতা,মাল্যে করে। সুবে ।

রিষপানে দেহ যথা, শ্বলিত সর্কাঞ্চ তথা,
বিষপানে দেহ যথা, শ্বলিত সর্কাঞ্চ তথা,
বিষ্ণানি বিষাদে সর্কা মনঃ ॥
প্রণমিয়া পিতৃ পদে, পতিত অতি বিপদে,
তৃষ্টির পড়িয়া ধরাতলে।
অতি আর্ফ্র কলেবর, অচেতনে সকাতর,
দেখিয়া বান্ধবগণে ভোলে॥
দেখিয়া পিতার অক্লে, দীপ্তানল মনো
ভক্লে, বীরবাহু করিলা বিস্তার।
দুংখেতে হুইয়া শীর্ণ,রৌদনে বক্ষোবিদীর্ণ,
শোক সিন্ধু উপলে অপার॥
মন্তরা কুবাক)জল, স্থানি তায়।
বিক্রী ক্রিক্রিকা তায়।
ক্রিক্রী ক্রিক্রিকা তায়।

भक्त हीन कथेएमभ, वाष्ट्रावाति श्र्वराम, নিশ্বাস প্রস্থাস পরিকাগ। শোকে দৃঃখে আত্মা,কীণ,হইয়া অতি ম-লিন, বিলাপে কাতর বন্ধভাগ॥ পরিতাপে স্বিহ্বল,ভরতের চক্ষে অল, বালক অতি কুমার,লালিত পালিত যাঁর, পিতার উদ্দেশে নাই বাণী। यांचात दियरत जुमि, निया इ जारगांशा जुमि, আমারে নূপতি হয়ে জানী॥ অভিমতে হয়ে হড,সে রাম কানন গড, কান্দিছেন কৌশল্যা বিমাতা। যেই অনাথার পুরে, বিনা অপরাধ স্থত্তে, আপনি হয়েছে বনদাতা। সেই এই উপস্থিতা, চিতা স্থলে জোগা মাতা,কেন কথা না কহ ভাঁহারে। করিয়া এ রূপ তাপ, বহুত্তর সুর্বিলাপ, - সকাতর অতি দঃখ হারে ।। পতিত ধরণী তলে,দক্ষ পিত্শোকানলে, যন্ত্ৰচাত শক্ৰধন্ত প্ৰায়। যতে গিয়া ধরিলেন কায়। পুণাক্ষয়ে স্বৰ্গচ্যুত, যথাতি যথা অদ্ভত, क्षिशन ज्राभक्षा यथा। সংজ্ঞাহীন অতি দীন তথা॥ य क्रीन क्रमात्रक्षां कति, अमावा क्रमग्र थति, ক্রই রপ আর্ক্তির করি কি উপায়। ু পুর্বান ক্রিক, উদ্বন্ধ অতি পীড়িত,. গণ কুমার লাগে প্রিড নত কায়॥

পিতৃগুণ সংকীর্ত্তন, পিতৃবৎসল নন্দন, পরিতাপ করিয়া বিস্তর। कहिएन एह निर्द्धा उठाउ उठ कर्म नयू. অদুখ্য কি হেডু নুপবর ॥ ভাঁর একি হয় সমূচিত। ভরত বিলাপ করে. তাত তব গুণমরে. তাঁরে জাগ তব কি বিহিত॥ ভক্ষ্যভোচ্ছ আভরণ, বিমান বহু বসন, সমর্পণে পৃথক বিধান। সকলের সম্বর্জনা,করিবেক কোন জনা, কোথা ভুমি করিলে গমন। তুমি গুণবান পিতা,ডোমার এ,সুপালিতা ভোমাতে রহিতা কারা হবে। দঃখে অভিতাপোদয়ে, তোমার আশ্রয় कर्य, क्रमग्र विमीर्न डांदव तदा ॥ তুমি হৈলে স্বর্গগত, শ্রীরাম কাননা শ্রিত, कि अकारत त्रहित्व कीवन। পতিত দেখিয়া পরে,বান্ধবাদি অনুচরে, জীবনে জীবন দিব,কি আর দেখিয়া জীব, প্রবেশিব অন্ত হতাশন । তাতভাতা সুরহিতা,শূঝাপুরী সুদৃঃখিতা, অযোধ্যা না করিব ঈক্ষণ। महेक्र अधिविम, (मिथेम) (कार्ष भक्तम, कितिल डाट्ट श्राविम, शाहेव यमन क्रम, অধিক कि मह्न होह्न ॥ এরপ রোদনে দুঃখী, নৃপস্ত দয়ে দেখি मकाउद्ग मर्ख शदिस्रम। হাহাকার বারম্বার,পরে নৃপতি কুমার, শক্রম ভরত অনুক্রণ ॥

শোকে হয়ে পরিপ্রান্ত,করণাবিলাপে ক্ষান্ত,ভ্রান্তন্তায় করিলেন ধ্যান। পিত অনুগত প্রায়,পুরোহিত দেখে৷ তায় रेष्ट्रे माठा विभिन्न विधान ॥ উठारेश जुक्मारत, नानानी जि वावहारत. कहिंद्यन वाका विद्धवत । নৃপতি যুগল সূত,মহাশোকে অভিভত, সমুখিত মানব কুঞ্জর। ष्यक्र भूर्वक त्वरत, इहेरनम मीक्षकत, বিরাজে বিমানে যথা রূপ পুণ্ ইন্দ্রমঞ্জ প্রায়,ভোয়পরিপ্লত কায়, পৃথী তলে দীপ্ত তথা রূপ ॥ করিয়া চকুঃ মার্জ্জন,বাষ্পাবারি প্রকালন, যতেক অমাত্যরণ তথা। इडाचिट्ड मार् किया,न्পिडित नमानिया, क्रमक्रिया कुछ विधि यथा॥ अविश्वाक तांभाग्न, मणद्रथ मह्रणन, অবোধ্যায় অশীতিক সর্গে। অবণে অবণ শুদ্ধি, অজ্ঞানের জ্ঞান বৃদ্ধি, . ष्रभुग खत्नत ष्रभरत्रं॥ ৮ मर्गः

পয়ার

এই রূপে নৃপতির দেহ দাহাস্তরে। পিতার দলিল ক্রিয়া করিলেন পরে পুণ্যদাত্রী পুণ্যজ্ঞলা পরিপূর্ণা জলে। মহর্ষি দকলে সেবা করেন সে স্থলে॥

করিতে উদক দান পিতার উদ্দেশে। বরাম্বিত রা**জসূত স**রষ্ প্রদেশে॥ महिक मुक्त्वर्ग मत्युत स्राम । করিলা অবগাহন ভরত কমলে॥ পিতার উদ্দেশে করি জলাগুলি দান সেই কালে সর্ব্ব তীর্থ তথা অধিগান গুরুতর পাপ হর নদী নদ গণ। ভরত তর্গণ কালে সরষ গমন ॥ বিপাশা শতক্র গঙ্গা যমুনা সত্র।। সর্থতী চক্রভাগা অন্ত নদীবরা 🛚 लहेर लग (म मव भूगामा नमी नीत। করিলা পিতৃ তর্পণ রঘ্বংশ বীর॥¹ সামাজ সপুরোহিত সর্কার্ভন। পুরবাসী প্রিয় রুস্কু একত্র মিলন । যথা বিধি বিধানে বিমল তীর্থ জলে। নৃপতির ভৃপ্তি হেতু তর্পণ সকলে॥ করিলেন ভূপতির বারি কর্ম সাঙ্গ। পুরজন সকলে হইয়া নির্মলাক। রাজপুজ্রে শোকাকুল দেখিয়া প্রকাশ। ভিন্ন? রূপে সবে করিলা আখান ॥ হইয়া আখাস্যমান সকল সহিতে। অযোধ্যা নগরী যাত্রা স্বকুল উচিতে ॥ मृत रेश्ट पिया जार्याधायुती मीना। দীনাত্র জনে পরিপূর্বা পতিছীনা। নৃপন্ত সভিগণে কহিলা ক্লাডানে। न्পতि यहाँ के दिखे होंचे नेनारम प्राथ प्राथ नि नियम श्रीमाद्वी श्री है। क्रमक शामिए। भूती किया देगा के शाम গৃহছের গৃহ পৃষ্ণ গৃহিনী বিনাশে। শোভাহীনা যথা রাত্রি'সুধাংশু নিরাদে। मिहे क्रेश विना पृश व्यव्याधा नगही। হত শোভা গত প্রভা নহে দীপ্তিকরী॥ এ পুরীতে প্রবেশন অথবা দর্শন। না করি এমত ইচ্ছা মম সর্ববিক্ষণ। পিতাকে দর্শনাকাঞ্জী হয়্যে পুনর্বার। বৃহিব এ ছলে গিয়া কি কর্ম আমার॥ পিতৃহীন জীবনে রক্ষণে কিবা ফল। কি সুখে আমার কার্য্য হৃদয়ে অনল। ना कति स्त्रीवरन हेम्हा याहेव अर्थान। যথা পিতা দশরথ নৃপ্চুড়ামণি॥ নৃপতির মহামিত্র * ধর্মপাল নাম। থেদান্বিত ভরতে দেখিয়া অবিশ্রাম। শোক মোহে অভিতৃত হয় যেই জন। হ্রত আছে নৃপস্ত অধর্ম কারণ। অপতি প্ৰাত গুণ মৃত ন। হয় যে জন। সেই করে বিধিক্বত গতামুশোচন ॥ তুমি নহ তার অনুরূপ ভূপ সূত। শোক কর কি জভা হইয়া গুণযুত। বিধাতার নির্বন্ধের বাতায় কারণ। যোগ্য নহ কের কহ এমন বচন ॥ मर्खाञ्चन मर्ख्यन इहे (न विनाम। পঞ্জিতেরা না করেন শোচনা প্রকাশ। শোচন রোদুন করে এবণ যগ্রপি। মৃত **তন ধরতিকৈ অনে পু**নরপি॥

(ক্ৰি থাটকাৰির যোজক)

জবে সবে স্বস্তম মিলিয়া কাঁদি চল। এমত অঙ্গীক অবনীপ সৃত বল ॥ মৃত্যুকাল আগত হৃইলে সর্ব্ব প্রাণী। (यरङ्क व्यवश्च यात् इरव मञ्जीवनी। তবে নিন্দা লোকেশোকে নাহি প্রয়োজন। ममर्थ इक्टल मुकर्कुता मश्टलाशन ॥ এদো আশু আমাদের সহিতে সংপ্রতি প্রবেশ অযোধ্যাপুরী প্রভু শুন নীতি ॥ শোকে যার। সন্তপ্ত স্বজন পরিজন। তাহাদের প্রতি কহ আখাস বচন॥ পুণ্যচয় নরবর পিতা স্বর্গামী। কর তাঁর আদ্ধ কর্ম তুমি নরস্বামী। যোগ্য পুত্র যোগ্য হও সকলের নাথ। স্বস্তন কি পরস্তন দেখিয়া অনাথ। প্রজানাথ এক্ষণে আপনি মহাশয়। অভএব শোক করা তব যোগ্য নয় 🛭 श्वीतराम धर्मा शामा विकास विकास বিপ্রবাক্যে করিলেন পুরী প্রবৈশন ॥ নিরানন্দা অযোধ্যা অবনীপাল হীনা। বিশৃন্থ চত্ত্বর পথ অত্যন্ত ক্লপণা। শোকাতুর জনপুর বিকীর্ণ বিবর্ণ। দীন জন স্বজন নিম্বন পরিপূর্ণ॥ সেই পুরী প্রবেশিতে স্বন্ধন সংবৃত। পিতৃ গৃহে অতি মোহে দুঃখিত ভরত 🛭 मिक्किवर्भ निमर्भ नीत्रव तास्त्रभूत । উৎসবাস্তে যেন হয় গৃহ প্রভা দুর 🛭 সেই পুরে প্রবেশিয়া পিতার নিবাসে। [।] দশাহ্ নিবাস তথা তৃণাসন বাসে

কুশাসনে শরন মারণ পর তাতে।
পিতার বিনাশ পীড়া পীড়া কর তাতে
অযোধ্যায় নৃপতির উদক প্রদান।
হইল একাশী সর্গ পুই সমাধান॥
৮১-সর্গঃ

ত্রিপদী। रुरेल क्याराठीठ, भोठकुछ यशाहिठ, সমাপন করি নৃপস্ত। দাদশ দিবস পরে,পিতৃ পিশুদানান্তরে, ত্রয়োদশ দিনে যথা ভূক্ত ॥ ় পিতার উদ্দেশে দিজে, দান দেন সঞ্চ विष्य, महामृना दमन दाहन। ় গো গোষান সুবিতান,দাসদাসী অঞ্চনাণ, वसूर्भ्व (वस्य व्यवन्त ॥ न् পতि अक्न एम हित्क, पृष्ठा कि ততा दिएक, क्रिना উक्रम मया होता। धक्षमाना मतार्व, जायृ न जिन विखद, বৎসভরী ধেনু অপ্রমাণ॥ ভূমি ক্রম বহুপল,সার্দ্ধকোটি সুনির্দ্মল, কাঞ্চন ভূষিতা কন্মাগ্ৰ। মাতঞ্জ সুবর্ণ সঞ্জ, দিলা হেম ভূষিতাঞ্জ, किंगा मूकन एक शहन ॥ প্রত্যেক কপিলা ফলে,নির্দিত সহ্সুপলে তিন তিন এক দিজে দান। এই রূপ লক্ষ জনে, দান ক্রি হস্টননে, न्भ श्रुता न्भिष्मिष्टान ॥

ত্রয়োদশ দিন গতে,যথাবেদ বিধি মতে, আভক্ত করি সমাপন। মক্তিগণ একযোগে,ভরতে রাজন্বভোগে, नियुक्त कति एक मिना मनः॥ যাইয়া ভরত পাশে, মধুর বচন ভাষে, শোক ভয় করি পরিতাগ। यिनि जामारमद ভর্তা, नकरनद পূর্ব কর্তা, গুরুতে, যাঁহার অনুরা**গ**ী। দাম্প্রতিক স্বর্গাত,ছে গ্রন্থত বনাশ্রিত, শ্রীরাম শ্রীলক্ষণ সহিত। তুনি অভ গৃহেশ্বর, ধর্মতঃ অবনীশ্বর, অবনীপ অঙ্গন্ধ বিহিত ॥ वार्शन इहेग्रा तास्त्रा,मूर्यशान मर्ख्यका, ५ हो हो श्वादा क्षक चार्छ। अভि**र्वि**हनीय <u>ज</u>दा, ब्हेग्राट्ड मत लक्ष, থ্যান্ত্ কর উপস্থিত কাছে। নৃপ রূপে মন্ত্রিগণ, করিতে অভিষেচন, खांगारक मकरन देव्हा करता কর নৃপতির কার্য্য,গ্রাছ কর এই রাজ্ঞ, ক্রনাগত পুরুষামুসারে॥ কর আন্ধা আপনার,অভিষিক্ত সুকুমার, রক্ষা কর ফৌণীপ গু ক্ষিতি। উপযুক্ত পাত্র আর,নাহি কেহ সুকুমার मूलामन कर धर्म न মন্ত্রি মুখে উল্কি উঁজ,নৃপস্ত উপযুক্ত, पिथिएन मायभी मयदा। মঙ্গলার্থ উপস্থিত, ে একার ক্রিরীত, कहिएन इहेशा मुर्वा म

আছে এই নিরপন, কলোচিত মন্ত্রিন, । আন সর্ব্ধ শিল্পিন্ন, রাজপথ স্মার্জ্জন, मर्खकाल एक है डाइव द्यारी। করিয়া সে জন ভঙ্গ, কনিটে রাজ প্রেমস্থা, উচ্চ নীচ পরিকার, মণ্ডুমি একাকার, राम वाका कर्यांश आसात ! क्ष्में हाजा अन्याम हा स्वयंत्री व्यक्तिम. রাজ্যন্তর যোগ্যপার তিনি। রাজ্পর্যা সুবিজ্ঞাত,সকলের প্রেষ্ট খ্যাত, রাজীব লোচন রাম দিনি। चयाष वायात त्याम, श्रद काँत मांका-(छात्र, छ। हं करता छ। में बात दन। शहाराक कामात हर्य, त्य एउक्स दर्र, ষাত্র না হয় সম্প্রা সবে মেলি শীন্ত্রগতি,যোগ কর মহামতি, সেনা চতরঙ্গিনী সকল। ক্ষানন কটাতে মালে, আনির রাঘর বারে, ধালে লাহ্লা চল্ল ক্মলা ৪ অভিযেতনের যত, সামগ্রী সমগ্র শত, भकल लाहेत महा दरहा। ভোমাদের সহ ব্ন, ফবির আলি গ্রন, আনিতে নৱীন জটাধরে। **मिट्टे इत्य मृद्योगरण, অভিষেক তी**र् खल,कति नत भाष्ति ल मकला। चाद्य कति महाधन, तम्बीव तामधन, हरा कर्पा (यसन अन्तरमा রাজালোভা মম মাতা, কৈক্ষী কুক্র্ রতা, না পুরাব ভাহার কামনা। দুর্গ বনে করেয় বাস,রামরাজা অভিলাব, ভজিমান নূপসূতে,নিরভংগে নম্ভদুতে, পুর্ণ করি করিব সাধনা।

না চতে বিষয় সম ভাগ। कहा ७ इसेटर एक्ट्राधा দেশকাল পথ এজ,ত'নাও নকল বিজ্ঞ, আমার অত্যান্ত সবে যাতে। লাধিয়ে মফল কর্ন্যাখিরে আমার ধর্ম, গতে বজ গ্রন্থার পাবে। একপ ভাৰত লাগী, স্বৰ্ষ ভাৰৰ মানি-জ্ঞানী যভ নূপ মন্ত্রিগ্ৰ। নকতের রোমহর্দ্রের অন্তে সুখম্পর্শ, ভাগত ভালাগাল অভুক্রণ এ ক্লপ ফগন তব, স্বস্তি আয়ুত্মান ভব, ভোগতে খ্রী হউন অসো। त्याहरू (स्वार्)त श्राप्ति, निरुष्ठ मान निस्त रहित राजधान मुख्या व कमना । ইক্সা ভোমার বাণী,রামন্ত স্লাম্য মানি, অংগে শুনিয়া ক্রমে মুখ। প্রহর্ষ অভিত জল, দ্বিংশ মলিল সকল, (श्रम रमद्राम खन्न मृश्य। উপযুক্ত युरहम, कहिया मध् खरन, হণ্ড তব অমাজ সকলে। যত পারিষদ বর্গ, সহিত্যত আমাতা বর্গ, শ্ভমত ভাষে তেল জালা। ভোনার বচনে যত, শিশিবের্গ অহুরত, পরিফার করে এথ বব। মিয়া বাও সমূলে প্রাথব !

সাস দিরশীতি সর্গ, দশরথ গত স্বর্গ,
পিগুদি উৎসর্গ স্বর্গ তায়।
নরেজ্ঞ আদেশে ভাষে, সুভাষায় বিপ্রেনাসে,
বে ভাষে নির্ফিন্দে স্বর্গ পায়
৮২ সর্গঃ।

প্রার :

ভরতের আজ্ঞা মাত্রে ভূমি বিজ্ঞ যারা ৷ স্থাত্ত করিয়া সর্ব্বায়ে চলে ভারা: শ্ব কর্ম নিরত যাবন্ত পুরস্কন : খনক যন্ত্রধারক চলে অগণন ৷ তৎকর্ম নির্বাহকারী কর্মকার গণ : চলে রাজ মজুর করিয়া সংখ্যেধন ঃ পথ ঘাট হাট বাট একটাট করে : অতিবৃদ্ধ দেশ দর্গিণ সঙ্গে চরে। চলে বুফ রোপক রূপক করে৷ স্থান . কৃপকার কুন্তকার হড পরিযাণ 🛭 महाकात मदाकार व्याध्य हाला। বংশক্ষাকারিগণ সঞ্জন খদলে ! (य (य कर्मा जमर्थ हड़ेरत (य ८४ छन। সেই কর্ম করণে অগ্রগ অনুক্ষণ। ছিল্ল ভিল্ল করিয়া বিষম ভূমি যত। সমভূমি করে। যায় তারা অবিরভ ঃ (कृषिया उपिया वृक्ष পथन् यावः । অংগ চলে দেনাপতি স্পতি তাবে। হ্র হেতু নৃপতির আজেশি করিয়া। नावधारन नर्मकरन कर्म्य निर्याक्षियः।

বছজন প্রয়াণের যানের যে স্থান: সেই রূপ নিরূপণে করয়ে নির্মাণ । পথের পরম শোভা মনোলোভা হয়। উদয়ে পার্ব্রণচন্দ্র যথা জলাশয় 🛭 র র কর্ম করণে অধ্যক্ষগণ যত। मर्ख कम्म मृतिख्ड व्यथाक एक शङ् বছ জনে মুক্ত হয়ে৷ মুক্তি করে সার : নানা উপকরণ করিয়া সহকার। সেনাপতি নিবেশে নিধুণ যারা যারা। গাল্চাতেই যোগ করে চলে ভারা 🖟 করে। চলে কর্ম কেহ করায় শোধন। নাহয় বিভিন্ন জ্ঞান নগর গংলা বহু বুক্ষে আবৃত নিবৃক্ষি করে ভাষ। শৈল সম তর্ভছেদি ভরণ হসায় : नर्वाक निर्मन (माम युक्त क्रानाहाश। বহুলতা বিভান ঝাড়িছে ঝে'ড়াঝোপ शाशर करते क यह काषी हरू भना। কেহু করে কুঠারেতে শৈলেরে নির্মাণ **छेक्र धात दाक्ष काट किह दिव्ह माञ्चा** বছদাত্তে শাখাপত্তে ছে।দ্বাধে বোঝা। অপরে বীরণ কন্ত যত বংশ মৃদ্য। কোদালে হানিয়া হলে না রাখিছে স্থ ল কণ্টক দুৰ্গৰ পথ নিম্বণ্টক করে। বাপী কূপ ভড়াগ নকলে সম পরে 🛭 পাংশু দিয়া পুরায় প্রবল নদী নদে। শিলা তক পর্বাত নিক্ষেপ করে হ্রেদে নিমুভূমি উন্নত করিছে কোন জন। সকলেরে স্মানে সাজায় বিলক্ষ

পার হেড় তীর্থে সেড় বাধিছে বিশুর नमीलीय एपे यक्ष करत सम सहः। আজ্ঞাক্রমে অপর খনক অনুপথে। ছিত্র অনুসন্ধানে চলোছে মনোরথে॥ বন্ধনের যোগ্য স্থান করিছে বন্ধন। কোভহেত কোদিছে প্রক্ষেপে অন্তর্গণ॥ নিনীর নিজ্জন বনে করে নানা থাত। ্বলু জলে প্রিপূর্ণ হিন্তীন ব্যাঘাত 🛚 সাগর সমান তীর্থ দুনির্ম্মল বাহি। कार्मर निर्मात कहिएक कर्मकाही । দেশের পঞ্চ পঞ্চ করিছে ভোরণ। পানার্থে পানীয় শালা করে অগ্রন প্রিক্ষার প্রিক্ষ্তা ভূমি স্থানে : বহু বসু প্রভূন শোভিত সমুগ্রানে। মহীলহ কহ মক বিহ্লম গণ। লোহিত পভাকাৰত অতি সুশোভন 🎚 অলম্ভ সুমার্তিতে মলয়জ নীরে। প্রক্ষটিত নানা পুষ্প সুগন্ধি সমীরে 🛭 সেনাগণ মার্গাহন স্বর্গের সমান। দুরপতি সভাকৃতি শোভা অধিষ্ঠান। আজ্ঞা অনুসারে অধিকারে আপনার।। নিশ্মাণ করিল যথা যোগ্য অনুসার ঃ ভরতের অভিপ্রেত জ্ঞাত কর্মিগণ। প্রদেশেং করে ভূপতি ভবন। বহুসাদু মধুফল মূলে সুশোভিত। বহুবিধ ভূষায় ভূষিত মনোনীত। কণমাত্র নকতে বেমন হয় পাত। রাত্রিমধ্যে রচে কন্মী না হৈতে প্রভাত !

ৰূপতি নৃপতি গৃহ করিল রচন। পরিখার জলে বছ পাংও নিবারণ ! हेल कील यस दार्थ थारकर छात्र। প্রতোলী পরিশোভিত প্রতিপরিখয়ে ! শারিং সৌধ শোভা সুধাকর চয়। मुद्रे शास्त्र (मडेन मानान (मनानग्र॥ প্রবল প্রাচীর তার প্রচুর পতাকা। প্রমানেরাজে যথা পৌর্নাসী রাকা । শ্রীমান নির্মাণ স্থান পরম শোভন। অঙ্কান বিভান ভায় উপধান গণ॥ উচ্চতর সন্দর পতাকা উৰ্দ্ধগত খক্ত নথ সমান খোভন শত শত। काक्तरी श्रामा मार्ग मुख्यन एक । করি বহু প্রকার ব্যাকার শোভাগুরু 🛚 क्यनीय काननामि शानीय मध्त । সুশীতলামল জল তাপ করে দুর। পাঠীন প্রভৃতি তায় মহা মহা মীন। গঙ্গায় বেড়ায় খার ধরে। দীনক্ষীণ। কোনীপতি কুদিত অক্ষয় কিতিতল 1 ক্ষপার্ম শোভা যথা নক্ত মণ্ডল। मिहे कर्ण भदाश करन दक्षांगन। ন্তভ শিশ্যি স্নিৰ্দিত অতি সুশোভন। অধ্যোধ্যাকাণ্ডীয় কথা যথানৃত ধার। ভরত ভূপতি ক্লড পথ সংস্কার 🛭 ৮৩ সর্গঃ

লখু ত্রিপদী:

প্র ওর জনে,সভা সুশোভনে, ভরত সঞ্চিত প্ররে विभिन्ने सङ्घे, विकास विभिन्ने, দেখিলা অতি অদুরে। चामन मदग. ध्वा विश्वन. মহা যোগা যোগ ভাষ : গুরু ভন এীতে,সমূচিত রীতে. স্থানে স্থানে শোভা পায় ং चन विनामान, त्य क्रथ शहात, हत्य खोरोशरन (भाइ)। সেই রূপ রূপ,প্রভা মারে তপ্র উপযুক্ত মনোলোচা ! तास्त्र शरिदांत. समग्र विकार. मिथिया शिक्तिक वह । कुल श्रुदाहिल, मध्य छेटिल, ভরতে ভাষেন পর । তাত ভব তাত, বিশ্বতন নাধ, দশ্রেথ গত বর্গে। करता धर्माहात, यथन धहात, शांशिया राक्षत दर्शा धम शास्त्रवर्णी, ८३ रमुमंगी, ভোমাতে প্রদান করি। भक्त महीलाल, जाम धर्म्यलाल, महास वर्ष धति।

क्रमक चारमभ, टाहाटट बारवभ, না করিয়া পরিহার। যথা শীতহা তি, স্বকীয় প্রকৃতি, না **ভাজেন** শোভাহার । ণিড় ভাড় দত্ত, তব এ রাজ্য, অহন্টক অতি সাধা। কর সুত ভোগ,অভিষেক যোগ, হইয়া বহু আরাধা। উত্তর দেশীয়, পূর্ব্য প্রেদেশীয়, ভাবে হত দাকিণাতা। ছুণ বহু কার, সমুদ্রান্ত বার, ধনাল যত পা*েছা। নভোবে তোমার,লয়ো রভুহার, দিবে ভর কর প্রাহ্ন। করিয়া অবন, বশিষ্ঠ বচন, महिन वरात ांश। শোকে অভিভত,দেহ পরিপ্লভ, मत्न मत्न चादि होम। ধর্ম জাকা জ্ঞার, ধার্মিক তথার, নেতো বারি অবিরাম ! সজল সংশ্লিষ্ট, বচন সুমিষ্ট, देशे अन माता छेकि। कम दश्मयात, भन्त शसीत्त्र, কহিলা ধীরে সুমতি ৷ খুরোহিত প্রতি করিয়া প্রণতি, বিনতি পূৰ্ব্বক বাণী। গুরু বার আর্য্য, ব্রশ্বচর্যাটার্য্য, विकारत मुजावनि ।

হইরা ক্রিষ্ট, কে হেন পাপিষ্ট, ধর্মির ধরণী হরে। विटमंब विधान, आंभात ममान. ন্পতি সন্তান বরে। দশরথ জাত, ত্রিজগতে খ্যাত. इकेत तांका कातक। রাজতৃছ আমি,গণ্য করি স্বামি, এ কর্মে নহি পারক। হব কলাকার, ছেঠি অধিকার, হরিয়া কি হরি হরি। অননীর ক্রত, যে পাপ সঞ্চিত, (म रीजि कि कहिकड़ी B इहेग्रा शुइन्ह, ना इहेर मृन्ह, दमक द्रांत्म श्रेनाम। बाहेव भणाटक, त्रवकुल नार्थ, ভঙ্কিব সে রাজা রাম ৷ मर्ख मत वत, जामब जमत, অসুর কিন্নর নাগ। এ রাজ্ঞ রাঘবে.সকলি লম্ভবে, অযোধ্যা কি অনুরাগ ৷ যদি কোনরপে সরপে বিরূপে, বন নিবর্তন ভার। না করিতে পারি তবে জটাধারী, ্হইব এ অঙ্গীকার। मधी हरया त्रव, मशांन (मविद, সুমিত্রা সন্তান যথা। बाय जाडा विदन. श्रमकात मितन, ना तव श्रुटत मर्काषा।

উৎসাহ না হয়, কৰ মহাভাষ, বসিতে অযোধ্যা পুরে। कतित त्मदन, कमन लाहन. व्यनिष्टे हाथिया न हर ॥ পিত্তুক রাজ্যে,অধিকার আর্যো, रम कार्या कि कार्या त**ल**। না করে ধারণ,সাতিতী যেমন. অষোগ্য জাতি বুষল। नश लाक नाथ, शक मणद्रथ. রকিতা একণে রাম। ছেঃ রঘুপতি, পিতৃ তুল্য গতি, मकन मका न श्राम । छाँदि निवादत्व, वृक्षि हत्त दत्न. নিতারণে শকা কেল। নবার নাক্ষাতে,বিশেষ ব্যাখ্যাতে, কহিনু করিব সেবা ! শুনি ধর্ম বাণী, ভরত কাহিনী, সভাস্থ বিজ্ঞানি গণ। হর্ষে অফ্রপাত,সকলে সাক্ষাত্ত, त्राप्य निर्विश्व मनः অনন্তরে করে, পার্ষদ প্রবরে. প্রশংসে সচিব গণে। সাধু সাধু বাণী,নুপসুত জানী, গুণ গুণে খ্যাত ফুনে 🛚 বাষ্পা সুগদগদ, কণ্ঠে জড়পদ, विश्रम मम्श्रम धाङा। किश्मां छहरा, विशिष्ट भूषराज, जारभर अभः मा राजा।

ভারাগণ মধ্যে, সুরপথ মধ্যে, পশান্ধ শোভা যেমন। এ শোভায় তব, নহে অসম্ভব, রাঘব বাস ডেমন ! महाचा धर्माळ, अञ्चालान विख, পিতা তব দশর্থ। मानव मर शांदम, निष्मश्चन शांदम, পুরাইলা মনোরথ ॥ সেই শূব জনা,তুমি কুতকর্মা, ष्ट्राटक धर्माधर्मा उद्योग । বেহেড় শ্রীরাম,আনিতে স্থাম, বাসনা মানসে খ্যান 🛭 অতি গুণবান,কৌশল্যা সন্তান, তুমি জ্ঞাতা গুণ তাঁব श्वा मंडाखन, श्वा (मंडे सन, ধর্মাত্মা বাস্কব **মার** । ভোষার সমান, বন্ধু বর্ত্তমান, (य (मर्भ (म (मम ४२)। কল্মৰ ভৱন, অতি সুকটিন, প্রদাবে প্রতাহ পুণা। তোমা পুজ হৈতে,গণ্য**ণ্ডণ সতে**, সুরপ্রর গত পিতা। অতি প্রতিষ্টিত,ভূপতি নিশিত, প্রাপ্ত গাতি সমূচিতা ৷ मडा नमूलग्न, शतिकृष्टे हग्न, শুনিয়া তব বচন ৷ রাম নিবর্ত্তনে, বাবে সৃত বনে, हरव रम मिन रक्मन ।

ইতি ভরত প্রশংসা। ৮৪ সর্গঃ।

প্রার :

विनिद्धित वहन खावता मामन्थि। গুরু প্রতি গুরুতরা গভীরা ভারতী ৷ সকল উপায় গুরু কবিব নিছে।গ। নিবর্ত্তনে নব ঘলে নিজ জনে বোগ। আপনার সমকে সমস্ত মিত্রগণ : আমার নিয়ম সার কর্ছ এবে 🛭 এই কথা কহিয়া ভরত ধর্ম ময় ! সমীপত্ত ভাতুৰৎসল সদয়। বারনার আমার বচন শুন স্থত। তুর্ণ কর গ্রম শাসনে হয়ে৷ দুতঃ যাত্রা বার্ত্তা বিজ্ঞাপন রামে আন বলে : ভরতের আজ্ঞায় সুমন্ত্র ক্ষত চলে 🎚 न्शामिश मालाश (यमन (महे क्रश । শ্রবণে প্রহণ্ট চিত্ত আনন্দ অনুপ । প্রকৃতি পুরুষ বলাধ্যক্ষগণ যত। রাম নিবর্ত্তনে যাত্রা আজ্ঞা অভিমত। যোদ্ধাপতি অঙ্গনা অঙ্গণে শুনে যারা। গৃহে২ গৃহ স্বামি প্রতি করে দ্বরা। यांव नाथ অযোধাার नाथে আনিবারে। কি সুখে রব বিমুখে একাকিনী ঘরে। পরে করে বলাধ্যক বলে নিযোজন। योकांशन मह भी च चान ह मानन।

গো মাড্ছ ভুরছ সংযুক্ত দিব্য বান। সজ্জীভত করে। ক্রত বার্ত্তা বর্ত্ত্বমান ॥ माखिल गर्नल रेमच हराम मर्वद्धां उ বশিষ্ঠ নিকটে রটে আদেশ ভরত। তুরা কর স্থতবর সুমন্ত্র সম্প্রতি। আন যান বৰ্ত্তমান সুষাত্ৰা সংগতি। অনন্তর সার্থি সুমন্ত্র গুণ্ডে বাণী। ্তিশীন্ত্র পরাক্রম সম্ভ্রমী সদজানী॥ সাজাইয়া যান যান স্বামী সন্নিধানে । উত্তম্প বাজী রাজি সমাধানে। অসাঘব রাঘব দেখিয়া সৈভাচয়। নতা পতি মহামতি প্রতাপাতিশয়। मधा मुद्या दलाशाक मुख्यवल वल । নুজ্জন সম্বাতি সম্পে সকল**া** গুরু বনগত গুরু গৌরবী সদ্জানী। এমাধনে বচনে ভোষেন মহা মানী। শীত্রগতি কর গতি সময় সংযোগ। সর্বাবলে বল দিবা সুকাল সুযোগ 🎚 আনিতে আপন গুৱা বনস্থ রাঘুৱে ' সারিত রামের পদ গ্রিয়া অতি জাতে। অগতের উপকার জন্ম হিতকা আনিব আপন দেশে দিবা ভটাগারী। স্থত পুত্র যাত্রা স্থত্ত করিয়া এবন। পরিপূর্ণ ফামনায় করে বিজ্ঞাপন # শাসিতে সকল সৈন্ত প্রকৃতি বিধানে कानाव अवग वन नर्स मृशकात। কালে সঙ্কলন করি কুল শ্রেষ্ঠ যারা। অগ্রগণ রাজভ নাগর বৈভ ধারা ॥

যোজনা করিয়া খরতর খর গণে।
মদমত মাতঙ্গ তুরঙ্গ অগণনে ।
রামায়ণে অযোধ্যায় দেনা প্রস্থাপন।
বাল্মীকের বর্ণন প্রারে সম্বলন ।
৮৫ দর্গঃ!

লঘুত্রিপদী! ষেত হয় সৃত, সান্দন অন্তত, আরোহণ করি ভার। শ্রীমান ভরত, সর্বাংতে রছ: খ্রীরামে বিনত কায়। हत्या अध्यवाभी, श्रिय तन्याभी, সমন্ত্রী সপুরোহিত। ভরতারুগত, অন্য জন যত, বিজ্ঞাত উচিত নীত। উত্ম ভুরঞ্চ, বিবিধ সর্জ্ব, রথে করি নিয়ে।জন। ুর্গ র্থোপম, যত রথোভ্রম, তাহে করি আংরাহণ য অভান্ত উহুর, বহু করি চয়, কণ্পিত যথা বিধান। বশিষ্ঠ যাত্রায়, ভদ্রগণ ধায়, धद्राध्त कम्भगांग । जिमहम कही, मण छन कहि, ধ্রিছে বিমান ভার। চলে ধনুত্মান, করে ধনুর্ববাণ, मुत्रथ यष्टि शाखात ॥

চলে সেনাধ্যক্ষ, ভুরুক্ষমে লক্ষ্, **शक्तिताक मम वटन** । তাহে नगांक्र, नांकाहेब्रा वार्, निशृ मसात्म हरल । नकरहे नकरहे. निकार निकार. वाटि हाटि अमाजिक। ৰশস্বী ভরত, পশ্চাতে নিয়ত, গ্রণন করা অধিক। क्किशी कोमना।, इहेश श्रमूझा, সুমিত্রা সহিতে যান। ৰত ৰশস্থিনী, নয়েজ্ঞ গেহিনী, আরোহণে দিবা যাল ! द्राम जानग्रतन, मिथिए नग्रतन, অন্তর অন্তরে ভার। ৰাবত আচাৰ্য্য,বিশেষ বিচাৰ্য্য, কি কথা কহিব সার॥ हिना महत्न, উद्धम मकत्न, দর্শনে রাম লক্ষণে। নাহি অন্থ কথা,কণা রামকথা, কহে তথা ক্ষণে ক্ষণে ! वरण यन यन, काथा नव घन, রামভান ভাম কায়। মহাভুজ হিন্ন, সতু চিত্ত ধীন, অস্থির না দেখে তায়॥ অতি দৃঢ় ব্রত,কি আছে সুব্রত, দেখিব সে ব্রত ধরে। र्दि द्व कान, अनागठ कान, मूक्कं मत्न मा शहर ।

मर्भाम व्यक्तित्व भाक मानिय, শিব শিব জীব জীব। এ मृध्य नाघव, कहिटव हाघव, ত্রীমুখ কি দেখিব। উভগে ভাকর, হগ্যে প্রভাকর, স্বকর নিকর যোগে। নাশে যথা তমঃ, অতিঘারতম, তথা কি হবে সুযোগে। ইতাদি অনেক,না কহে অনেক, না দেখি এমন লোক। प्रभाग जानाम, यमुख नानाम, পরিহরি সৃত লোক। কি কব অপর, সবে পরস্পার, আলিঙ্গন প্রার ধার। मत बत श्रेत, मर्खना अश्रेत. সহিত দর্শন চায়। य श्रुत्र इहेटल, क्रुवार्थ इहेटल, একাত্ম সর্ব্বাত্মগণ। জ্ঞানিয়া আগম, একার্থে নির্গম, প্রিয় রাম প্রয়োজন। চলে মণিকার,যে যে চমৎকার, কুম্ভকার পরিষ্কার। यञ्ज कर्ष्मकाती, অञ्च वावहाती, মায়ুরী তৈতিরী আর । ছেদ ভেদ কার, তথা দন্তকার, দম্ভ উপজীবি গণ। ७था चधाकात, शूरताहिष हात, मूवर्ग काव्रक स्वन ।

কনক ধাবক, আপক ছাদক, বৈভাক শৌণ্ডিক যত। পৌপিক বজক, বঙ্গোপজীবক, তন্ত্ৰবায়ক সঞ্চ ! অভীষ্ট কারক, স্তাবক ধাবক, ञ्चलामि शांशश रामी। গান্ধিক পান্ক, অস্তান্ত বেত্ৰক, চলিল হয়ে আনন্দী श्वत क्यांनातिक, हाल क्यांतिक, স্থাকার শিশ্পকার। সুবর্ণ বনিক, তথা শৌকরিক, लाजा शकी वी दिखात । চলে আর.লিক, মৎস্যোপজাবিক, মল বগন যে করে। भाषाति कामाति. हाल हित्रकाती. ধান্ত মহাত্ৰ পাৱে ॥ পান বিক্রিক, ফল প্সারিক, भुष्भ मरना शकी दिक। লেপক স্পতি, তকন্পাভৃতি, চলিছে কারু যপ্তিক। কার্পাস সঞ্চারী,চলে ধনুষ্কারী, ভুত্র বিক্রমী সকল। यञ कर्माकात, काछकात हात, চলে চিত্রকার দল 🛭 वर्षन काहक, इंक्टेन गांधक, গোপ মোদকাদি হার। চলে মালাকার,চেঙ্গারী বাাপার. भारमाथ कीवन यात !

পটকার আর, চলে চর্কার, স্বস্থিকার কেশকার। রন্ধন কারক, ভঙ্গন সাধক. ক্ডবিক শক্ত কার ৷ খণ্ডকার আরে, বাণিজিক কার, কাঁচকার ছত্রকার। বেধক শোধক, সুকর্ম বোধক. লৌহকার চর্মকার 🛚 षातक भगक, भागा छेकांदक, বিষ নাশক জাবক। ড়ত গ্ৰহ বিধি, বিজ্ঞ গুণ নিধি, শিশুগণ চিকিৎসক : एल विভानक, जारमाथ औरक, হয় বন্দি করে ফরে। জ্ঞাতা গ্রামঘোষ, দর্ব্ব দোষাদোষ, মটগ্ৰ কত জালা ৷ সকল নগর, কি পথ চছর, मकल महीर्ग द्वार । স্ব শ্রেণী পুর্ব্ধকে,বিভিগ্ন লোকে, হইল অতি পরিবৃত : গাড়ুর বালক,আর বৃদ্ধ লোক, করিয়া পরিবভট্ন। চলিখ সফলে, দর্শন কৌশলে, একতা পুরবাসি ভান : বেদজ্ঞ প্রাধাণ, শ্রুত যত জন, পোরথে আর্কু হয়ে। চলিল পশ্চাত্, খ্যাত কি অখ্যাত, যত জন সমাগ্রয়ে॥

नुमत्र नुरवण, नृत्त्रिक विराणव, हरेया जुवाम धाती। भाख माध्रान, मर्खाक हक्त, ভরতের অনুচারী। नानाविध योद्य. कानन अग्रात. নপসুত সনে ধায়। নরেন্দ্র নন্দন, শক্ত প্রতাপন, যে পথে সে পথে ধায়। করিয়া দর্শন, নগর কানন, তাবত্বসতি স্থান। नग्रानत काला, जार्ज मर्स्त इरल, করিয়া চলে অভ্যান ৷ द्राम छन्वान, कतिया विवान, क्रुशन वहन जारा। সকল নগরে, মাতৃ নিন্দা করে, विमीर्व क्षयाकारण । ছष्ट्रे मर्ख सन, जानमिड मनः, সেনাগণ চলে সঙ্গে। ভরত সংসর্গে,সুখী সৈন্থ বর্গে, माध्वर्श मूखमः শাস্ত্র সিদ্ধা পথে,সিদ্ধা মনোরথে, বুহস্পতি মতে চলে। অতি সুকুশল, সুবীর সকল, পরিবৃত মধ্য স্থলে। বত দুত ভ্তা, আত্মীয় অমাহা, সকলে সংযুক্ত মতে। নিৰ্গম সময়ে, পরিভোষ ময়ে, विभिन्न वहन भरण

विक माथकन, महलाविक यमध, দর্শন গোচরা গঙ্গা। (मना ममूनम, उटि चिता इत्र, কমল দুকুল ভঙ্গা 🏻 गना वरु खना,विश्रमा वर्मा, (मिथिया निष्य मृचित বিশান ভরত, জ্ঞান পথেরত, সঙ্কেতে বুকিলা ধীর। যত মন্ত্রিগণে, মধুর বচনে, কহিলা কৈকয়ী সূত। রক রক্ষ সেনা, সচিব প্রাচীনা, করিয়া বিশ্রান্ত ভূত। তরিব এ গঙ্গা, ভব ভয় ভঙ্গা, महाननी महा खला। এই গঙ্গা নীয়ে, বিষ্পাদী তীয়ে, एरेव आफ निर्माला। মৃত ভূপতিরে, সুপরিত্র নীরে, मिव खनाञ्चिल (मञ्। याहेवारत ऋर्ग, मिहे एक मार्ग, मिहे भित्रू इत्व (इत्रु । ভরতের বাণী, পরম কাহিনী, ভাবণে অহাতা গণ। করিয়া স্বীকার, পথশ্রম ভার, হরণে করিলা মনঃ॥ শ্বীয় শ্বীয় জনে, প্রহর্ষিত মনে, করিতে সে স্থানে স্থিত। नुश रिमछ हरश, वहन विनरम, किशा कुमन रिख।

भूजारवत श्रुत, नाष्ट्र र छ पूत्र, তুরক কুঞ্জর গণ। গিয়া অল্প পথ, রাধ উট্ট রধ, গঙ্গা তীরে সর্ব্বজন। জীরামের মিত্র, নিবাস পবিত্র, গুহু জ্ঞাতি গুণাবৃত। वाम करत वीत. निर्लंग महीत. সেই পুর সুরাশ্রিত। পবিত্র সে দেশ,করিয়া প্রবেশ, শুদ্ধ সূরধুনী তীর। চক্রোক দল, অলহাতে স্থা, নিকাট সুভট নীর। ভরতাজাগানে, করে সেই স্থানে, চক্র বাহ সেনাগণ। रिहिछ दिशास्त्र, शथि (महे शास्त्र, ভবত বিষয় মনঃ। রাম নিবর্ভন, কার্য়া চিন্তন, তথা সৈন। সমাবেশ। ভরতাবস্থান, শ্রীরাম আখ্যান, পঞ্চাশীতি সগ শেষ। ৮৫ मर्श्र

পয়ার। গঙ্গাভীরে ভারতি সমস্ত সৈন্ত গণ। প্রবেশিয়া চক্র করে পরম শোভন। নিরীক্ষণ করিয়া সে নিযাদ ভূপতি। জ্ঞাতিগনে কহিলেক গোপনে ভারতী।

এই বাহ দ্বিতা সেনা সৃদ্ধিয়া মহতী। पर्णान इहेल एष्टि महाल मःइि । না জানি বিশেষ বাৰ্ত্তা কি হেতু এছাৰে। ইক্ষাকু বংশের সেনা লইতেছে মনে। काविष्मत धक तथ (मंथा यात्र मृत्त । কুঞ্জর ধরিতে কিবা প্রবেশিল খুরে ৷ অধবা মৃগয়া কর্ম্ম করিবার ভরে। করিতে আঘাত কিন্তা গুহুক নগুরে ! এই অমানুষী সেন। বৃাহ ভাবে রয়। ইহাতে আমার চিত্ত স্থিততা না লয় 🛭 অনুমান করি স্থা দাশর্থি রাম। পিতৃ বাক্যে বনগত মিত্র গুণধাম ৷ সহামাতা রাজ্ঞলোভে কেক্যী সন্তাম। ভরত সমরে রত হয় অনুমান ! मःश्रीश मन्त्रिति होस्रमञ्जी जाहशना। গ্রীরাম বিনাশে বুঝি করিয়াছে ছল।। করিতে সৌমিত্রি সহ রামে স্থান ভ্রপ্ত । কাননে আসিল রিপু দিতে মহাকষ্ট । ভর্ত্তা বন্ধু সথা গুরু গুণসিম্ধু হাম। যাঁহার কুপায় গুহু পূর্ণ মনকাম। আমি সেই রাম হিতে নিতা রত আছি। গঙ্গাতীর আশ্রয় করিয়া নামে গৈচি ! মন্ত্রণা করিল পরে মন্ত্রিগণ সবে। আনাইল সন্নিকটে অনুচর গণে । ক্রিভে লাগিল সর সৈন্তে সাবধান। मकरण मञ्ज द्र गर्या धरूर्वी । ব্যাপিয়া রাঘব সৈত্যে সকলে থাকিবে। আমার শাসনে যত্নে নগর রাখিবে।

পঞ্চশত নৌকায় নিযুক্ত শত শত। থাকে থাকে থাকে যেন দৈন্ত অবিরত । সংযক্ত নিযুক্ত ভাবে উপযুক্ত বীর। ক্যাপিয়া হহিবে মধে মুহধুনী তীর॥ যত্তপি করিতে দেঁষ রামের উদ্দেশে। याका करिवारत केमला भी काम खादारण দেখ ষেন ভটিনী ভরিতে নাহি পারে। भाषक एउक मह रेनच शहिदारत॥ রথ রথধজ নিজ ভুজ শর জালে ! বিনাশ করিয়া সভাঃ পাঠাইব কালে 🖟 গ্রীয়াম নিমিত মম এই জোধ নিবি : ছদয়ে উদয় বৃঝি করিলেন বিধি। সেনাঘাতে সভাংজোগ করিব মোচন ৷ বিষ্ঠাগে রাগে মুক্ত ভুজন যেগন ! কেকয়ীর বশীভূত হইয়া ভূপতি। গুণধাম রামে দিলা বানৰে বলতি ৷ সেই পাপ সন্তাপ খণ্ডিব শরধারে। সদৈত दीর গ্রেগ্য ভরত সংহারে ॥ অন্ত মম এ শর সংঘাত সমুদরে। হ্ইয়া কার্মাকচ্যত দুত অতি রয়ে। . নরাম কুঞ্জর রথে বিশাল পতনে। महिरव नाग्ररक मर्स्स वर्ष्य ताञ्चभरव॥ আমার প্রেরিড শর সর্বর কলেবর। ভেদ করে। প্রবেশিবে দহিবে অন্তর। নিহত সামস্ত যত যোদ্ধাপতি গণ। হত রূপ পদাতিক ধন্ধ অগণন॥ শুগাল কুকুর থগ ভোজন নিমিত্ত। रहेरव नकल रेमच এहे मम हिख।

অবস্থিত সৈশু যত সুস্থিত যে স্থালো। অখাদি কুঞ্জর গণ অতি কৌতহলে॥ সেই ভূমি অহা আমি লোণিত কৰ্দ্দেগা। করিব রাখিব জাজি রামের মহিমা॥ अग्र आगि मन्द्रे दहित शुध्रात। গোমার বায়স করু কদখের সনে। িং ভ সমস্ত সৈতা নিংস্ত ক্রিরে। द्वित मम् उक्त ভाष्ट्राक्रात व्यक्तित ॥ र्डे,होम विभिन्न कर्म कटिव मुक्तत । নিক্ষেণ করাব ভূমিতলে কলেবর 🛊 পাণ্ড প্রপূর্ব সৈতা ভূতলো শয়ন : निर्दाक्षण काह दिक्ष रुदिर नयम ॥ নিবারিণ নৃপতি বাহিনীগণে আমি। বছ বাক্তা বুপ্তার ইট্যারণগামী। বল্ডন মহ'ডন গুণ্গণে গ্রাক্। চিভিয়া জাগমত বিহিত সাহাযা। র মারণে অযোধায় গুহুকের কোপ: यष्भी जिन्दर्श एक श्राह चाह्राश ॥ ►७ मर्गाः ॥

পয়ার।

সুমধুর কল মূল অতি মনোহর।
ভরতের নিকটে লইতে গুহবর॥
আগত দেখিয়া তাকে পরে স্থাত সৃত।
ভরতের সনিধানে জানাইল ক্ষত।
ভরত: গ্রেক্ ক্রেয়া বিনয়।
মম বাকো অবধান কর মহাশয়।

जरवाशाका ।

कांजिशत चात्रु इहेश छह्वत । উপস্থিত তোমাকে দেখিতে ইচ্ছা পর॥ 🕶 হ এ দণ্ডক রণ্য বিষয়ে কুশল। ভ্ৰাত সখা তব বৃদ্ধ আকাজিক মঙ্গল। অন্তিকে আসিতে ইছা দেখিতে তোমারে আদেশ হইলে পারি আনিতে তাহারে সংগ্রীতি করণ জন্ম আগত সজ্জন। ্রিঃসংখ্যা মম মনে লয় অনুক্ষণ ॥ যে স্থলে তোমার ছে গ্রন্থাণ সহিত। করিলেন স্থাভাব আছে প্রকাশিত। এই বাহ্যে কলিলা কেক্য়ী মুভ ভারে ज्यादिम इंडेल जान याथा वारहारत। দেখক আমারে গুলুমেই যদি আছে। আজ্ঞাপ্রাপ্ত বিহা জানাইল কাছে। ভরতের আদেশ পাইয়া গুহু রাজ। **ছ**ष्ट्रे १ एग्रा ब्हां जिला या निक एवं विहास ভরতের প্রতি গুরু কহিল বচন। मःकीर्न श्रद्धान मय कत मन्दर्भन ॥ নিকটে ভোমার দাস এই দেখ আমি। বাস কর আমার ভবনে গিয়া স্বামি॥ উপস্থিত আহার বিহিত ফল মূল। উপাক্তিত নিষাদের তব অনুকৃষ। অপুর্বে দরদ মাংস শুষ্ক মাংস চয়। ख्या (ভाष्ण উक्त भीत यादा देवहा दय्र॥ তুমি মহাশক্রজয়ী আমি কুদ্র অতি। হছতা হেতুক কহি ঈদুশী ভারতী। বিবিধ কামনা সহ করিব অচ্চন। প্রভাতে সম্প্রীতে প্রভু করিবা গমন।

গুহ উক্ত উপযুক্ত বছন রচনে। সম্প্রীতি ভাষিল অতি কেক্ষী নন্দান। প্রত্যত্তর করিলেন মহাজ্ঞানবাল। জানিয়া সমস্ত পূর্বে কারণ বিধান ! জ্রীরাম আমার গুরু ভূমি ভাঁর স্থা। সকল কামনাসিদ্ধা পেয়ে। তব দেখা॥ যে তুমি ঈদৃশী সেনা অসংখ্য আমার। জ স্কৃতিনর ইস্হাকর যোগ্য ব্যবহার॥ এই কথা কহিয়া নিষাদ পতি বরে। পুন চ কহিলা অতি স্থিপ সমাদরে॥ ভ?ছ:জ:শ্রমে আমি কত দিনে যাব। কেমন গহন ৩হ কোথা গিয়া পাব ॥ दक पृथ्य मक्षार दिक्छे मर्भगत । বিস্তর কণ্টক ভূমি করে)ছি শ্রবণ ॥ উक्र উक्र छङ्गरह छङ्गरह रम। এই রূপ ভ?তের শুনিয়া বচন। া রুভাঞ্জলি কহে গুলু গংম গোচর। আমি দাস পশ্চাতে যাইব রঘ্বর॥ रुष्धान वल्यान रिम्छानि लहेश। মহাবনে আপনার অনুগ হুইয়া॥ যদি তুমি বনগামী শ্রীরামের হিত। বাঞ্জা কর আমার অত্যস্ত তাহে প্রীত 🏾 বহু সেনা অগ্ননা (দুখে) হয় ভয়। হৃদয়ে অপেষ শস্ক্রা শুন মহাগার। এই কথা গুহ তথা কহিবার পর। ভরত আকাশ সম নির্দাল অন্তর॥ म् मध्त अष्ट्रंत गृहार्थ मञ्चाला । কহিলেন বাকা সাধ সুধারসাভিত।

हा कष्टे अमन काम (वन माहि इस। আমার বিষয়ে তব সন্দেহ উদয়। না কর এরপ শঙ্কা আমার উদ্দেশে। রাঘব আমার ভ্রান্তা অগ্রন্থ বিশেষে। পিতৃসমে রঘৃস্তমে আনিবায়ে বাব। বনবাসি রাঘবের পাদপত্ম পাব ! मा कहिरव अन्य वृक्षि मृवृक्षि निवाह। मछा कृष्टि मा हासित अस्तत विवास। ভরতের ভাষণে অত্যন্ত পরিতোর। কুডাঞ্জলি কহে গুহ ক্ষম মম দেৰি। ধস্ম তুমি তোমার তুলনা নাহি অনে। উপমার উপযুক্ত না মেখি ভূবনে 🛭 অয়ত্ত্বে এমত হাল্ল করে। পরিতার। কাননে গমন রামে আনিবারে রাগ। থাকিবেক অনুরাগ অসংখ্য বৎসর। অখিলে তোমার কীর্ত্তি ঘ্রিষে সুন্দর। কণ্ঠ গত বলে রত রাঘবে থেছেত। আনিবার ইছা কর মহাপুণ্য সেড়ু ! এই রূপ छह সনে কথা বির্ত্নানে। দিবাকর হতকর গত পর স্থানে। तकनी मजनी महत्र भीश मुधाकत। व्यक्तिम कहा य रेमच श्रह सहदत्त । শক্তম শ্রীমান সহ করিয়া শয়ন। অবশ হইলা পরে কেকয়ী নন্দন ! मिहे च्राम हिसामान मधा रघ्वर। নি**দ্রার কি সাধ্য স্পর্শ করে কলেবর** ॥ গ্রীরাম কিরপে দীনে হবেন প্রসন্ত। এই চিহু। বহুতর অন্তরে সম্পন্ন।

অন্তৰ্গাহ অভিযোৱ দহে কলেৰৱ 🕫 मावाधि मछन्न यथा कानाम कुछन । স্থন নিশ্বাস ভাগে অভগর প্রার। जनन मस्तत् यन्त्र महत् मस्काय ! হিমালয় শিখ্য সমান ধাত্ময়। ্নিৰ্গত শংীর হৈতে শোকানল চয়। ভাতে আক্রান্ত অতি কেকয়ী সন্তান। শিরোপরি রাম দৃঃখ পর্বত সমান। বনগত (ছে সু ভাতঃ পিতার মরণ। এই চিন্তা পর্বতের মল সংস্থাপন। বিস্তাহিত হয় তায় নিমাস প্রমাস। সেই পর্বাতীয় সামু কাষ্ট্র আবাস। পূর্ব্ব পাপ ছিল্ল শাপ রাজার উপরে। মনু)ভর সংস্থিকীদৃঃখ শৈলবরে 🛭 নিশ্বাস আয়াস ধম শোক জ্বল প্রায়। পর্বতের নির্মার নির্মত হয় কায় ॥ অষ্টের সন্থাপ শিখরোপরি অংশে। দৈ**শ্ব সম্বলিত ক**রে রঘ্বংশে : মোহ জন্ত সন্তাপ হইল মহাদুর্গ। কেক্ষীর বাকা রূপ দাবারি সংসর্গ। इंडेन ६०क मध् एक मगांगम। ভরত প্রতাপবস্ত রঘ বংশোদ্রম। किकामिन धर् चानि चर्छ निकारी। সুখে আছু শয়নে কহিল করপুটে। ৮9 मर्श्र

ত্রিপদী

बुगण नगरन नीत, कर्ट् अह यहांवीत, সুধীর স্বজ্ঞাতি গণাবৃত। বাক্যালাপ সুকুশল, যুড়িয়া কর যুগল, কহিছে বচনে যথাম্ত। केंचा कू वश्म (यमन, मन्म छव दहन, তুমি কুলোচিত পুণাবান। সভো গত বনধাম,তোমার অগ্রন্স রাম, व्यानिवादः नृषष्ट्र विश्वान ॥ ভোমাতে দৌহল আছে কত। **সভা বাতে** অনুগত, ধর্মজ্ঞ রাঘ্যে রত, রাজ্ঞা ভাল্কি হৈলে বনগত। ডোমার পিতার বাক্য, জননী সহিতে একা, অবণান্তে সভার্যা লক্ষ্মণ। ধর্ম কর্মে বর্তুমান, মহাশূর পূর্ব জ্ঞান, প্রবিষ্ট বিজ্ঞন ঘোর বন ॥ ष्ट्रीय जाँत कूना चाहे, अशत जूनना नाहे, অমুরপ সর্বে জ্ঞান গুণে। ভোমাতে অভেদ তুষ্ট শুম্মে। নিষাদের উদ্দেশে উত্তর। वरण (कांड्रे क्वंड्रे त्रवृदत् ।

কোশুদেশে কোশ্বনে, গিয়া সথা সুখা- া সৰে, সুখোচিত জানকী মিলনে। সুমিত্রা নন্দন সহ, কোথা গত শীঅ কহ, शकि दांग ख्वालुमीलात অথবা অতি অসুখে,ভাজ্জ সুখাদি বিমুখে, 🖟 রাম রক্ত রাজীব লোচন। ভাতৃষ্মেহে অমুগত, রাম পুরে সদা রত, কোথা ভাতা সুমিত্রা নক্ষন॥ কানন ব্যাপিত খ্যালে, বিপরতৈ নিশা-কালে,কোনু স্থলে নিদ্রিত এ,রাম। कतिया कि अवशय, भीषामह धर्माशय. · কি রূপে বা করেন বিরাম ৷ দুর্ল ভ এমন লোকে,কাতর বৈমাত্রশোকে, কিরপ বা বাবহার,করিলা রাজে তোমার, কি রূপে বা শয়ৰ ভোজন। পূর্বজ ধরণীধর, কোন্ স্থানে রঘুবর, করিলেন কি রূপ আসন॥ এ তাপদ তরুংরে, আশ্রম আশ্রম পরে, মীতা সহ এক রাত্র সূপ্র। শরীরে অভান্ত ব্যধা,বাধিত না ব'রে কুধা, कश्च. थ ८ शहरत छक्ष। (यज्ञाल कमल मल, अग्रम मही (बाहरान, কান্তি কান্ত হায়া ধনুষ্পানি। রাজীবলোচন রাম, অশেষ মঙ্গল ধাম, সেই নিশা ঘোটেত?!, ছাত্রত সঞ্জুদারা, সেই রূপ জাগাও হাহিনী ! এই রূপ গুহ উক্তি, অবণে কথনে মুক্তি, সেই বংশ দাশংলি,আপনি পূর্ব্ধ সাংক্রি, কহ পুর্ব্ব অপূর্ব্ব কথন। कर मम खाकृतस्ता, रह वास्तव श्रव निस्ता, यज्ञान किल्लांना कहि, यथा वावराहत रहि, কালগত করি গত বন।

শুনি গুহ করিল উত্তর। ক্রভাঞ্জলিপুট হয়ে,বিশেষ কিঞ্ছিৎরয়ে, বহে গুহু গহন গোচর। ৮৮ मर्ग्ड।

প্রার ৷

রাম লক্ষাণের যত ৰিশেষ বৃত্তান্ত। স্তাবাদি মহাআহে কহিল যাব্ত। ভরতের উদ্দেশে বনজ্ঞ গুহুরাজা: বিশেষ কানন বার্তা সম্ভাত সমাজা প্রহণ করিয়া শক্রধনুঃ সম ধনুঃ। জাগ্রত লক্ষ্য বীর সুধীর সুতরু 🛚 প্রকাশ করিলা খতি ভ্রাভূ বৎসলতা। কনেনে অভাপি আঠে সেই কীৰ্ত্তিলতা: জাগ্রত্দেখিয়া তাঁরে শরচাপ ধারী। কহিলাম নিকটে হুইয়া আজ্ঞাকারী 🛭 জীরাম রক্ষার্থে এই রহিলাম আমি। স্বভাতি বাহিনী সহ স্নেহ বদ্ধ স্থামি। এই তব সুখ শযা; স্বদর্থে কম্পিত। ইহাতে শয়ন কর হয়ে৷ সুখোষিত 🛭 क्रिम शाहराव याथ এहे मर्स स्वत। সর্বাদা সুখের পাত্র তৃমি তে লক্ষ্ণ॥ আমি জ গি দৃঃপভাগী তে মাদের তরে কি লাগি পাইবে কণ্ট কানন ভিতরে॥ রাম সম প্রিয়তম পৃথীতলে নাই। उँ६मूक रहेग्रा कहि मच ভाষা তाই।

কহ সর্বে সুবিত্তারে,সুল্লিঞ্জ কর আমারে, জীরামের প্রসাদে দাসাংশে এক দাস এই লোকে মহছাশঃ হইল প্রকাশ। ধর্ম প্রাপ্ত অপব্যাপ্ত অর্থ কাম লাভ। কাপটা সম্ভব নহে আগুরিক ভাব॥ সেই আমি প্রিয় স্বামী স্থার শয়ন। জানকী সহিতে ভয় রহিত লক্ষ্মণ। तकाव छ। इहेर इहेश धनुकत। আহুত রহিয়া সর্বে জ্ঞাতি ভ্তাচর॥়ু यम অবিদিত কিছু এই বনে নাই। महाहत गुरशाहत विश्व व्यामि याहे। সহায় সতত তাহে চতুরক দল। দৃই জনে এই রূপ বান কেশিল। किश्नाम अञ्चय दिनम् दिख्द । তথাত দশর ধনুধুরী রঘ্বর॥ ধর্মা ধ্যান করিয়া দেপিয়া পাত্র কণ। না হবে এমন ভাতা যেমন লক্ষ্যণ ৷ কি রূপ হিরূপ বিধি গুণ্নিধি রাম। কি রূপে মৈথিলী সহ কানন বিশ্রাম। मानद्धि महाद्वशी अत्नक माध्रत। বহু পরিশ্রমে লক্ষ নৃপতি নন্দ্রে॥ ভূপতি সদৃশ পুজ্র এক মাত্র রামে। পাঠাইয়া বনে সেই সর্ব্ব গুণ্ধামে॥ दङ् प्रिन दृष्क पृथ कीवन ना तरव। ক্ষিতিধর বিনা ক্ষিতি ধবহীনা হবে॥ মহাশকে শব হবে অতি পরিশ্রমে। নারীগণ নিম্বন হ্টবে নৃপা শ্রমে। নিঃশব্দ নিনাদ হত ভূপতি ভবন। ভয়কর হবে রাম প্রবেশিলে বন 🛚

ফোশলা রাদের মাতা সুমিত্রা अपनरी। পিতা মম দশর্থ নপ চড়াম্বি। সকলের দেহে প্রাণ হয়েছে ধারণ। এক্লপ সম্ভব নাহি হয় কদাচন। জীবিতা থাকেন যদি অভাগিনী মাতা। শক্রণ বদন দেখ্যে স্বপ্নজ্ঞে নিরতা॥ এত দৃংখে কি সুখে কৌশল্যা গুণবডী। ত্তিবেন প্রাণে নাহি লয় মম মতি॥ त्महे कुण तास्रधानी गर्क स्नावुछ।। অনুরক্ত ভক্ত জনে অতি সুপালিতা 🎚 मृश्य ভার না ধরে কখন বসুন্ধর। । এত দুঃশে আছে মিছা অনুমান করা। ক্রতকার্যা প্রাপ্ত রাজ্ঞ ভরত এখন। করিবেন পিড় প্রেডকার্য্য সমাপন। রমণীর চত্তর সংস্থান সমূলয় ! রাজ্ঞপথ বৃহ্ পথ হ্র্য স্বর্ণ ময় 🛚 প্রবল প্রাসাদ পূর্ণ শোভা অতিশয়। ন্তা গীত বাভা বছ মিষ্ট ইষ্ট চয়॥ মতের ভুরজ সভ সর্বেরছ শোভা। কুলল সম্পূর্ণা পুরী জন মনোলোভা। ছষ্ট পুষ্ট জনৈ তৃষ্ট আরাম উভান। ষে পুরে প্রছাহ হয় উৎসব বিধান। আমার পিতার সেই রম্য রাজধানী। সুখীগণ গভায়াতে আছে কি কল্যাণী 🎚 অপর প্রতিজ্ঞাধর রঘবর শনে। কলাাণে থাকিয়া এই নিবিড় কাননে ॥ স্মাপ্ত হইলে তার প্রতিজ্ঞা সময়। প্রবেশ করিব পুনঃ অংযাধ্যা নিলয় ॥

এই রূপ বছ রূপ বিলাপ করিতে।
মহান্ধা রাজার পুক্ত আমার সহিতে।
হইল শর্করীমান সমাধান পরে।
প্রভাতে উদিত স্থর্যা ব্যাপিত স্বকরে।
জটাভার দুজনার ব্যবহার মতে।
শিরে করে শোভমান কিছুকাল গতে।
এই ভাগীরথী তীর সুনীর সুন্দর।
আমা হেতু উত্তীর্ণ রুগল রঘুবর।
দিব্য জটাধর কুশান্থর পরিধান।
কুপ্পর যথের পতি তুলা বলবান।
ধন্থান্য ধর অনিকর সীতাসহ।
নিরীক্ষণে বনগত বিগত বিরহ্।
ইত্যার্থে অযোধ্যাকান্তে গুহুক বচন।
একোন নবতি সুর্গ প্রার রচন।

४३ मर्शः।

ত্রিপদী।

শুনিয়া রা
 বচন, ভরত সন্তপ্ত মনঃ,
মোহ প্রাপ্ত মহেজ্র তনয়।
বিহ্বপিত সর্ব্ব অঙ্গ, কলেবরে বল ভঙ্গ,
কমলাক্ষে করে অক্ষ চয়॥
ভূমিশায়ী হঠাৎকার, কুলভ্রপ্ত বৃক্ষাকার,
স্কুমার কৈক্ষী কুমার।
সিংহ স্বন্ধ মহাবাহ, মহাসন্ধ মুহুমুহঃ,
পুগুরীক দল সমাকার॥

कुक्त नवन खाल, उपिनी खन उथाल, শোকাকুল मुखिय पर्मन। ভৱতে দেখি মোহিত, গুহু অতি শোকা-শ্বিত, অতি লান বিষয় বদন # অভান্ত ব্যথিত কায়,যেন ভূমিকম্পঞ্জায়, সকলোর ভূমি ঞাণ, দৃষ্টি করি ধরি ঞাণ, মহাক্রম পড়ে মহীতলে। ধরিয়া গুলের করে, শক্রম অতি কাতরে, মহারাজ দশরথ, প্রাপ্ত মর্গ মনোরথ, नष्टे हिन्द मिथि अकिमाला। বাহুষয় প্রসারিয়া,ভরতেরে,ডিভোলিয়া, এযোধ্যাবাদী অনাণ,তুমি সূর্য্য কুলনাণ, আলিঙ্গন রোদন অভান্ত : সংহ্নন সংজ্ঞাহীন,শোকারুষ্ট মহাদীন, কোন অপ্রিয় বচন, কহিয়াছে কি লক্ষাণ, मश्रयत या देवरक इस कार ! পরে কৌশল্যা প্রভৃতি,নৃপতিকুল প্রকৃতি, কৃছিল কে রুঢ় বাণী,কিবা অমঙ্গল জানি, चर्त्वरभारक उपदास्य कीना। মহাদুঃথে আকর্ষিতা,সকলে অশুও ভীতা, ক্রেখা কহিয়া রাণী, সম্রল বসন গানি, পতিত ভৱত পুষ্টে দীনা 🛚 ভূমিতলে প্রিয়সূত, সম্ভ্রান্ত ক্ষম পূত্র, কৌশল্যা অভ্যন্ত দীনা, ভরত দেখিয়া ক্ষীণা, द्रोप्तन कर्त्राय मर्त्तक्रन। নেত্র জ্বল নিবারণ, নাহি হয় কদাচন, অতি ষত্রে করিয়া নার্জন ! कोणना, निकरि धरमा, भाकमिक्स मरधा- कोभनात शृक्षा कति, महायभा करत दि, ভেসো, স্পর্শ করি সুপ্রিয় কুমার। কহিয়া মধুর ভাষ, করিয়া বহু আখাস, कद्रम्भारमं इत्यंत अभातः। অভ্যন্ত পুত্ৰ বংসলা,কোশল নুগতিবালা. कारण कति लहेश कुमारत। ক্রিয়া বহু রোদন, কহিলৈন সুবচন, কেন পুত্ৰ বন্ধ শোক ভাৱে ৷

नाहि एएटर वाधिवाधि, हिसाहीन वर्षाः-বধি, এই রাজকুল যত জন। সকলে তব অধীন, নহ পুত্র উদাসীন, তব অমুগত এ জীবন ৷ বনে গেলে জীৱাম লক্ষ্যণ। ভোমাকে না করি নিরীক্ষণ। क्षरेश्या क्ट्रेटल कि कार्त्र । কিন্তা পুজু রাম নিযোজন 🛭 রোদনে অক্তান অভিভূত। মাজন করিলা মুখ ক্ষত। শিষ্ট পুত্র সুপুত্র সমান। मुद्धक ममग्र भरत, निष्ठाम क्लिभेशेखरत, রোদন করিয়া জ্ঞানবান। গুহ প্রতি কহিলা বচন। জিজাসা করি তোমারে,হে গুহ কহ আ-মারে, কি করিলা রাজীব লোচন ॥ कानकी मह ताघर, तघताक कुरनाखर, করিখেন কিবা উপযুক্ত। ্কুললক্ষী বিৰৰ্দ্ধন, তেজমী প্ৰিয় লক্ষ্ণ, ছে । কার্য্যে কিরপ নিযুক্তা

বিনা অভুক্তায় রামে রত। তাক পিতৃ মাতৃ আশে, ভ্রাতাসহ বনবাসে, জল দারা উপবাস,পরে জল হৈলে ভ্রাস, রকার্থে নিযুক্ত দৃঢ় ব্রতঃ छहतां कर्रह (भव, छत्रां करता छेत्मभ. ছিজাসিত নিষাদাধিপতি। রাজপুত্র শুন বাণী,শুনিলে রাম কাহিনী, শরীরে হইবে বাষ্পগতি 🛚 था यस जना जकारजारक, कम्म (श्र (गर्क, রামের সাহায্য করিবারে। করিয়া বছ উদ্যোগ, আনিলাম উপ্ৰভাগ, অতি স্বাদু যুক্ত ব্যবহারে। প্রবন্ধ কারণ আমি, প্রীরাম নিকটগামী প্রীতি হেতু করি সম্প্রদান। কিছু গ্রাছ্ না করিয়া, ক্ষত্রিয়ধর্ম স্বরিয়া, কহিলেন রাম গুণবান ! আমারে লজ্জিত দেখি, হইয়া তাহে অসুখী, অধোমুখ দেখিয়া আমার। क्रेयक्रामा मुवहरत, शरत मृष् व्यागिक्ररत, কহিলেন বাক্য বেদ সার ॥ नाकत नाकत (ताब, श्रह मम क्रम (नाब, প্রণয় নিমিত্ত কহি गিত্র। ্জানিয়াছি তব সুল, সুখদত কল মূল, श्वनित्म ना जावित्व विविद्ध । क्रजिएमत धर्मा छर, नरह অन्छ প্রতিগ্রহ, धर्म এই দেয় बख्न मान। করে ধরো শরাসন, অৰম্ভ যুদ্ধ করণ, ক্ষা ব্ৰত এই সুবিধান !

अत्राग वांम निश्रुत, त्कवन आंश्रन छत्। नृष्यन खानीछ वाति, त्महे छन वात्काती সহনারী করিলা গ্রহণ। উপবাদী হইয়া লক্ষণ। পরে সন্ধ্যা উপস্থিতা,উপাসনা বিবি যথা, कतिराजन द्वाम धर्मा धरा। হুইয়া সুসমাহিত, একা রূপে বাক। যত, পশ্চাতে লক্ষণ ধনুধর ॥ পরে আনি কুশচয়, নবীন পল্লব ময়, শুভ শ্যা সাজাইয়া তার। (मरे मुत्रमा वांखरत, उंशविष्टे खरें। धरत, রহিলেন সুখে সদীতায় ! অনন্তর রখ্বর, লক্ষণ সুধতুর্বর, পদ্ধয় করিয়া কালন। রামের নিকটবন্ত্রী, রাজসুত চক্রবন্ত্রী, রকা হেতু রাত্রি জাগরণা म এই इंभनी मल, उन शक्य अरूक्ट, সীভাসহ ইহাতে শরন। পুটের ধরি ধলুগুণি, লক্ষণ শর নিপুণ, मश् इस् करता मश्याखन॥ ধরিয়া কামু ক ছিলা, জাগ্রত ভাবে রহিলা, রকা করি পতিত পাবন। আমি পরে ধনুর্ধরে, লক্ষ্মণের সহকারে, রহিলাম সহজ্ঞাতিগ্ৰা ao मर्गः।

श्याह :

গুহ বাক্য অবগত কেক্য়ী নন্দন : ইকুদী পাদপ মূলে সহ মাজ্রগণ ॥ রামের শয়ন হেতু শয়া পরিকার। मुनव ज़्न शहार्द ज्याम विसाद (দেখিয়া পরম দৃঃখী চক্ষে বহে বারি। অন্নীরে জানাইলা সমস্ত বিশুংরি । শর্বারী সকল গত থাকি ভূমিতলে : এই সব রাম কথা কথন কৌশলে ! মহা ভাগ্যধর রাম কুলীনাগ্রগণা दारका यह क्षीयह यह धरा भना । मणत्भ नशिखिट क्हेश नम्नः কি রূপে এ ভূমিতলে করিলা শয়ন : হা বিধি উভ্য শ্যা, নাহি যার পর। বহুমূলা বন্ত্র চর্কে আবৃত সুন্দর 🖟 मियाय भवन यांश्वत मर्सकाल ! হইলেন ভূমিশায়ী কি দৃঃথ বিশাল 🛚 পুষ্পাচয়ে চিত্রিত চন্দনান্ধিত অতি : দৌরভিত অন্তর্ক দৌরভে চক্রাকুডি : প্রকাশিত পরম পাত্তর পূর্ণ শশী: क्रात काकिन कून मूमधूत जाबी এই রূপ অট্টালিকা উপরি বিমানে : হেম হার রক্ত রচিত রমাস্থানে ॥ भग्नन कतिया नर्स्त मृत्थ ताति यातः। কি রূপে ধরণী শ্বা সে রামের হায় 🛭 সঙ্গীত বাদিত্র রব বর আভরণ। নিতান্ত নিনাদ বীণা বেণ বিনিম্বন 🛭

মূদক সুশাধা শব্দ তাহে বারস্বার। বহু দুরে নিজা ভঙ্গ রঙ্গভূমে যার। বন্দিচয়ে বন্দিত মাগধ স্থতগণে। ন্তুতি করে নিয়ন্তর **স্বরূপ ব**র্ণনে । भर्क (आहे कुल एक है मर्क मुथ हान। সর্ব্ধ লোক প্রিয় রাম সদ্গুণ নিধান। এ दें उभा हो खन की मर्का लाक लिया। ইন্দীবর ভাম রাম পরিতাগ ক্রিয়া॥ আরজ রাজীব নেক্র বৃচ্চতর বক্ষঃ। আহ্বাসু লখিত ভূষ সজ্জন সপক্ এরপ স্বরূপ রামে ধর্ণী শয়ন। पुरम अञ्चल। इस हेहात कथन । এ লোক ত্রিলোক মিধ্যা হতেছে প্রকংশ यक्ष मम चित्रज्य ना रूप विचाम ॥ कारण जारम कार्ल मार्म कारण इम्र चित কালাপেকা বলবান নাহি কোন বীরঃ ्य कारणत कहांग करांग कांग कांग मांभद्रिय महाद्वशी धदां छन नाशी। এই শ্যা আমার তেত্তের নিরূপিত। গাত্রলয় তৃণকুলে করিছে বিদিত ॥ বিদেহ নৃপতি সূতা দীতা গুণবতী। সুপ্রিয় দর্শনা রামভক্র বাঁর পতি॥ দশরধ ভূপতির ভেঠ প্রত্তবধূ। वक्र कृषा छत्र । कर्णान भून विध् ॥ अहे इति हर्ष यति कतिल। भग्नन। সভবনে ষেমন তেমনি বিলক্ষণ ॥ পরিচয় কয় এই কনকের কণা। একাকিনী ভর্তৃস্থ ইচ্ছায় সজ্জনাঃ

তপ্ৰিমী ভক্ৰী ভক্ৰ সৰ্ব্ব কায়। নির্বিয়া স্থপতি নিপাত দৃঃখ তায়। উख्योग रमन आमान উপराम। খণ্ড পট্টসূত্র পাতে বাজ করে বেসা পতি সঙ্গে অমুগতা রাজসূতা বনে। ধর্মির ধর্ণী ধ্যা স্বকার্য্য সাধনে 🏾 অর্থ সিদ্ধি আপনার করিলা জানকী मः भग्न मर्खम। इम्र अश्रत नातकी। সেই রাম রহিত সহিত বস্তুত্সন। আমালের শুক্তময় হুইল ভবন ॥ ধর। ভুষ্প ধরাধর নাহি ধরে ভার। তটিনীর মধ্যে তরী হত কর্ণধার ॥ #শর্থ স্বর্গ গ্রু রাম রুত বনে : এ রাছে হইতে রাজা নাহি ধরে মনে। वनवामी देहरण ताम खनताणि वतः। বহু বীৰ্যাবান এই বসুষ্করাধর। मृष्ण नर्स सान वशा शक पृथ शीन। পুর্বার রাজধানী রক্ষক বিহীন। নামান্ত পুরের প্রায় পীড়িত বিস্তর ॥ দুরবস্থা অবস্থিত অনাবৃত পর। শক্তগণ সে ভবন কডু না রক্ষিবে। জানিয়া বিষের লাড়ুকে আর ভক্ষিবে অভাবেরি ভূমি তলে তুর্নময়াসনে। শয়ন করিব নিভা ফল মলাশনে 🎚 শিরে জটাভার অঙ্গে মৃগ চর্দ্দান্তর। নিয়মিত রামের নিমিত্ত কালামের। কাননে করিব বাস শ্রীরাম নিমিক। প্রতিক্রত অস্থীকার সদা ধৈর্যাচিত্ত।

मिशा ना इहेर्द मछ (म मख शामन। **जर्**ता रहित जामि भक्त पुरसन ॥ লক্ষণ সহিতে রাম গিয়া অযোধাায়। পালিবেন পিতৃ রাজ্ঞ রাঘব ব্রায়॥ আমি সুখ ভুঞ্জিব লইয়া পত্ত ছায়া। রাজ্ঞ ছায়া সেবি রাম হবেন সভায়া # যশসী কাকুৎস্থ হামে অভিষিক্ত করি। এরপ বাসনা মম পুরাবেন হরি। সতা স্থিরে পরিপূর্ণ হবে মনোরথ। পালিবেন রাজ্ঞ রাম মধা দশরপ্য এই রূপ বুঝাইব প্রসন্ধ কারণ। মক্তকে করিয়া তাঁর চরণ ধারণ ॥ । বিবিধ চেষ্টায় যদি এসেয় ন। হন অনুচর বনচর হইব তখন 🏾 উপেক্ষা করিতে যোগ্য নহিবেন রাম: **मत्रशाग्य शांगक मर्स्त श**्राधान ! **এই রূপ কথনে হইল দিন ऋ**ग्न। পক্ষিণা বুক্ষেং করিল আগ্রয় 🛭 ভরতের সন্ধিকটে লইয়া বিদায়। জ্ঞাতিবস্থু সহ গুহ নিজস্থানে যায়। অনুগামি গণ সঙ্গে দুঃখ পরিশেষ। অসুখে রজনী মুখে স্বগৃহে প্রবেশ ॥ · অयোधाय **हेक्**षि विदेशि मृत्य वाजः। একাধি নবতি সর্গ বৃত্তান্ত প্রকাশ। **৯১ मर्ग**ह ।

প্রার |

গ্ৰন্থানে কৰিয়া সে বন্ধনী প্ৰভাত। উষাকালে উথিত কেকয়ী কুলনাপ ! শক্তম উদ্দেশে বাক্য কহিলা ভরত ৷ দৈ টেম খক্তম বন্ধনী কাল গত। কত নিজা যাও দেখ ঐ ত্যোহারী। উদিত মুদিত পথ প্রবোধন কারী। শীত্রগতি জন বারা আনাও এখনি। শৃঙ্গবের পুরেশ্বর গুহু কুলমণি 🛭 मिहे अहे जातीतथी जिल्ल गामिनी। স্বরায় তরাবে মম অসংখ্য বাহিনী 🖟 শক্রন্থ সন্থরে হন সতর্ক নিতান্ত। সর্বাহ্ণ জ্ঞাতা ভ্রাতৃ বচন বৃভান্ত। ন্তন প্রভু সাময়িক মম বার্ডা সার। শোক খুন্ত নহি নিদ্রা কি আছে আমার: শয়ন করিলে ভূমি সদা আমি জাগি। নিজা নাহি নাপের চিন্তায় দৃঃধ ভাগী। তথাচ কি প্রসন্ধ না হইবেন রাম। পুরুষ প্রধান অতি স্নেহ গুণধাম ! তুমি আমি অপর সচিব গণ সহ। সাধিব তবু কি তাঁর না হইবে স্লেহ। এই কপা ভরতে কহিয়া রখুবর। আজ্ঞামাত্রে যান গুহে আনিতে সত্তর। শক্রবের আদেশে আসিয়া গুই পর। माँ ज़िहेन कुडाञ्चनि हहेश मदत ॥ किकांत्रिय नमीजीरत मृत्य ताति हिर्ल রোগী বা অসুখী কেহ নহে সৈন্তদলে।

আমার অন্তরে এত হইতেছে দৃঃখা क्रिया रहेरव एरव मुच भगा मूच ভ্ৰাত ষ্ণেহে উত্তপ্ত চিন্তিত অভিশয়। জগতী পতির বুক্ত শরীরে কি সয়। শরীরে মানসে দৃঃখ নহে নিবারণ। সেহের খণ্ডন তাব হবে কি কারণ॥ धर উक्ति धनित्मन छहल সুদীন। श्रम्दा रूकेन पृथ्य कल्वत की ।। ভোমার পৃঞ্জিত ভাবে সমন্ত রজনী। সুখে গতা শুন কহি গুহু নূপম্বি 🖟 সম্চর গণ বড অনুগ আমার। कोगाम कूमाम कह मृहधुमी शांत ॥ আজ্ঞাগ্রহ করিয়া সম্বরে গুহু ধায়। স্বপুরে প্রবেশ করে বেগবন্ত কায়। জ্ঞাতিগণে এই ধাকা কলিল ছারত। প্রভাতা রক্ষ্ণী নিদ্রা একি বিপরীত 🛭 উত্তিষ্ঠ উত্তিষ্ঠ কর সৎকর্ম সাধন। म्मननी रहेशा ममन ज्वाजिशन॥ বরিতে দকল তরী করিয়া দাজন। গঙ্গা পার কর শীত্র বন্ধু দৈন্তগণ। নৃপতি শাসনে করে সবে গাজোখান। हरत छाहे विलग्ना निकरि दर्खमान ॥ উপস্থিত করে পঞ্চ শতেক ভরণী। मकरण मगर्थ शास्त्र मध्यत्र ज्हानी। মঙ্গল চিহ্নিতা নৌকা মহাদণ্ড ধরা। পতাকাদি সংযুক্তা জাত্নুবী পারে পরা म्मक्रम मर्स उती कति बाक्षामन। व्यश्रंत कथन (यङ भौडानि मिनन।

भागक भाष्य भक्ति उत्ती कनाती। শীজ্রগতি গুহু তথা যোগাইল আনি। দেই তরী উপরে করিয়া আরোহণ। মহাবল ভরত শত্রুত্ব দুই জন। কৌশল্যা সুমিত্রা আর অন্থ রাজরাণী। প্রত্যেকে সঙ্গত মতে উপান কারিণী 🛭 প্রতিষ্ঠিত পুরোহিত সমস্ত ব্রাহ্মণ। তিয়মিত নৌকায় করয়ে আরোহণ ! যতেক সেবক বর্গ অন্তঃপুর চর। সশকটে স্থানে উত্তরে গুল্বর ॥ উঠাইল আবাস প্রয়ন্ত তরী মামে। উवारन मगन जीर्थ मृत्रपृगी मारस। আতৃণ আভীর পত্নী সমস্ত উত্থান : শীঅগতি দাসগণে করায় প্রস্থান। সর্বে জন উন্ভীৰ্ণ হইয়া উচ্চে ভীরে। কেহ কেহ পার করে প্রকাপ্ত বাজিরে क्टि वा वहिष्ड यान क्टूमश्रम । গ্রসার গভীর নীর করিছে তারণ 🏾 বিখ্যাত কাণ্ডারি কর্মে যত বন্ধু, দাস। ত্বরিতে তারণ করে গঙ্গার আবাস। বৈজ্ঞান্ত গজ সহ গজ গজারোহ। পার করে অনায়াদে জাহুথী প্রবাহ। পরে গঙ্গা পরপারে মহা শোভা হয়। ধল সহ পর্বত যেমন সমুদ্য। क्रिक् क्रिकां क्रिल क्री क्रिक्त অনেকে ভেলায় ভাসে বলবস্তগ্ৰ ধকহ কেহ কুস্তাবলম্বনে পারে চলো। কেহ বা তরিছে গলা নিজ বাহুবপে॥

मर्ख्याতा उकां ध धक्रिमी मृतस्मी। দাস ছারা পার করে গুহ গুণমণি॥ সপ্তদশ মুহুর্ত্তে প্রবর্ত্ত সৈম্পর্যণ। পাত্রামান্ড সহ চলে প্রয়াগ কানন 🎚 ममक्ति मरेमरक्थ मुद्रथकी इरहा शांत। পুরোহিত অনুমতে কহিলা কুমার॥ रहेनाम भात এই छीर्थ छातीतथी। কৃত্ গুড় তুমি বন্ধু অরণ্য সার্থি 🛭 কত দূর আছে আর গন্তব্য দেশ। বে স্থানে কাননে রাম লক্ষ্যণ প্রবেশ॥ কহ পথ পথজ্ঞ এ কানন গোচর। পরে গুহ ভরতে করিল প্রভাতর। एक प्राप्त माभविष करत्न वम्नि । সে দেশ জানিত মম শুন নরপতি ৷ অত্রস্থল অবধি কাকুৎস্থ রাম বনে I নানা পক্ষিগণাচ্ছর উত্তম কাননে। क्यामग्र (माञ) इत्र क्यम উज्ज्ञ्य । সৃতীর্থ অপ্স কর্দ্দেন সুখাগম স্থল ॥ পক্ষি পদ ক্ষুত্র ক্ষিতি পত্রে আছাদিত। নীল সুকোমল তাহে অতি সুশোভিতঃ এক ক্রোশ প্রয়াগের প্রান্তরে দে বন। मिहे (मन উদ্দেশ करिया प्रशस्त्र ॥ ভরম্বাজ আশ্রমে বিশ্রাম কর তথা। মুনিবতর কর গিয়া প্রণতি সর্বাধা। শুন কহি সুকুমার মুনি ধর্মজ্ঞানী। তপস্যায় সুসিদ্ধ ত্রিলোক মধ্যে মানী 🛊 অতএব লও তুমি মুনি আশীর্কাদ। वाका बाता भशास्त्रम ममल वियाम ।

क्हेल क्षत्रक्रम क्षांका व्यत्नाह्त। कष्टे इत्या मृष्ठि कतिन। त्रयुवतः ॥ শুহ বলে পাক হেখা আগত। যামিনী। इ**हेर**व शृक्षिত वह विভবে मणांगी। দর্শনে অভিবন্দনে থাকিবে **সমা**নে। এক নিশা অবশেষ কর মুনি স্থানে ! তথান্ত বলিয়া গুহ প্রতি নূপ সূত। অঙ্গীকার করিলেন ইহা মনঃপুত। চল চল স্থল স্বল গণ সহ। শোভন ভোমার বাক্য সার্থক করহ। -শ্রবণ সুখদা অতি তোমার ভারতী। তব গণে ভৃপ্তমনা প্রীতিমান অতি। আমার ভাতার তুমি প্রকীয় সবা। রামের আরামারাম ভাগ্রগে দেখা। অহুরার সোহাগাসি ভক্তি সুস্বছতা। कर्मात्म स्वर्ग हिट्ड पृश्यंत भगता। ভরতের অনুজ্ঞার গৃহ জ্ঞাতি সহ ৷ ন্পপুজে পৃক্ষিয়া পাইয়া অনুগ্রহ। সোপাধ্যায় পুরোহিতে পৃ**জি**য়া বিস্তর। मन त्या मत त्या हत्या शह न्योवत ॥ ভরত গমনে রত **সহ সৈন্ত**গণ। মক্তিসহ প্রবেশিয়া প্রয়াগের কন॥ মন্ত্রণার সুমন্ত্র সুমন্ত্রী সুনিপুর। রাঘবের প্রিয়পাত্র বিজ্ঞ বহুগুণ॥ মন্ত্ৰ কৰ্মে প্ৰাক্ত দেশ কাল্ড বিধান্। সমাবে**শে প্রবেশে** বিশেষে মতিমান। यण कुरम मरमाञ्ज महीस्र श्रेग। সুজাৰ আজাৰে হয় অপূৰ্বী দৰ্শন 🛚

সুন্দর পড়ত্তি সর প্রাব্য মনোচ্র ! ভাবণে ভাবণ সুধা কুধার আকর॥ রামগুণ কথনে লক্ষ্মণ গ্ণগানে। মৈথিলীর মাহাক্ষ্যাদি সুতত্ত্ব বিধানে। আপনার মাতার অপার অপগৃণ। विठातिया क्षमस्य स्म विधित विश्व । দুই ক্রোল পথ গিয়া করিলা দর্শন। প্রয়াগা নামেতে এক রমা মহাবন ॥ চিত্ররথ গন্ধর্কের অরণ্য আকর। কামাফল দাতা ক্রম বিজ্ঞান বিভার 🖟 প্রবেশিয়া এই মহাবনে সর্বন। বছ পুষ্পা পক্ষজাদি কাননে শোভন। ·দেব স্থান সৃতীর্থ প্রয়াগ মনোহর। গমন করিয়া নূপ ভ্রপ্ত কলেবর 🖁 প্রদক্ষিণ প্রণাম করিলা বারস্বার। মাতৃ বন্ধু সহগণ কেকয়ী কুমার ॥ প্রয়ত প্রণত বীর ঈশ্বাকু প্রবীণ। করি**লেন অন্দর্গতি দেব প্রদক্ষিণ**।। করিয়া অভিবাদন গমন পশ্চাত্। বনান্তরে আশ্রম না করিলা বিখ্যাতঃ ক্রোশ মাত্রে দেখিলা পিণ্ডিত তরুবর। ভরম্বাজ মুনিবর বাস মনোহর 🛭 অপুর্বে আশ্রম দেখ্যে অপূর্বে আনন্দ । আমাসিয়া সেনাগণে লাজায়েয় সক্স রথরথী সমত্ত রথের উপযোগ। কাননের সমীপে করিয়া হথাবোগ। ভরৰাজ ঋষিবরে দেখিবার জন্তা। গৰুমতি অতিশন্ন ভরত সুধন্ত ॥

আবোধ্যার ভরতের প্রেরাগ প্রবেশ। विनविक मर्भ कथा यथा ध्वरान्य ।

कर मर्शः।

ত্রিপদী।

দুরে হৈতে নৃপযুত, করিছেন দৃষ্টিপুত, ভর্মাক্স তপস্থি আশ্রম। यक्षित्र गहकारत, छेशबुक्त वावहारत, সর্ব্য বন করে। পরিক্রম। शमा उटक गठ थीत, धर्मा उड़ानी तथ्यीत, অস্ত্র শস্ত্র সহ পরিছে।। পট বস্ত্র পরিধান, সর্ব্বাহ্যে বশিষ্ঠ যান, পরিহরি রাগ দেব মদ ॥ কাননের উপধার, সহিত সুন্দরাকার, मूर्णाञ्चिष कम्मी कानरन। মুগগৰ আবৃত শোভনে। मिंड विनी मधन, वर्गधांत नमुष्यन, অতি শোভাকর দীরিমান। ় কিঞ্চিৎ নিকটে ভার,গিয়া দৃষ্টি পুনর্বার, মুনিবরাশ্রম কান্তিমান। প্রবেশ করিয়া তথা,সাধ্ সন্দর্শনে যথা, তথা রীতে প্ররোহিতে সয়ে। मिथिएन विकारत, उमात ठतिछ शहत, ব্ৰুতেজে দীপ্তিমান হয়ে৷

পরে সন্দর্শন আশে, গত ভরহাল বাদে, মঙ্গিলে বাখিয়া অস্তরে। সঙ্গে খীয় পুরোহিত,হয়্যে অতি সাবহিত, নতশিরা পরে মুনিবরে। ভत्रकाख श्रुमिवदत, मन्मर्गाम विभिद्येहत, উঠিলেন ত্রস্ত মুনিবর। কহিলেন শিৰাবৰ্গ,শীক্তগতি আন অৰ্থ, भागतास अधि श्वाकत। বশিষ্ঠের সমাগম, দক্ষে তাতে নরেভেম, ভরতের বন্দন বিজ্ঞাত। कानि लन महा (उका, व्याप) । तमहाताका, 'দশরথ সূত যুগ খ্যাত॥ मिया পाछ अर्घमान, कन सन मृतिधान, करमर मर्ख मिन्नशत। কুশল সংবাদ পরে, জিজ্ঞাসেন রঘ্বরে, রাজ্যে ধনাগারে সৈক্তজনে। নগর সংবাদ কথা, জিজ্ঞাসা করিয়া তথা, দশরথ বুক্তান্ত বিজ্ঞাত। मर्जहीन मर्ज्ञान, गास्त व्यक्ति व्यक्तिन, बहेरहरू न् श्वरत, खिळामा न। करता श्रत, মহাযোগী মহিমা বিখ্যাত ॥ मूनीक कूमन कथा, विशेष्ठ करहन उथा, জিজাদেন ভরত সহিত। শরীর সম্পন্ন অভি,অগ্নিহোত্রে মহামতি, শিষ্যপক ম্গাদি বিহিত। मकरण আছে कूमनी, मझरण एव मझनी, পরে মুনি ভরতে সম্ভাষে। तांच रवत मुक्नान, मर्वना गरन विधान, কি জানি কি সংশয় আভা**ষে**!

বনেতে কেন গমন, পরিহরি নৃপাসন, কহ কহ করিয়া বিস্তার। मा खनिए उर मूर्य, ठिख ना हिट्ट मूर्य, यि कथा किंदन मांडा, रम नरह नामत कथा, অতান্ত উদিশ্ব বারস্বার। কৌশল্যাপ্রসবেমায়,মিত্রভাহ নাহিতায়, শক্তহারী আনন্দ বর্দ্ধন। পরিয়া চীর বসন, সীতাসত গত বন, পিতৃসতা করিতে পালন। मछा धर्मा शहायन, मणत्य महास्वन, श्रीमु एक इ रहेग्रा नियुक्त। कहिरलन नश्दत, मण ताच दरभावत, शक् दान शूल डेशयुक ॥ मश्या हर्डालम वर्ष, रेकक्यी छमग्र हर्ष, জনক জনক বাক্য শুনে ! ব্ৰবাসী হন লাম, ক্ষমাবস্ত গুণ্ধাম, धार्मिक मरेथरी निष्क छट ।। ত্মি হয়ে রাজ্ঞভোগী, লোভে ভাতৃক্ষেঃ ভাগী, করিতে অকার্যা ইহাগত এই কথা মুনিমুখে, শ্রবণে অভান্ত দৃঃখে, विवर्भ वनम विवामिछ। করিছেন প্রকৃত্তর, যুড়িয়া যুগল কর, যদি ভূমি ভাব এই রূপ। इहेगांग उत्व इठ. अकर्मा कि मुमग्राड, তুমি মহামূনি সিদ্ধরপ 🏽 আমাতে যে শঙ্কা কর,সে কর্ম মুনীক্রবর করিতে উৎসুক আমি নহি। (य कतिन सम माठा, भी भव विद्धांडा ধাতা,তার জন্যে যত দৃঃপ সহি ৷

त्म न ए आयात है है, जीताय आयात ছেই, কি কব এ পাপিই অন্তরে। **ভবিলাম অফলঃ সাগরে।** আমার মন্তকে দোব দিয়া রাজতে আ-ক্রোশ, আমি তাহা নাহি ভাবি মনে। আমার বিদিত নহে,যে বাকা জননী কংল, प्रिथि नाई कथन अल्पान । यां व करता ताका लांच, अधारेन मत কোভ, অযুগঃ পতন মন শিরে। त्म (मार वामि ना कानि, कानित्व शहम छानि, व्यविषिठ वाक श्रव हित्र ॥ ভূপাৰগণের অংশে,বিদিষ্ঠ মুখ্যাত বংশে, সুধাকর সুমান উচ্ছলে। महे कुरण अन्यधाती, (कार्षत व्यविष्टेकाही, খৃণাহীন কে হেন ভূতলে ৷ রাজ্যে মম নাহি কার্য্য, সুখে তথা স্নি-र्द्वार्या, व्याचारा,कि व्याह्न अत्याखन। कि है जांठा दाम वित्न, अस्कात तिन দিনে, প্রসন্ন করিতে ঘাই বন 1 व्यासाम महेवात, भगमा महकात. এই রূপ জানিয়া আমারে। धामस कतिया मनश्रमाथ मम आयाधन, প্রসন্নতা পতিত উদ্ধারে। গ্রুমহীপতি মম জ্ঞেষ্ট, রাম সর্বরন্তন শ্রেষ্ট্র, কহ রাম কোথায় সংপ্রতি। ভরতের এই বাণী, শুনিয়া পরমজ্ঞানী, মহাত্মা জানিলা মহামতি:

द्राप्य (मर्थ) अंकि स्वर, खिम मूर्नित त्यार, ठाक वर्र एक्टर्थ खल्धात । मक्रम नग्रन द्वित, त्रचतरम महावीत, **(मर्ट्स् नाहि शारशंत मधात** । ভद्रशांख मुनिवत, कहिरणन श्रीकत, ভোমার বচনে সব জ্ঞাত। भहीरत ना स्मार्स माब, उव श्रवि नाहि রোয, ভূমি রঘ্বশে অতি খাত ॥ মুনির ইঙ্গিডাকারে,পরিতৃষ্ট জেন্সে ভাঁরে, ভরত করিলা নিবেদন। বভাপি বিশাস হয়, মম প্রতি মহাশয়, ভোমাতে আমার থাকে মনঃ ! কহ মুনি শীঅতর,কোধা রঘ্বংশ বর, সলক্ষণ করেন নিবাস। শুনিয়া ভরত ভাষ,ঋিমিল তাহে বিশ্বাস, মনোবোগ করিতে প্রকাশ ঃ করিয়া স্থায়্য পূজন ভরম্বাজ তপোধন, হাস্য করি কহিলা ভরতে। ষে কথা কহিলে তুমি,কহিবার যোগ্য ভূমি, রঘ্বংশজ্ঞা গণ্য সতে। যেহেতুক রামধনে, আনিবারে গিয়া বনে, इंद्रा कत अहे वह मानी। ্ওর প্রগামী তুমি, দম শম গুণ ভূমি, मानूरकान क्रमावस खानी এই मत खबे शन, जत स्मार्ट मुख्यन, তোমার সমগ্র গুণ জ্ঞাত। ভরতে কহেন মুনি,পুর্বেত বাক্য শুনি, **এই ইम्हा क**ंनिए वावजुन

বলোছি অপ্রিয় ভাষ, সংপ্রতি লে রসা ভাস, পরিছম ভোমার হৃদয়। ভিন্ন নহে বাঞ্চান্তর, শারদীয় সুধাকর, मुनी उल थक् मगुम्य। ব কথা জিজাসি আমি,ভানিবে কোণজ-স্বামী, তব কীর্ত্তি করিতে বর্দ্ধন। তুমি ধর্ম তত্ত্ব বিজ্ঞা,গুরু ভক্ত মহাপ্রাক্ত, বিভারিত করহ আবন। ষণা রাজীব লোচন, বন্ধু তব রামধন, চিত্রকৃট নিকট কাননে। সন্থার্য ভ্রাতার সহ,ক্রীড়াবান অতি রহঃ, 'আশ্রম রচনা রম্য স্থানে ! করিবে কলা দর্শন, সামাতা আত্মীয় জন, वण देव्हा जामात वक्त ति। করিবে কামনা সিদ্ধা, আমি পালা অতি বৃদ্ধ, যথাসাধ্যরপে আয়োজনে। অনন্তর মুনিবর, বাক্যে রঘুবংশ ধর, সুন্দর প্রতীত চিন্ত হয়ে। মুনির আশ্রমে বাস,করিবারে অভিলাব, विकास अकारण वागाया

৯৩ সর্গঃ ॥

পয়ার।

নিবাসের নিমিস্ত দেবিয়া ক্লত বুদ্ধি। নিমান্ত্রিয়া রাজপুক্ত মুনীক্ত স্বুদ্ধি। ভরত কহেন শুন মুনি মহাশয়। আতিখা ক্রণ তব হয়েছে নিশ্রিয়। বনে উপপন্ন যাহা করে।ছ প্রদান। পাত অর্ছ দিয়া মুনি রেখ্যেছ সন্মান। প্রিরস্বদ মুনীজ্র কহিলা রাজসুত। জানি তুমি মম প্রিয়ভক্ত ভক্তিযুত। ষে কোন প্রকারে হবে তব পরিভোব वाहिनी नकन घटन कदिव मरखार ॥ हेक्का कति मकत्न करतम स्वय्हानन নরভাের কর এই প্রীতি সম্পাদন ॥ কি নিমিত্ত তুমি দুরে রাখিয়া স্ববল। আমার নিকটে এলো কি ভাবিয়া বল। না আদিলে কি কারণ বান্ধৰ সৰ্বৰে ভরত কহিলা পরে মুনিরে কৌশলে । श्वामि नाहि वन मह श्वांभनांत ज्या। এসে) हि शकरा अक्र मानुष्य निलास । মনুষ্য মাতঙ্গ মুখ্য বাঞ্চি রাজি নারী। বহু ভূমি ব্যাপি রহে আনিবারে নারি ॥ দে সকল নিতান্ত আমার অনুগত। বুকোদক আশ্রম বিহীনে অসঙ্গত ॥ অভএব আইলাম সম্ভক্ত সহিত। আজা হয় কিবা করি এক্ষণে বিহিত। কহিলেন মূনি সৈস্ত আনাও নিকটে। ভরত পতিত তথা উভয় সঙ্কটে ৷ মুনি আজ্ঞা অনুসারে আনিবারে ডায় মহতের মান কি মাস্তের স্থানে যায়॥ প্রীত হয়ে প্রবিষ্ট মুনীক্র পাকশালা। **जां प्रयान महित्मन जन्म विमाना ॥** আতিখাের নিমিত্ত স্মরিয়া ক্লভকর্মা। **७ तथा अत्रात आगठ विश्वकर्मा ॥**

আহ্বান করিয়া বিশ্বকর্মারে তৎক্ষণ। কহিলেন মূনি কর উপায় একণ। আতিথা করিতে ইচ্ছা কর তার বিধি। রাজ উপভোগ যোগ্য আর সর্বা নিধি॥ বহু সোতা বহু নীয়া বহু বেগবতী। অন্তরীক চর ধেরা দ্বিতা বেত্রবতী। গঙ্গা কি বমুনা সরস্বভাদি বাহিনী। সলিলে সন্তোষ করে নরেন্দ্র বাহিনী। মধ্র মধ্র শীত সলিল সুন্দর। ইকুখণ্ড রসোপম পানে মনোহর ! हाहा इन जामि वन भन्नर्स मगन। অপুর্বনা অপ্সরা সর্বনা প্রকাশে গগণ। যুতাচী মেনকা রম্ভামিঞা কেশী ছেমা। পুণা গৌরী বরুপিনী আর ডিলোভমা। (मरवक्त आक्षरत यात) करत **अवस्थान**। ব্ৰহ্ম সভা শোভাৰতী আনিবে এস্থান। সভূত্র ক সকলে লপরিছদে আন। পুষ্প বাস বিলেপন শিশ্প ৰত জান। नाना यन नाना कुन वार्क्न उरु। मि नक्न अधिकन आहि गणु छता। অবিলম্বে এই স্থানে ভগবান সোম। বিধান করুন অন্ন যত অনুভ্য ! ভক্ষ্য ভোজ্ঞ লেছ পেয় বিধেয় বিধান। বহুতর মৃচিত্র বিচিত্র মাল্যাধান। पूरूर कूरूर हेर निवा मध् क्रांछ। সুরাদি বিবিধ পেয় সৃষ্টি কর জ্বত নানাবিধ মৃগ মাংস পক্ষাংশ প্রভৃতি। যোগ বলে যাবতীয় স্বস্থানে সংস্থিতি

শিক্ষা শ্বর সমাযুক্ত উক্ত তপসায়। যোগ বলে বোগী ৰোগ করিলা তথায় ৷ পূর্ব্বমূখে কুতাপ্ললি পূর্ব্বকে আহ্বানে। আইলা সকল দেব প্রভিন্ন বিধানে। नक्षन काननानिक मन्त्र शवन। সুগদ্ধি প্রবহ গদ্ধবহ অনুক্ষণ। শীতল সৌরভ যুক্ত নির্মাণ মঙ্গল। ্ঘনালী বৰ্ষে বৃষ্টি কুসুম সকল। पित्र शक्क विशेष क्रा स्ट्रांसि एवं विशेष कि मिश विमिश व)। भी मञात मरखान। বহিছে উত্তম গন্ধ আদি গন্ধবহ। চিত হর নৃতাুকরে অকারা সমৃহ ॥ शान शर्व्य शक्तर्य बाजाग्र वीना वन् । নিম্বনে নিখিল প্রাণী শুনে সৃষ্থ তমু 🏽 সমস্বরে গান ভরে প্রবেশে তথায়। এই শব্দ কর্ণপথে প্রবিষ্ট বরায়। ভরতের সৈম্পর্যণ করে নিরীক্ষণ। বিস্থাস করিলা বিশ্বকর্মা বিচক্ষণ। त्मरे ভृषि ममভृषि शक्षम वास्त्रनं। অত্যন্ত বর্ণ দুর্বা আচ্ছাদন ॥ নীলকান্ত অপর বৈদুর্যামণি প্রায়। } সর্বে স্থান সমান বিমান শোভা পায়। তথা বিলু কপিথ পনস বীজপুর। আমলকী জব্জার বছরী এচুর। সকলি সৃফলী ফলভারে নত শাখা। চতৃঃশালা শুভ্ৰবৰ্ণা ব্ৰুপংক্তি পাৰা। গজবাজি প্রভৃতির মন্দির শোভন! রমা হ্র্মা প্রামাদ লম্হ সভোরণ 🛭

সিত মেঘ সম প্রভ সূচারু শোভন। রাজ্ঞবেশ্য হত উল্ল শীতল দর্শন 🛚 শুক্ল মালা ক্লভ তার ধৃত গন্ধোদকে। চতুৰ্বিধ আশ্ৰম অদশ্ৰ তিন লোকে। শন্নন ভোজন পান প্রভৃতি মন্দির। पिता मर्क्त तम युक्त मुशक्ति मभीत । मिता मिता आधारत अश्वर्स तक तामि। শরদের শশি সম আছে সূপ্রকাশি। প্রকালনে নির্দাল ভাজন রাজি রাজে। मुत्रहिष्ठ नियामन यत्था यत्था माटक । গ্রীমান শয়নাসন অতি সুবিন্তীর্ণ। ধৌত বাসে বাসিত চন্দ্রাংশু অবভীর্ণ॥ মুনি অফুজ্ঞায় মহাপ্রাক্ত নূপ সূত। সেই বেশ্ম প্রবেশ করিলা অতিক্রতঃ রত্ব রাশি পূর্ণ ভাসি প্রকাশি গগণ। यहानत्म खाज् रत्मु किकशी नमन । মন্ত্রিগণ গমন প্রশাতে নৃপতির। পুরোহিত বশিষ্ঠ বিশিষ্ট শিষ্ট ধীর 🖡 मिथिय। असुठ पृति पूर्व गुमतः। প্রীতিযুক্ত উক্ত গৃহে ষষ্ট কলেবর। সেই হলে নৃপাসন অপূর্ব্ব শোভন। হেম হীরাময় ছত্ত্র বিমল বাজন ॥ ভরত প্রবৃত্ত তথা মক্রিগণ সহ। আসন পূজন পরে সুপবিত্র দেহ। গ্রীরামে প্রণাম তথা হয়েয় নত শিরঃ। শত শত আসনে উথিত মহাধীর। करत कति वास्त्र विच्छान करत वांत्रु। **औ**ताय स्वतरं वीत हितं उत चारा ।

অনুক্রমে ক্রমে ক্রমে মত্রি পুরোহিত। স্বীয় স্বীয় আসনে সকলে উপনীত। সেই ছলে বলে রক্ষা করে। সেনাপতি। ৰণা শ্ৰেণী পূৰ্ব্বকে পশ্চাৎভাগে স্থিতি পরে মুনিপুরে করি আতিথা দীকার। বশিষ্ঠাদি সকলের গ্রহণ বিস্তার ৷ তৎক্ষণে সমন্ত নদী পয়ঃ পরিপুর্ণ। পায়স কর্দেমাছরা হইলেন তুর্। ভরদ্বান্ধ শাসনে সুতৃপ্ত করে নৃপে। ভটিনী উভয় তটে আলো করে রূপে। পাণ্ডুবৰ্ণ মৃত্তিকাদি আচ্ছন্ন লেপন। ভাসুকর করি রুদ্ধ ধ্রারুহ গণ। वाक्रापत धनाम उपना त्या नाती দিবি ভবা দিব্য রূপা অপূর্ব্বা সুন্দরী। তথার মুহুর্ত্ত মাত্র ভূষণে ভূষিত:। দিব্য আভরণ যোগ্য যথা পরিধৃতা। व्यागमन करत्र वह महमु वकाता। সুবর্ণ প্রতিমা পুঞ্জ স্বর্ণ পদ্ম ধরা। বিংশতি সহসু নারী দেবনারী প্রায়। কুবেরের ঞেরণে প্রবেশ করে তায়। [্]যাদের গ্রহণ মাত্র উ**ন্মন্ত চেতন**। व्यनाष्ट्रारम इय मर्क्त श्रुक्तव मक्कन। লিশন কানন হৈতে সুকাম্যা কামিনী। িবিং শতি সহ্সু সংখ্যা সূপ্রভা ভামিনী। নারদ তুম্মুক্ত গার্গ্য প্রেম্বণ্য প্রভৃতি। ভিরতের অগ্রগামী সগন্ধর্বে পতি। ্অলন্থ মিশ্রকেশী পুঞ্জী বামন।। ্ নৃত্য করে ভরতের পুরিতে কামনা।

দেবপুরে প্রসিদ্ধ যে সর সিদ্ধ মালা। ৰে মালা সকলে চিত্ৰরণ বন আলা। প্রয়ারে অপ্রাপ্য প্রাপ্য হইল তৎক্ষণে মুনিরাজ ভরষাজ তপস্যা শাসনে ৷ তপোবনে সমস্ত প্রসিদ্ধ তরু যত। নানা বেশ বসন ভূষণে মনোগত ! কেহ কাল কেহ কুব্দ কেহ বা বামন। **প্রবেশে প্রমণ। বেশে ভরত সদন**। চিত্ত হর নৃত্য করে কোন কোন নারী। কেহবা বাজ্ঞায় বীণা কেহ তাল ধারী ! कान वृक्त मधु मुख मृशिष्टे मृत्तत । किह्वा दसन मान करत्र, नित्रस्त्र । क्टि (मग्र क्ल श्रुष्ण क्ट् बाउरन। গ্রহণ করিছে সুখে ছে জন বেমন। সুরাপায়ী সুরাপান সুথে করে তথা। কুধার্ত্ত সকল,অত্তে পরিভৃপ্ত বধা। वस् मना वस् मांश्म वामना शृदान। যে যেমন ভোক্তা সুখে করিছে ভক্ষণ। আচ্ছাদন স্থপন করিছে নদীতীরে। ৰন্ধাণ সহ ভৃপ্ত সুগন্ধ সমীরে 🛭 পাইয়া এক পুরুষে পঞ্চ ষট্নারী। উপাসন। করে ছত্র চামরাদি ধারী। পরমাসুন্দরী বারা রুচির লোচনা। পরস্পর শরিগ্রহ করে বরাঙ্গনা। মাতক তুরক উফ্র গর্দভ বৃৰভ। স্ব স্ব খাছা ক্রব্যে তৃপ্ত তথা তারা সব। ইকু মধু লাজ ভুঞ্চে প্রঞ্জ তথা। ঈক্ষাকু বংশীয় যোদ্ধাগণ ৰথা ৰধা।

বাহার বে যোগ্য ভক্য ভোক্তা পের কেন্ট্। সময়ে আত্মেহ্ণমতে সবে করে গ্রাহ্ন। মৈরের মদিরা আর শক্তুদধি যুত। রাশি রাশি ভুঞ্জে আমি শাল্যর সঘৃত। ভোজন করায় সর্বানরে সমাদরে। यथा विधि छथा विधि मानः श्रुतः महत ॥ অস্তঃনি হ্ত অস্বন্ধ যত জন। -মাঙ্ত মাতক জ্ঞান হত অনুকৰ। কেহ্ মন্ত উন্মন্ত নূপতি সৈন্ত যত। খেছা,পান ভোজনে চৈডম্য পরি হত অপর পুক্ষ যারা পরম সৃন্দর। মনোহর মাল্য সভেরণ কলেবর ॥ ৰিজগণে ভোজন করায় কাম্য মতে। মন্ত্রিগণ সহায়তা করিলেন রীতে॥ अक्कांक् दरभीय माती महमु मुन्दती। পরম ভাস্বরা তারা ধিতীয়া অপ্সরী। পরিচর্য্যা কার্য্যে রতা তথা অচঞ্চলা। সুচঞ্চলা পংক্তি যেন ঘেরে মেঘমালা। সূতৃপুসকলে কান্য ভোজী সর্বজন চচ্চিত চন্দন চুয়া হক্তিম চন্দন। व्यकाता व्यक्तं क्रांति हहेगा नारखाय। করিছে মঙ্গল ধনি,কল্যাণ সুযোষ। ভৃপ্ত হয়ে। কহে তারা অযোধা। না যাব। দণ্ডক কাননে কিবা কাৰ্য্য কিবা পাব॥ ভরতের সুমঙ্গল এীরাম কুশল। বিধাতা রাধুন সুখে বাঞ্তি সকল। रखी रखितकक्षाममख रखिलक অখনণ মহাতৃপ্ত তুরঙ্গ বাহক।

যোদ্ধাগণ যত মূনি অতিথি সমস্ত। भूगा वाका कथरन नकरण ठिख मृह। ভরতের অমুগামী অমুদিন যার।। এই বাক্য কহিতেছে তৃপ্ত ভাবে তারা। এই স্বৰ্গ অপবৰ্গ অন্য আর নাই। কোখা যাব অযোধ্যায় সুখে থাকি ভাই অনন্তর পরস্পর ভোক্তাগণ ষত। অমৃত সমান ভক্ষা ভোজনে সুপ্রীত। আর অন্য ভক্ষণে না হয় কারু মতি। প্ৰেষ্যগণ বনস্থ বাবস্ত ৰতি সতী। मकरम मन्द्रष्टे छिछ यछ वनवानी। कूं झत त्या अध मृत शकी माममामी॥ নানা ৰেশ বসন ভূষণে সুভূষিতা। মলিন বসনা কেহ নহে সন্তোষিতা। না ছিল কুধিত কেহ তথায় মলিন। ধ্লায় ধৃদর কেশ বেশাদি বিহীন ৷ भारत অপূর্বোসনে স্বচ্ছ অঃচ্ছাদন। পরস্পর **প্র**শংসে আপনি সর্ব্রন্তন॥ সর্ব্বত্র উভ্যাসন প্রদান সুন্দর। অরণ্যের দিপামে পায়স সরোবর ৷ উত্তম কদ্দমি তায় পরিচ্ছন্ন হ্রেদ। কাম্যবহ শুদ্ধ স্নেহ্যতনদীনদ। তরুগণ সমস্ত সঞ্চারে তথা মধু। भद्रम मगरम मुक्षा ऋदि यथा विधू ॥ বাঃপিত অনেক বাপী মন্ত পরিপূর্ণ। वस्मारम मुधारख मुधात गर्ख हुर्व॥ ভৃপ্ত হয়ে। তাবতে তটিনী তটে রহে। মধূর ভিত্তিরে মার্গ সুবিরল নছে

অব্দা অতি বরাহ সুমিষ্টার মধ্র। कन मृगं मृथिनिष अनिष अहूर। ্সুব্দর স্থাপের বাপী রম্য রসময়। ্বুম-প্রিপূর্ণ আর পর্বত সক্ষয়। ्राहिका विकास मर्क्त नहनाही ग्राग ্সহস্ সহসু পাত্রী করিতে অশন ॥ ৃত্যযুত অযুত হালী সুবর্ণের ভাল। ্,শাতকুস্ত সুসঁত্তব সমন্ত বিশাল। ়স্থালী কুস্ত কল্স পায়স দধিযুক্ত। ्ञगङ्गारत जगङ्ख यथा उनयुक्त । ্তক্লণ ভক্লণ ভক্ল দধি গন্ধভায়। পরিপূর্ণ ভাবে বহুত্বদ শোভা পায়। ়ৈসধিপ্রায় খেড শোভা হইল বিভয়। ়পায়স শর্করা রস অনিশ সঞ্চর॥ ুঁজান জ্বতা বছবিধ রহে কক্ষচুর্ণ। क्यायाणि मःयुक्त आधाव পরিপূর্ণ । नमे्डीरत डीरत छथा स्मर्च मर्सकन। में को है विश्वक मिन में नहीं भेने ॥ एक मनवस्य तकः ममूख मखतः। কক্ষ বহু দুৰ্পণ স্থাপন অভিনব ॥ ্নানা পুজ্পময় মাল্য মৃদু পাদুকায়। উপাৰহ যুগলে সম্পূৰ্ণ শোভা পায়। অতুল অপ্তলি নেত্র রঞ্জন কারণ। কম্বতি ছাপন কেশ করিতে মার্চ্জন। কুচ্চ ছত্র নানাবিধ তত্ব আবরণ। তীরে তীরে ভটিনীর শয়ন আসন। সুগন্ধি তাম্ব রাশি দেবিছে তথার। প্ৰতি স্থানে পান ক্লা পূৰ্ব শোভা পায়

পর উক্র **গজবাজী অস**্ধেতি হেডু। সূতীর্থ সুন্দর পথ তীরে উচ্চ সেড়। আকাশ সদৃশ বর্ণ পরিচ্ছিন্ন বারি। সানে মহা সুখ প্রাপ্ত ইয় নর নারী। নীলকান্ত মনি প্রায় মৃদু তৃণ তায়। অস্ব গজ উক্তগণ ভুঞ্জে ভৃতি পার। নিকটে নিকটে তার পশুগণ চরেট্র। না হয় স্থানের অন্ত নরন গোচরে ! ষপ্ন কম্পা তাহা অম্পা অস্কুড,সঞ্চয় 🗓 দেখিয়া মনুষাগণ হইল বিষয়ে 🛚 ,মুনি কৃত অতিধি:কেকরী সৃত প্রতি मिया भग्नाम काल मित्र वंश तथी। রজনী প্রভাতে মদাকুল দৈন্তগ্ণ। পান করে জীবন বজুীবন রক্ষণ 🛚 এই রূপ রুমণ করিছে রুম্য বনে। (मवश्य वं**षी जुषी नम्पन कान**त्न। ভরষার্ক আশ্রমে বিচিত্র সার স্থলে। मुर्ग देशक निर्द्धा कतिया नृश मत्न ॥ नमीशन शयन कतिन यथा सारन। **व्याप्त शक्क कार्य शास्त्र महात्म ।** ভর্মাজ অনুজ্ঞায় বরাঙ্গনা গণ। निक निक निरुद्धान कित्रन भगन। उँ६क हे मिता मान मङ हिन बाता। अधन हमन युक्त उक्त कटणवज्ञ। তথা দেবগণ ভুলা মালা বিভূষণা। श्थक् श्थक् चात्न हरण मक्त बना। ভরষাজ আডিথ্য আব্যান অব্যোধ্যায় विमाधिक नविक्ति मर्भ मात्र छ। म

৯৪ সর্গঃ।

तिश्रमी।

ভর্ছাজ মুনি স্থানে, সমন্ত্রিক বাহ্নে, ভরত রঞ্জনী করি বাস। ক্তবাঞ্জলি পূৰ্দ্দকে সন্তায পুরুষ প্রধান ঋষি.জিজ্ঞাদেন পরে এাদি, অগ্নিহোত্র কার্য্য সমাপনে। गृत्थ भूल कि अकाइ,यानिभी याजा टा-মার, আতিথাে সভােষ সর্বাজনে : কহু সুত সভাভাষ, ভরত করি সম্ভাষ श्रुवि दात काइन कथन। প্রণতি করিয়া পদে, সবল সপ্রিছদে, शिताशाम निमा निर्देशम ॥ नर्त्रकार्य नर्तकर्त, शतिज्ध नर्त्रस्थान, ভগবান্ করিলে আপনি। গুভক্ষণে বুভুকিতে,যুগী করে৷ সর্জরীতে, পরিতাপ হরিয়াছ মুনি ॥ প্রেয়ার্থে পশুভার,সমন্ত সৈন্য আমার गुर्थ काल करिल यापन। न्भाग गुर्ह नाहे, त्य त्य दख रह (गाँमाहे, পৃথিবী মণ্ডলে অপ্রাপন। मिर्मे मव छव द्यात, (मिर्गाम विश्वभारत, मर्खा थरा यहाउ मुन्दरत । একণে প্রার্থনা মম, ভগবান মহ্তুন, আজ্ঞা হর যাইব সম্বরে॥

हार्शित मन्न हरक, यां हैन रखन मगरक, কহ কোধা তাঁহার আশ্রম। ধার্মিক মহাত্মা রাম,কোন্পথে তাঁর ধাম্ গ্ৰনে দেখিব র্ঘন্তম ! (म वाल्यम कोन् (म म्हार्ग माजा मम कम् एम नी: শে, আদেশ সে কতবা যোজন। কালে গিয়া মুনিবরে, অভিবাদনাদিও 🖂 রাম ধর্ম কলেবর, সীতা সহ্রঘ্বর, 🦠 অনুগত স্মিত্রা নক্র । ভরতের বাকা শুনি,সস্তোষ পাইয়ামুনি, <u>ः दोका कर</u>्णन अस्त । সার্দ্ধ ততীয় খোজনে,নিবিছ বিজন বনে, ' তিত্রকৃট মহাগিরিবর । নিশ্র কন্দর তার, খতি রমা পরিক্ষার, উত্তর বিভাগে মনগ্রিনী। উৎফুল পুষ্পিত তাদ, মুশাখা পলবে চারু, সুক্ষোয়ায় আচ্ছলা ধরনী॥ নানাপকী সমাজুল, চিত্রকুট শৈল মূল, তার মধ্যে আছে পর্বশাল। বিচিত্র পত্র কুটীরে, আশ্রম যুগল বীরে, দীতা সহ গত হয় কাল। ন্ডনিয়াছি এই কথা, তুমি ৰাজ্ৰা কর তথা, मिन मध्याल सिख मह। পুরিবে ভোমার আশা, করিবে দক্ষিণ আশা, প্রদক্ষিণ হয়ে। সুস্ক দেই॥ गमन रमनानी रमना, श्रज्ञदानि व्यवना, मुगमन कतित ताघव। ভরত গমন গুনি, করিলেন আজা মুনি, এই কথা হয়ে৷ জ্ঞাত সব 🏽

दास दारक का तमनी, तथकान भतासनी, कम्भाग मुख्या धर्गी। অতিক্রশা ক্রশাধ্নি,কৌশল্যা রামজননী, সুমিতা প্রভৃতি সুভামিনী। করন্বয়ে ধরি পদে,কৌশল্যা অতি বিপ-(म. शरम शरम करतम क्नम्म। কৈক্য়ী ভরত মাডা, সর্বলোকে সুনি-ন্দিতা, ধরিল সে ম্নির চরণ 🗈 লজায় লজ্জিতা হয়ে, সুমণী বিমখী त्रा, कार्या मृति ने खाद नियन । ম্নিব্রে প্রাদক্ষিণ মুখ অতি সুম্লিন, হাম মাতা কে.শলা তখন " ভরতের সন্নিধানে, দীনা সমাকুলা প্রাণে, অবস্থিতা শুষ্ক তক্ত বথা। দুঢ় ব্রত ম্নিবর, ভরদ্বাঞ্জ সুবিস্তর, প্রচিয় জিজ্ঞাসিলা তথা ৷ বিশেষ করিয়া কহ, জানিতে জামে উৎ-সাহ, তিন জন জননী তোমার! दितिन एत्रा मम, वन वन तथा छम, नाम छ० कहिना विद्याह ।। এইবাকা মূনি উক্তা,ধার্মিকের যুক্তিযুক্তা, ভরত দিলেন পরিচয়। ভগবান এই দীনা,শোকে তল্প অভিদীনা, চেতনা বিহীনা অভিশয় ॥ দেবতা সমান হলেবর। **এই গড়ে জন্ম রঘ্বর** !

निংक् नम मुविक्य. ध्वन द्वा द्वा द्वा অদিতি যেমন দেবগণে। ইহাঁর অসব্য করে,যে জন আশ্রয় পরে, অবস্থিত। অতি দৃঃথ মনে॥ শীর্ণের বনাস্তরে, কর্নিকা আত্রয় করে, भाषा श्राय ख्यांय तम्म। हेर्दात यूगण भूछ, (एवक्रशी महासुछ, স্বিশ্রত শক্তম লক্ষাণ !! ধীর সতা পরাক্রম, খার গরে অভূপম, সেই এই সুমিত্রা জননী। উषिध अम्या अणि, भलिन वन्ना मठी. लकार्वत अननी पृश्विनी । শুন আর পরিচয়,কহিতে কম্পে হাদয়, या इहेर्ड नत्तक भाष्ट्रण। জীরামের বনবাস সহি তেসৌমিতিদাস, অভিলাধে হইয়া নিম্লশ দশর্থ মম ভাত, সুবিখ্যাত কিতিনাপ, স্বর্গত যার ক্রতকর্মে। ক্রোধনাম প্রক্রাহীনা,যাতেকুলক্রিয়াদীনা, वेश्वरा मानिनी इन शर्मा ॥ কৈকয়ী অশিষ্টা অভি, যেই বিনাশিল পতি, বিনিন্দিতা স্বকুলপাংশুল। লজ্জা পরিহরে ধাতা,দেখ মুনি মম মাতা, (महे नहे विश्वतन म्ला অস্মুখী অবস্থিতা,ছে গ্লাভা পতিব্ৰভা, আপনার মহাকষ্ট, ইহাহৈতে ধর্ম নষ্ট, দেখিতেছি শুন ধিঞ্চবর। प्तथ श्रुमि नृशकना।, धनामानि धत्राधस्त्रा, डिक्कि करता बहेकशा,नरतस भाष्म् निउधा, গলগদ বচনে নিরম্ভর ॥

নিখাস প্রেখাসভাগ, তামবর্ণ চক্ষেরাগ, বনগজ সম ক্রোধান্তিত। ভরধান্ধ মুনিবর, কহিলা অভি সত্তর, প্ৰত্যন্তর ৰচন উচিত। জ্ঞান দান করিল। ভরতে। কেনবা কর আক্রোশ না জেন্সে কৈক্যী माय, विधिक्छ पृथ्य माण**त**थ ॥ तारमत वन भगन, खानित व नुलक्ष, হইবে মঙ্গলকর অভি। যাত্রা কর নুথাকর,সুবার্ত্তা জ্ঞানিবে পর, মাত দোৰ ভাজ মহামতি ! অনন্তর মুনিবরে, ভরত প্রণাম করে।, প্রদক্ষিণ পূর্বেক তথায়। रेमच्छन्त धामित्रया,मित्रवात निर्यास्त्रिया. জানিয়া সমস্ত অভিপ্রায়॥ शक्यां छ दशसांग मकला करत निरम्भा ঞীরাম বিয়োগ নাহি সহে। অনন্তর মন্ত্রিগণে, নরেন্দ্র বল বাহনে. সজ্জীভূত হও সবে কহে॥ পশ্চাতে তুরঙ্গ রপ, চলে চিত্রকৃট পথ, যুক্তদিবা হেম পরিচ্ছদে। গ্ৰমনাৰ্থী যত জন রথে করে আরোহণ, কেহ গভে অমে কেহ পদে। গজ গজগামী জন, সুবৰ্বৰ ভূষণ, পতাকী পরম পরিষ্কার। घर्माछ नगरत थथा, स्वयाना नग ज्था পশ্চাতে প্রস্থিত চমৎকার 🏾

বিবিধ প্রকার রথ, যানে পরিপূর্ণ পথ, কুদ্র উচ্চ প্রস্তুত সকল। চলিল পদাতিগ্ৰ, মহামূল্য আভ্ৰন, মধ্যাক্ত আদিতা অবিকল। ৰস্থ বুদ্ধির মূনি, অসন্তোৰ বাক্য শুনি, কোশল্যা প্রামুখা নারী,রাজ্ঞরাণী ধর্মাচারী, জন যানে করি আহোহণ। ঞীরাম দর্শন ক্লন্ত, বামনেত্র করে নৃত্য, हर्य ভাবে করিলা গমন। ভরত তরণ রবি, প্রভাতের প্রভা ছবি, भिविका मुन्दरत बारहाइन। व्यधीतथी भक्तिमान, शन्हाट्टर यान, সুমক্তিপামদি বহুজন। পতাকা চামর ছত্র, আহ্বাদনে স্লিধাগাত্র, शक्रवाकि ब्राक्षी मृद्दे भारम। পশ্চাতে পশ্চাতে সেনা, অগ্রগামী বহু खना, पारूबा मिन्नी हिज्यतास ॥ থারত দক্ষিণ খাশা,দৈ<mark>খে সকলের আসা</mark>, যেন মহা মেঘ আসা প্রায়। সুমন্ত্র পশ্চাতে, গতাকী প্রভৃতি যত আফ্র প্রছন্ন স্থানায় ! সজ্জা আবরণ যত্ত্রে, যুক্ত রাম মহাসত্ত্রে ভরতের দবে অনুগামী। বহু মৃগ পক্ষিগণ, আবুত অনেক বুন, পরিক্রমে অযোধ্যার স্বামী ॥ অস্থ অগাধ জল, যমুনা তরিয়া বল, লভের বহু মকর রাঘর। দেখিয়া বহ कुछीत, कष्टे চিত্তে मान वीर সেনাগণ সংহতি কাঘৰ ॥

কুপ্লর কুরক্সবাজি, বহুপক্ষি ঋক্ষ রাজী, রাজিত ভ্রাজিত বোদ্ধাগন।
কলস্থ বনস্থ জীবে.কোভযুক্ত কর্যোশিবে, মহাবলবস্ত ভূতা জন॥
রামায়ণে অযোধ্যায়, ভরতের অনুজ্ঞায়, চিত্রকুট গমন বিস্তার।
নরেন্দ্র আক্রান্ত্রারে,প্রকাশ হয়েয় সংস্পারে, জীবগণে করন নিস্তার।
পঞ্চম নবতি সর্গ, শ্রেবণে উভয় স্বর্গ, শ্রোতার বজার তুলা কল।
বিজ্ঞবিপ্রদাসেভাবে,ত্রিপদীছন্দ প্রকাশে,

कत मर्गः।

প্রার :

সেই সব সৈতা সংঘ সম রূপে চলে।
বনবাসী দেখিছে বিপুল মহাবলে।
অযুপে পীড়িত তথা বন যুপ পতি।
পলায় পর্বত পাখে পর্বেতীয় হাতী॥
ক্ষক ব্যাঘ্র ক্রক্তৃগ গুরু বেগে ধায়।
বনরান্তি পর্বেত বাহিনী পথে চায়॥
দেখিছে সৃদৃষ্ঠ দশর্পের নন্দন।
ধর্মাঝা ভরত আদি প্রবেশিলা বন।
ঘোদ্ধাগনে আবৃত সর্ব্দ্র তারা যন্ত।
মহাবিয়া বলবানে বেষ্টিত ভরত॥

অতি প্রাজ্ঞ মহাবিজ্ঞ ভ্রাতৃ সন্দর্শনে। আকাজনী হইয়া যাত্রা চিত্রকৃট বনে॥ ব্যাকুল তুমল শক্তে ম্গকুল যত। সহিতে চতুরঞ্জিনী বাহিনী সাবৃত 🛭 যত মগ ব্যাল জাল ধায় মহানে। সাগর সমান সৈত্য পশ্চাতে গমন॥ দেখে বেগ বিপুল অসধি বেগাছয়। বর্ষাকালে আকাশ অসুদে পরিছন্ন 🗓 मिंहे क्रथ जुशरेगस्थ आऋामिन मही। ভরল ত্রুস সংঘ সংখ্যা কভ কহি 🖟 মাতঞ্বিপুল অঙ্গ অনেকে বেষ্টিত। চঞ্চল গমনে চলে অতি হুরাম্বিত। তথায় কিগিৎকাল অলক্ষ্য সে দেশে। আসহরা ধরণী রথ বাহিনী প্রবেশে 🛭 গমন করিয়া পরে কিছু দুর পথ। বাহকাদি গথ শ্রান্ত দেখিয়া ভরত 🗈 ক্হিলেন শত্রুত্বকৈ ভরত ধীমান। সুমিপ্ট বচন শিষ্ট সমত ব্যাখ্যান। যেরপ হৈতেছে দুখ্য শুন্থেছি যেমন। সেই দেশ প্রাপ্তি চেয়ে। দেখ বিচক্ষণ ॥ य कथा कहिला शृदर्य ভत्रषाञ्च असि। এই গিরি চিত্রকূট অদুরে প্রকাশি॥ अरे दिए निक्रि उठिनी मनाकिनी। প্রকাশিছে নীল নেঘ নিভ বন শ্রেণী ॥ গিরি গুহা গছনে সুরম্য চিত্রকুটে। प्तिथ मध इस्तिशन महारवर्ग **উ**रिहा পর্বত প্রমাণ নগগণ নিরস্তর। পুষ্পা ৰৃষ্টি করিতেছে গুহার অন্তর॥

নীল মেঘে যেমন বর্ষণ করে বারি। প্রাবৃটের সমাগথে সেই রূপ হেরি॥ শীন্ত্রগ সমস্ত মৃগ অগ্রে বেগে ধার। भारतम गगरन यथा त्वरंग वायु यास ॥ দেখ হে শত্রুত্ব চিত্রকৃট গিরিবর। নরাজ্য হইয়া কি হইল সুন্দর ॥ আমার ত্রক সঞ্হইয়াছে তায়। সংগ্রে মকর যুগ সম শোভা পায়। দাক্ষিণাত্ত যোদ্ধাগণ মাতঙ্গ উপরে। भाषतर्भ मन कना मकरन विखाद ॥ रुखित मस्टरक श्रुष्ट्य भोत्र मृत्यत । ফলকের আলোকে পয়োদ শোভাকর কুসুমিত নগ যত ঘন ঘনাকার। চিত্রকূট পর্ব্বতের ভূষণ সঞ্চার ॥ ঘোরতর শক্ষহীন এই মহাবন। এক্ষণে অযোধ্যা প্রায় প্রকাশে নির্জন। ফলত আমার দৈশু হ্য হ্তিকরে। রথ রথিগণাচ্চনে অতি শোভা করে 🛚 খর কুণ্ণ ক্ষিতিরেণু ব্যাপিত গগণে। সেই রেণ্সকল সুচালন প্রনে ॥ জ্ঞান হয় করিতে আমার উপকার। এবন গগণ বাপী প্রন সঞ্চার॥ - হয় যুক্ত রথ স্থত মুখ্য অধিষ্ঠিত। গমন করিছে শীত্র গহনে বিহিত॥ দেখ দেখ পক্রম এ রথের গমনে। ত্রাসিত প্রিয় দর্শন নীলকণ্ঠ গণে॥ মন মন আরোহণ করিয়া প্রকাশে। কুসুমে চিত্রিত ভূমে কথন আকাশে 🛚

ম্ণী **সহ ম্গগ**ণ বনে বহুতর। পক্ষিরা নিবাসে বাস করে নিরস্তর ॥ অহান্ত নেখ দেখ এই দেশ। প্রকাশে আমার চিত্তে তমঃ করে শেষ। তপস্বি নিবাস স্থান ত্রিদিব সমান। **সৈন্স সব কাননে করুক অ**বস্থান। চরগণে চতুর্দ্ধিক নিরীক্ষণ করে। যথা দশরথ সুত যুগ্ম রঘ্বরে ॥ गर्गतम विकास श्रुक्ष वार्ष परम ! দেখিতে সন্ধান হেতৃ যাবে অতি রয়ে 🛚 এই স্থানে আরো অন্য তপোবল গণ। अवश रहेरव हिज्करि मन्दर्भन । সৈন্সগণ সহিতে সকলে বলে প্রভু। তোমার যে আদেশ অন্তথা নহে কভু॥ শুনিয়া কৈকয়া সুত সাধ্মত বাণী। সৈতা প্রতি সমন্তোষে কহিলেন জ্ঞানী 🛚 रहेश একত্রীভূত তিপ্ত সমুদয়। এ স্থান হইতে অন্ত স্থানে যাত্রা নয় ॥ আমি যাব একা মাত্র লয়ে মন্ত্রিষয় ৷ সুমন্ত্র অপর ধৃষ্টি পথ পরিচয়॥ এই বাক্য বলিয়া সকল সেনাগণে। সংস্থাপন করিলেন সর্ব্ব সঙ্গি জ্বনে 🛚 ভরত আপন মনোরথ সিদ্ধি ইপ্তে ! দেখিলেন ধৃমাগ্র শিখরে এক দৃষ্টে ॥ অবস্থিতা মিলিতা মহতী দেনা তথা। সেই রূপ সন্তোষ আপন প্রভু যথা। রামায়ণে রামাশ্রম দর্শনীয় সর্গ। ষয়বতি সংখ্যক শ্রবণে, অপবর্গশ্ব

৯৬ সর্গঃ।

পয়ার।

এই রূপে রহিপেন ভরত রাঘব। চিত্রকুটে বনকুটে সুচিত্রিত সব॥ মহারথী দাশরথি রঘ্বর রাম। মহাসতী সীতাসহ আরামে আরাম। भठी मह मुद्र (मह-यथा भक्त तास । সেই রূপ জানকীর সহিতে বিরাজ। ताका नष्ट महाकष्ट आश्वीय विष्कृत। তাহে মনে একক্ষণে নাহি জ্বমে খেদ। কমনীয় অতি প্রিয় এই গিরিবর। প্রতীক্ষণ প্রদর্শন ইচ্ছক অন্তর। পশুং কি রহ্সা স্থল এ অচল। षिष्ठकुल मयाकूल ५क्ट मकल॥ সূরবর্জা সমাবর্জ শিথর সুন্দর। ধাতৃচয় শোভাময় অতি উচ্চতর॥ কোন স্থান ভ্রাজমান রজত সঙ্কাশ। কোন হল সমুজ্জ্বল শোণিত প্রকাশ । ষেত পীত আলোহিত কনক সন্ধিত। পুষ্পা সম মনোরম কেহ ছোতিঃ প্রভ। গিরিবর শোভাকর কি সৃন্দর সামু। প্রবেশ না করে দেশ কভু শশিভামু ॥ শাবামূগ বনমূগ আর মৃগাদন। भार्म् नामि मयाकून मितिउ निर्मन ॥ নানা বৃক্ষ নানা পক্ষী উপলক্ষ গিরি। আয়ু জন্দ নিশ্ব কন্মাননে বিভারি

শাল তাল পিয়াল ককুড লোধ ধ্ব অশেষ পনস বিশু তাপীস তরব 🏾 ভিলক ভিলুক ভব্য মধ্ক কাশ্মরী। वस्क वस् सीवक वज्ञन वनही। আমল ক অশোক অরিপ্র পারিস্কাত। চল म**ल गूर्य इल त**ङ् वङ् পाउ॥ বেণ বেত্র নীপ গাত্র গুরু গিরিবর। ফ লে ফুলে অনুকুলে অতি মনোহ্য॥ স্লিঞ্চ কায়া শীত ছায়া দেবনে সুন্দর। শ্ৰীবৰ্জন গোবৰ্জনাধিক গিরিবর ॥ **শৈল প্রেন্থে অতি সুস্থে** দেখং সীতে। দেব রূপ অপরূপ কিয়ুর শোভিতে ৷ স্থানে২ পঞ্চবাণে হইরা পীডিত। युगन युगन त्रम् तमरन साहिछ। শাখা হলে সুনির্মালে করে। আরোহণ বিভাধরে ক্রীড়া করে বিভাধরী গণ ॥ উচ্চ হৈতে পড়ে তাতে गुन्दर मिला। সুশীতল মন্দ বল বহিছে অনিল। অলদুবে গিরি শোভে দেখনা সুন্দর। कतियाम मुखारमारम यथा कति वत ॥ গৃহোথিত গুণাধিত সূরভি সূজাণ। কিন্নরে সমরে করে সৃন্দর শ্রীমান। उँ धकर्य भी उन न्भार्भ किना इर्व इग्र। ষভপিও তব সহ বহু কালাতায়। তাহে দোৰ অসন্তোৰ স্পৰ্শ নাহি করে রূপ রাখি গিরিবাসি সহ সহোদরে॥ নাহি শোক শ্বন্ধ লোক সমান,ভামিনি। রাজ্যে ধিক্তভোধিক সুখী করে৷ মানি ৷

পুষ্পা ফল রমা স্থল বুক্ষ পঞ্চি যুত। সুচিত্র বিচিত্র অক্রি শিখর অদ্ভত। मर्भात म्लर्भात शिति शमात अवात । কুত কাম অবিরাম রাম তব সনে 🛚 বন বাস করি আশ তোমার সহিত। এ অচল মহৎকল করে সঞ্গরিত। পিতৃধর্মে মহৎকর্মে হইয়া অঞ্গী। ভরতের মুঞ্জীতের ক্রিয়া সংযোগিনী। মন সঙ্গে মহারঙ্গে গিরি চিত্রকুটে। नाना दक्ष नाना छक्षी मुख्दक उठि ! বাকা মনঃ প্রয়োজন কায়িক সাধন। দেখ প্রিয় বুরিয়া এ অমৃত যেমন ॥ ताक्षि उपित्र गंग भूकिर यह। 🖫 ইহাকেই কহিলেন পরম অমৃত ॥ তপঃ হেতু মহাদেতু বন্ধ বন বাস। পিতৃ পিতামহ্ যথ। করেন প্রকাশ। শৈলরাজে শিলারাজে অভাপি অসীম। খেত পীত শোণিত দুচিত্রিত নীলিম। नांना वर्व शतिष्ठ्य हिट्ट रेमन वरत । অগ্নি শিখা প্রায় দেখা অতি শোভাকরে। মকৌৰধি নিৱবধি সুপ্ৰভা সূজাণ। সহসু সহস চিত্তকুটে ৰৰ্ত্তমান 🛭 কোন স্থান সুনিন্দাণ দিব্য গৃহাকার। কোন স্থলে ফলে ফুলে উভান বিস্তার। একাকার প্রচার পর্বতে এক শিলা। ট্টচতর অহাম্বর ভেদী শুভ্র নীলা। 🕭 হৃ কের বসতির স্থান চিত্রকৃট। সেবা স্থান পুণ্য দান করণে কুকুট !

মার্গেই অপামার্গে পুরারে সম্পূর্ণ। বছকুল বকুল কুসুমে পরিছয়। ভূর্চ্চপত্র বহু পত্র অভিনব দল। কামি কিসলয় শ্যা বিলাসের স্থল ঃ যাজ্ঞিকের জীবনের জীবিকা স্বরূপ। বনভা ভাগভা ফল পুত্প বহু রূপ 🛚 অতিমৃদ্নব মধ্কোমল কমল। কর্ন্মি ধর্মি কামুকের জভ্য নান। ফল ॥ অমলিনী নলিনী পর্বত পাশ্ব সহে। नाना श्रांनी इत्या मानी मना वाम करत এগুরু উত্তর কুরু দেশের প্রধান। এই काल मना काल इत्यं वर्ज्यान। লক্ষীবান লক্ষ্য অপর তব সহ। বনে বনে বিহ্যুণে অতি প্রীত দেহ । সংপথে সুমনোরথে হয়ে। বর্ত্তমান। মহারতি প্রাপ্ত সতী সংপ্রতি প্রমাণ। ष्यर्वाधाय श्रिक्षं काय औत्रषु नस्त । সপ্তোৰ্দ্ধ নবতি সৰ্গে পৰ্ব্বত বৰ্ণৰ।

৯৭ मर्गः।

লঘু ত্রিপদী।

পরে রঘুপতি, সহ সীতা সতী, শৈল হিতি পরিহরি। অতি শুচি জলা, নিতান্ত নির্মালা, ভাগীরথী সুরেম্বরী॥ এই मनाकिनी, खिलक निमनी, (मर्थ मुहन्त वमन)। বিচিত্র পুলিনে, রাজহংস গণে, জীবনে ভ্রমে সুমনা। সুসম কুসুম, শোভা প্রিয়তম, প্রিয়তমে ততোধিক। महास म्राह्म, मृह्य अकार्ष, তীরক্তে ভাষে পিক। সুফুল সুফলে, কত সুখ ফলে, (मथ (मथ ठक्कांनरन। ব্যাপিত দুকুল, মালা সমতুল, রাজেত্র ভূষা সমানে। कड यथ यूर्य, यथा मरनात्रथ, ম্গ নৃগ নীর খায়। কলুৰ অশেৰ, অনায়াদে শেৰ, অশেষ সূপুন্যে পায়। **ब**हे महानही, यठ ठीर्थ जानि, অনাদি পদে সুগতি। জনায় যে প্রীতি, কি কব সম্প্রতি, শিব সতী এই সতী। खंठी চীরাম্বর, বহু সিদ্ধ বর, অক্সিন অন্বর গণে। दङ् अवि हम्न, करत পां श क्रम, मन्त्रांकिनी निमञ्जलन । र्या डेर्झवार, दिख्यान वज्, মূহুমুহিঃ বর্তুমান। হ্য়ো শুদ্ধ ক্লছা, করিতৈছে নিজা, वाषिण प्रतिश स्वा ।

গিয়ি আরোহণ, করিয়া প্রন, সঘন সঞ্চারে তীরে। কখন পাদপে, মধ্র আলাপে, निनी मिरिक नीएँ ॥ অনিল আধৃত, করে অনাহত, পবিত্র পুষ্প সঞ্চয়। क्रम मण इरत, कीवन मशारत, জীবন সঞ্চার হয়॥ মণি মুক্তা প্রায়, জল শোভা তায়, সুস্থির তীর বাহিনী। टकान२ (मटम, छान भगादाटम, প্রকাশিতা মন্দাকিনী।। দৈখ ছিজ্ঞোণী, কহে মধুবাণী, प्रिनम**िम** जाराधान । করে অধ্যাহার,ভারা বারস্বার, भुक्द एउ वहरन।। চিত্রকৃট গিরি, দেবী সুরেম্বরী, দর্শনে স্করী যত। विरमय निवाम, उन मह्वांम, গৃহ বাদে নহে তত।। জ্ঞটাজিন ধর, যত ধরামর, তপোৰল বলবান। নিভাসানে লোভ,নাছি মনংক্ষোভ, মম সহ কর স্থান।। अमन शिवी, (मरी मन्माकिनी, তরঙ্গ অভাদ করা। করিয়া মজ্জন, কর আলিঙ্গন, দিনমণি কুল দারা॥

क्ष्य अरे सान, षाट्यांशा नमान, मत्रयञ्चलक नुम्ना जाञ्चन गरिंछ, मना यम श्रीछ. विक्रिनी मर्खनानमा । निनी मःरशंग,मूमिष्टे मरस्रांग, ভোগ ক্যু কর নীর। তব তাম কর, তাহে ৰোগ কর, विशांत कत मभीत । কর করম্পর্শ, পানে চিক্ত হর্ষ, বিমর্ষ না হবে মনঃ। मिथ मधाकीत्व, कि मूर्य क मीतन, তব সহ সন্মিলন 1 मनः व्यायांशांग्र,तात्का नाहि यांग्र, না চায় ধন উন্নতি। वह महाञ्चान, मर्भात निर्द्धान, দর্শনে কে বা বিরতি। मुनी ख किंग्रत, जिक विषाधत, গন্ধৰ্ব দেবিত হুল। मूथ बाङ्ग यनि, दिन दिन समी, কানন তট নিৰ্মাল। এই গিরিবর, অতি শোভাকর, গলা গল পথা মালা। দেশ মুগগণ, নিপীত ভীবন, বিনাশে জীবন জালা। नि १ वृथ मृत्र, वह भाषामृत्र, মৃগামু করে গাহন। তীরে সুপুষ্পিত, তীরক্রহান্ধিত, অবহুত অস্গ্র

এ স্থান সেবনে, পরশে জীবনে. গত শ্ৰম কে না হয়। अहे वानी ताम, मूट्य व्यविताम, প্রিয়া প্রতি দয়াময় । দীতা দমন্বিতা, জনক দহিতা, ছিতীয় স্থী স্মান। উভয়ে भिल्न, नग्न अञ्चन. স্বর্গাধিক গিরি জ্ঞান। নীল গিরিবর, চকুঃ প্রিয় কর, কজ্ঞল উচ্ছল অঙ্গ। সীতা সহ রাম, ভ্রমি অবিশ্রাম, কলিঙ্গ বংশ মাতঙ্গ। অষ্ট নবতিক, ফল স্বৰ্গাধিক, অধিক সুখ সঞ্চার। ৰগাঁয় মনুষ্য, প্ৰীতিদ অবস্থা, नृशामित्म सुविखात ॥ অবোধ্যা কাণ্ডীয়, রদ অতিপ্রিয়, বিশেষে গঙ্গ। বর্ণন। বিপ্রদাস ভাষে,কর্ণামৃতে ভাসে, মজ্জন কর সজ্জন।

৯► शर्माः ।

পয়ার। গঙ্গা ভাগীরথী রম্যা সর্ব্য নদীখরী। চিত্রকৃট শৈল সহ তাঁরে স্বতি করি। জনক নৃপতি কন্তা দীতা গুণবতী। দর্শন করিলা খামি সহ তথা সৃতী!

চিত্রকৃট গিরি পদ করিয়া দর্শন। শিলা ধাত্মর গিরি কন্দর শোভন ॥ সুখদ সুন্দর তরু পুল্প ভারে নত। পক্ষি কুল সম্ল শিখরোপরি রত 🖁 करत तर मृहद मोहं छ शूर्व दन। দেখিতেং অতি শান্ত হয় মনঃ ! मताङ्त पृष्टिश्त मुखत नियम। দেখিয়া কানন শোভা শ্রীরঘ্নশ্ন ট विभिन्न इहेशा थिएम मचर वर्गः मीठा करत धतिमा मरखां**य युक्त म**रन ॥ ছে দীতে দয়িতে দেখ পর্বত কন্দর। পরিশ্রম দুরীকুত হইবে সুন্দর 🛭 সাধ সাধি এসোহ নিকটে আমার। তোমার নিমিত্র শিলাপ্ট চমংকার। षाध विधि विश्वाम कहिला এहे वहन। গিরি পাৰে পু**ল্পাম্য কেশ**র স্থাপনে। যাহার নিকটে প্রিয়ে ঘনছায়। প্রায়। পুষ্পবন্ত ৰাবন্ত ভুৱাহ শোভা পায় 🕽 শুনিয়া স্বামির মূখে সুখের ভারতী। প্রকৃতি সুন্দরী সীতা অতি হাই মডি 🛚 यश्त वहन महत क्यन वहरमः তব আজা এজীকার করিব পালনে। मिश्र मिथित श्रूष्टायुष्ट छङ्गततः। এই কথা মাত্র শিলাতলে স্থিতিপর। পত্নী সহ এক দেহ দশরথ সুত : কহিছেন সূভাৰণ মধু মধ্চাত ৷ পশু প্রিয়ে গল দন্ত হত বুক্ষগণ : বহিছে নির্যাস বাষ্পাবারি অমুক্রণ ট

পতিহীনা দীনা গুণ প্রবীণার প্রায় : রোদনে সঘনে মনো ভেদ করে তায়।। এই পুত্র প্রিয় পক্ষী শকুনি সুস্বরে। পুতাৰ বোলে বহু বিলাপ সঞ্জে ! शृद्धि गम जनमी को मना। सिवी आग्रः মধ্ব করণ বাকো হৃদি ভেদে ভায়॥ শালক্ষে মহানন্দে পেকে। ভ্ৰন্তাজ। রব করে কোকিলের পশ্চাতে বিরাম্ব 🛭 বাদিত্র সহিত যেন করিছে সঙ্গীত। আহণে না হয় কার চিত্ত বিযোহিত গ दिह्यम अधन शाशिष्ट शाष्ट्री विषे। অসমত করে রব যেন বল্ল কটো এই কুমুমিত বৃক্ষ ভারী পুষ্পভারে। লতা অৱনতা হয়ে দেখিছে তোমারে 🛚 এই कथा याति উक पूक्ति युक्त खता। সতে:বিভা বুঞিয় ভাবিনী দীতা মনে। সামি অঙ্কে নিঃশঙ্কে রোহণ করে৷ সভী মুবস্তা সম সভোষিতা **গু**ণবভী 🛚 জ্মান রামের চিত্তে গতান্ত সভোষ। विभाकत कुट्टे यथा शाहरल अस्तिष । भिष्यः तस्य पर्यन कित्रमा निष्याभानि । मीडात लगाएँ एम्स डिमक आवली। তরাণ অরাণ তুলা গিরি ধাতু শোভা। রাম মনোরমার রমার প্রায় প্রভাগ इत्व करत्व स्वी जीतास्यत मनः। लगाउँ विनिध मास्त्र मुम्दत स्थाङन । কেশবের কেশর করিয়া সহ যোগ। দিলেন অলকাবলী করে৷ যোগাযোগ

মনোলোভা শোভা তায় হইল নুগতি : সন্ধ্যাকালে সম্পূর্ণ যেমন ,রাকাপতি। यनः भिना जिनक वहन महाकारः। প্রফুল পদ্মের প্রায় শোভিত সুদেহে 🛭 हरकाद्भन भनाम मन्म मुख ठाव । সীতার বদন শ্বেত পুগুরীক প্রায়। সুসজ্জিত্ব হয়ে। সীতা স্বামির সহিতে। ় অন্তব্দেশ প্রবেশ প্রফুল্ল মনোনীতে 🖟 ভাম্মাণা করি অরি কুল করি দৃষ্টি। বহু মুগ শ্ৰেণী বন শ্ৰেণী বিধি সৃষ্টি । সভয়ে পতি হৃদয়ে করে৷ আরেছেণ: ভীতা সাঁতা দয়িতা করেন আলিঙ্গন ॥ भट्डाकुरस भट्डिस निस्तर्भाता निर्धाः সান্তনা করেন বহু বাকো হত হয়ে। বহুবিধ বনেতে বানর যুগ পতি। নিরীক্ষণে ফণে২ মৃহ্ছা গুণবতী ! হৈলে গত যত সৰ বানৱের পাল। প্রফুল বিধ্বদর্নী বিগত জঞ্চাল : রামের জীঅঙ্গ রঙ্গ তরজের প্রায়। আপনার অপাঙ্গ দেখিয়া দেবী তায় 🛭 भिरे बटन नग्रत्न मः (या) क रणदत्र । पूत्रञ्ज्ञ मुमल ख्या निकटि मुन्दत । . উৎফুল উত্তম তর কুসুম সুসম। আহ্বান করিছে যথা প্রিয়া প্রিয়ত্ত্য ! দেশিয়া দয়িত প্রতি কহিছৈন সীতা। অশোক কুসুমার্থিনী হয়ে৷ সন্তোষিতা ! ভোগার সহিতে স্থা করিব গ্রমন। পশ্চাতে২ করে৷ বন নিরীক্ষণ ৷

প্রিয়ার প্রিয়ার্থে রাম তত্ত্ব অভুরূপ। অশোক কাননে শোক বারণার্থে ভূপ 🛚 শিবের সহিত সভী মিলনে যেমন। হিমবান গিরি ববে স্কর শোভন ৷ পরস্পর শোভাকর পুষ্প পুঞ্জ দানে। বল্লভ বল্লভা সাজে পল্লব ধাবৰে। উভয়ে উভয় করে অঙ্গদাদি দান। काशिनी मुथ यात्रिनी (यमन मञ्जान ॥ প্রত্য জালে বনমালে পরম শোভন। পরস্পত কলেবর করেন দর্শন ! এই রূপ অনুরূপ করিয়া ঈক্ষণ। আপন আত্রম পদে পুনশ্চ গমন ৷ লক্ষা গুড় লক্ষ্ণ ভ্রাতৃ ভক্তি কর। উঠিলেন জীৱামের নিকটে সম্বর ৷ দেখাইয়া আপনার বহু বিধ কর্ম। মৃগয়া প্রভৃতি বত ক্ষত্রিয়ের ধর্ম। कुरूमात मृगमार्ग कति वारशास्त्र । দম্পতীর প্রীতি হেতু করান দর্শন 🖁 দশ মৃগ্ মারবের সাংল বছতর। मिथिया नास्त्राय हिन्छ तथ्य वतः ॥ শুদ্ধ মাংস শরহত পিশিত সুরস। কেহ্ আম কেহ্ পকু যুক্ত ঘনরস 🏾 সুমিত্রা সুতের কর্ম অতি অসাধার। প্রশংসিয়া প্রিয়ারে দেখান বারেবার 🎚 धन मौर्फ मुन्दि मक्ल मारम लागा। প্রাণিগণ সস্তোষণ অগ্রেকর গিয়ে 🛊 পরে পতি বাক্য অনুসারে দীত! দতী। প্রাণিগণে প্রদান করিয়া শীব্রগতি।

করিলেন পশ্চাতে প্রদান রখবরে ; यथमारम ममश्र উভয় मह्होत्रहत ॥ कतिराम धाँहारमत जुश्चि सं १ शामन । যথা বিধি পরে নিঞ্চে করিলা ভোজন। অবশেষ বিশেব যা রহিল গিলিত। শ্ৰীরাম বচনে তাহা করিলা সঞ্চিত। कांक खर्म मांश्रम दक्का कहितारत ज्यां দেবিলেন উপস্থিত বিষম বিভগা: আয়ানিত! দীতারে দেখিয়, কাক ভয়ে। রঘনাথ নানকটে আসিলেন রয়ে 🛚 দেখিলেন বিপরীত বাথ বিহল্পম ধরধির খচর ভূচর অসম্ভ্রম 🛭 প্ৰকাশে অশেষ মায়া কায়া আকৰ্ষণ। পীড়াবতী সভীরে করিগা নির্রাদ্ধ । অভান্ত কুণিতা দীতা অভীতা সুন্দরী। স্বামি প্রিয়া অভিমানে দর্গিত। ঈশ্বরী ॥ ইতত্ততঃ নিয়া যান করিতে রক্ষণ 🛭 পুনঃ২ ধায় কাক করিতে ভক্ষণ। বৈদেহী কোমল ছেহে আক্রমণ করে। অতি কোপবতী সতী স্পর্শে পয়ে।ধরে ॥ পক তুও নৰাঘাতে বিব্ৰতা বৈদেহী। প্রেক্রিড ওঠপুট রামমুখ চাহি। সীতার সুবর্ণ পথ প্রায় মুখ বর। দেখিয়া নিষেধ কাকে করিলা বিত্তর ৷ অতি ধৃষ্ট অশিষ্ট বিশিষ্ট অপকারী। **ठिनिटल ना शांटत दाम दृष्टे मल्दाती** ॥ পুনঃ২ সীতার উপরে পড়ে কাক কুপিলেন কমল নয়ন শুদ্ধ বাক্॥

অপূর্ব্ব ঈবিকা অই মন্ত্রপুত করি। কাকোপরিমহাকোপে প্রক্ষেপিলা হরি। ত্রিভবন ভ্রমে কাক পাইয়াছে ভয়। তথাপি লে ইমিকাক্ত নিবৰ্ত না হয়। লেকদত ওৱজোগ্ন বায়ন পাপির। ত্রিভূবন ভ্রমংগ গল, পায় অভীষ্ট <u>র</u> यथार पात्र छला स्मर्ट पृष्टि मिछ। আকাশ ব্যাপিত অস্ত্রে নাহি অব্যান্তি। পুনর্বার গতিত রাখের পদতলে। कांकुवारका कांकु श्रेट्स किन्नदा तम वरन। প্রসন্ম হইয়া পূর্ণ কর মনোরথ। তুমি রকা না করিলো যাই যম পথ। অস্ত্রের প্রভাবে তব ঐপদে শরণ। विशास विश्वमहीती तांचर कीरन ॥ পদতকে পতিত দেখিয়া দাশর্থি। कहिट्टान अमन हरेगा महातथी। দীভার সম্ভোষ হেতৃ যম সেতুবাণ। করিয়াছি পরিক্ষেপ রে কা**ক সন্তান।** প্রাণ হর এই শর কর অবধান। किছू ना लहेश काछ इहेरत ना वान। পদে শির দিয়া নীর চক্ষে বিযোচন। একারণে জীবনে অযুক্ত বিঘাতন। কিন্তু এ অমোঘ অন্ত এক অঙ্গ লবে। কোন্ অঙ্গ পরিভাগ বল তবে হবে। कतिदादत भाति जामि এই উপकात। अक्टीन र्हेटव क्रिट्**न अक्टीका**त्र । শুনি কাক রাম উক্তি যুক্তি যুক্ত বার্ণী ভাজিব নয়ন এক খন রখুমণি

এক চৰুঃ পরিভাগে প্রাণ যদি পাই। ভোমার প্রসাদে প্রভু তাহে ক্ষতি নাই। এক চকু হীন কাক রামের রূপার। উভয় নেতের কর্ম এক নেত্রে পায়। কাকে দেখ্যে কাম চকুঃ জানকী বিষাতা হতনেত্র কুপাপাত্র কুপানেত্রা দীতা। পদতলে পতিত হইয়া নত শিরঃ। ত্মাপন ঈব্সিত স্থানে চলে পক স্থির। পশ্চাতে লক্ষ্য সহ শ্রীরঘুনন্দন। ক্রিলেন শেষ ৰত ক্রিয়া সমাপন ! এই কালে অনেক জাতীয় শব্দ হয়। शक वाकी तथ तथी रेमछ ममुमग्र। অতুল তুমুল শব্দে শুক্ক গিরি বাসী। গ্রীরামের শুদ্ধ কর্বে প্রবেশিল আসি। धनछत রখ্বর মহেন্দ্র বিক্রম। সুকমল দলায়ত নেত্র রয়্ভম। নিকটে লক্ষণ প্রতি রগুবংশ বীর। कहिलान ७ कि नम कहित्व मुन्दित । গুরু বাক্য হ্রুতে ক্রুত উঠিলেন তথা। করি রবে করি অরি প্রকৃপিত যথা। অৰোধ্যায় ঈৰিকান্ত কাকে বিসৰ্জ্জন। একোনশতক সগ হৈল সমাপন।

৯৯ मर्शः ।

ত্রিপদী

उनविष्टे हामठळ, व्यवाधात এकठळ, এই কালে কৈকেয়ী কুমার। আসিতে রামের উপ,মহাশব্দ অপরূপ, সৈম্ম রব অর্ন্যে অপার। অবধানে সেই শব্দ, গিরিবাসি গণ স্তব্ধ, ওহা ভাগ করে ব্যাত্তগণে। वत्न जीन वनवात्री, विष्ट्रश श्रश्त चात्रिः মুগগণ নিবিড় গহনে। সভান করিয়া আগ,পলায় ভল্ল কভাগ সিংহ সব চলে গিরি গুহ। দাবানলে দহে বন, আতক্ষে মাতক্ষ্য• निश्हाधिक भक्त करत छेह। বানরেরা বেগে ধায়,পিপীলিকা তৃষ্যা য বুক্ষ হৈতে পড়ে মহীতলে। মহিষাদি মহাবীর,সভয়ে না তুলে শিঃ दन शिक्षि मध नहीं खरण। বিলে প্রবেশিছে ব্যাল,একি কালো রি কাল,অকালে হইল উপস্থিত স্বব্যি জপে ধিজগণ, বিভাধর ভীতমন কিন্নরের। হয় ওহ স্থিত। निक एवे लक्ष्म वीत, उत्मारण मगत i লক্ষা করি কিঞ্চিৎ অদুরে। চ্ইতেছে সৈম্বর্য অনুমানে জেম্ভে रार्ज्ञा तम व्यवस्था ठाकूटन ।

मामार्ग करहन ताम, त्रवृदर्भ अवसाम, ख्रीतारात वाका छनि,कहिरमन वीत्रमति. ডোমা হৈতে সুমিত্রা সুপ্রজা। कानर जान उद्ग, विकाउ हहेगा उद्ग, কাননে আইল কোনু রাজা निष्म गृतिहक्त, भाग दूरक आहार्न, নিরীক্ষণ করি দশ আশা। **ओही पिक रैम अभू खा, (पर्दा) वीद अध्या**ना, डेंड स्वत श्रीन नारम, रेम छम इ वनवारम, উত্তরে চাহেন সৈন্ত আসা। मिबिन ममूनय, छत्राउत हम्हत्र, ত্রন্ন মাতন্ন পদাতিক। चन कहा द्वर मंड, हथि श्रीय वीद उन्न, কে বটে কি নিশ্চিত অধিক। আসিতেছে মহাব্যগ্র,কহিলেন নরব্যাত্র, স্থাগ্রেষ পত্রিকা প্রায় বোধ। । तथ्रास्त्र द्वारक मिन, अन्य मय धार्यन, নরেজ্র ন। কর অনুরোধ। गितिश्रहा अखताल, आक्रांनिया भज জালে, দীতা তায় করুন্ প্রবেশ ধরিয়া ক্ষত্রিয় রীড, করে ধনুঃশরাখিড, कवह शंहन हन दिन ! নাগাম রথ সম্পূর্ণ, চমচয় শুনে তুর্ণ, किछात्मन त्युवरम वीत। দেনাসঙ্গ বটেকার,জ্ঞান হয় কি প্রকার, ना कानिया युक्त याजा हित। াজাকিয়া রাজসূত,কে আইল বনে ক্রত, পিতা দশরও প্রিয়,সদাকাল আরাধীয়, মৃগ হত করিবার আশে। ৰথাৰ্থ জানিয়া ভাই,কহিবা আমার চাঁই, করিয়া দর্কাহরণ,আসিছে করিডে রণ, কেবা বটে কি আশল্পে আদে 🏻 🖯

প্রকোপে কম্পিত সর্ব্ব কায়। छन्छ भारकाश्य,महाकान अमस्य, রঘ্তম কি কহিব হায়। কৈকেয়ী সন্তান বটে,ভরত ভুবনে রটে, নিকটে আসিছে রাজ কামী। উপস্থিত অযোধার স্বামী। महा उक्त उत्र,मरेमच भनारम ध्रा, করি ক্ষত্তে করিছে বিরাজ। অতুল অভ সম্ভম, কে: विनात धस সম, রঘভ্য কোশলাধি রাজ। অনেকে সেবন করে,সন্মান আকাশো-পরে, ধতুঃশব্রে সুন্দর নিপুণ। তুমি বীর অগ্রগণ্য, এ তিন ভুবনে ধস্তু, धत धलू अप मह मृह खन ॥ অথবা গিরি ভগায়,গুপ্ত থাক সভার্যায়, আসিতেছে নাশিতে নিশ্য । मञ काविनात्रध्य. तर्ग यञ यहाश्य, त्राघवीय (मना ममुमयः। ইহাতে নাহি বিচার, মন্ত মহদহলার, সতত পিতার প্রিয়তর। এই দেখ অশ্বগণ,যে ভোমারে আনে বন, সুমন্ত্র ধোজিত বছতর 🛭 মহৎ সৈন্স ভরতাধিকারে। मन दल जानित मद्दत ॥

এই যত অখারোহী, আসিছে ভোনার ঢোহী, আমি সব করিব শাসন। एभि कत रेणमा आय, रमध तक महा नय, অফুজের মহাভুজ রণ! ভরতের হেতু আনি,কি করি তাদেখ স্বামী, শরভিন্ন কলেবর, সমস্ত তুরঙ্গ বর, যত দৃঃখ নিবারণ হবে। বে নিমিত রাজ্জচাত,দঃখভাগী মহাদ্ভত কেকয়ীর সুত রাজা যবে। र्मिरे এरे অध्याति, शांशिष्ठ मयति याति, अधिव विभिन्न अन, कामाखत अरे मिन, করি ক্ষিতি ভার নিবারণ। কি'দোৰ ভরতবধে, কিবা তার অনুরোধে, मम বোধে ना इस नर्मन । द्रात इफ এह वीत, इहेट खानिर दित, বসুস্কর। তোমার স্বাধীনা। অভু হৈল পুত্ৰহ্তা, কেক্য়ী জননী সতা রাজ আকাজিফ্নী পরাধীনা। আমাহৈতে সুদুংখিত, ভরত এ সুনি-ভিত, করি ভগ্ন পাদপ সমান। क्किशीत विनानिव,ताक्कम मनाहेव, স্বান্ধ্যে হ্বে হত্যান। পাপে পূর্ণ বসুমতী, নিস্পাপা হইবে ক্ষিতি,মম ক্রোধ হত অসৎকার। এখনি করিব মুক্ত, খরতর ইযু যুক্ত, नामिव किक्सिशे अहसात। বুক্ষের কোটরে বাস,অনল পাইয়া তাস কালে নাশ করয়ে বেমন। त्रव मर्ख रेमच मास,माधिव जानन कांच, मर्ख भक्त हाद निवादन व

चामात विकिश भरत नर्वनक करनवरत. উচ্ছলিত শোণিতের ধারে। চিত্রকৃট গিরিস্থিত, কানন বিটপী যত, **নিঞ্চিত করিব একেবারে**। কুপ্রর কাতর হয়ের রবে 🛭 ভান্ধিবে আপন প্রাণ,পদাতিক অপ্রমান, धर्मा जका हहेरा अकरन মহাযুদ্ধে সদৈন্ত ভরতে। বিনাশ করিয়া অভা, সফল করিব গভা, ত্র অগ্নে দেখ বিধি মতে ৷ मिथित जुतक इस, तथ ठळ नमूनस, বিনাশিব সব নর তন্তু। শোণিতে कर्मम कति, नुशहम छन्शति, অসুরারি নাশে যেন দ্রু 🏻 रहेरव कीवन मुक, श्रक गांख थंगजुक, মম শরে হইয়া বিভিন্ন। অবোধাায় চিত্রকৃটে,রামাত্র করপুটে, নিবেদনে শত সর্গ পূর্ণ॥ ১०० मर्गः।

পরার। ক্র তনু অনুৰো করিয়া নিরীকণ। ममठा कतिए ताम किएला रहन। কি অকাৰ্ক্ষ অস্থায় কখন কিবা কোৰ্ধঃ অনিষ্ট ভরত হৈতে কি কর্ম অস্থবা 🖫

व्यक्ति अर्थ मिल् कतिया नक्तन। ু ইচ্ছা কর ভরতের বিনাশে লক্ষণ। कि कर्म कार्मा कि किया कार्य अनि हर्म মহাপ্রাজ্ঞ ভরতের নিমিত্ত অধর্মে। আপনি আগত আমাদিগে দেখিবারে। কদাচ অহিতাচার মানরে না পারে। অবাচ্য ভোমার বাচ্য ভরতে নিষ্কুর। অপ্রিয় বচন তুমি কহিলে প্রচুর । অপ্রিয় যত্তপি করে মম প্রিয় ভ্রাতা। তথাচ আমার প্রিয় পাত্র প্রীতি দাতা। প্রক্র হয়ে। পিতৃ ক্ষয়ে কে করে বাসনা। অনুজ কি করে কড় ছেও কদর্থনা 🖟 আছ্মপ্রিয় অতি আরাধনীয় বিগ্রাহ। ক্ষনিষ্ঠ কি হেতু ছেট্ঠে করিবে নিগ্রহ। রাজের নিমিত গ্রাহ্ম নহে এবচন। বিসম্বাদে বিবাদে কি আছে প্রয়োজন रमिशिल ভরতে কর লব রাজ্য ধন। श्रीकांत कतिद्व मिरव द्राघव नम्म । এই কথা উপযুক্ত যুক্তি যুক্ত জাৰি। আপনাঙ্গে লুকাইলা লক্ষ্য সূজানী।। मब्जाय मब्जिड हाया कहिया वहन। ক্ষমিবে আমার দোষ কিতীক্ত একণ।। লগজ্জিত কুণ্ঠচিত্ত নিরখি লক্ষণে। লান্তান সন্তান প্রায় সৃদ্ধিশ্ব বচনে।। লহ্ৰিজ ভূমিভুজ তোঁঃ মহাভুজ। व्यागितिय प्रिविवादित व्यानित् व्ययक्त ॥ বনগত উপগত জানিবে নিশ্চয়। শ্ৰন বাল ক্ৰত দুঃখ চিক্তে সহু নয়।।

চিন্তা করি দৃংখ অরি বনচারী ভাই। ইহার উপরে ক্রোধ বোধ ছব নাই।। বৈদেহী একান্ত দেহি সকল লালিতা। वन वारम मुश्य भारण निवका (म मीठा । त्महे पृथ्य (पट्ट (शट्ट महेवात उद्धा: স্মেহে মোহে ভরতের গমন সম্বরে !! कुलवरा धीमस मुवनवस वग्र। প্রকাশে কানন বাসে মহাকৃষ্ময়॥ বায়বেগে তুরগে করিয়া সুসঞ্জিত। বিরাজে বাহিনী সুখে সমরে পণ্ডিও।। শক্রপ্নর এ নিশ্চর তাতের মাতৃত্ব। खतर्जत अमृष्टित करन कन गन ।। नार्थत्र व्यातिष्म क्रिक्त व्यक्त मुर्चित्र। সুনীতে আমারে নিতে প্রবলপ্রমোদ।। আদেশিল ভরত রাখিতে রথ রথী। সেনাগণ সংস্থাপন দ্বীতি মতে প্ৰি॥ পর্ব্বতের সমীপে যোজন পরিমাণে। व्यावतन कतिबाद्ध शंकाय वियादन । कतिया रेमछ निरवण शरत तथ् विषु । চরণে চারণ করে দেখিবারে প্রভু।। শুক্ষ সভ্ত গুরু বন্ধ ধরে বুদ্ধি ধর। धर्म श्रृतस्रादत करत मर्शे मिणास्तत ॥ চিত্রকুটেং শেভাপায় সেনা। প্রসরার্থে রামের হইয়া প্রীতি মনা।। নীতি মত প্রগত সমত্ত সৈম্বগণ। একাধিক শত সর্গে সেনা সংস্থাপন।। ३०३ मध्य ।

बर्याधाका छ।

লভু ত্রিপদী

্যনা সন্ধিতিই, কানন প্রবিষ্ট, রঘুকুল শ্রেষ্ঠ পরে। आशन उमित्र तायव शतिह, জ্ঞের অন্তেষণ ভরে।। শক্রপের প্রতি, ভরত ভারতী, मध्यकि हेकि कर्द्धवा। महत्र इति, यथानद्र इति, হে নর হরি গন্তব্য।। कत व्यष्ट्रका, यम जुलामन, গুহ জ্ঞাতিগণ যোগে। শর চাপ অসি,কর তলে পশি, ছরাবান কাল যোগে।। তোমার সংহতি,লইয়া স্বজ্ঞাতি, দেখে রঘুপতি যথা। আমি সহামাত্য, অম্বেষিব সত্য, গুরুগণ পথ তথা। मर श्रुतस्मन, कानन हातन, চরণে করিব আমি। যাবত্না দেখি, দীতা চক্ৰমুখী, লক্ষণ ঞীরাম স্বামী ! তাবত্ আমার,শান্তি অঞ্চীকার, মা হবে না হবে কছু। যাবত্ স্বকরে, নাধ্রেন করে, थागात थागात अष्ट्र॥

যাবত নিৰ্যাস, শশান্ধ প্ৰকাশ, সুশোভন শুভানন। পদ্ম পলাশাক্ষ,নীলোপল বক্ষঃ, চক্ষে না করি দর্শন ॥ না হইবে শান্ত, আমার একান্ত. উত্তপ্ত দুরন্ত মনঃ রাম পদ সজ, নহে উভ্যাত্ত, যাবত্, শান্তি কখন ॥ যাবত্না রাজ্যে,পিতৃগণ গ্রাহ্যে, না হন ভূপতি যোগা। অভিষেক জল,युक्त मुकांमल, দেহ নহে ভোগ ভোগ্য॥ যাবত আমার,শান্তি অতিভার, ভ্রান্তি অধিকার মনে করিব ভ্রমণ, যাবত দর্শন, না হবে রাঘব সনে 🏽 সিদ্ধ কামাসতী, জনক সন্ততি, অর্থো স্বপতি সহ। আহা মরি আর্য্যা,সীতা ক্লুত কার্য্যা, मडी ভार्या এक (मह। हाम हल्लानन, विमल मर्भन, সতত দর্শন যার। त्म भूथ तास्त्रीव,निहीक्षरण स्रीव, निर्कीत कौर मधात ॥ চিত্রকুট গিরি, মহেক্স নগরী, গিরিগণ গিরি শ্রেষ্ঠ। ষথায় বসতি, রঘুবংশ পতি, সভী পতি মম ছেছেঃ

সন্দরে শোভন, কুবের যেমন, সজীক তেমন রাম ! ্রুই পিরিবরে,অতি শোভা করে, বিরাম রামাবিরাম 🏻 এই वन पूर्ण; অতি पूर्व मार्ग, जुकक मरमर्भ वर्ग ধশু করে৷ মানি,রাম মহাজ্ঞানী, রাজ ধানী সম তদা বল্যে এই কথা; ভরত সর্বাধা, अदिशे कनि रदन। গিরি দাতু মাঝে,তরুকুল দাজে, কল ফুলে সুশোভনে। कहिला मङ्ग, अहे होमाध्यम, অভ্ৰম উত্তম স্থান। রেখ্যে দৈন্ত লোক,মাতহ ঘোটক, গুহ্সহ্সুসন্ধান 🏾 বান্ধন সহিত, হইয়া সূপ্রীত, দেখিয়া উন্বিত ধুম। **এই इटल** होन, खवश विहास, নির্বাণ সন্তাপ ধৃম। ৰত যাতৃধান, অতি পুণাবান, চিত্রকৃট গিরি বরে। त्रांगर शास्त्र, शत्रम मरखार्य, मठ७ छम्भना करत्। क्था तमायन, ভরত গমন, যুগাধিক শত দৰ্গ नहत्र आक्षात्मा,विश्वनीम जात्य, **এ**বনে ভোগাপবর্গ।

५०२ मर्ना

পর্গর

চিত্রকৃট নিকটে বাহিনী অবস্থান। ভরত দেখিতে রামে করিলা প্রস্থান 🛚 दिनिष्ठे छद्र दिनिष्टे असि वृक्तिमछ। আনিতে কহিয়া তাঁরে অশ্বাদি যাবস্ত 🖟 ছিত্রতে ভ্রাভূ সহিতে করিলা গমন। শক্রত্ব পশ্চাতে মন্ত্রী সুমন্ত্র তৎক্ষণ ॥ গ্রীরাম দর্শনে হর্ষ অত্যন্ত তাহার। ভীরতের সম তাহ্র চিত্ত পরিস্কার॥ প্ৰছন্ন অরণ্য বাসী তপশ্বী সকলে। দেখ্যে সুথে যাত্রা পরম কৌশলে 🛭 আলায়েৎ মূগ মহিষ গোময়। শুক চর্ন রাশি২ অ**ন্নি কার্যে**) রয় 🛭 পশ্চাতে পুরুষ বৃষ ভরত প্রধান। অমাজ স্বগন প্রতি কহিলা আখানে ! ভরদাল মুনিরাজ শ্রীমুখে আদেশ। य दमभ स्म तम এই विश्वि मस्मि॥ मुत्र नह्न तह् मिक्छि मन्तरिनी। ফল পুষ্প আদ্র তরু দেখে। অনুমানি ॥ (मर्थ तमा मतमा जुत्रह जग्न भाषा। করিকুলে আস্লে দিয়াছে দন্ত রেখা। লক্ষণ আসিয়া বনে এই তক্ত ঘচে। आठांत्र कतिया खाँग हीत वद्ध तटह ॥

অভিজ্ঞান যুক্ত স্থান বটে উক্ত পথে। যুধেং করিকুল গড়েজ মনোরথে॥ গিরি পার্ষে ক্রীডা হর্ষে করে খেত দন্ত धत्वी धांत्र धांत्र यथा श्रुच्या कछ ॥ পরস্পর বছতর ভাগায় বিক্রম। অধ্যয়নে রত বনে মত মহন্তম ॥ অধ্যাপক সাগ্নিক সকলে করে বাস। অগ্নিধ্যে বন ভূমে ব্যাপিত আকাশ ॥ था। ये अछ महर्षि जनत्व अवि जम। **मिथिव छक्र वर्षमण नव्यमिश्रहाख्य**॥ অনতার মৃহত্তি অতারে রঘ্বীর। উপনীত সুনিশ্চিত মন্দাকিনী তীর 🛭 আমার নিমিত্ত সতা করিতে পালন ! এই বনে অবস্থিত কৌশল্যা জীবন।। বীরাসনে নিউজনে নরেন্দ্র মহামতি। ধিক্মম জীবনে জীবন অবস্থিতি॥ আমার নিমিত্ত তপঃ পরা কাষ্টা ধারী। লোকপাল ভুলা বলী বনবাসাচারী # পরি হরি হরিং সকল কামনা। मर्का जाभारा थिख (मथ मर्का क्षां। ॥ পতিত হইব রাম পদৰশ্বে আমি। সাধনা করিব সীতা সহ সীতাসামী॥ এই কথা পুনঃ২ দশরথ সুত্র कहिराउर मृष्टे भद्रम बाह्यु ॥ পর্ণাল বিশাল সুবিরল বিমল। শাল ভাল করি কর্ণ পলাশে উজ্জ্বল। স্থেত হরিদ্ধে পরিস্কার বেদী। ৰজ্ঞ স্থলে বেমত সাজায় অখ্যেধী 🛚

শক্র ধনুঃ সমধনুর্দয়ে বিভূষিত। মহৎপ্ৰভা ক্ৰম আভা হৈয়ণ্যে চিহ্নিড # ইদিনকর কর সম প্রেখর কিরণ। তণ গত অস্ত্র যত প্রকাশে তপন 🛭 ক্লংবং বিশিখ বদনে ছাগ্লি জ্লো। ভুজকের শোভা যথা ভোগবতী জলে। উত্তম রহাত তেখে বন্ধ অসিদয়। তাহাতে ভূষিত বিরাজিত তদালয় 🛭 विति कुल मलन सलन ममुद्धाला। গুহা স্থিত সিংহ প্রায় প্রদীপ্ত সবল।। পুর্ব্বোত্তর নিম্ন দেশে বেদী দীপ্তিমতী। জলে যজ্ঞ পাবক দীপক প্রায় অতি॥ দিখিলেন রা**জ**পুক্র রাম নিকেতনে। মুহূর্ত্ত আনন্দ চিত্ত শ্রীরাম দর্শনে॥ ভাম রাম জ্বটা গ্রাম বল্কলাদি ধর। উজ্জ্বল কজ্জল প্রভ পাবক প্রথর। मि॰ इ ऋक्ष वाङ् इन्द्र विश्रूण विद्धांत्र। পুগুরীক নয়ন শোভন পরিষ্কার। আসমুক্র করগ্রাহী গোপ্তা পৃথিবীর। धर्माहाही वनहाड़ी **उन्न**हांही धीत ॥ মহাত্মা ধর্মাত্মা মহাশয় মহাশয়। দাক্ষাতে ব্রহ্মণ্য দেব নিরম্ভরোদ্য ॥ मलकान जानकी जामरन उभिविष्टे। ভাসিলেন শোকেতে ভরত করি দৃষ্ট ॥ নিকটে প্রকটে ধান কৈকেয়ী সন্তান। দেখিয়া জীরামে চক্ষে বাষ্পা বহির্যান॥ বহুবিধ বিলাপ বচন গদগদ। धितरा नारतन थिया वाका वाका श्रम ॥ যে বীর হত্তির ক্ষত্ত্বে কভু রম্য রূপে। **সৈত্য পরিবারিত চরিত রাজপথে** । জন্ম ধরাধন্য গণা লোকগণে। বেষ্টিত হইয়া শিষ্ট কথা আলাপনে ॥ বন্থ মৃগ পশুম্গ বেষ্টিত অগ্রজ। বিধাতার মহিমার পার নৃপাক্ষ ॥ यम् मिटन करत योश युद्ध युद्ध क्रम ! সে সহে শরীরে ক্লেশ ধর্ম অন্বেষণ I व्यक्षक मधक्र म्ला क्र म्ला भरता। যে শরীরে দেবিত সেবকে নানা বন্ধে সমল সে নিৰ্মাল নীলাক্তি নিভতর। বিধির এ বিধি নহে বনে বহে ময়ু। महमु२ वङ् मृला वञ्ज हर । আসন ভূষণ যার বিভরণ হয় ॥ সে জন এ বন মধ্যে জটাজিনধারী थ्यमुश्र शृथिवी **उटल वटल**्गास्य वाहि॥ বিবিধ বিচিত্র চিত্র দৃষ্ট সুমনস। শোভে যার শিরোপরি করে সুধারস 🛭 ব্দটা ঘটা ছটা তায় শোভা পায় হায়। আমার নিমিত চিত দৃঃখ পায় । ধিক্২ জীবন ধারণ নিন্দিতের। যাবত ধরণী নিন্দ্য তাবত লোকের॥ এই রূপ বহুরূপ করিয়া বিলাপ। দীন ফীণ মলিন বদন বহুতাপ। গ্রীরামের পাদ পথে হইয়া পতিত। রাজসুত বলচ্যুত বচন রহিত। বাষ্প জ্ঞানে কণ্ঠ স্থলে করে অবরোধ ना गरते वहरन वाका हरता हुछ दाध ॥

ताम मूथ नेकर । नगर न शरण नीत ।

र पार्या हा पार्या वरणा हहेगा प्रवित्र ॥

माज्य तारमत श्रम कित्र । देश वित्र हिठ कित्र गा दिन ॥

प्राप्त हर माया किरण कमण नगन ।

मूहाहेग्रा मूथ प्रका मिणा पाणिकन ॥

श्रम क्रम मह यथा त्रवीन्य क्रम मिणा ॥

व्यानक वन निवामी पानि महे द्राणा ।

नृशाक्ष भर । दिति जीम प्रकारण ॥

कित (ध्यानी उपग्र तमन वन मारक ।

प्राप्त जा हे अक माहे ।

प्राप्त क्रम माया ।

प्राप्त भर्म क्रम हे ।

प्राप्त क्रम मह माया ।

प्राप्त क्रम क्रम क्रम हिलाह विनिर्म ॥

३०७ मर्गड

লঘু ত্রিপদী।

করি পরিষুঙ্গ, চুথি উন্তমান্ত্র,
ভরতে করিয়া কোলে।
জিজ্ঞাদিলা রাম, কহ গুণধাম,
অরণ্য গতি কি ছলে॥
কোথা পিতা তব, হয় অমূভব,
অসম্ভব গতি বনে।
গুরু গুরুতর, বিরহে কাতর,
ভবাস্তর ভাবি মনে॥

নহিলে জীবিত, গুরু গুহু স্থিত, উচিত নহে গমন। চির দিন পর, মুখ শশধর, ভরত করি দর্শন। রাভাত্ব মহতু, পুর জন তত্ত্ব, ভাজিয়া উন্মন্ত প্রায়। भिक महाहत्या, मिन नावत्या, ুষাধীনে কি শোভা পায়। কহ সভা চিত্ত, গমন নিমিত্ত, কায়িক কুশগী তাত। यथमी मुकमी, थफ़ा हम्बन्मी, অশেষ অরি নির্ঘাত। वर जमारायी, हासस्य नाथी, ধর্ম তত্ত্ব জ্ঞাতা ধীর। ব্ৰাহ্মণ বিধান্, স্বধৰ্মী সন্মান, পালন করেন বীর 1 ইক্ষাকু বংশীয়, বস্তু আরাধীয়, উপাধ্যায় গুরুতরে। যথা রীতি ক্রমে,পূজা পূজতমে, আছে অযোধ্যা নগরে ॥ কৌশলা৷ কুশলে, সুমিত্রা সকলে, তপশ্বিনী পতি প্রাণা। (मवी ভृविश)।ठा, क्रक्य पृहिতा, মাতা অদঃখিত মনাঃ॥ কিন্তা তুমি দীন, সহসা মলিন, পিতৃ বিহীন সমান। অথবা রাজঘ, প্রাপণে সামাঘ, यथार्थ व्यर्थ मधान ॥

পিতা জীবদ্যা, এখর্ষ্যে নিরাশা, করিয়া কষ্ট কি পাও। অথবা বিঘান, বহু কুল মান, পুরোহিতে হিতে চাও॥ তোমারি আপদে, গৃহে পদেং, নিতা যুক্ত পুরোহিত। क्रश जशनाम, द्रांत्य थए हाम, रेन्द इम्र ममुहिख। কিম্বা গুরুগণ, পিতৃ তুল্য জন, পিতৃ পিতামহ গণ। বৃদ্ধ তাত মান্ত, ব্ৰাক্ষণে অগণ্য, নমস্কারে আছে মনঃ ৷ কহ কহ তাত,কি হৈল ব্যাঘাত, অ্যবিকার্য্যে পূর্ব্ব রীতে কালেং হোম, তাহে ব্যতিক্রম, ব্রাহ্মণ না করে নীতে॥ অত্রেং বীর, সুধন্বা সুধীর, সর্বা শান্তে সুনিপুণ। কুল উপাধ্যায়, অমাশুতা তায়, প্রকাশি আপন ৪৭ ॥ আপন সমান, অন্তক্ত বিধান, বহুমান পুরঃদর। ব্বিতেন্দ্রিয় বীর, শ্রুতিজ্ঞ সুধীর, ইঙ্গিত বিজ্ঞান তর॥ কৃতজ্ঞ সৃভজ্ঞ, মন্ত্ৰী উপযুক্ত, নিযুক্ত নৃপতি পাশে। মতে তা সবার, মত্রণা সঞ্চার, কর কি তাত নিবাসে।

न्পতি विकाय, यदा म्ल र्य, সুযোগে যতপি রয়। মক্রি পরিবৃত, জানিবে নিশ্চিত, নপতি না হয় কয়॥ ष्यमाण षाकाशी, शर्मा नित्रविध, জ্ঞাতা কর্মবিধি ভাল। त्म मञ्जी निकटि, मचान ना इहारि, त्राख्य द्रहरू डेप्क्रम । নিক্রা বশীভূত, হয়্যে রাজসূত, চেতন ফ্রন্ড কি হয় हां जि भिर ভार्ति, निस्न सर्थ हार्ति, অমুরাগী চিত্ত রয় ৷ নৃপতির ধর্মা, ভাবে নিষ্ণ কর্মা, একাকী নিভত স্থল। পারে বহুজন, মক্রিয়া আপন, বিজ্ঞাপন সুবিরলে । निन्छि मञ्जना, इहेटन हहना, मर्खकना नाहि काति। मिहे कर्मा करना, ना यात्र निष्करन, मकरल मुधर्मा याद्य॥ अर्थत निन्द्य, डाट्स मरहामग्र, মহাজ্ঞানি গণ বাকা। জান জনচ্চতি, সমল প্রকৃতি, আতির সহিত একা অহান্ত আন্থীয়,অতি আরাধীয়, মানিবে জানিবে গুণ। यमि इम्र मूर्थ, तम अधिक मृश्य, এ হেডু লবে সগুণ।

মুর্খ দিশ শত, করিবে বিক্রীত, আনিবে পণ্ডিত জন এক বহুতর, যদি গুণাকর, না কহে মিখ্যা বচন। महमु अङ्गान, यनि द्वारथ मान, সে মান সন্মান নছে। বিজ্ঞান রহিত, অযুত অযুত, যভাপি সহায় রহে ॥ বদি এক জেন, দাতা বিচক্ষণ, অমাত্য মেধাবী ভূর: রাজা রাজসুড, অনুগত পুত, দিতে পারে তিন পুর। मूथा महदकार्म, मधार धार्म. खराना स्थान धन। ভন রাজ ধর্ম, এই রূপে কর্মা, করণে ব্যক্তি যোজন। কুষিকর যত, তব অনুগত, কর্মাবিষ্ট অনুকৃষ দেবতার স্থানে,তড়াগ শোভনে, সেবিত আছে বিপুল : यष्टे नत नादी, यट्शश्मवकाती, সমাজে সেবিত পুর। হুষ্ট প্রগণ, হিংসা বিবর্জন, क्ल इल पृथ्य पूत्र। गाख उस कामि, जोवन विवामी, পরিভাক্ত পুর জন। স্থায়ত বিক্রয়, ব্যবসামী চয়, করে ত ধ্ৰোপার্জন।

যত জনপদ, রহিত বিপদ, করে ত সুখে নিবাস। গোকুল সমন্ত, পালনেতে সুস্, নর নারী হত তাস। কিন্তা বৈশু গণ, ক্লমি গোরকণ, বিষয়ে স্থিত শাসনে। क्षति পরিজাগ, বিষয়ে সুরাগ, ধারণা প্রশংসে জনে ॥ বিষয় নিবাদী, ভূতা অপ্রেয়াদী, স্বধর্মে আছে নিযুক্ত। मार्या गाठीशन, भाषा मर्खकन. রকিতা তব সুযুক্ত। শ্রদা করি স্ত্রীয়ে,অতি প্রশংসিয়ে, रिश्राप्त बहुन मान। কিলা করি বর, ভার রক্ষা কর, ক্রে করে কি সমান ॥ তন্নত দুশন, যত করিগণ. (म वान मण म छष्टे। খভাষ্যায় রতি,কালে নিজাগতি, প্রবোধ কালে প্রহাই ! রজনী অভিমে,অভি পরিশ্রমে, চিন্তা কর কি ধর্মার্থ। সংগ্রাম নীতিজ্ঞ,সেনাপতি বিজ্ঞ, बरूद्रक म यथार्थ। নিজ্ঞ হিতে রহে,দুঃখে দুঃখ সহে, ना कर्ह् अकथा डार । অতিথি ব্রাহ্মণ, কর কি দেবন, না রহে বে ক্লপে আশ।

जनर् कुणन, मह (य नकन, পঞ্জিত মানী অজ্ঞানী মুখ্য মুখ্য শান্ত,খাকিতে মহান্ত, আদ্মীক্ষিকী বিচা জানি ! धानर्थ कथन, कट्ट मर्विकन, কর কি ভার আদর। দর্কোধ দর্মতি,যে করে সমতি, यम मग मिहे नत !! প্রভাত সায়াকে, আসি সর্বে বর্ণে, করে কি নৃপতি সেবা। উন্নত কুঞ্জর, ভুঞ্জে বহুতর, मन चमरछार द्यता । পিতগুণ কর্মে, আছত স্বধর্মে, পিতা মহাদি প্র্যায় অত্তা গোরেবে, বর্তুমান সবে, অমাতা যথার্থ পায় " শ্রেষ্ঠ সন্ধিধানে, অতি শ্রেষ্ঠ জনে , প্রেরিত কর্য়েছ কর্মো ভক্ষণীয় এব্য,ভোজ্ঞ যেবা গব্য, একাকী ভুঞ্জ অধর্ণে 🛭 যত দাসী দাস, তবার প্রয়াস, সমানে করত দান। মতক্ষা গ্রু, তুরক্ম ধ্যু, নিকটে পায় সমান ! শস্ত্র কর্ম জ্ঞানে, বৈছক বিধানে, कर्म एक नुकूणनी। বাহনে নিযুক্ত, ধর্ম ভৃতি ভুক্ত, যুক্ত করেয়ছ সকলি 🛊

श्रकुणण कारी, शर दिख हारी, ভারত প্ররেনারম ताक कर्मकाती,बाता मुनाठाती, ভোমারে পতিত কয়। ত্ৰী জাতি স্বভাব, বহু লাভ ভাব, मकामा मकरम चाड़ । जम्भुर्व जनस्म, हो स धन जाएन, मर्खना सीवरन वाँ रहा कर्च एक बाहा,कर्त्य चार्छ छाहा, व क्रम किছू मा कारन। পণ্ডিত নিপুণ, ৰারা বছগুণ, पष्टीख कीविष्ठ मादन। 🛎 मक्न खन, इस्र कि शीनन, পূর্ব্বাপর রীতি নীতে। 'উপায় কুশল, বৈছা যে সকল, আছমে কি হুরবিতে। প্রভাতর কারী, ভূতা অনাচারী, ঐশ্ব্য আকাজ্যি খুর। লুপতি অবজ্ঞা,করে যে অবিজ্ঞা, তারা কি পরশৈ পুর॥ অতি বলবান্, যোদ্ধা বুদ্ধিমান, বিপ্রল বিক্রম ধারী। যথা পূর্ব্ব পরে, আছেত রৎকারে, হইয়া তবাজাকারী॥ খুজি সভিমান, ধৃষ্ট বলবান্, শুচি কুশীন মুধীর। দক্ষ সেনাপতি, মাস্তমান অতি, क्षांबरन दश्करन दित्र॥

নিয়মিত কালে,প্রদানে সকলে, निश्मक हरेया नान। কাল অভিক্রমে,অভি দঃখ তথে, উৎপত্তি অনর্থ বিধান ॥ করে অপকার, এ হেতু তাহার, বিষয়ে সতর্ক ভাল। বে যে শুদ্ধ ভক্ষা, তব অমুরক্তা, ৱাখেত নিয়ম কাল। যারা বুদ্ধ ছলে,বিসম্বাদ কালে, প্রিয় প্রাণ করে ভাগ। नगर्य नगर्य, दुख चक हर्या, यान तक। असूत्राध ॥ তব জন পদে, যুক্ত দুত পদে, चाह् कि विदान चन। যথা যুক্ত বৃদ্ধী, যাহাতে বিবাদী, क्ति त्रार्श तरह धन ।। विवा मिवानग्र, जीर्थ द्वारन तथ, व्यापनात नम्र मुट्टे । নিযুক্ত সেবায়, যে রহে তথায়, নে বটে দুষ্ট কি শিষ্ট॥ धश्च हत बादत,यांन वांदत वादत. जनक दिनक जय। वास्त्र शक्तमा, श्रीत ब्रह्मामा, (वर्ग करत स्त्र व्यथम । पुर्वत्यात रथ, भव्य मारानम्, नुপতित्र এই कर्म। তুমি নৰা ভূপ, আছু কি এরপ, त्रका कदिया यथर्ष।।

बीत वामहनी, अंटबाशा घलनी, श्रुक श्रुक रमन द्वाम । অভি দঢ় হারা, সভা নাম ধরা, মাতঞ্জুরক বাদ। ব্ৰাক্ষণ ক্ষত্ৰিয়, বৈশু জন ভিন্ন, भूक चीत्र कर्स्म विख: किट्डिभिय क्षेत्र, बटहा दलाहि शन, धनाम नगरांत्रक हैं প্রাসাদ বিস্তর, অবস্কৃত তর, শোভন বিষিধাকার। ध्यश्चर्या व्यायांचा, मूत्र श्रारांचां, রকা কর কি তাহার : ষত নরগণে, অপুর্বা ভূষণে, त्रद्ध कि शृदर्सत आह । শুর্কাক সময়ে, উথান করিছে, নিরীক্ষণ কর তায় 🛭 निवार कर्षा, मध्यूक चरार्ण, রাখিয়া ভোমারে ত্রাস ! কিন্তা কুপথিক,আচরে অধিক, **जब श्रेटन करता दोन ।** एकत क्षेत्रांत, अश्व वंश्वाहात, অভেষণ কর তার। বিহিত দণ্ডিৰে,উৎপাত পণ্ডিং त्राचिर्व श्वर्थाणात्र । मूर्व गावजीव, भूक व्यक्तीय, चीत्र भूत तका कता धम शास्त्र मीता, जात भारा बीता, विकि की रन एक।

यद्य मन्त्रा विक निकास विक. ्र गर्थर यस्त्र कि भटन र दरका मन विशे मटक, तका करत तका काती । আৰু অঞ্চৰিত, হাৰ পরিমিত, অভিতে ছিত কি হয় ৷ जनाता छदमधी श्वम विमर्ग, - Buttite Bermun দেবতা উদ্দেশেরাকাণে বিশেষে. তৃত্তি অন্তাগত কৰে। ংগোদ্ধাগণে ভাম,মিত্রে রাখি মাল, टम वाग खरोख भए । ণাভিত পুছিল, শুৰ্জাত্মা সুধীয়, रुभावृत्ति यति करतः নপতির ভাষা, মহালি মালাছা, তথাপি ছাত বিচাচে। भारत नाहि मृष्टि, यनि इस मृष्टि, अधामन जात साटने। না করিবে কড়ু,যদি পিড় প্রভু, विठाटर फाक रम करन है। করিয়া প্রত্যক্ষ, অভি কর্মা দক্ষ, टोइबुक्डि यमि करता विकास कानिरंश,धन छाडि व्हा. पुक्त मां कतिस्य साहत । बाज कर्मणाती, इत्या मखवाती, मस्तिन भरान वादन ! करहें। लक्षणा 5, पृत्रवेदन आयोधी न करिएन अक्षमार्टन ।

क्षा पर देहरग, सन पूर्शनरम, ्धन अन मुख्य म्ह तथा मधकाती, टेक्टन मधक्षती, कनाड शर्म ना मरह বৃদ্ধ কি বালক, বৈত অধ্যাপক, প্রদানে ভোষ কি ভাবে! मुचिष रठटन, भाग विख्तरन, जिनिध छन विखाद । कर ममकात, अहे क स्नात, গুরু বুদ্ধ তপথিৱে। **(मवछ) अछिथि, शृक्ष विश्व वीथि,** गर्व मिक श्रेड्छित । कार्य करता धर्मा, धर्य बादा कर्मा, কর কি ধন সাধন। क्रेड डेट्स, भाषु मर्ड इस, कोगङा नार्द्धांडन जर्ब काम शर्म, अ जितिश कर्पा, कांशब्द कतित्व को ला भर्म काल जर्ब,कहित्म तम वार्ब, বিভাগ করিবে ভালে 🛚 अभाग भाजक, "विशाम मुविद्ध, इंक्ट राजी जन याता। लुख बुभगरन, जामात भागरन, ल्याहरा करह कि छोता। নিগানিকিডা,কোধ প্রযন্ততা, नीर्च स्क्री-कंप कारण। निज अपनेन, जांगमा परेन, আৰুত পাতক ছালে ৷

क्क हिंखा घर्ष, मन्त्रना कार्नतर्थ. दस् मुखन महिछ। कर्द्धतः मिन्हम्, त्म कर्म मा हम्, **जानित ल नरह ही** है। मञ्जलांगन, बांगरण श्वन, अहे मव महा त्माकः নে দোৰে জগতী,পতি হত রতি, अवटङ ज्यां डि त्यार । बहै क्रभ ब्राम, मूल छन छ। न, किकामि उत्तरक इरम। शहत विकायत, कतिमा छेखत, किरक्त्री मुख कोण्या নুণতি পিতার, দেহান্তর আর. তোমারি শোচনে মৃত। ভোমারি সারবে, ইক্ষ দর্শনে, তাজিয়া স্থান,ভূত। তোমাতে আমজ, সকলে বিহত্তা, িলে মক্তি নহে বারণ। ट्यायाटक विश्वीम,कव म्लाटक मीन, रेहारे मृज्य काइन । ভরত কথন, করিয়া একণ, क्रमक यत्न गर्। পিতৃ সভা মৃতি,করো রযুপতি, मीतव रूछ विवर् । त्वन विन्यु धहा, विक मर्ग माता, क्रांच मध्मर्ग छोए। বিজ্ঞান ভাষ, এবংশ বিনাশ, जारमन छ। यम गरिए॥

३०८ अर्घाः।

প্রাত ৷

ভরতে আখান করি অনিকোর প্রতিঃ আকে লয়ে। মন্তক চুফিলা মহামতি॥ পদ তলে পতিত ভরত গুণবান। भीन बांद्या बाष्ट्रा हरण केंद्राच दुनान ! कृषि ये विनिद्य अहि ठाई कि मुनाई। कह दम गमन कातन कर्ट्ड शाहे ॥ धीत वाम निक्रवाम विक्रवाम द्रीत । কি হেতৃহ কহ ধর জটাজিন व निभिन्त अ स्मरण चाहरण करियत ! हां छ नुष् अतिहति कहित्त सद्द । युक्ति मह हाम डेकि डेकि मान्न शहर । महाचा देकरकती मुख कहिना काछतः : आञ्चलि भूर्यत्व भरता जीतां पत्र, कद्र কহিছেন ক্লপণের প্রায় সকাতর 🛭 करता तांका भेतिकांच कर्य मूल्कतः। গত স্বৰ্গ বন্ধুবৰ্গ স্ক্ৰন বিভার। পুত্ৰ শোকে অভিভূত পীড়িত নৃপতি: मुद्री नाती युक्तिधाती हरण इस गणि॥ হয়ে। রাজ্য কাম। কর্ম অনুপম করে। मह्द्रभाभ भतिषाभ मध्यादाणि हरत ॥ तांक कवा (शरहा कब्र देवश्वा द्यमा। नतरक नियाम रणारक क्यभाव घरेन।

তার মৃত অভিভূত পীপে ভংগাম। a श्रमारम मुश्रमारम महिमा श्रकाण ह इट्रेंट अनम इस भरगाना मन्ती। अधिकिक इत्त क्रोडियन अनिश्ति॥ হত পতি প্রকৃতি সম্থ মাড় বর্গে। कतिहर शासन यथा भगवान प्राप्ति ভোমার নিকটে বাস সর্স্থ বাসাধিক। শুপ্রসর হও প্রভু কি কণ অধিক ; প্ৰসাপত যুক্তি যুক্ত উপযুক্ত কৰ্ম : राष्ट्र (पोट्या **मुख्य** थी **लाग एक) व धर्मा** ह হত পতি হয়ে৷ ক্ষিতি রঘপতি পেয়ে৷ ৷ विभवा मध्या कर साम पूर्व (६८॥) नियाल उज्युक्त भागि दिरीस 'यमन। শারদ সময় নিশি নতে মুশোভিন । ভাত এথ সচিব সমহ সহকারে। नड भिरत शरम यदि मापि शेरहर॥ ভা हা निधा গোষা জীবি অবশু পালিত। প্রাসত্ব হুইতে প্রাম্ভু অভান্ত উচিত ! বিশেষে পিতার প্রিয় অতি প্রকাতম । মন্ত্রি বর্গ এতি প্রীতি গোঞ্চ রঘত্তম ই অভিক্রম করেনে আপনি নহ শক্ত। অধিক কি কব প্ৰভু আমি প্ৰভু ভক্ত গ এই কথা কহিয়া কৈকেয়ী কুলধর। मक्त महत्म श्रीम गठ करणरत । পীড়িতাল মাতক যেমন মুখ্যু ছঃ। নিশ্বাস প্রাম্ ভাগ মন্তাপ বহু ॥ त्महे क्रम **यक्ष**ण विक्रण मरहास्त्र । व्यानिस्न कहिया करहन अध्यत् 👢

সংশ্রুণীর তুমি সভা সম্পন্ন মুদ্র। ভেজকী চরিত ব্রত রঘ্বংশ বীর। রাজ্ঞ হেতৃ ধর্ম সেতৃ করিয়া লব্দন। दिवा क्रत दिन शोल भग सम खन । না দেখি ভোমাতে গাপ জেশ নাত্ৰ শেষ: দেখি নাতি কৈকেয়ীর কোন পাপ লেশ না কর না কর নিলা কৈকেয়ীর প্রতি। ধর্মজ্ঞ পিডার তল্য গৌরবে স্সতি। ममल समरी मम श्रीहरवर प्रिम আমার নিকটে তাঁর নিশা কর ভূমি ৷ গৰ্মশীল সদাচাহী জনক যেমন। উভয়ের ঐক্য বাকো সেবা করি বন 🛭 গছ রাম গহনে এ দৃজনের উক্তি। म वहन, कहन अख्रश नाह मुक्ति। সর্বাহ্যন সমত সংক্রত অশেধ্যায়। তোমার প্রাপ্তব্য রাখ কি কর্ত্তব্য তায়। बक्क वाम धर्खवा वखवा वस मिट्ना ! ্বিভাগ বিশেষ রূপ পিতার আদেশে। সর্ব্ধ লোক বিদিত সে আমার সমত। আদেশ করিয়া দশরও স্থগাত ৷ त्महै (म अभाग होक हो एक क रहन। स्याक शक्र वंदि**रंग**न शीतर दालन ॥ নিত দম্ভ দহা ভোগ সেই দে উচিত। ভুক্ত ভৌগী রাজ্য আগী নাইয় বিহিত। मकाबी धर्तनी योगी क्रुट व्य क्षणांव : गहाक्षांक महाक्रक महद आधान। আপন উৎপদ্ধ ধন ছায়া পুত্ৰ গণে। त्यामा कतिरव मान **क्वा** निवाहरन ।

আসরা আপন যশঃ করিয়া প্রকাশ। শুরু বাক্য গ্রাম করি করিব নিবাস। ভার্য্যা পুত্র শিষ্য এ অবশু আজাকারী। কিবা ভায় রাজ্ঞ ভোগ কিবা বনাচারী দ তুমি হয়ে চীরবাস জটাজিন ধর। जयन। जटराधा। तांद्य हट्या तांदक बंद চত্দিশ বৎসর মৎসর পরিভাগে : আমার দওকারণ্য আ্রামানুরাগ্ন 🛚 পিতৃদন্ত উপভোগ করিব কাননে। যে কথা কহিলা পিডা ধর্মা নিরূপণে 🛭 সূর সম প্রভাতম তার মনোনীত। मिहे म आभात भटक भत्रम विहिछ ॥ নিভা ধর্মা পিড় কর্ম দেই অডি গ্রাছ 🗓 क्र**ार्थार वदमद्धां अर्था अर्था अर्था**रा । অযোধায় নাম প্রশ্ন পঞ্চাধিক শত। দর্গ দাক সংক্রথায় সুধীর স্বয়ত 🕫

५०७ मध्य

ত্রিপদী।

প্রীরামের বাক্য শুনি, ভরত, কহেন বাণী,
ধর্ম হীনে রাজ বৃত্ত হবে।
আছে এই পৃর্বাপর, রাজা জেই ধর্মধর,
কনিষ্ঠে কেমনে শোডা পাবে।
চল শীজ অবৈধ্যায়, পুনমৃদ্ধ জনতায়,

আপনায়ে করহ সেচন।
তুনি রাম কুলা এয়,দেব তুলা জান হয়,
কে বলে মাকুৰ মহাজন।

अशोत्व कर्मा शांत, धर्म व्यर्थ महकात, তুমি লোক পতি লোকাভীত। चामिल दान मडागी, निष् मण करता আছ,পুৰাইতে পূৰ্ব্ব ধৰ্ম বীত। আমি মাতামহ স্থানে,তোমার অথর্ডমানে, হতিবিজ্ঞ নেত্র জ্বলে,কিছুকাল ভূমিতকে মুর্গ গত আবাদের পিত। তোমার প্রস্থান মাত্র, শোকে অভিভূত গাত হা রাম হা লক্ষ্ণ হা দীত। লোকান্তর গড় পরে,বার্জা গিয়া দিল চরের আগ্ৰামন হৈত বধা আত! लेकिन श्रूकर वासि, व्यक्त प्रश्र वाश, রাল অন্য পিতা অভিত্ত । बद्रष्ट् छेत्रक मान, श्लिष्ट् द्वश्च मर्माधान, আমি পূর্বে শক্তম সহিত। करताष्ट्रि ऐहक किया, आश्रमि महेश शिया। কর বারি দান যথা রীভ। कृति अधि शिष्ठज्ञ, बण्यसम् संगवह, ত্ত কলে সভোষ নৃণতি। পিতার মরণ যুক্ত,বাকা অতি উপযুক্ত, অচেতন অখিলের গতি যুক হলে মঘবান, নিকেপিত বজাবাণ, ততোধিক ভরতের উক্তি। অভিদূত শক্রতণ, যোগী যথা হতক্ষপ, निर्श्व न। इस श्राक्ति । ভরতের বাহু ধরি, রোদন করিয়া হরি, পত্তিত পৃথিবী তলোপকে। रमम श्रीमाञ्च छक्र, श्रेत्र छ्वरम छक्र, भक्ष करता शर्फ श्रतालदा ।

পতিত অগতীনাথ, বেমন কুঞ্জর পাত, মৃপ্ত নদী কুল নিপাতনে। त्महेक्कल तथुवद्य, माकारक मर्जन लहत. (हामन क्रारा खांक्शरन। - भः को जक ब्रोग श्रेनकी व क्रम नगरन साहि,क्रमण करत निसंहि. रङ् लोक वहन विखांत्र। কভিলেন ভাতেবে, ধর্মকুজ মধ্যরে, भ्रमक जीतामण्या शहत। কি করিত অবোধায়,ডাত স্বর্গতি তাস मद्र लिंड विहीन मभद्र ॥ टक कतिरा मध्यन, मूल बारह व्यक्तमंन, भागम नगरी सम भूती। निर्मात लामात लारक. समाप्ति पर्म ल्लाक, मम श्रंश कश्रक्त पुरी। कि जित्व धमध्कति,न। करति शिकृ मध्-কার, কেব। ছার আমার সমান। ভয়ত সুসিদ্ধ ধাৰ্যা,সভাতৃক প্ৰেতকাৰ্যা अध्य निम मृत्य सम होन । क्षतांन विहीनां भूती, कि आहर जारह मा-धुती,मा सांव मा याव रमने द्राटन ! मनार्गात वनवाम, छ्यांशि जान निर्याम, बांकि मेम ह भूमण अशारण ণিতাগত লোকান্তরে, কে বাসনা বিক करत्र,शूर्वर तम माछि कथाणारम। (महे नव ज्यम्त, वारका मम कर्नश्रव, शृहाहेशा बिख्य मछोदल ॥

भीकाद्य किंगा तथ्यनि। পূৰ্ণচন্দ্ৰ নিভাননে, দীড়া সম্ভ প্ৰায়ৰে. श्विरण कि सुधार्श रंगनि। ভোমার খহুর মৃত, পিতৃহীন ভাতৃরুড, অনাথ জাকার সর্বজনে : ভারত করিল জ্ঞাত, ধরাধীশ স্বর্গ গত. অপ্রমিত দঃখ অনুসাণে । খণ্ডর মৃত সংখাদ, প্রবণে অতি বিখাদ, **डिख! इत्या समक मिम्मी।** পরিপূর্ণা নেত্র অংশ,দুর দৃষ্টি নাহি চলে, न शर्भ साहार विस्मी। अक्यांत भग भारक, त्रयुक्ण यत तारक, कहिएक्न मूखन खन्छ। পিতৃ কার্য্যে উখ্যুন সমত। क्रमंक উक्त्या मीह, कहा माम अपवीह, স্থির কর চিক্ত নর শ্রেপ্ট। अनमान निग्नाष्ट्रि यत्पष्टे । करारात वाणिकन, कतिया औद्रप्रम, लक्षरवहत कहिरलम योगी। আখালিয়া জানকীরে,বকোভালে চকু नीरम, श्रांन का है जन्मन मुख्यानी ॥ देशू म निश्वाक कन, हीत देश स्विमान, क्षमरकत क्षण किया १८व। करब भीषा धनवषी, गमन करून मधी, আপনি পশ্চাৰভাগে রবে !

अहे कवा नटहानटत,विटमंग कालन शरत, शरत व्यामियांत उथा,कवकि मृश्यत कला, বিধান্তার নিদারণা গতি। রাম বাকা শুভমাত্র, সুমিত্রাসূত সুপাত্র, कां हरदम स्था जरूमित। मुम्ब मुम्बिदह, माखाहरहा ह्रप्तह, শাস্ত দান্ত দৃঢ় ভক্তিমান। নৃপসুত গণসঞ্জে, মন্দাকিনী কুল ভঙ্গে, दमनार्थ कडिना धारान। प्रवृत्ती मुजीर्थ वहा, मनाकिनी भूवालहा, রম্বীয়া ভুবন রঞ্জনী। নানা পুষ্প প্রস্ফুটিত, তরকুল সমন্বিত, पुक्रण निकान अमाधिनी व জতি সুশীতল জলা,ওভাগুদ্ধা সুবিমনা, সমদেশে ক<u>রি</u>য়া গমন। আখাদ করি রাঘরে,পরে তাতৃগণ দবে, নৃগতি উদ্দেশে নীর,প্রদানে দকলে ব্রি, **इटक नीत अधनु नुद**न । করে)রাম কুডাঞ্লি,নিয়া গ্রন্থা জলাঞ্জলি, स्या मूर्य पुर्ध नन कन ! किश्वित्र व्यव्याधात्र,व्यामि मञ्जूष महात्र, जन्मन तक वहन, अहे छात्र महास्रम, एव (र्षु क्षमञ्ज विश्वा। यम मल बहे भीत, लिज्दलाटक इरहा चित्र, इस्क तायर आदास्ता क्रमान विधिमाल, भारत छीत्र कोम शाल, शिवमारन क्षावर्क उरकरन । ्नांतात्रन छीर्बद्रलु, मर्खामरन क्विमरण, माग करका तम लिखनान। देखन एक वसत, शिष्ठाक मुखित्र कत, भड़म औरम পরিমাণ।

নপতি কর ভোক্ষা,প্রীত হও হেরাক্ষন, যদশ্যে আমরা একবো ! যদলে পুরুষ হিড, ডদলে দেবডা প্রীড. এই বাক্য শ্রুত মুদিগরে 🖟 क्रे ब्राल शिखमिया, शात शिति चाहा-হিয়া,পুর্ম পথে করিখা প্রস্থান পত्तितं कृष्टीत घारत, व्यक्तिया ताचन शहतः लेशनी**ड खबिन जो**शांन । ধুরিরা লক্ষাণ ভুষ্ণে, ভরতের করান্সু ছে ভুত্তার শোকে রণ্বীর। हान्त्रत करतन व्यक्ति,भरम वाश्वा वसूमकी वियानामि हरेग अस्ति। শক্র ভরত সহ, নৃপতি বর বিরহ, जिस त्मक देवतमही व्यवहा। (दोहान करत (दोनन,मार्याक मरेगस्थर्गन भक्त समाजि कुछता । शक्तिनानी दनवानी, मकरण निकार जानि श्रीतांश निवास्त अक वाला। व्यद्यांभात आंगिनन, हित्रवित्र एक त्रापन, স্বনে পরিপূর্ণ সর্ব্ব আশা। हित्रश्रवानि शमान, यथा शतिकन करन, ঈক্ষণেতে অভ্যন্ত কাড্যা मिवादा जाकृशत, उपिक्ठ महे वरन ছরান্থিত দুঃশিত অন্তর । বহুবিধ রূথে গচ্ছে,কেছ অত্যে পদবক্ষে, শিবিকায় করিলা গ্রন कछर शुक्रुगांत, नट्ट मध् पुश्ये गांत, **अम्बद्ध हरण मर्ज्य**न ॥

সেই বে পাদাৰ ভূমি,বহু যান রথ নেমি, শব্দে দৰ্ম্ব ভূমি প্ৰকল্পিত। মেছের গমনে যথা শক্তে স্বর্গ ভূমি তথা, সেই শব্দে পর্বেত কম্পিত। করেণ চরণ রেণ, উত্থানে ব্যাবৃত বেণ. প্রতি বনে প্রতিধনি তায়। दताङ् वाकुल म्या, महिष शोकर्व मभ, धन्य गंखांत साध्य शहर ह বাজন্ত বনচর, ধার পশু পরিকর. বিক্রত বদনে সিংহ চলে। चान्छ प्रभावत, हरल इरम कांत्रक्र, त्रवाञ्च मांकुार् वसक्रम ॥ কাতর ক্রৌঞ্চ কোকিল স্থির ভূষ্য মেঘা নিল, বিত্তক বিগণে নভঃস্থল ॥ ধরণী মত্যারতা, বিমান খগ সন্ধীতা, राष्ट्रा शूर्व नग्रम मक्का भमक मृथ्यिक करण, मरखार्यन करनर, পরিজনে সজনে জনেশ। नक्दान मृष्ट्यान मन, छारत मर्स्य हम्कंग, সমন্ত্ৰম বিশেষ বিশেষ। ख्यांक द्वांत्रन श्रेत्रा, महाका भटनत थात्।. क्षणधांता नटर नियातन। গিরি ওহা ভেদ করি,রোদন করিল করী. चर्म चन ना इस शहन ! प्रशास्त्रवनारम वंशां मण मिन कण्ण उथा, নগভির উদক প্রদানে। अङ् मृत्र ध्यायिङ, मार्भ हाम कथाम्छ, শ্রবণে নিতার ত্রিভুখনে ।

५०७ मर्गः।

প্রার (

ध्यशांति दनिष्ठ विनिष्टे सुमिताक। পশ্চাতে নৃপতি দারা **নকলে** বিরাজ। अভिनाय क्षीताय प्रभूति कति हता। রাঞ্পরী গতি শোভা মন্দাকিনী জলে। শ্রিমান লক্ষণ সুসেবিত তীর্থ স্থান। ৱাল পানী গৰে শোভা দেখে। যান। बाल्न स्टाम गतिल्ली कोमना उपन । एक पूनी मुनिजां क कहिया वहन ॥ অপরং বত রালপত্রী গণে। দেখা সকলে কি সেজ্বেছে লক্ষণে ! क्षे चान करेट बरेग! गमा वाति। अटिफिन यात्र यथा ताम कां**ने**।शांती ॥ এ যোর নিজ্জন বন মূপ নানা জাতি ৷ করিছে দুক্ষর কর্ম তোমার সন্ততি। ছেন্ঠ প্রতি গড়িশর দেশ অনুরাগ। ত্রী বংশ যে পুরের নৃপ করে পরিভাগ ॥ क्ष भती व भूख ताम ध्राप्त भानि । भार्याम बाष्ट्र शेष भरातेगाधानी । हारा शींजा शिष्टमंक मुहिला कमला। ক্ৰান্ত সহ কাৰ্টেন লংছিতা কুলবালা। निजात जारम**्य पूर्व त्माय मीन शा**त्र । र्राप्त कर्ष्ट कृष्टी इस्स्रा मर्सन्। रमवास ।

এই রূপ আলাপ বিলাপ বছবিধা। को भना कमारन स्य तितिवत विधा ॥ अवात, देश मिलन निष्ठां के अविक পুলিনে পিঞ্ছৰ্শনে ক্লমানা সভী। উপহার পিতার উদ্দেশে দক্ত কল। ভর্ত্তার আহার ভাবি দৃঃবে চক্ষে হলে ! কৌশল্যা প্রমুখা যত দশরথ দারা। **এहे कथा क**हिया कम्मन भन्ना जाँहा ह এই দেখ नेकाकू नार्थत ट्रांश एन। পিগু নিৰ্মাপৰ কুশ প্ৰভৃতি সকল। মহাত্মা মহেন্দ্র ডুক্ত ভোগের ভোজন। যে রূপ ঐত্বর্থ ডাক্টে নহে দুশোভন ৷ চতুর্বর্ব ধারিণী ধরণী করে। ভোগ। त्म मही महत्र बाद्र क्ष क्ष श्रेना त्यां । কি হ্লপে বসুহাধিপে হইল পোহন। ইঙ্গাদ পিঞাক ফল অরণ্যে ভোজন। ইহার অধিক আছে কিবা দুঃখ তর। তপষির প্রায় ক্ষমে তৃপ্ত রঘ্বর ॥ वर्श्यक्त ताथ मख सिट्या सिर् भीर्व । नर्म्या नाहि रम क्षम् दिनीर्ग । আছে হৃতি গুণবতী সুমিত্রে গো তাই। धरहा चाडि जीवन असरबा बाह्र नारे ॥ যদৰ পুরুষ হয় তদর দেবতা। কুঃ নহে কিতি আর কি আছে ক্ষমতা। এই রপ বছরপ করিয়া ভাবনা। क्षीव्राटमव व्याखाटम ठिलामा नृशीवना । শীজগতি নৃপতি যুবতীগণ গিয়া। रम्बिरमन ग्रामहज्य जालारम विशेषा

পুরন্দর পুর চ্যুত অমর প্রবর। সেই দ্ধপ শোভাষিত রখ্বংশ হর। ट्यांश मात्र पृथ्यांच मृमच खरीवत । নিরীকণে মাতৃগণে **অত্যন্ত কা**তর। অব্দধারা নয়নে ভ্রিস তারাগণ। সীডাম্বিভা ভাপিতা শোকামি সন্তাপন il পারোখান প্রবংক অপুর্ব ওণধর। মাত্রগণ পাদে ধরি হইলা কাতর। वया द्रीष्ठि श्रृप्तंदक लहेहा श्रम्भ्रल । মুখল্পৰ্ল হৰ্ষ চিত্ত অতি কুতুহলী। রামের মন্তব্যজ্ঞান লয়ে। তাঁরা। त्तामन कतिका एक समात्रभहोता ॥ লাম্মন অপর ফানে চরণ বন্দিলা। মাতৃষ্ণ পদরেণু ততু সংখ্যরিলা 🛭 আশীব্রাদ বিষাদ গণ্ডন খুছো দেখি। भाएछद माखाईमा भारस भासमूबी। **प्रमामान शाळ जानि विहास मृहिस्त ।** माञ्जन कविना पृष्टे तथवरण वीदि । शकारक कानकी सारी मत प्रकारन অপ্নিয়া পঞ্মমুখী পতিতা চরব্ধ। व्यवसूरी कानकी उथान कति शरत। ষক্ষ মধ্যে অবস্থিত। অভ্যন্ত কাতরে। অদদী কন্তায় ক্রোডে করিয়া ধেমন। श्राणित्रन करता ब्रांखी कहिला वहन यमंशम क्रमाणी गरीमा कुतकिनी। मणत्थ तांकावध् विस्तर गणिनी। खुटमर् वातिनी जामश्की मुर्भवटम ! मीडा विज्ञानिका मडी दर्छ প्रिकटन ॥

मिश्री (डॉमॉर मूर्य मुलब लिक्सी)। व्याज्य के इक्षा बबा कि नारए शक्तिकी र পরিমান ফাঞ্চল বেমল ধলিবোরে) जिवरम हथाया द्यांस विश्व कृतारत ॥ শোকানি সন্তাপে দেহ দহিছে আমার দ আহণা অনল প্রায় কি কছির স্থার 🖟 নির্জালে যেমন জ্বলে প্রস্তুম পঞ্চল। 👉 ততোদিক সৃদৃঃখিত ভরত অগ্রন্ত। करे जग दार्खीय ध्ववृद्धी राज्यतानी। পুরোহিত বশিঠ বিশিপ্ট মানী জানী। প্রধন্ত বিনয়ে পদম্বরে ধরে। ভাবে ব माग मय मनी मनतरशत कुमात ॥ दुर्ग्नुहि श्रेडि हेक रव कर्ण मखन । मिहे केल मुरक्षे शृंका कहिना नांपन । श्रुदेश हिन्छ महित्व विमिना ,नष्वीत । মন্ত্রিগণ দহকারে ভরত স্থীর 🔑 दश्याम अधान वाहिनी (अह याता। महत्यादर दवेशेन कहिया ब्रह्म फोड़ा । লেহ ভাবে ওছ্ গ**লে করি সমুব্রিস**া। उहिला किरकती मुख हरा। प्रोप्तमान । সমান তপথী বেশ মীতি শাস্ত্র ধর। क्रमश्च विनम श्रिक्षाचिक करमदर । कुकाञ्चल स्रेश कंद्रणामस जलू। প্রজাপতি অগ্রে যথা ইক্র শশী ভারু ৷ व्यविद्या व्यथान शुक्रण लोगधन। स्रावरण माध्युल गृमाषु वहस्य। ৰবাৰ্থ তত্ত্বৰ ভেঁষ্ট তত্ত্বাদি বিজ্ঞাত। পরম কৌশল কৌতুহল তাহে কত !

লাভ এড লাভ বির কোশব্যা সন্তান।
কাজন ব্রিড তার শক্তর প্রধান।
বার্দ্ধক ব্রিড তার শক্তর সৃত্র।
চতুরা হৈ অবতীর রন্ত্রংশ বীর।
আলানে বিলালে রার স্কল্ সমাজে।
কাজ্যের যথা অমি স্বিমধ্যে লাভে।
আবোধারে সপ্তাধিক দর্গ শত তম।
চশর্থ পিডাভরে মাতৃ সমাগ্য।
১০৭ দর্গা।

ত্রিপদী। क्षक्रिंगि मिक्छि, उपिष्टे हारम उट्हें, ধার্মিক ভরত ধর্মবাণী ঃ खेरारम हिलाय खामि, त्वकारल स्नानिटव चौमि, मम एक् मांजा हाळतांनी कतिम मासन शाम, क्या भगा निश छान, সে পাপ খণ্ডন কর তুমি। व्यानि वस धर्म वरके लानी वथा उत्रहरू, मक्रांशा जिल्ला कि में क्षित्र ेरिट्भर क्लकातिनी, यर्जाल मम कमनी, আমি দশরণ অঙ্গ জাত। তক কর্ম অবিরত,শাসনে হল্যে বিরত, विटमास्ट शक्षार्थ काड । जाज् विश्वहिंख कर्मा, ब नट्ट थानात पर्मा, পিতৃ কৰা জৰান্ত নিশিত। खर जिन्नावान दुकाराचा याच नुमम्क, न्ड शृक्ष वित्यव दिन्छ।

निल कहा नाहि योश, अकरन रहरे धाकतान यात्र विदूध नगासा नजूरा निम्पिष्ठ सम्म, भारमार्थ हीन धर्म, मुश्कित स्टब्स महि मारक। हमती निविख (हर्ष्ट्रे, धर्मावान धर्मास्ट्रे, कुला आहे श्रेड्ड किला वन। করি তার অতুমান,হরে পুরুষের জান, মৃত্যুকালে বলে সর্বন্ধন । বিপরীত কর্মে গতি, মৃত্যু পূর্বের ভ্রষ্টমতি, कॉर्रोकार्या व्योध माहि उग्र। कालकाश रेक्टन सन,करत मृह आंहतन, हैह लांक मिना मगुमग्र । নৃপতি ধর্ম স্বরূপ, ভারে কর্ম এই রূপ, व्यक्ति भिक्त हुईम श्राचक । (ममुबी नत्याह करल, এই कांग दलवर ए, सर्भ हीन ज्ञस्ति ज्ञस्ता । পিডার সে মডিঅন, হরং রভ্তথ, তুমি ৰোগ্য তাঁহার তনম। शिष् कर्ष करत माधू, माधू**षा**स जारत नाथ, नर्वरनादक नर्व स्टन क्या मिरे कूटन गुमछान, य हार्य कूटलह मान, त्यहें भूरक शिंठा श्रुक्तवान । तारे मुमलान कृति, सनाकत श्राकृति, भूकी भारत बढ़ भहिजान। गापुत्रन अथ खड़े, बनवारम नित्रा त्याहे, महाकृष्टे खाल लालक्षि। रक्क्षी अननी सम्, इव त्यारी नदशख्य, ভারে ত্রান কর শীমগুড়ি।

भूदम राष्ट्रय जन, भूत जन शतिक्रम, সকলের কর পরিত্রাণ। मकाउत्र क्यांवर्ग-भारत मुक्ति निया वर्ग-द्रांचेर सकत्मद्र यामे। কোখাৰা ক্ষরিয় রাজ কোখা বাস বনমার काथा करें। वक्कश शहर ! এই বিপরীত কর্মা, একি রাম ক্ষত্র ধর্মা, উপযক্ত তোমার করণ 🛚 ক্ষত্রিয়ের অভিনব, এই ধর্মা হে রাঘব, বৌৰৱাজ্যে আত্মান্তিষ্টেন ! अञ्दार्श तिश्रका, मुशांगाने असाठम, রাখিলেই থাকিবে শোভন প্রতাকের পরিতাগ,সংশয়ের অনুরাগ, कि इंदेर्प शरत कि निन्ध्यः প্রাপ্ত রাজ্য পরিহার, এত নহে সদাচার, ক্লেশকর ধর্মের আশ্রয়। विश्व जामि हाहि वर्ग, जिश्महन शहिल्लं, अञ्चानन भागनामि भरत । कतिया पृथ्य श्रीकांत, शतः नर्स शतिहात, वनगामी छश्या जाहरत । चात्रम (य ठकुट्टेम,कार्त मध्या (अह व्हा. धुराध्य अमग्रत करर धर्माका मिशन बाबी, कृषि नर्स धर्म आनि, जलत देव छ उमान, हहरत हाटक अवाल, व्यनामत छेलेतुक नाह् ॥ युक्ति खोने बाह्य खना, एडागाह बाहात कथा, नक्ल विस्त्य काथि शैम

कि क्षेत्रारत रहेत विभाग

हीन तुक्ति होंग छव, भिन्न कर्द्य अनिश्रंत, हीन साम हीन माम वाम । टामान विहीन इता, छिलाई ल जुर्ब हरशा,कांगरन अञ्चानकात्री मान॥ এই যে অধিল রাজ্ঞ,অকণীকে পিডভোজা, অপ্রমাদে বিত সর্বকাল। (महे ब्रांट्स महाताम, धर्म कर वासन मातः, भाग खडा रहेगा कुभाग । कृषि द्रोम धन मिक्नू, उनिहरू नर्स वक्कू, এই ছাবে गांतीशन विका তোমার অভিবেচন, কর্মে ব্রতী সর্বস্থন, সেচন করণে উপনীত। প্রোহিত পুরাহিত,বশির সদগুণান্তিত, উপস্থিত মন্ত্রান বিজ্ঞ। व्यविधा शीवारन हल, व्यक्त नासा मह হল,পাল প্রভু পূর্বারাত নিজ। वाश्रान महकादत, विस्त्री हट्या मश्मादत, पुत्र पूरत स्था आवंखन । ঞ্ব তিন পরিশোধ, কর রাম অনুরোধ, राथ त्कांश शिक्षमा भवना । गुरुन सन एर्थन, नाष्ठिक बाक्रन, शकाशन भागम मध्यम्। त्राम होटक अम् अपन । मना यम दव जंकन, क किया धता महाने हैं। क्रिकिरंग कतिरव श्रदान । मर्च दुवि चुनीवत, क्यांकि चुनीवत कह, जानात मांब्रोत त्न तं जनमूक करता क्या मुच् कर श्रम धारामा ভোষার শিতার পাপ,নিমিত দারণ তাপা, ধর্ম পথি দাশর্থি কয়ক লোচন। অভ তার করহ সংহার। विश्वतः कतिक वर्षा अख्रिक वा कवर्षा, ্অধিরাক্ত কর্ত্তবা ভোমার। বে রাজা উত্তম বজে,মহাবজে ব্যৱহাতে, े धनागर। करत जुलानक। म्बर्भ शाम चामी, खामात्र हत्त আমি, নতশিরা করি সুযাচন । गरण वांकर गारक तांग कर गुरितारक, नर्छाय सक्न देखुश्रत। महरूद वश्रि रन, क्रिक्ट कृषि श्रम, वां बात शक्षा प्रत गरन। क्षविक संगिध रेकी, विकाशन सर्वानकी, 'স্ভ দুত স্কু**লে স**ন্তোৰ। मगडव डॉबडानी, खनिया छड़छ वानी, राष्ट्रा क्वांकृषे महा त्याय ॥ फतरक खनारमा शहत खतात्रदक्ष त्रवृत्त, नवीमदत कट्योधा शमता। मान जरही खत्र गछ, मर्ग मापूनर्ग यड, ভয়তোজি শুনিৰে অবংগ। ३०५ मर्श्र ।

মুক্তি যুক্ত ভরতোক্ত প্রবাদে প্রিরাম भाजियन गृत मट्या च्छि छन्याम ॥

ভরতেরে কৃথিকেল সকল বচন । অনীয়র কাষকর আত্মার অকৈ ব্যা ইতততো ভরত ভ্রমণ মাত্র কার্য। ক্তভান্ত নিজ্ঞ করে আকর্ষণ क्यांख भर्गछ वह तम् निक्रभन। গতনান্ত উচ্চতা দে বুধা অহস্কার। नः योग विद्यांग मीमा खीवन वाहात ॥ यवनीख कटनांबन्न क्या इस शहत। शंक कम यथा मृङ्ग अब नाहि कात **এই ज्ञश कांछ नज करभवंद्र शांती** : मत्त रहेरा उप वस्ता कि जाती। উচ্চ शृंह गुजा स्मृह ककि मृह्छत जीर्न हरता जननीर्न हत्र अक्टलता धरे क्रथ मृद्धा श्रीट्रण वक्त स्ट्या नह मिर क्रम खरमक हम कामदत। नक्षिर हरक हरक मृङ्ग नरक गंग्रः। पूर्व शद्य विशे श्रूमः निवर्द्धमः शास्त्र ॥ অহোরাত্র বর্ত্তমান সকলের প্রতি। আয়ঃ ক্ষম করে আশু অপকারী অভি। शीशकात्य रामन एकाम मरहावतः। সেই রূপ ফাল ধর্মে নালে কলেবর 🏾 আপনার শোচন আপনি কর ভাতা। অভের শেলিনা কেন কেবা কার ধাতা। যে বুৰি মংক্রিক ইতব্তঃ গভায়াত। **भारू कर रह किए लाइत** ताराउ। शास्त्र विण हम् कारण स्माठ भिरहात्रह कराज्यक कीर्न किरण सूत्री अन कर ।

এই বে আদিত নিতা হৈতেতে উদয়। প্রতি দিন অন্তগত সর্বে দ্রু হয় । এই त्रंश क्षेत्रि मिन कतिया प्रभंत। मा कारम खरवीर मह खालम बहुन ! ज्य क्षे नगरम क्रिकान करह करा। मिथिश जुनर मन जानकी जकन । मिहे कड़ शतियाई विश्व मिक्सी। না জানে প্রানির প্রান করিতেতে কর । রসহীন তরুচর সমুদ্রের ভাগে। कक रगार्ग रेमवरयारंश अर विश्व अकरण **क्षानांखरत मर्द्यांग विद्यांग शरत एग्र**ा त्म हे क्रेश ভार्या। शुक्र धनामि मासम । निकटि थाकिश श्रेनः इत्र वावशान । তাহার নিমিত্ত নিজ্ঞ পরাভ্ত পান গ रां हम जा हम जात ना हम बान्धवा। (य बाग्र दन बाग्र मटक बाग्र दा दक दकांथा প্রেত্যে নিমিত্ত শোক এত অতি ব্রীডা 🖟 ৰার শোক তার দৃঃখ প্রেতের কি পীড়া ध्यम अर्थार्थ छन कतित्व शमन। তব সঙ্গে আমি যাব কংহ পাস্থাণ ! **क कर्ण रम कर्ण मटह श्रमहम श्रमन** । অত্তর শোচনা অব্রুক লবকে।। পিতৃ পিতামহ পথ পূর্বের নিক্র। ৰদাচিত ভাহার অভথা কতু নয়। राहे नेप क्षी । निष्ठा लाक छान किरा त्त्रां विशासक्त मरह तरह निमा निया। किछ जाकी क्षेत्र कार्या कर्ष्ट्र नियुक्त। धर्क त्याक आका देश काना उभवुक ।

নিয়ত আমার পিড়া ধর্ম কলেবত ব শুভ বুজে বর্ত্তমান রাজ হাজেখন। কবিশা বিভার ক্রন্ত দক্ষিণা সহিত 🖟 পিতামহ পথ শামী ত্রিনিব মেবিত। उच शर्म जर्म भीषर करता श्रका। ज्ञा मान ज्ञारनक नांग्रत मिन्ना नांचा है यर्भ शंक ममहाध कानक निम्ह्या। वस रशंक कम जोशी स्त्या मश्रामम् ॥ কলেবর সুন্দর ধারণ করে। পরে 🖯 🔒 সংপ্রতি **জ**গতীনাথ রাজিত অমরে 🛊 व्यवमीर्व कीर्व (सह करता शतिकांश। रेमदशिक क्यांत्र भिवा स्माटक व्यन्तांश ह সে বিষয়ে এমুণ শোচনা অনুচিত। বিশেষে পরম প্রাক্ত ভূমি যুপণ্ডিত। ভোষার ভাষার প্রায় ক্রতি মতিয়ান वस्थित कारक नव मुक्तव विश्व है। শোক তাপ বিলাপ করিয়া বিবর্জন मर्द्धकां मुची तरह माधु मुधी खना भारकता उज्जन कह रेथवा पत **काहे** । भारत्यक भारता कति। कि नारे के রাজ্ঞ পরে নিযুক্ত করেন নৃপবর 🛊 रम हे अर**ा** हरू हरका ताक प्रारक्षता.⊪ বে রূপ নিযুক্ত আমি আছি পুণাকর্মে ছ महे क्रम हिन्द्रक। कहि लिख् धर्मा। পিত ক্লত, শাসন করিতে পরিভাগ। करां जामात्र हिटल नट्ट जसूत्रांथा। मिरे का आयात याचा तारे मम रक्ष र्य ना करह भार देहरण शिकु भन्न लिखा।

कट्ष शांचि रमदान कड़िय शांशन। আনন্দিত ধার্নিক সংগ্রহ অকুক্রা গুলু পথগামি সঙ্গ সতত বিহিত। পর লোক ইন্ত্র ইন্ত্র অবিরত। विद्रारम हात्मम याका वाका विमायत। कहिर्लन छत्रछ सुबहन सुमार । ভূমি ভূমি প্রথিত মধিত অরিগণ। তব সম রযুক্তম আছে কোন্জন ঃ না পারে তোমাক্রে দৃংখ করিতে বিমর্থ। जुरुवत क्रमण नाहे समाहेटण हर्व। वृत्कात भवाङ जूमि भारत्वत समान। मत्त्र कि अयद्य सम एक्ट वर्कमान । भन्नर्ग श्रीवत्न कृता रहत दुक्ति लाख। আছে কি সমুমাধিপ ভোমার সভাব। ध क्रश दामान यभी कुछ रूरश शहत । दियां किए कमाहिल्याहि स्वि मरत । श्रंत कि अश्रंत क्रानवान क्वा कन। नरतक परतक कृषि त्रायन दिसन इ ज्ञा शर्म काम्य जम्म अधुवत মাহাজ্যে কথা কৰুর বিতীয় শহর। সর্ব্বভ্র সকণদশী অতি বৃদ্ধিয়ান। मकरमत मान मांछ। तक धनवान ! এত গুৰুত্ব উপযুক্ত সুপণ্ডিত। ट्यांग दिना खेलका मखब मरविरु । अमर अधार दिश्व मध्ये करा। गराटमत मास्टि द्व काषामित्रा बरत । ए काक्षणानि कुत निष् भाष केंद्र। বিশেষে ত**ৰ বিষয়ে প্ৰতিভ**াগৰত।

না বাঁচিব সুষ্টাইর অভ্যন্ত পীড়িত। গুধ হত হরিণীয় সদৃশ ভাড়িত। লক্ষ্মণ শুভ লক্ষ্মণ সভাগ্য আপনি। এক বোধে সংস্থিত হুইয়া রঘমনি II निष्करम साम शाहरत कहिया मर्भन। (क्ट् कार्य इस सम अक्टर वसन । এই ক্লপ বছ কপ্ ক্রিডে বিলাপ ৷ অনেক সাধনা সাধ সমত আলাপ। পদ তলে পতিত মতক নত ভরে। পিতৃ সভা পালনে প্রবর্ত্ত রব্বরে 🛭 व्यक्षीकात करमाधा श्रमस्य नाहि रुग्न । करे क्रम देशका हाटम मिलिया निष्ठम । जक्रम डाशिड किन्ड उद एम हर्य। मण मः ऋाभन द्वरूष् ना अवि विधर्य। व्यत्याद्याचा सन्धादिक अञ्चल गर्भ गर्छ। ভরতের আশাসনা সক্তন সন্মত। ३०३ मर्ना

लगू जिलही ।

जराजत वानी, बाहुक काहिनीवावरन कत्रकाशक ।

लात काह्यज्ञत, वाका तिच्चत्रत,

कतिमा कृत्रमुख ।

कृषि ह्य कृषीत, त्रवृष्ट म वीत,

कहिरम मृद्धित शानी ।

क त्रवृष्ट में, मनत्रव व्यरम,

रेक्टक्त्री केंद्रत कानी ।

त्रांक कारकप्रक, शृंदर्भ अधिएक, टेक्टक्यी विवास् काडी। তব মাতামহে, দিলা স্বেহ মোহে, ্ক করিয়া রাজ্যধিকারী। स्मवानुतः त्रत्न, विश्वय कातरने, माश्या रूप कृशि । किला बनवान, स्ववाह मर्मान, ষাচিত নরাধিপতি। चाहेत्ल अवत्न, खन्नी हरण तरन, को कारन यमिती। कहे पहे दह, अन अनिहर, किरक्षी वत्रविभी **खत तांका धन**, व्यामात कांनन, गमन वि मश्च वर्ष मल निया मांच, याह्या ध्रमान, भारेश असाख हर्ग। সেই হেডু বন, জামার গমন, मियुक्त श्रुवन दश । फारक कि विभव, क्ष्मूक्तम वर्व, সহিব নহি কাডর। त्मच त्मरे वाचि, पूर्व दन गामी, जन्मन कानकी सर्। পিতৃ ৰাজ ছিড, ধৰি লম্পিড, অনুচিত এ বিরহ্ন ভূমি শীল্পতি,দে সভে সম্প্রতি, . इता विकित्तान समा ा मुख्यांची कारफ, स्वाटक वटन बाटफ, नविरक विक्रि गुजन।

কর কলে যুক্ত, পুদ্র উপস্থল, अक्रम समय शामा देशक्त्री रहन, रहेटण थ्यन, ্ৰুতে দে অভি দন্তাপ ॥ পিডারে রকণ, মাডাভি নশন, . अ कर्षा अञ्च नन्त । 🕟 खिन शुन्तं क्षांचि, यात्री मूम्रिक, शीन करता दुनिश्य । 🤲 করে বহু যাগ, জনে অনুৱাগ, ্ৰুলভান গ্যানুগ। लिङ लिख मारन, गमा यहा दारन, সুখ্যাতি এ তিন পুর। श्रहांम नज़क, इम्र निवासक, পিডারে বে করে তার। जात्र नाम श्रुका, अहे द्वम खुळ, चप्र चम्रख्याचान । ইপ্সিত সন্তান, বছ গুণবান, বহুফাত ফ্রাডি ধর 📝 गिन जात भारता, हक्कर श्रम उरका, ত্রিকুল তারণ কর। किया अधरम्दर्भ अधरमध्य, व्यस्य क्रिया निर्वत । नीम वृत्यादमर्भ, करता शिकु वर्भ, ে দেয় বহুত্ব ধর 🕽 💎 🔅 प्राचाः, विश्वान, अञ्चल व्हम्, কৃতিলা করে৷ বিস্তার काउद्य छाउ, महाकूल कार्ड, कार बाज देशात

अध्यक्ष कार्यामात्र, कृषि शुनद्राप्त, भाग अंका श्रेत सन। ं शंकाप्र गिरिष्ठ, शर्य करहिक, থাক সভত সূত্ৰ। शहरा अविश्वन, मधक कांत्रम. ্র প্রারেশ করিব আমি। া জানকী লত্মণ, সহিত এক্ষৰ, ্ হইয়া কানন থাণী। . मध्रीय श्रेष्टा, श्रेष्ट माट्य ब्राष्ट्री, ভাৰত তব ভূষণ। अश्रे गुथ करगा, कांगि जाका हरगा, ৱহিব কিবা দুৰণ। ভূমি পুর বর, জন্ম অভিমর, क्रेंग्रा जुन्त्व कडे ! আমি ছে দশুকে, ত্রিভাপ খণ্ডকে, गुर्थ इहेर क्रीविष्ट । मिनक्त्र क्या, निवाहर क्या, ছত্র ধর কুলাধর। শীত বৰ বাত, বার বার ভাত, তাৰত্বর ক্ষম বরা 🖟 यात्रि उत्रक्षांगा,कांक्षांगरन कांग्रा, া বিয়োপরি ধরি বনে। जानकी गमान, मरक व्यक्तन, इक्नाटक्कन क्राटन (नक्य जुलक, सूक्तल छा, रहेरन जन महाम । र्गिजा मिखाम, मुमजी वारान, इस्टिवन मञ्जाहता

ব্ৰভান চারি, মান্তর বিচারি,
লভে হিড করি ডাডে।
কি আছে বিকান, কিবা বিস্থান,
কর কি বিবান ভাতে।
খ্যাত অবনীপ, বর্তমানাধিপ,
অনুসতি অনুসারে।
বারীশ বর্ণন, বেল রামান্ত্রণ,
শ্রমণ ভব নিভারে।
১১০ সর্গ্রঃ

对对有自

ष्मछत्र तथ्वतः नगतः श्रमानः। অনিচ্ক দুংগ ভৌগ ইছ্ক কাননে। अरे कारम आरे इस्म विका विकास আবাসি রাজ পরিত দানা বিভাধর। নৈয়ায়িক আভিক নাভিক প্ৰাক্ষ্য। **च्डरकत मरनोहस्थ करिया मुन्छ।** कृषि विख्य धर्मा छ। का कि छ। धर्मा शरश। मनत्रथ नुभ कुछ दिनमें गटमात्राद्ध ॥ नित्र के के दे काम मा इस छामात । गांगाच नरहत्र धात्र उभन्ने जाकात् ॥ योवद निर्दाष्ट्र बाका सुरबाध कांत्ररे । क हो यह तकता नामन कामहन । रगरे कारण मच्चे मक एवं डेनानव। भाग जात गमरम कि इंटर महिन्दम । उरनाथर्ष साम्र कर्ण निवरनक छाउ। এ अगर शुर्ख मान मिला अकबा ।।

যে ভরতে রাক্স দিতে ইক্ত্ক নৃপ_্তি। বিখাস করিলা **দর্ব্ব** ভরতের প্রতি । तारे और खंदछ रखामारत शास्त्र बारह । যে ক্ষেত্র ভোমার দৃংখ পিড়কুত আছে: সকেরী ভরত ভোমারে দিবে দান। কর প্রায় পাল রাভ বছন সভান। भूबी कह सीमिधा मक्य भूककात । दिरमाम मीजात छात मंग्यतं इत्रत् ॥ ञ्च अन्त रच्यत भन्ने ए युक्तान ! প্রাপ্ত সুদেবিত নহে কেন কর ধানি। আপন কামন: ক্লতা মিথ্যাভূতা বৃদ্ধি। তাহে গতি রঘুপতি হট্যা সুবুদ্ধি। ভাগ করে মান্ত ব্য়ে কাম পোড বুশে। ফুকীন্তি নাবত্পৃখী জগজ্জনে যোগে। ভনঃশেক নাম পুত্র ছঞ্জিলা বাচীক। বংশধ্য গুলাকর অয়শঃ তাণিক !: স্বৰ্গ গত তথ ভাত মৰ্ছে পুনৰ্ফার। প্রভাগত নহিনেম পালনে তোফার।। निका मख चष ভোগी नट्ट नृপंदत। भिष्टे सिंह कांश कति सिर्धित ।। कान् शृक्षका रसु रूप कान् कन। कान् अन रेहरफ निक कात्र अस्ति। अन करा माळ बार्य बाख करा इत माना। পিতা মাতা প্রতিশেয়ঃ কিন্দিৎ আবাস हेरांट अडीड रूप डेगटंडर आग। অজ্ঞ নর রশ্বর এই অতি দার।। त्यम् व्याध्यमाख्या नत्त्र करहा वाम । কিছুকাল পরে পরিভাজে সে আবাদ্য

এই রূপ মনুষ্যের পিডা যাতা ধন ।] भन त्मर गुन्त मृत गृहभनिखन ॥ কেবল আত্ময় ভূমি মাত্র রঘরীর ঃ राभकीय हिस्ता कर इहेबा भाषीतं । निवृति भगांत श्रान भूषण निर्लंश । ভাগ করে। দুপথ ফটেকে কেবা রয়।। সুসম্কা অংশাধ্যা অগ্রন্ত সুথ ভূমি। পাধ অভিষেক করে। রাজা হও তুনি। এক বেণীবরা পূরী দেখিতে তোমারে। প্রতিকার প্রতিকারে অভিযায় করে।। হত বাজা মহারাজ রাহার সম্পান। विहास मधीसतास बद्क मयान।। দশর্থ নহে কেই ভূমি কেচ ভার। बेहिक मध्य भाइ कहिरण विहात।। তোদা হৈতে ভিন্ন নূপ নূপ ভিন্ন ভূবি। थ इस दिहार दर ভূমি জ्ञानकृषि ।। अल्ह मथा जात वीका सामक (कवना 🕟 শোনিতের শুক্র থোগে ফলেআকা ফল (আছা আত্ম জননের কারণ জানহ।। पृष्टात मः शारम माल विरम्ना अ स्मर । গিয়াছেন নূপ যথা তুমি হাবৈ তথা। মতা মাত্র ভূতের প্রার্ডি হেছু রুখা 🗵 व्यवस्था वर्षा विकारत (य (य कंग) তাহাদের প্রতি প্রশ্ন করে। অনুক্রণ।। কে মরে কে জীয়ে ভীব কেবা দুঃখ পায়। কেবা করে সুখ ভোগ কে কারে জীয়ার। **टक कात निर्मिख कड़े करता पारक एकांग्र।** क कात विरम्नार्थ याञ्चा कत्रहम विरम्नाथ ।

অষ্ট্রকা এভতি আন্ধ কর্ত্ব্য এ বেদ। वर्ष छेभक्तंत्र (मथ এहे चिक्ति (यम ।। মরিয়া সে যত বাজি ভুজি যদি পায় ৷ অস্থা ভোগে অস্থা জন তুষ্ট হৌক ভায়।। मान मेश्वर्षना এই मत शक् हरू। গৃহির সংগ্রাহ উদাসীনে তাহা নয় !! মেধারী পশুতগণ ক্লুত কর্ম শাস্ত। বজৰ দীকৰ দেহি তপাৰ হি যাত্ৰ!! এ রূপ পরোক্ষ মত করে৷ পরিতাগ প্রবল প্রতাক মতে কর অনুরাগ । नर्जर नवाठा दुक्ति नर्स अप्रश्निनी। অঙ্গীকার করে৷ রাজ্ঞ কর রযুমণি 🛚 ভরতের প্রসাদিত পূর্ব্ব পুরুষীয়। **অ**তিরম) বৃদ্ধিগমা মন্ত আরাপীয় ॥ হিড্জান কর ধর আমার বচন। श्वशास इहेग्रा शंथी कि हे तामरम । ব্রজার যানস পত্র কুপ নরপতি। যশ্বী তেম্বরী অতি ককুমন্ত ভূপতি।। जेकाकू तथ मिणील मगत मृचछ। ধে।খাতি ভরত মহা যশস্বী দুরস্ত ॥ পুত্র কুৎস শিবি ধৃষ্ণুমার ভগীরধ। বিৰ্ক্সেন জনরণা ধরাবভা পথ !! चारात चित्र समि वर्षा का अधारा। জগতी विशाङ्क्रवनात्र दीर्गानान ॥ মান্ধতি ধরণীধাতা বৌৰ্নাশ বীর। रेर अवन जुला छरन सुनुष्कि सुनीत ॥ যगতি নৃপতি মহারাজ্বি নভ্রম। नरराख वृद्धय जिल्लारक याछ छम्।।

এই नव जेख जेख वह नद्रांखया थिय शृक्ष मात्री शतिकाशी विष्कृत ।। काल नर्भ कलिए इरेन कड़ खन। কে গেল কোথায় কেবা করে অন্তেমণ 🛭 গন্ধবৰ্ষ কি বন্ধ কিবা রক্ষে রূপে স্থিত ! काशा, करे कर्ण किंदा स्थाप त्याहित ।। धरे मव महायुखरवंड नाम लाउ। মহেন্দ্র মহী দীক্ষিত প্রতি ক্রতি ম'র।। যে জনা যে বানে তা সভার তত্ত্ব করে। তাহাৰ তাদের তত্ত্ব আৰম্ভক করে 🛭 **এই माखि वावसाग्र को स**े हैं है एमारिक। কেথায় এ জগত সম্ব প্রসায় পলকে গ अहे अहरणांक हेर लाक अस्छन। **कानिया मानियां कृथी हरे**वा द्वाचव । धर्म शह सकत्म मुरंबद दिख नग्र। ধর্মবন্ত কত জন পায় দৃঃখ চয় 🛭 অধর্মবন্তের সূখ সংখাগ মান্বে : विभरीछ जार शब्स निग्रंभ कि ग्रह ! मर्किमा ভावियां हेहा उन्हां स वााकृत । मृष्टि नुद्ध मृष्टि मिक्क अगांव **अंजून** ॥ फड वर उवाकारम आंगड कमना। जनगिममञ्ज्ञ धरम मा कतिरद दिया। অকণ্টক এই রাজ্ঞ সপত্র বিহীন। কর গ্রাহ্ম সূপ রাম্ভ কেন হও দীন। कारानित वह कथा कहिया खरन। অপে কোঁৱী রয়বীর তথাপি তৎক।। ध्यरमय विस्थय क्रम् कतिहमन क्यार। छाटा कि गिर्डन कटा रूरेण गुरवार ।

নিতান্ত নাত্তিকা যত অবগত রাম। তথাপি কছিল। অতি ক্লোধে গুণধাম। পিতার বাদনে হয়ে তপ্ত কলেবর : वनानत्म काश कथा विश्वन कुश्चत । পিতার আনেতেশ আমি না হইব চল। যভূপি অদুভ শাত্র অভ্যন্ত বিফল। পিতৃ পিতামহ গতি না ছাড়ে তুরঞে: সতী যথা বিচ ফিডা নহে পতি সঙ্গে॥ হন্তপি জীবিত হয়ে আমি এ সকল। সর্গান্ত মৃত কলা করিব বিকল। **उत्त लाटक अभीटक क्षेत्रई किन** स्टत्। व्यवस्थ भारतत क्षा निष्कृण मानित्व 🖭 नितर्थक द्वाम वजन ভाषात। নহে শক্) মন চিত্ত চালনে দৎকার॥ ক্ষত্র বাতে কোন মতে টলে নহীধর। विशक्षि देवकना कर्मात मूनियत । मृष्टे आग्न अमृष्टे भारता क्या गनि। श्रुर्साशत वानिया हिरगन गर जानी ॥ । ক্রন্তু শত্করে। ইক্র সুরপুর পান। মহাস্থানে শত ক্রতু আখ্যান প্রমাণ। তব কুত্ সূপ্রমাণ হতে অপ্রমাণ ॥ क कन तन कन दन कि कन अभाग इडेक यांचा इडेक या इडेक पूनि। আত্তেয় আমার মিত্র কৌশিক সংস্ঞানী ৷ ভপদ্যাদ মহাস্থান প্রাপ্ত তপোধন। এই রূপ সর্গে অর্থ अविधन । छूनि: कि अथन कह रम मकन होते। त्य क्रव क्रव यमि छाहे क्रम भित ॥

তথাচ পিতার বাক্যে না টলিব আমি।
কর তুমি মহর্ষি মানিত চিত্রগানী।
যথা দৃষ্ট পিতৃ ইপ্ট পৃথিবী শাসন।
ভরত রাখুন যথা পিতার আসন।
নৃপতি বারিও রাজ্য অনর্বের-মূল।
ভাহাতে আমার ইন্ছা নহে অনুকুল।
এ রূপ নান্তিক শাস্ত করিছা মর্ফন।
দিন ক্ষয়ে সন্থালায়ে গত সর্ব্য জন।
জাবালি বচন অর্থ নিরূপন দর্গ।
একাদশাধিক শতে দক্ষা অপ্রগাঁ।

555 **27**5 3 :

ত্রিপদী !

विशिष्ठ दीत्रणाश, मक्कन सम्ताश,

निन खांध्रण त्रष्ट्वीत।

श्रणाख वाटन जाय, श्रवाटन निक्रणाय,

क्रिक मकन म्यीत॥

स्राक्ती मृतनिटन, मक्कन स्रीज महन,

क्रिनि कित मंगालन।

श्रामान देशिवष्टे, मकटन करणा मृद्दे,

रहेन कर्यालकण्य॥

जत्रण मृतिखंड, युक्त व्यक्ति,

श्रीताय करहन मृत्रीत।

श्रीताय महाश्रीकानुसारेटण क्रिक्रां,

मठक मृद्धिक मृत्रित।

कारक क्षेत्रक, श्रृहोट्ड मरमात्रभ, ाना इत अखिलान, ज्यन ग्रिनीम, राष्ट्रप करिया अमान । লক্ষা তব পালে, অর্পণ পালে পালে, হে প্রভু বিধিমত, এ রাজে অভ্যাত, हायव कब्रह, आमान । अक्षां शक्तिताए, यनर् मूध्यमान, रिमानत मह्यादत, अनक अविकादत, ্ সফল সাধনা আমার। अवस्ती वित शाल, कहरन विश छाल, विमाश जगगांश करा। आमि ८२ अवनित्स, अक्रुड अनेतारव, विक्न विस्तार्थ खुद्रतः ভোষারি শিবা দাস, পুরাও অভিবাদ, প্রেরের দোষ অপহর 🖟 (म द्रांख क्लान् मृत्यं, पुष्टित महनाप्रायं, ে জেপ্তের বৈশ্বথে বিভবে। মছাপি অপসায়, হুইল তব পায়, डेशांत्र डांक कि मा रवि । कतित समर्थन, समक कुछ शन, 'বামাতে অৰ্পন এরাজ। " मह्छी खलादान, त्मकू कि अञ्जादन, नमूख तक्ति कि छागा। जूहम पूर्व विक. वर्षा क तप्नकि, ৰোতে কি মতেতি ভাৰণ। बाबाक अम गठि, वाग्रस्म अविद्या क करि क्यांत्र मांग्य । ना गांति शर्मगांत्र,कि कर्ष वादत वादत, करोटा आमाहत छात्रात । नरण कर कार्य। श्रेत्री भूके प्राक्त, कि कथा समिक कामार।

(वधर्म विश्वक श्रेक्टर । तित्रक करत कि मासूर । विकास बहिक हरेगा। कंग्रेक विहरिष्ठ, हास्ट्रंप व्यवस्थि, পালিত প্রকারে লইয়া। त्म मंत्र गर्क नत्न, रह मत्र नरहचत्र, गर्ख नत बात शागरन। भक्तादम यात्र कीव, तम कीव मुक्कींद, • वीष्ट कि श्रमित एक स्थान । र्तिशिद्य जनगरन, शुक्रव मवज्रान, उत्य कि गुनीर्घ तम स्थ। यथन जल्दाह, कुनुम कल थटत, अभारती चाटन जादर कर भा देशल कम कुम, क्लांदा अपूर्ण, **जाशिक बाराज कातन** । रेशया (मई ऋश, प्रांशनि त्रथ पृश्र, य गमा कत उलाक गा বিখ্যাত কুল ধর, অভাত ভরতর, क काम्ब कांत्र (करा घरत । ভোনাতে গোছাগায়,লভেরে অপস্থায়, त्य विस्त विक्र श्रेत्रकार ॥ क्षेत्रीय निवासक, संयोग नदायक, आह कुल निर्माण करा। शांबादक देवदान क्रिक, बातन क्रम वक, हरेत गृशक्तिक दर्श

शहिरव जलक्ष्मरत्र, रकाभारत स्वर्था पूरत्र, कनक वित्रहिक, करशेथां कवित्रक, त्रभगीना मुखी हरता তোমারি বদীভূত, রব আমহা যত, বাধিতে সুপাদনে,কে আছে তোমাবিনে, সুখেতে সকলেতে রবে। कि दर्जू तब्दत, रहेश कुल धर, कतित इसकाम छोश।" আমরা অনুচিত, তরেছি কিবা এত. कि दिख् कहिष्ट् दिहाना ॥ ষ্মুপি মাতা মম, ক্ৰাৰ রঘ্ভম, करताह स यम अञ्चार । फाति ध्यनावृतीम, यमिक यान यान, ম্ম কি অপরাধ তাতে ! করিয়া বিবেচনা, শুনিবে সাধুজনা, রচনা কৃত্রি কবিগণ। অগত্যার বশে, তার কি এ কুম্পে, त्रामाः इत्र निराह्णः मगत वामि गर् । ए थर् मर्सकानः अत्मार्क् महेरक कामारह । क चिका टार्थ यथ, ना कत्र महावस, উদ্ধার এ আশা অপারে ৷ মাতৃ কি জাতি দল, বাদ্ৰ বে সকল, भूकत भूतवामी गव। व्यनतः विस्तर्भा, यस्यू निसर्गः नाक्न जार् मर्द्यम । कतिर्ण स्कृषार्थ, पूमिरे मृत्रपर्थ, नायक्रम मचाउ क्रम । ना कत्र लाकनाथ, उन्नात क बनाथ, পুৰ্বের সে অমুশোচন॥

পালনে হাহিত নতত। পালয় খুখে অবিরত : म। जावि निस मृत्य, श दिवि कि रिमुध, नुशक्ति दृश्यंत विश्वयः थाकिए वह शूख, हा अ कि कर्म स्ट, अर्थक मम मुहांभग है। यार्थिक सूर्याहरा, अख्टिम श्रुद्ध हरा. भादन क्षामान विहीन। (महे ता पट् प्रनः, नृष्ट्र कि हा वन, न्गिष्ठ दन गसान हीन । ভোমার দৃঃগ দৈখি, বিলাপে কেবা সুখী, रमात्री ब्रास्ट्रदर्ग ध्वा ক্লডার্থ এভাতে, নুপতি কুলোচিতে, করিন্তে সম্চিত ভাল ॥ अहे रम जकतन्त्र, अवरत (जुरहन, নগর বাদিগণ যত। गकरण मुधी रूएमा,निकटि विष हरमा, रुहिट्छ् दिरवहना यछ॥ माप कतिनातः अहेड वाका मोदः, ভরত কুমার বচন। हेशाल तुनिकाम, अनय हरण जाम, প্রদান অব্ভ করণ । ভুরত বহুতর, বচন সক্তির, भर्त स्रोगित राज्य । প্রবংশ রযুপতি, মধুর উদ্ধি অভি, काराणि प्रतिष्क कथन।

ভূমি হে শ্বনিক্ষা বিভয় প্রিয়তর, তেতন আছে নার, পুরুষ প্রশংসার, दडम क्रिएम विखाद। মন্তকে ধার্যা দে আমার ॥ मगर गम्हिल, चकारा कार्याहिल, ं अनुशा जुलशा नमान । मर्गामा हीन नह, आष्ट्रक शाशाहाह, না পায় কখন সন্ধান । বিভিন্ন ক্চরিত, হইলে প্রকাশিত, কে ভারে প্রশংসিত করে। कुलीन अकुलीन, धनी किया जुलीन, शुक्रव अভिमानी नटत । धक्य कि व्यथह, वहम क्षिप्र निष्क, इडन कान कर्ला नारा। **इतिक (व (क्यम, अमें म अदिक्म,** वायन कता असूताता। क्शन (ह ज्ञाप्त, यज्ञति कर्ण शाव, शिक सदनदा नित्म। अश्री श्राय कृद्धः, अश्रुष्ठि त्यीवाहरतः, क्षणका करत कवि वृहस भूकानं गमविष्, जूभीम श्रनाविष्. অপ্রতীত তর সমাচরে। मक्ति श्रेष दिक, प्रशीम क्षेत्रभिक, क्षणश्मा नाहि इस महत्। चर्षा बारत्यरम् लाक बिमा करातु, रशिक्षामात्र क्रेट्य। प्रक्रिया विवर्धका, प्रक्रिया माहत्त्र, व नाम जान त्म महेरत ।

व्यकारी कार्या विष्कृत। আমার প্রিয় হেডু, বন্ধন শুভ দেডু, কহিবে কুলাকার, কৌশল্যা দুকুমার, ভাল কে বলিতে তথ্য ॥ वत्रक नहीं जीत, आञ्चल करता नीत, कतित भित्रवधि शास । পিতার বাকা দার, লব্দন প্রতিক্রার.. এ কর্ম অতি অবিধান 1 न्षिति घाट्य हत्न, तम शृत्य खितकरन, 5 ल सक्स महर्भाः। नमन्द्र तास्त्रांशन, कदत्र ८ए आहत्न, नित्रस्त (महे मान्य) কি সম্ভ মিথা কিবা,নুপতি ধর্ম সেবা, দে ধর্ম অভি সমাতম। এ হেডু সভা রপী, এ চাজ অভিরপ, श्रिका समस्य भागत। अजीके साम कहा, अनत्म घठ शहा. **उ**श्रं कि अर्थ यस कर्या क्वम मण भूम, कानित अहे चुम, मजा अधिक किरा धर्मा । मरणत मम्बून, जिल्ला। अस्कून, (मय्डा बक्र क्रिक्य। मधारे अभः जिल्हा मकरण मध्य दिल. করিছে সভেরি আশ্রয়। যে জনা সন্ম বাহী, এ লোকে নিরবধি, ममाजि श्रीवरणांदक शाप । क्षक देश्टक अप, नदा त्यमन रुप्त, नक्षा भारत क्लांच छात्र।

वमण योगी खन, एकक गम जान, खरवती करत अमझारम এ জান্ত মিলা বাদ, অভান্ত সুপ্রমাদ, माखिक शोप्र यम वारम । धर्म क मण एतं, स्थानित्व मण भन्न, সভোৱি সভাতা মল। माणाति वरमधन, माला औ नितस्तर, দক লি সংখ্য অনুকল। সভোগ পরধন, না হয় নিরীকণ, নতো দেবতা প্রতিষ্ঠিত। क (इ.चू मर्ख्यचन, भरकात भनांत्रन, র ইবে ভাহাতে উছিত। अ काश्र नर्दा गत, हहेरा मका शह, महा पदित हम कुल। जमत्त्र कृत स्था, सवाहरेल कृत्रभ, मरनारत्वरामतं मम्मा। सहरूक अक खन, कहारम निर्मालन, (कह्व। मृत्रभूदत सत्ता। सक्रम मुम्छान, खार्थना मखरान, কুপুল্রে করে কুলক্য়। श्हेश मखदाही, किन मख्य दिवाही, हहेव मा भागित मछ। সভোরি বশীভূত, জনকে প্রতিশ্রুত, কেমনে করিব অসম্ভা गांगी, नहि जलारन अविष्ठ। তবে এ ধর্ম সেতৃ, তেদিব কিবা হেতু, প্রীশুরু চরণে ক্রতি ক্রত।

अमचा काही त्यदा, कतिरम त्मव त्यदा, त्म त्मेरा खीडि धमा स्म अन्य वामी अन. अश्वित अगुक्तन, छर्भात उधि गाहि १४॥ म धर्म পরিভাগী, ইইব কিবা লাগি, यथर्प छोती अवस्थान । व वार्षा अविष्ठिः, तथवदगीत वकः श्रदशी बहुबाधन्। धक्क भर्म जल, जानिया मण जल. নিকপ তাহে হব জানি। नमध्य नमा खिछ, কত্রিপ্রগণ যত, त्म धर्म करता व्यक्तां शामी ! পাতক পারীরিক, স্থার বাচনিক, অপর মানসিক ত্রিগা महीदर भाभ करत, मानस्म भाभ भरत, शमनां करकं नानां विशा विकृषि कोई मिछ, श्री बार्फ़ रव अगिर, धार्थना दिनदा त थारक। अनीर्ण जात्त्रका . कतित्व दरंशी कर, मध वना हाहि टाहारक ! घटनावः अथक्षात्र, अ सर्व समूच्या, जूमि या वृकारण कामारत। म राका बर्गा नरह, दकरन रहा (बारह) सक्टम दुविवाद शास्त्र ॥ लाटंड कि स्मार्ट् जामि, निह् कूलब- । कि करण उनवान, अधिका अधिनान, করিয়া জনক নিকটে शिक्त राज्य कर, यहरम भाभ स्तर, উध्युक् करता यम छ। 🕽 🖠

अधिका बहुक्ति, वाद्या शिवादि कत्रो, । देव मार्थ शतावन, वनाम दित कर्ग, विद्वार खरूक प्रांत । दक्कशी कर मनाव,करता छोटन छन्ननाव, क नरक क्लांड विशादन । शक्षिय वन वारम, शविख मुमानरम, चनक क्ल वन कूला। मुखिर (परशर्व, जुनिक खण कारत, ভাগত দৰ পূজ কুলে 4 कहिया शक्ष मका, इहेगा विधि विष्क, এন্যেছি লোক বাতা ভূমি। इहेश मार्गान, नुकारा गुमकान, तिछाति वल दम्बि कृषि। এ কর্ম ভূমি পেয়ে,কর্ত্তবা কর্মে হয়ে), मकरण हम ७७ मिनी। धान तातु मनी, मूकर्थ मन वनी, ্করিছে ভাগ্ন দেবা দেবী। कतिश्र क्षेत्रक नेज, अमरत करित्रज, পুজিত হয়ে। সুরপতি। गहिंच तत यंत्र, उदक्षे जाल तक, যুৱ লেবিক স্থানে বিভি। भूद्र भूद्र (व नव, भ्रहान अञ्चल, करिशाम्दर्भ निष्ठतः। िल्ली क्टका क्लांटक, निवारेक शतदनाटक, नाशिक्ष टाष्ट्रा नपूर्व । प्रतास द्रारा वर्ष, मुक्कान चम्नेड, रक्किरी सम्बन्धाः (जोर्) from failes. Mas affire, পুৰিত জৰায়া ইউয়

क्षेत्राक्रम मात्र। मक्रण नम्म महा, अिय दहने क्षमा, ছি জাতি দেবা অভিনাম। অভিনি সেৱা আদি, अभूम अविवासी, (म्रीप्रशृक्षिम् लेश इम् । এ কথা মুনিধৰ, কচ্ছেৰ অভুকৰ, যাবত্ পুরাতন চর। शांमभाधिक भठ, मर्शक विनिर्शंड, লাধুর সুস্থত ভাষা ৷ नत्कात अभारतन, वासीकि विद्राहन, क्षितिश मारमत श्रेकीणा ५५२ मधी ।

ত প্রায় ।

क्रीहाय वहन श्रमि मूनिनन (श्राष्ट्र) প্রভাৱে করিছেন আচার্যা বশিষ্ঠ । জাবালি জানেন হাম লোক গভায়াত। निवर्द्धन कामनाय वाका अधुनाथ । क्रे भाक उपनांत हरेग, तर जल। लाकनाथ जन छाडे कहिन चक्रश । शृद्धि मद बायव अधिन सन्या। मिल्ल इहेर्स मही मुनिर्विका र्य चनछा सर्वत देका वसक्त धमछ भवाद विक हरेगा उद्धर ! रमसे विक अध्याम रहा इस्ता पति। उषात्र कतिणा कर रण्यता हति।

भूक्षम करत्रसं अहे मर्ब्द छत्राहत । অগ্নাথ অগতের স্থানদ ঈশ্র ৷ আকাশ প্ৰভৰ ব্ৰহ্মা শাখত অবায় ৷ मिहे दुक्त मानत्त महीहि खन्म हत्र। মরীচির অংশে হন কভাপ সন্তান কশুপের সৃত ভূর্যা নাম বিবস্থান 🛚 বিবস্থত্ পুদ্র মতু ত্রিদশ প্রধান। 🤭 र्हेला यसूत मण शूल वणवान । ভার মধ্যে ধর্ম ধর ঈক্ষাকু ভূপতি া প্রথমে দিলেন মতু ভাঁরে এই ক্ষিতি 🖟 जानि तास अरबाधाय नेकाक कुमात । नकरणत शर्य ताम मानिश विखात। দক্ষাকুর এক পুত্র কৃষ্ণি নাম ধর। কুক্ষিযুত বিকুক্ষি নৃপতি গুণাকর। विकृष्णित भूठ रून महाराज्याः तन्। श्रुश नहरत अहे (दर् अह जल् । व्यवज्ञानहरूत भूत्याह मछान । वष्ट्र वृष्टि भुक्तिकामि वात्रदन अर्थान ॥ खनद्रना न्निष्ठि खखास वनध्र । শাসনে সমস্ত সাম। না ছিল তকর। व्यवत्रना श्रुख शृष् द्रांख बहाजान। भुषक् भृषिदी कड़ी दह यक याता। शृष्त्र भहीदशस्य जिमकु बार्बम। মহায়শাঃ ধ্রুমার ত্রিশকু নন্দন। युक्तमात गुरु स्वताच महामेडि । যুবনাৰ সূত বলী মান্তাভা নৃপতি। मासाजात श्रेक नाम सूनकि पूर्वता मुम्बित पूर्ण अन्यनिक नत्रवत्र

অপর প্রদেশস্থিত নামে সুকুমার। প্রবসন্ধি পুক্ত হন ভরত বিভাগ । ্ব ভরতের মৃত তার অসিত আগানি 🛚 गर्।तथी भवाभागी तारकाम ध्रापान ॥ যাঁর **তেন্তে** উদেক্তিত সকল নপতি। নির**ত হ্ইলা অরি হৈ**হ্য প্রভৃতি গ ভাগজন শশবিন্যু সদন্ধিত অভিত अपि यूरक विमाण शाहेला महीलिए। অধিতের ভার্যায় গরের সহকারে (मगत मामक मुश विश्वां भश्मादत ॥ শক্ষিত্বন গত অসিত যে কালে। নুপতি হইলা পরে স্বর্গাত কালে॥ पुरे नाती गर्जनजी हिला स्नम व्यन्छ। ভাৰ্যাদি যোগে চ্মৰন্ত উপাঞ্জি 🛭 **ब्बिश** ভार्या कानिनीत गर्ड मिशाउटम भत्र**ण-धनान** करत मुल्जी निद्यस्य । মুনিবরে রাজ দীমন্তিনী গৃত সুত। 👙 भव मह श्रमदिन। मधन बहुए। खनवान गगर महाचा मुश्रात 🏴 যাঁহার খননে হৈল বিখ্যাত সাগ্র। কলিলের কোল দৃষ্টে সৃত হত হার ৷ कममञ्जा नाम भूख मधाः कूमात ॥ জীবন ধারণাবহি পাপী দুরাচার 🥫 भूतकम भूकान वकारा नःशह । अभारम वामकर्गाः । जोशनाः रहन्। अध्यक्ष कतिष्ठ निश् मत्रम्य स्राप्तः। वकातरम श्रेत्रस्रान कति व्यक्ति करे ८२ के प्रशंताक कतिया विक्रिक

निजील न्यक्ति और अयारमत मञ्जाम ॥ मिनीरशंत शुरु क्लीतथ नश्यतः। ভলীরম নৃপসূত কাকুৎছ সুন্দর। काकूबरएक शुक्क तथु देव नारम ताचत। রমৃণ্র প্রবৃদ্ধ তেলখী অসম্ভব। নিশাচর চরাচর নাশ হেতৃ রণ। হইতে কলাবপাদ প্রভাগী হন ध्यक्क अव्रत्म स्वय मध्म न्मेडिः **जिनि रेक्ट विधि सार्थ कालिला वम्छि।** भाषालात मुख खनमुख मुमर्भन । তাঁর সূত অধিবর্ণ অতি বিচক্ষণ। अधिवर्व कुमात भी खाग जात माम। শীপ্রগের পুক্র মরা রাজ ওগধান। মরুপুদ্র প্রভঙ্গর তংস্ত প্রধান। चन्द्रीय नंद्रदत चूंदेख्य व)।भाग ॥* जगतीय जरान मुश नहर दिशाछि। नक्षतः शृक्षं भारत क्रेका येगाठि । अरे मर बहाइथी जेकाकूत दर्दन। ভেট্রের রাজার ভার জগতে প্রেশংসে। करें अस्क्य त्रष्ठम श्रृद्धार्भत। কর রাজ অভিবেক তুমি কুলধর। मिर प्रयुक्त धर्म शूर्म शुक्रां का পরিতার করিতে অবৈতি সমতন 🛚 तक प्रि भाग कृति मध्का व्यक्ति । **शिङ् भिडायह क्षाप्त छम तसूपनि ॥** कार्यामा में काकूत दर मा ठूकी छन। ज्ञामभाधिक लेख मर्ग मंगोलन

११७ मर्श्व 🖂

বশিষ্ঠ রামের প্রতি,কহিয়া এই ভারতী, मूनि शहा धर्ममुक गांगी। कृहित्ह्न शूद्धाहिख, हिखिया द्वारमह हिछ. श्वाम पूरि महाकानी। शवछ भन्नीत बानी,शरण हेह लाकाहाती. তিন জন গুরু স্বাকার। व्याहांची निक्रीची छत्न, लिख खान कल्ल उत्त, **(महे इ.ल ज**नमी প্রচার। সকলের অন্মদাতা, এ হেডু মৌরবী পিডা, মাতা গুরুষারণ পোষণে। कां हार्रा श्रेकान मान, कतिया मूर्याणयान, **े इंट्रिक अंदर करह करन** । সেই আমি কুলাচার্যা, ডোমার অনকা-চার্যা ভোমার আচার্যা মহাদাতি। ৰম বাকা মুখ্তুম, ৰা করিবৈ অতিক্রম, এ হচন সাধুক্ষন গতি। এই পারিষদ যত, তব হিতে সদা রত, मभागठ उनिहर मेरर। मञ्जामत करें भर्म, एम शृक्ष थं वर्म, रेगांत अख्या नाहि राव धर्मणीमा चित्र वृक्षा, मञ्जा निमा रूख शका. ना कतिरव किकग्रीत छठि। हेहात बहुन येत्र, यूरण यत्र तांश्व यत्र,

मा कत अख्या उपनेष्ठि॥

- अहे तांका यांच्यान, सहरत्वतं हांच गांन, আপন্তি না কর বঞ্চন। ত্ৰি সভা প্রায়ণ, সভা ধর্মে সদা মনঃ, नांद्रायन मार्का ६ मण्डन । मुमर्व धर डेक, खरंख बाम युकि वृक, अञ्चल्य तम् तम् वीत्र[ी]। विभिन्न प्रसिद्ध अधि, मस्त्र हरेग्रा अधि, भनकीर शहर कुछता। ণিডা মাডা প্রতি বৃত্ত, মতুদা করমে ব্রুজা, मिरे मक मकलि श्रेमान। अछि असूकृत एत, कषु नहरू अभेकर, মাত পিত ক্লত অষ্ঠান। योगम दलन शान, आक्षानन यथा मान, প্রিয় বাক) প্রিয় সম্মোধনে। कतिरव व्यवश्च नत्न, यांकृ शिकृ क्रियकत, कर्ष जान धर्म अस्ट्रांटन । দশর্থ রত্তম, পিতা অকলতা ম্ম, প্রতিক্রা জাঁহার বিভ্নানে। कतियाम व्यवधाम, तम् यस्म विक्रिशंग, त्म वांका अञ्चर्धा मरह क्यांत्व ॥ अ छेडा ह्यूबद्र, यिनार्ड कहिरण शह, অনন্তঃ ভরত দুর্ঘনা। কহিছেন হাত প্ৰতি, কে হত তুনি সংগ্ৰ-कि, कुन नया कतर तहना। प्रतिय कांकर कूरण, नम तीम नाम पुरत्, गावज्ञानम् नाहि हन। वर्कम करता चारात, धनरीम वावस्ति, यश करते नितालय सन ।

गंबज् ना यांन हांच,मर मञ्जी देशस्थान, त्रियां म तार्मत इत्यां मा जहराँ के अध मनः, करहा हाम मिहीकल. विटांतिको शेरह अस्तिशाय । वास अवकृतां अती मध्यां शिया कृतासती. করিলেন ধরণী শহর। कांच मूर्व नितीकार्त नुमन्त पृथ्विक मान् कुणांजरन कतिहा होशन ॥ जाशनि खहित परन, मुहित हिता भन्नरन, तक्तिम सूमश्री मञ्जन। ब क्रण ममग्र गाँछ, नित्रविग्रा त्रपूर्णांक, तांग ताक काक वि नम्पन ॥ करिया गर्म थिय, जरू शिषात शिष्र, কেন তাত অনাথ সমান। এक शांदर्भ विकान, यहां नि करह भग्न, ্পুর দহে কছে সপ্রমাণ। নৃপতির এই বিধি, মৃদ্ধাভিষিক্ততা যদি, না করিবে প্রভাপবেশন। উত্তি हो अ भाज न, जा ह द अनर्थ मृन, এ দাকণ ব্ৰস্ত উদ্ভাপন। শীন্ত যাও অযোগ্যায়,পিতৃ সক্ষ রাখ ভার, चामात्र मदछाम निष्ण छाट्य। আমি পিড় সমাদেশে, অবস্থিত বনবাদে . তোমার সভাতা হয় যাহে॥ उरिह हामा वस्त्रान,तका कर शिकु सान, चरार्थ शालिया गर्स ख्राचा। এই উক্তি লাড্যাত্র, ভরত কলিত গাত্র उम्र वर्श कुलाइन बन्ध ।

कहिएक श्रेतकता, अहे राका करनर, कि जालां का महानाम । मा बाठ बायरव सते, बार्ड अंडि उसकत, जोत्रो भटव *कर्म* के बहन । वाका क्रम शतिभूवी, ताम लाहक एवी. इकिम উखम किनवन। कर्र शृद्धन अन, मडा धर्म शहारत, बायकरका गर्क विश्वकर्ग বলিতে না পারি তাহে পিত সতা সদ गाह, व कर्षा जंजभा करह करा। शिष्ठ वीका जुलागतन, अनवीका महागतन, खावा युक उत वाका कित। रमञ्ज क्षेत्रम (यय, मसूत्र) ना यांच्र (दश् িকি রূপে করিব নিবারণ। সত্যে ধতি স্থিতিমান,রাম অতি সভাবান্ अरुकृत अवृत्ते शवत । 🌘 कांत्र मांचा मछा देवटक, शांदत केठावेत्रा িনিতে, রাম সভা পরায়ণ অনে। कृत वृक्ष छ । भागित, समर्थ कृत भारतन, - धानमर्थ हिमाजि जानता क्रमंट्यम डेशरमण, व्यवस्य शविक सम्भ, ্চতুৰ্দ্দশাধিক সৰ্যগত। वांबी कित युक्रमन, मूट्स अन नावशन, বাগীশ কৰ্ডক প্ৰকাশিত।

278 Mels

श्रीम

এই अन् खट्छ नुत्र नित्रांति वहम ! नहर्व हरेगी ताम किका क्रान । ट्यामि द्यमाम काना करेगा सम्म रखा वाकात्वत वाका क्रथ अहे नुमक्छ। त्य योका क्यांटनव एक्ट. तम क्यांन स्वर ह সর্বজ্ঞ ক্রডজ বৈব পূজা উপযুক্ত। নত্য যুক্ত যুক্ত ধর্ম যুক্ত বিশেষতঃ ৷ অনুগ্ৰহ প্ৰকাশ উভয়ে অশেৰতঃ 🏾 আমাদের পিতার পাশিত প্রজাগণ। নৃপতক যাবতীয় এই পুর জন । हेश्सन वहन व्यवन उभग्रक। विकाण रहेगा कहि सारधान बुका। श्नक्रीत ट्यामाटस आरमक अहे स्म । অবৈধ্যায় গছ ভাত বনে স্থিতি নয়। প্রতিজ্ঞা রক্ষণ হেতু এ অরণ্য নাস ৷ ष्यत्थ यामात्र देश देवित निर्याम ॥ भभथ कतिया कहि ना कड़ रिमय । নি-চন্ন আমার এ প্রতিক্রা অবলয়। रंजून नकत यह हिटेखनी सुकछ। বভাপি ভোটের রাজ হয় কুলোচিত। त्न (कर्ण आगरिक विशेष अध्य दिना) अउदर कराई श्राम कर रहता। মহাৰ্ব শোৰৰ ক্ষিতে দাকা আমি। विकार हम हो जन अर्थन सन्त पृथि।

কিছ পিড় শাসন লব্জন নহে সাধা। ্না করিব কলীচ হইয়া লোক বাধ্য । त्य मकल कहिरल जकिंग चामि सानि সুক্রতি করিয়া কহি পিড় সভা বাণী। अहे मुद्दे बहुन क्तिया अञ्चल । क्यांन हरक मंडि करता (मधिवा दांचव । এই বাকা প্রবণে ভরত মহা ধীর। विदर्भ रमस इत्या हरिटणम श्रित । শৈষ্য প্রার দীন কার নপতি নক্ষ । দত শরা। হৈতে বীর উটিলা তখন। जुरीत हरकत भीत करता निवातन। उम्राक काशिया युथ करिना वहन পারিষদ মজিবর্গ মাতৃগণ মত। অভয়ক্ত ভক্ত মিত্র জনপদে স্থিত। श्रह्मम अञ्चि रहेम। अवश्र আবল করহ সবে বছন সঞ্জ। ভোমাদের মুখে সূত্র করিছে প্রবণ हेका कति कर गर्क माध् महासन। विश्वकि क्षमारम हेन्द्रा कति नर्स शास्त । এ কর্মেঃ উচিত কি গুদ্ধি সুবিধানে। ना চাহি रेপेड्क तांच्य करनी भाजन। ना कहि प्रवस्था ब्राट्य क्रभरन क्रथन । यमि उम्म क्ष्मिया कारक कामद्य । উচিত জানিক। বাস स्थार्थ विधारम 🛚 व्याचित विमक्ष वर्ष कतिया निवय । त्रहित कात्रका वांटम रथा त्रचलमा मर्खाचा यात्रा भावद मर्ख कछतायी। **चत्र वट्टम मुक्क निट्योकन सामी**।

পর জন গণ প্রতি করি নিরীকণ ক্রিলা মধুর মৃদ্ধি মধুর বচন বৰ্ডুমানে বে কথা কহিলা মম পিত।। অঙ্গীকার পূর্বাক নে উভয় খীকুড! ৷ সে কথা লব্দন করে এত শক্তি কার। কিব: আমি কি ভরত উভয় কুমার। বন বাস বিনাশ উপাধি আমি ভাষ না করিব কদাচিত জেন্যে অভিপ্রায় ! যাতার নিকটে পিতা করিলে সুক্রতি क् कित महे वाका मध्यम मुक्क ि॥ আমি স্থানি ভরত অত্যন্ত লাস্ত ধীর। मना छत्र मध्याह कत्रात हिस दित । এই মহাঝার মহা প্রণ্যের প্রভাগে : উত্তীৰ্ণ হইৰ আমি বনবাস ভাপে ! बरे धर्म भीरगत भीगठ। खना खहा। श्रु नर्कात व्यवस्थात क्रूरें केन्द्र ॥ শাमिव मयल ভূমি बाजुनन महन প্রিয় করি কৈকেয়ীর অপ্রিয় বচনে। **लि**डा यह महामुख्यि **अंडि मंड** दांनी। করিয়া ভাঁহারে পার মিথা। মহানদী। ৱাৰীয়ণে অধোধাায় অমত ভাৰণা পঞ্চ দশাধিক শতে ভরত শাসন 🛭

५५७ मन्द्र ।

मयु जिल्ही।

দুই নৃথাক্ষক, অপ্রতিম তেকা, करुत डेडन मः स्थान । कति नित्रीकन, यहांकांनि शन, ं इहेरजन चड्डांन विस्त्रांत्र । নগন্ধৰ্ম মুনি,প্ৰতি বাৰা শুনি, मक्ति शहन क्टबानम्। पृष्ट् महाकारम, क्षाचारमा विकास, नुकारमत करक समानग्र। जूरिकम धह, ध्या मुभवत्र, - विमञ्ख्य मुख गाह । खबर्ग मछाया, नहां रूप खाणा, লিপালা হর বারখার। शहत यूनिशन, शायन नामन, বোধন আত্তব করি। নগতি শাদ্ধ লৈ,ভরতে লকলে, कहिना ट्लीनन भाउति । गर्। कृत्म बार, महा खास बारि, महा वृक्ष महा जूपणः। क्षित्रक रहत, अवच धार्त, পিতৃ পাবন অভিলাগ। लिए करन युक्त, कर्च उलमूक, युक्ति युक्त बढ़ी नकरना। मर्गर् मृगिष्ठि, मर्गण जनविष्ठि, देवरकरी बहन बनरम ।

का क्रम मान, कुरश शतिकान, তুনি कानवान गुमेि । कहि अहे वांबी, बाक वित मूनि, वनक् शक्स छाञ्डि। चीत्र चीत्र शाम, शमरन उत्तम, तपडाम जाय मुक्डि। गर्स कवि धर्म, श्रुष्ट करन करन, दिनार्श महमा अनिष्टे । चरक मक्दन. बहन इक्षन, अवरण किंका नम्य। हारम कृष्डाञ्चलि, कहिया क्लेमनी, कारणव विराप विनय । তব বাকো স্থানী,আনশিত আমি, मुन्पत् छक्त मर्नन । करे डोक स्बी, जन कुण स्का, अपर्य महिन्द्र मकान । गम गर्छ घरा, रेक्टक्री कांच्या, बाहर वन बाइन किया। তুমি बहासानी, गर्स उच्च सानि, कत समगी मान तका ह ত্রিলোক পালনে,শক্তিমান জনে, अधिक बडरम कि करण। अहे कथा करता, अमृद्ति हरता, कांध्र ताब नव उरम । वस् काहोरम, जुलिस वहन, अपन विश्वचन पीटन त्राम नहार्याम, भारत निया पान, नुवाम दहन शबीदत ।

श्रामंत्र कमल, श्रेतांक कमल, मख इश्माणि निमाम। কর পরিহার, দুম্প বার্ত্বার, अदिकृत भटना वियोग ! এই তব বৃদ্ধি, বে রূপ সৃসিদি, সভাবতঃ অভিমনা। বিনয় সংযুতা, পভারতঃ পৃত্য, दिवानांका भागान उच्छना। क्षा दित हिन्छ अने तीक वृत्त, (र क्रम द्रीकि स्वताद्या। छूरी बाब वय, खनाधिन ताम, (य बुख धहनी मारम। বংশরে বংশরে, চাতুর্যাদ্যাচারে, वर्षा वृष्टि सुत्रभिछ। नामा (महे वृष्टि, क्रमाशिटन मृष्टि, मृहका करह स्वय प्रि चुरी निक करत, यथा वृद्धि हरत, अर्थेय मान नर्डरन । **এই রপ নিজ, यश्राम, जानिक,** ं जठक करत वाकर्रत । আদিতের ব্রড, এ রূপ গভড, असपी श्रेष भूगछि। भारत वाम अंख, इंड व्यवगढ, े किर्वेशी महत्त्र मूगिरि । अक्ष एकेटम, नर्स कुटक तरहा, शिक्ति करतन भवना लाहे क्रम ठता, बाटत मणवज, क्रिक्त क्रिट्य ग्रीलन ।

প্রিয় কি অপ্রিয়, ব্যা গ্রামীয়, श्रीतंकारण नकरल मम नुश यम बर्फ, प्रत्या गांवहिएछ, खिशाखिए (वर्मन एर्म ! वक्रन चर्णाटम, वस करता भीटम, भूनण करतम मुन्छि। मल निया मध, लागर वाराध. कतिरंवं भूमहं क्वणावृष्टि ॥ পরি পূর্ব भणी, कित्रन প্রকাশি, आक्लांबिड करतन भरन। मुश्ठि एउमन, जनमान मर्भन, श्रकानित मक्ष करन्। ं भृषिरी विश्वन, जकाल धारन, करहन नमान यकरना मुल्डि एडम्म, मर्ख अस सन, श्रीनिरंत कानिरंद मगोदन । र्यभोक भूकर, दए गळ विन, সচিব গণ সহিত। सहिता रजना, कार्या गुनाबनी, कतिरय सामित्य निनिष्ठ । वत्रक ठलमा, कर्षक त्मवी तमा, श्यालक भत्रभी शठ। निखु शक्त तना,निष्ठं राका (इना, তথাপি ম্য অসমত। (मारुष्ट्र मारा, किश्र कान्नीय 🗸 ः 👣 कुर्म जननी क्षेत्र । म कंब्रिटेंव मान, अनमी राज्या, धाकित्व रहेश आवृष्ठ।

क्रमनी (यम्म) करनी दहस, स्मिति गानित्व मञ्जूषे। कतिया चीकात, अतल कुमात, कहिला राज्य डेव्डि । যাধাক্তিক রবি,ছিড ততুদ্বি, ्षा आण निहास समरह । **अ**िलम भागी, अब बूच भागी, - अभिन जानि उपः हरम । খীর অনস্তর, ক্রতাঞ্জলি পর, ्रवाच्य बाह्रि शूर्व कृष्टिछ। व्यवस्य कामना, मुमुरविष्ठ मनाः, अक्षांत्र शति शता मुक्ति । कार्य तामात्राल, वान्योंकि बहरन, काहिकारता व्यवधाराकारस टेक्टब्री छत्र, विशास विरम, 1 於7 本的 中的新城市 18 1 年 1 日本 শলিক্লা বিভ, অভিনিক্ত শত, मर्भ विनिर्मक वागरत । शासका अरुन, जाका विशक्तन, ्यान हरेल विचात्र।

প্রবারণ প্রানত ভরতে চেবিয়ারাবুখতি। বাজা পরিপূর্ব আঁবি কবিবার গতি। প্রে হৈতে প্রভু তাঁরে করি উবাপন। আলিকন করি কোনো বিকা সহাকন।

धमछत नकांछत देकटकतीत गुरु। পদ্মর ধরিয়া ধরণী বিপতিত। অভান্ত পীড়িত অন্তঃ করিয়া রোদন। कृण जड़े अञ्चलक कोषत्र (यमन ॥ मर्भक्छ मर्भ आकृत्नाकान धर्नी। অবির লোচনে নীর রীর চড়ামণি ॥ (छड़ी हीन हरता कीन खुंबा कीन वर्गा। সুখরে রোমন ভরে নেত্রে বহ্নিরিপ্রঃ। माजुनन दाजन निव्रवि थाँनि जुटन। ভাসিলেন সীতা সহ অতি অকৌশলে व्याकाशन मर्सकन जाकन मसली। উপাধ্যায় পুরোহিত প্রভৃতি সকলি 🛚 त्म के करन स्पृथ्ध महत्न करह तह । পীড়িত ক্লিডুছির তর নহে কেই! कि कर कथिक तर यहन रामणा। দুঃখে করে পুলাখান লোকে অভিভূতা অপর কিক্র নর সকাতর অতি। খভাবতঃ ক্লেছ পূর্না মানুবের মতি 🛚 ভাত লোচনুগত অবাহিত নীর। त्वाद् स्टब्स् तकाशिक त्रच्यरण योत । शोह व्यक्तिकत कृति कमल (कांচन।) मृश्योद्धी एउट अस्ति करिया वहना ভূমি-রাধু ভোষার সকলি সাধ্তর। मार् योष्य बहिस्टर अखन्न कोषन्। (मामाक्ष्मक्षाक म्हार्या वामानकारा अ काम उद्देश्य कर धारान चलात्। कामारक समिदक श्रांति ना शांति नवर ন্পাসূত দুঃশীভূত অভিভূত মনে !

শাক ভারে ভারজান সতত আনার। শীৰ্ণ মনঃ অনুক্ষণ মালিম্মে তোমার। -সম্ভব করিয়া করি শুন গুণদাম। না কহিব না দেখিব না প্রার কাম॥ रखालि ना यां । कृषि कारयां था। नश्ह । সদীতা সন্ধাৰে তমি দহ প্ৰিয়কর 🏾 अके कथा खाउरन नगरन नरत नीह। भाक्ष्मं कतिया कटा कहिएम शीत ॥ প্রসংখ্য তেও রাঘ্য না কর সুকৃতি। অযোধাার প্রায় বিনায় রম্পতি। कृषि यनि बांगादत मिविश लाउ कार्य। কি কাৰ এ অভি লাজ অধন দালাপ ৷ শাৰ্ড জীৱন মন্ত্ৰভন্ত রবে। हिं। यह अश्वित कर्ष क्रमां मा इदि ह ভোষার প্রিয় কারণ মাতৃগণ সহ। ठिलिलाम अध्योशात्र मरेमक मन्ह् ॥ किन्द्र वामि क्षिप्तरान कति विद्वार्शम । त्रभञ्जम এ अधीरन द्राचित। यात्रन ॥ हाजनकी পतिहति कविरत महानि क धर्म विषया श्रिष्ठिवामी नरह मान बर्फाका वर्ष बाद्र व शालिएव अभव। यमि मृत्य छत् श्राष्ट्रिवारम हेन्द्रा नग्न । গমনে উৎসূক মেখি ভরতে জীয়াম। কষ্টতর কলেবর মন্তাপ বিরাম। সাজুন। করিয়া শুভ বাক্যে জটাধর। ভরতের প্রতি প্রস্থু অতিতৃষ্ট পর। बर्वे कार्य मत्रज्य अवि मियाशन। क्रमत शामक जानि शिमा उभागन।

खाल क्रमं तीयद शांष्ठा कृत्रमध्य । मुनिह कुंगल ध्रेत्रं किस्तानी निग्तत ॥ কান্তাতিক কাথিক মছল সমূদ্য। कहिला चुनित निंगा अदिज अन्त्र ॥ निदम्न कतिमा (मधिमा गांध कान। কুমের পাদকা নিলা অখিল ভুগান i मूनि क्रूड भानका गुराम मरशहर। করিয়া ভাষত অভি পরিতৃষ্ট মনঃ ঃ; শ্রীটানের পদদরে করিলা প্রাদান। প্রীতিবৃক্ত চিত্ত হয়ে। কৈকেয়ী সন্তান । मिहे कारण अहे वाका मुक्त स्थन मारता। कहिला तिनिष्ठ मूनि अत्योधाधितारक । শ্ৰীরামের পদৰয়ে লম্পিয়া পরে: अर्ग केत भीष्का भुक्त मर्ख गरत । সকল লোকের যোগ সিদ্ধি এতে হবে! ष्यस्थात तां छ जार शाहकां व तर व পরে নাম গুন্ধান পর্য কৌশলে। वावर्:त शत करमा श्रीपुका मुश्राम ॥ अनाम क्रिंगा धूमः रैक्टक्शीय मुट्ड। रदा निगा जत्र भाषका कुन पृष्ठ । প্রদক্ষিণ করিয়া রাধ্যে বারস্থার। গিবীক্ত মন্তকে ৰখা রূপ ব্যবহার। ৰথা মতে রাজ্বরীতে সর্ব্ব লোক জনে। (श्रेतन क्तिमा लटत अर्थाया। भ्रम्ते B গুরুগণ বশিষ্ঠ প্রভৃতি অনুগত। विमर्फन कतिणा हरेग्रा अवन्छ। वाहरम बाहेश ताब हिमाहम आग्र । माजुग्न भन्नेन मिल्टन खेटन क्याने

क्रीकृष्ट ब्रिशेस नरह नयन क्षकाण।

करमा तीम करवाशाय क वाका ना महन्
मा वीट बमय कारण कछात कछात ॥
कारण ज्ञानक हरा। करम करम ॥
कार क्षण क्षमतीहत विभाग विराध ।
हामम करिया ताथ कृतित कारण ॥
कारणांशाय कामिकारक शामुका करन ॥
कारणांशाय कामिकारक शामुका करन ॥
कारणांशाय कामिकारक शामुका करन ।
मक्ष मणांशिक चंठ गर्श मयोशन ॥

३३९ मर्गर ।

जिल्ली

পালুকা করিয়া শিবে, প্রেণমিয়া রম্বীরে,
করিবেন রথে সারোহণ।
হয়ে অতি হবাধিত,শক্রম বীর নহিত,
আচার্যা বশিষ্ঠ তপোধন॥
বামদের দৃত্রত, জাবালি কবি অগ্রতঃ,
চলিবেন মন্ত্রি সহকার।
ফলাকিনী প্রবানন্দী, প্রদক্ষিণ বথা বিধি,
বান পূর্বা হবে কনিবার॥
চিত্রকুট বহারিরি, বাভুমন্ন শোভাকারী,
তারে করি বল্প প্রাক্তিমন্ত্র শোভাকারী,
করির রঙ্গ সাক্ত্র, নিরীক্তরে শুলী ভাতু,
ক্রিজ্বত দুংগিত্র ক্লিভি ক্লিব।

। अहे शितिवत शेरिक, मटेमटक शंभन करके, मिथ मिथ हिज्जकृषे म्लाका। यथा मृति कत्रवाक, विशिक्षक मृतिताक, कारमाकित आधारमह काउः খাদিয়া অপ্রবাশ্রমে,ভরত অভি সম্ভরে, तथ देहरा नाभिया फुकरल । हायव कुल नव्यम, धुनीक गुष्प हत्न, ध्रादम्म कहिया हकोशहर । शर्ट करेंगा यूनिवब, आंगीसीम दक्छत, অনস্তর জিজালা ভাতে ৷ त्रामकृति कुछकुछ, दश्माद्र भागम मक, मक्न है कि कि विधिया । बहेरानी मनि काल, खरंदन गांकुण शांदन, अकारत अतिया मधीत। उत्तर मुनर्पाणीय, एक बाह्य वी श्रीया, क्रमनिधि मन्त्र गठीत ॥ কি ক্র কর্মের গতি,বছ মতে নতি ভঙি, বিনতি কি হীতি নীতি মতে। जांच्य अर्रावत स्वर्थ, हच्यूय अधवर्षा, কি অভ্যে সাধন। বিধিমতে। ওরগণ বাক্য আর্যা,না করিয়া অভিযাব্য, ভাষ্য রাজ গ্রাছ নাহি করি। करिरणन तथमनि, क्वानिश्रन णिरतायनि, मिनमनि कुलबनि एति। পিতার প্রতিক্ষা তমু,সেই সে পরস তম্ব ভারি ভদ্ধ করি অনুকণ। वर्ष इक्सूमा शून, इदेश डाट्ड उडीन, , यहाँडणा नहांग स्मान ।

व्राट्यत वरुटम रखा,वाम निवा अरा अयो, विक काश्रभना मुनियत । व्यक्ति मृ कि ऐकिशाम, मधुत वाका विश्वाम, दिनिष्ट क्षेत्राम वर्खन । अहे वा भी मुकाब्य, वृत् उठ महाभग्न, श्यांभीन कतर अवान । की माथा नवशास्त्र अवस्थान कर मर्स मध्द । अधि एक दिश्यामा असा मनी निवस्तरणा कहिर्वन शोधन वियोग । करे कथी पुक्ति मुक्त, हरेला विभिन्न उक. द्रापर विनद्रां श्रृप्तं मूर्णः পাদুৰা যুগল গৱে, দিলেন গদ অস্তবে মন রাজ্য পাল্যের সুখে। महेगा तारभत योका, अस्कित वर्त तोका, व्यागात्रात्र याहे छाहे नित्रा अहे एक वाका छनि, छत्रक्षांस्र महामूनि, ক্ষেন ভরতে প্রশংসিয়া। कृषि भत मुधामित . अ न्टि खोमात विता. भील वृक्ष मकत्वत्र मात्। निस सम् मम स्नामात ॥ অমর অজর তব, লিডা এই জারুতব, मगर्भ मह्। छाध्यान । ৰে তুৰি ভাৰার সৃত, ইদৃশ শীগতা যুত, धर्मा (मह धारी मृर्खिमान । मिहे कवि महा आटक, मखाविता वर्था बारक कुडाइनि द्यन्डि निधान। विषया ठाव वत, ध्रमणिन वात्रज्य, कतिया जटकाशास्ट्र योग

मिलिशन कहरबारकः मूनि व्यक्ति कडरबारक স্থুর গ্রম শীল্র থানে। भूतम मोडम श्राहे, कर्दा भवति चित्रे. धारक हो इस्तमा मिन्द्रशास्त्र । मलेकि सम्मानी लेहर, लेथे महत्रा ध्रक्षी घटर (भी उक्तभ। विश्वश निखात। प्रभाग क्रिम रैमच्छहात । भक्त निक्त नक, नश्यक खणहक, उन्हीर्न इहेश हासुद्रारम्। करिया जारत रातन,मृहत्त रख्न शक्तिसन শৃহ্নের পুরে গতি ভাগে। क्षट् दिया विनक्तन,किट्टिन यहां सन, ভোমার সম্প্রীতে গ্রামি প্রীত। मृत्रस्वत प्रत्रांक, किडू पूरत देशिष्क, ुं व्यद्याधाः मर्भात्म मृश्यांचिछ । क्टिइन माणद्वि, दिन मूचल मात्रिक कर्यामाः नगती मृत्याकाता । क्ष्मुण मण्णूर्न छोत्र, छव दमदश (भागः। श्रीक्र, निहानकाहा निहानका, पियरम चकाश मसा मीमा आह कीना एक बता। ममछान प्रभातत्व, श्रीक्षीया महत्त्राहर्स, श्रुत शर्थ मिश्डिमा शामि। अहे जान इंड अला, क्रिया आर्थाना (भांडा,मर्स कार्य कान उन्होंदी मामान भारत छुणाउ, निश्मारम भारतीत शिक व्यवस्थात कविना अतिन गाउद्यात जेन का की थे. जुड़ीमां समुद्रमें की व करिकुर नर। दूस लगे।

গভীৰ তিনিত্ৰ ভাষ,অভান্ত কালিম কায় ं अमेरिया मधा अक्षकाभा। ब्रांस्थल रेस्टन मभी, धका द्राहिनी क्रभनी, **उन्दार व्ययम कीन तथा ।** भगतम धन्शक्या, विस्त्रम कुलाकुता, भीन हीन निगक निर्मा। श्राकाशीन यथा नहीं, त्राहे जल निवर्धिः खाशाना नगरी खनिर्धना ॥ चनह करह इंड. गंस दांशी बस मंड. হমালয় গভ হত বীর। महाबुद्ध मिर्माक्त, त्व क्रश खडि गांकुल. श्लंहे जल नगर जहित्र॥ শান্ত বাতে পুৰঃ ক্ষান্ত হয়। मिः भक्त जांशत द्यंगाः ख्या अत्याधात त्थला,नाटकालीक काल नमूनम धनछत कि अर्थत, मृष्टीख मातिथ रह, मार्ग मेळ दिल्ल मनाभम। हत्य (म शर्यकान, ग्रेम) (दानी यशकान), रिमा खिन तामहक्क, व्यायाधात अक हक, **ट्रिक्थिन होन এ एउमके** ॥ चंड मारन मिथा बनवडी। प्रसादाति दमहे क्रेश गणि। हो (बाहर है (बाक्सा) तथीन पून (कार्यन) जन्म रक करा एत. जिथा निम दुक नित्र, MENTS BER MERICE 1. कारीन क्रमा कार्या मानियी चाडि धराय, खनानस्य नाहि राय, कनानस्य त्यादक त्मरे प्रथ भरगम्। विकास ।

मिनिक् नह श्रंक , यात्रिक देवस कारक. মুক্তাভোতিঃ যুক্তা অভিশন্ন। मिहे मुका यनि हीता, कीव महा। खिछ कीर्गा तो य विना ज्थादशंभागत ॥ यांग रख करता लांक, निवास सक्छ लांक, पूर्वा कम यनि इत्र छ।त। দাতি হত হয়ে৷ তারা,নভন্ড ত ৰথা তারা: त्महे क्रथ मणा खरमाश्राह । यथा वचा मार्जानन, वम् छ है होने नमन. द्रमण त्रमण शुक्का भटता । क्षरङ् करत व्यानिक्रम, में सम्बद्ध शर्न, मिर भेष भिष्ठ अस्त ॥ वाबूद्दरंग निक्तुदयना, इरेग्रा नटका शयना, निक्टक वमलकात्माजन बावाधि काटन. कभनीयां द्रमुनीयां मजा । नमुष्ठांत्र प्रथा इस, दिनांत्रक श्लोतन क्राय. **८ हे भूडी व्या**यांशांत ज्या । আছম নদত্ৰ শলী, চক্ৰিকা হত তামসী, भ्याक्षा विवर्त रामस। **অ**যোধার আকার জেমন ।। দ্বিম সুবৰ্ণ প্ৰান্তঃ, উৰিত বজান্তি শোভা, পান পাত্ৰে সুৱালয়,বহু জনে শোভা হয়, পান ভূমি রহে পরিফার। वित्र वित्रक्षिकारण, वित्रिक शाहिया कारण. छिश्य छ दिराम, तमलाव तक वा हाया. (अह अल मना अत्याधाता সমানুত প্রণা পরিষ্ঠ। ुद्धाय, अमिनाहम निम्न ज्ञासिक ।

' स्त्र टेहरन टैंगरे मांग, सरे श्व एव मांग, বসিতে বাসনা করে কেবা। करगांशां निर्माल। कृषि, त्राहे क्रथ हफ थाभी,हेक्श नरह कहिवादह स्मवा। বিপুল বিনত গুণ, অতি গুণ ধমুগুণ, थलः देश्एक पत देश्या भन्न । हिसादी विश्रम चत्र, त्म हहे दम हुछ चत्र, कृषिण्डाण नरह मार्चाकद । मिहे क्रे प्राथिशिक, अंग्रेड विश्वाकोत, बिहीना निहीना ताम शरन। (प्रशंद दियं महिथि, महोकांश प्रामहिथि, महत् क्वम मजीवतः। ুপথি সধ্যে অখারেছৌ,রোধিল গমন মহী, ताम करक रिमम कनम। उँदलाथ गमन कति, कात्य मुस्ला कि-त्माती, तमहे क्रश करवांधा वितम ॥ भदमा कृषि रह्छत, खनशीन नदावित, শোভাকর না হয় যেমন। ক্ষমণ হৈলে রহিত,কি করে বাপী ব্যা-পিত,রাজ খুস্তা অবোধ্যা তেখন 🛭 चि चि चित्र है नह, यथ छोत कर बदह, অনুদেশ অবস্থার বিনা। - क्षांठ ना (भांडाशाम,पुःरथ प्रक रुग्न कांग्र, मिरे क्रथ व्याधा मिना। উত্ত রবিকর কাল্লে, নিংশোভা প্রাবৃট कारण, इति इति रशा त्रय श्रेष बा रम क्षेत्रात क्षेत्रा, त्यरे क्ष्म रुख (मार्चा, अक्षकां बहुराया समस्

পলাতে সান্দনোপরে,জিজারিলা হুত रत, मणतथ नंशकि कृणाह । व्यविशांत्र शृंक्षश्रांत्र,शीख्वांच नव खांत्र, কি নিমিত্ত না শুনি বিস্তার। खरून सुडांक (वर्ष), ही खेवांन (हर्षा), নুবসন ভূষণে ভূষিত। विशीन উन्तम नात्र, अभाग तमहे नगुरत, দশ দিক শোভা বিরহিত। वाजनी मित्रा गञ्ज, मामाहत मक्त्रभू, তার গল্পে জগত মহিল্ড। भुभाषि याना अक्टर,त्मोहड ह्यांत्रव क्टर, পুর্বাপ্তার মহে প্রকাশিত। উত্তম উত্তম ধান, গ্রমনে গর্মিড প্রাণ, সগন্ধীর ঘোটক স্কু<u>র</u>্য!। अगल माजन नाम, नाहि छनि कि दिवास, शुर्क धोत्र ना (मरि गुरवणा ॥ चनछत नहरत, ध्वितिष्टे हृत्या नगत, উপনীত ভূপতি ভবনে। कारक हरेग़। हीय, हमा हमा ला डाहीय, शितिछहा यथां निश्ह विदन । ভরত সুদৃঢ় ব্রত, যার সেই অনুগত, साम साम दाया मानुभागः करिना मध्त वानी,नृशिक्ष क्यांत यानी, বিশেষ করিয়া গুরু জনে! अदबनित निकाम, कामजिए। पश्चिमांम, विज्ञाम कतिय व्यविज्ञाम। अहे पुरंष दिना तांम, नाहि नियातनातांम, ু সহিন ভথায় বিনা রাম 🛭 🏸 🚟

हात्कायत निकायक, शत गृहभूत हिछ, প্রীরাম রহিত এই রাজ। त्रोमग्छि अठीकाम हीन नृश व्यवशाह, कुछ नांधा कतिंव गोहांवा। ভর্ট उर्व एक दांबी, शहम मकल मौनि, यहां जानी विभिन्न खेल्छि। पश्चित्र मर्खक्षन, अभः मिश्रा कल्लन, कहिराम करमाहित मीडि। नम्भ नृज्ञायनीयः এই वाका छवनीयः आज्ञाधीत कानरंकत हेरा। तांकारुयु चमूक्रभ, राका गरेरे क्रियंकुर्भ, खांक ब्राटक निकास निकाश ভূমিত লাভ্ৰৎদল, বাংশলো তব সকল, 🥦 সৌহতগোহদে ভূমি ৰিত। करें नाशा भव आया, मर्स माध्यन शाक, क ना आह करते म मूर्गीक । चूर्राञ्च मञ्जन। वानी, अजियक निक स्नानि, ভরত মুঞ্জীত মনে পরে। तथ (योश कतह मक्रत । ध्यक्ष मानरम शिशा,माजुशल ध्यनित्रा, त्रथाक्र मह महाभन्न। উচ্চার পর্য প্রীড,প্রাহিত মন্তি বৃত, অ্থানী দামতা গুরুতর 🛚 যদিষ্ঠ প্রসুখ খিঞ্জ, উপযুক্ত নিজ নিজ, श्राम मुक्त गर्छ श्रुव्य सूर्य।

भेका छर छल, भूतरानि शेल स्ल, नत्र देखे शक्तरां कित्रत । ভরতের অতি প্রেষ্ট্রপুরবাসি মধ্যে প্রেষ্ট্র विभिन्ने विभिन्ने वक स्नम ॥ रथक् कछा सन्द, शतिहति हाम पृक्, চিত্ত স্বাস্থ্য ভরত সংযোগে। অনন্তরে হাজসূত,জীরাম বাৎস্পর্টন্ত, विश्वक विस्मब डेमरङाता । পাদকা প্রচণ করি, যান মাডামহ পুরী, भीख भूती कतिए। श्रारम । तथ दिएए भारत जूर्व, अवनी एवं अवजीर्व, श्वनात रकिता विस्मत मन जांडा बहें बांटक, विशाहकृत मूटमी ভার্য্যে,গভাষাত ক্রনের পালনে। शांवन शांकृतः इत, जुक्छ मञ्जालक, मर्काण मयान कंगारित। भिरताशित कति स्थर्भ, मः श्रीश भद्रम इर्षे, शकामत्व कत्रि मः श्रामव। न्दर्शक मात्रि अिं, कहित्हने गर्गमिं, अङ्गिष्ठ मखरण वरण, मर् चस् मूर्थानरण, শীর চূত্র কর আনমন। धत कर शाम शास, समन्न उड़ान मध्य, (महें अहे द्वांत्रं इस सर्भ। ক্রিবেন এই রাজ্য, শালন আমার আর্য্য, -रशक पूर्व भी पूर्वा बक्र ११। हरेता गुजनकुछ, जान पर पतिक्छ, विश्वन नामुका गुप श्वान। शिकावर त्रव शांग, क्षत्ररंकत मिन्याय, तिनेक क्षत्रांच कहि,कि क्रशांचान एति,

করিব আমি পালন, যাবত রামাণমন, প্রভীক্ষণ করিয়া রহিব। अहे द्वांग श्रमिक्त, हिक्किंड रहेगा श्रम, দর্শনে সে শোক সম্বরিব। म हतन भरताकर, बिस्ट क्लिंग मधायर, म सिक्ते (मधिद हेहात । निर्माण कहिन हाका, यादण न। मिथ आगी,शापकांश सम्भित जाहा। धक्र क लिया जात, इत्या माज गहकात, র্ছির না হুইব কাডর। जांगरत कतिया भाग, कदिव एन मधांग ঘাৰত না পত বঘুৰর। উপস্থিতে রখ্বীরে রাঞ্জ ছতে ছত্রী শিবে. निष्णाण इंदेव (महे कार्य। श्रीतामात अভियास, आस्तानीय सन **(मरक, अंश्रेड इंदेरर खन आरंग** ! मिहे औडि मिहे यथ, गड दर्व हर्जूर्सण, রাজ্ঞ হৈতে চতুও ি সুখ। **औ**रांग निहर्द झान पूर्व। भारत अहेब्राम तरहा, अनुर्स भूष्किए हरा।, मिक्थारम त्रष् त्राक्यकाती। हरता मूनि रामधन, शति छक् करणवत्, महीद वत्कन किरोधांदी ! मन्त्रिशास्य यात्म नीन,त्रांत्क्वर छेनानीन. ्नदेशस्य मसिकानि वाह्न। श्रेष्ठ अवश्रम रछ, मर्क कार्गा अवित्रहे

সম্ভ বল বাছনে আকাজি রামার্গমনে, ছরত বিরত পাপ লাগে। খ্রীওক বাংসল পুত, প্রভাত নৃপাসুত, প্রাকৃ বাকা সভ্যতা স্বর্থে 🕫 প্রতিজ্ঞা পারগ দ্যো, সাদকার পরের इरहा, धन्नभरत क्लिएक करहा। सर्वाद वाञ्चन छत्त. वादन कतिया मास. भक्त नाभि एकि शत भक्त । খখুর মাদন হত, শাদুকার অবগত, ক্ত্রিয়া করেন গতকাল करें करन अनुकरण, शिकाय नामुका करने, मस्मारमान विशंष सञ्चाल । त्य स्थन क महास्थम, श्रीहामहस्य की ईन, প্রবণ করেন তার কর্ম মানবের অভিরিক্ত,কুতী অতি সুধানিক, रीत क्षार मर्खिमान धर्म । বিনাশে সমত তাপ, দেই মুক্ত মুক্তপাপ, मुगश्रात सामगाम कृति। क्रिया करे विमाल, बखरत अधास जान. निभाश बरमायांकांच, मराल क्षेक्रांस्कांच, महक्ताकांग्रे महायान ह **३५७ मर्श**ः।

> हेळाट्य हामान्यत महर्षि কীয়ে চতুৰিংশতি নাহন্যাং সৰ্বদ্ত यागिकार्या अत्यादाकारक मिल्ली निवामकः ।

क्री वदर्गामानावर अंगिर्धातिक मार्थिति स्थापन